₹ 30/-

साहित्य अमृत

RNI No. 62112/95

फरवरी 2025 • साहित्य एवं संस्कृति का संवाहक • मासिक • पृष्ठ 84 • ISSN 2455-1171

साहित्य अमृत

मासिक

माघ-फाल्गुन, संवत्-२०८१ ❖ फरवरी २०२५

वर्ष-३० ❖ अंक-०७ ❖ पृष्ठ ८४ | यू.जी.सी.-केयर लिस्ट में उल्लिखित | RNI No. 62112/95 | ISSN 2455-1171

संस्थापक संपादक

पं. विद्यानिवास मिश्र

निवर्तमान संपादक

डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

संस्थापक संपादक (प्रबंध)

श्री श्यामसुंदर

प्रबंध संपादक

पीयूष कुमार

संपादक

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

संयुक्त संपादक

डॉ. हेमंत कुकरेती

उप संपादक

उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी'

कार्यालय

४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-०२

फोन : ०११-२३२८९७७७

०८४४८६१२२६९

इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क

एक अंक—₹ ३०

वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००

वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००

विदेश में

एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)

वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

साहित्य अमृत के बैंक खाते का विवरण

बैंक ऑफ इंडिया

खाता सं. : 600120110001052

IFSC : **BKID0006001**

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी पीयूष कुमार द्वारा ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित एवं न्यू प्रिंट इंडिया प्रा.लि., ८/४-बी, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-IV, गाजियाबाद-२०१०१० द्वारा मुद्रित।

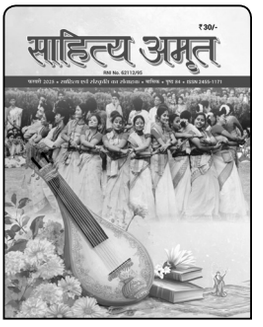

इस अंक में

✍ **संपादकीय**

अपने भीतर झाँकना होगा… ४

✍ **प्रतिस्मृति**

सिंहवाहिनी/ *आचार्य चतुरसेन* ६

✍ **कहानी**

पताका/ *इरा टाक* ८

परवरिश/ *प्रदीप कुमार शर्मा* ३०

नीली राजकुमारी/ *जय प्रकाश पांडेय* ५१

पतित पावन/ *नंदन पंडित* ५४

✍ **आलेख**

तिरुवल्लुवर रचित 'तिरुक्कुरल' : परिचय, प्रतिपाद्य एवं प्रदेय/ *रामनिवास 'मानव'* १४

सामाजिक समरसता के प्रतिमान थे स्वामी रामानंदाचार्य/ *शास्त्री कोसलेंद्रदास* १८

प्रयाग महाकुंभ और गंगा की निर्मलता / *प्रमोद कुमार अग्रवाल* २४

जायसी के काव्य में स्त्री-चिंतन एवं दृष्टि/ *रवि कुमार गोंड़* २८

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में वर्णित लोकजीवन/ *रोशनी* ३२

रामदरश मिश्र यात्रा-साहित्य की अंतर्दृष्टि/ *मंजु मुकुल कांबले* ३९

गिरिजा कुमार माथुर : प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य के पुजारी/ *सुदेश कुमार* ४८

अहिल्याबाई होलकर : भारतीय संस्कृति और सैन्य उत्कृष्टता की अनुपम प्रेरणा/ *चंद्र शेखर* ६०

✍ **लघुकथा**

उपकार औषधि/*सत्य शुचि* १७

एक बाल्टी का व्यवहार/*सत्य शुचि* २०

और मैं भी/*सत्य शुचि* २९

सफाई-पसंद आदमी/*सत्य शुचि* ३१

✍ **कविता**

विश्व कल्याणी अर्हं योग प्रार्थना/ *मुनि श्री १०८ प्रणम्यसागरजी महाराज* १३

बारह क्षणिकाएँ/*हरकीरत हीर* २३

बेईमान ही आगे/ *बिर्ख खडका डुवर्सेली* २७

छोड़ सब झंझट/ *भविष्य सिन्हा* ६८

रेत की मछलियाँ/ *प्रशांत उपाध्याय* ६९

✍ **राम झरोखे बैठ के**

खुशी की खोज/ *गोपाल चतुर्वेदी* २१

✍ **स्मरण**

अनिल भाई साहब का जाना अखर गया/ *आशुतोष चतुर्वेदी* २६

✍ **संस्मरण**

गाँव में वसंत और मेरा संकट/ *भैरूँलाल गर्ग* ३६

✍ **साहित्य का भारतीय परिपार्श्व**

१९४७ संतोषाबाद पैसेंजर/ *मधुरंतकम नरेंद्र* ४२

✍ **व्यंग्य**

कॉलोनी के दंत चिकित्सक/ *कैलाश मंडलेकर* ५२

✍ **साहित्य का विश्व परिपार्श्व**

एक डॉक्टर की रहस्यमयी कथा/ *जूल्स वर्न* ६२

✍ **यात्रा-वृत्तांत**

गोवा में वे सात दिन/ *रुक्मणी संगल* ६६

✍ **लोक-साहित्य**

पूर्वोत्तर भारत का सेतु रामकथा/ *गोविंद यादव* ७०

✍ **बाल-एकांकी**

सच्ची सीख/ *कुलभूषण सोनी* ७४

✍ **वर्ग-पहेली** ७६

✍ **पाठकों की प्रतिक्रियाएँ** ७७

✍ **साहित्यिक गतिविधियाँ** ७८

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अपने भीतर झाँकना होगा...

संस्कृत के ग्रंथों में एक कथा थी, जो उत्तर प्रदेश की संस्कृत की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई जाती थी। एक साधु ने जंगल में घोर तपस्या की। कई वर्ष बीत गए थे। एक दिन पेड़ के नीचे बैठकर तपस्या कर रहे उस साधु पर चिड़िया की बीट गिरी तो साधु ने क्रोध में ऊपर पेड़ की तरफ देखा। साधु की नजर पड़ते ही चिड़िया जलकर भस्म हो गई। साधु को लगा कि उसकी तपस्या पूर्ण हो गई है। उसे सिद्धि प्राप्त हो गई है। वह तपस्या छोड़कर भिक्षा माँगने जंगल से बस्ती की ओर चल पड़ा। बस्ती में जाकर उसने एक घर के बाहर भिक्षा हेतु आवाज लगाई। भीतर से आवाज आई—आती हूँ। साधु प्रतीक्षा करने लगा। प्रतीक्षा में विलंब हुआ तो साधु मन-ही-मन परेशान होने लगा। कुछ देर पश्चात् घर की गृहिणी भिक्षा लेकर आई तो विलंब के कारण साधु ने गृहिणी को क्रोधित होकर देखा। गृहिणी बोली, 'महाराज, मैं चिड़िया नहीं हूँ, जो जलकर भस्म हो जाऊँगी!' साधु हैरान था! जंगल में दूर-दूर तक कोई नहीं था। इस गृहिणी ने चिड़िया के भस्म होने की बात कैसे जान ली। साधु अब अपने घमंड के जाल से बाहर आया। उसने पूछा, 'आपको चिड़िया वाली बात कैसे पता लगी? आपके पास ऐसी दिव्य शक्ति का रहस्य क्या है?' गृहिणी ने कहा, 'मैं तो एक सामान्य गृहिणी हूँ। एक पतिव्रता नारी होने से ही मुझे शक्ति मिलती है। मेरे पति कुछ अस्वस्थ हैं और दवा देने के कारण ही भिक्षा देने में मुझे विलंब हुआ।' साधु बोला, 'मैंने तपस्या में बेकार इतने वर्ष व्यर्थ किए। आप मुझे धर्म का सच्चा स्वरूप समझाइए।' गृहिणी बोली, 'धर्म का असली स्वरूप जानना है तो इसी नगर में एक कसाई है, उसका पता देती हूँ। वही आपको धर्म का सच्चा स्वरूप समझने में सहायता करेगा।' साधु एक बार फिर हैरान था कि धर्म का सच्चा स्वरूप मांस बेचने वाला कसाई बताएगा!

साधु गृहिणी द्वारा बताए मोहल्ले में पता लगाकर कसाई की दूकान पर पहुँचा। कसाई बोला, 'आपको गृहिणी ने भेजा है? आप वही चिड़िया वाले साधु हो न?' साधु के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। वह बोला, 'आप मुझे धर्म का सच्चा स्वरूप समझाइए।' कसाई बोला, 'महाराज, आप बैठिए, मैं थोड़ा सा दूकान का और अपने ग्राहकों का कार्य निबटाकर विस्तार से चर्चा करता हूँ।'

थोड़ी प्रतीक्षा के बाद जब साधु ने बड़ी उत्सुकता से कसाई की बातें सुननी शुरू कीं तो वह एक बार फिर बहुत हैरान था। कसाई ने साधु से कहा, 'महाराज, मैं तो बिल्कुल अनपढ़ हूँ। मैंने तो कोई धर्मग्रंथ नहीं पढ़ा है, मैं आपको धर्म के विषय में क्या बता सकता हूँ। मैं तो बस अपना कार्य पूरी ईमानदारी से करता हूँ, वही मेरे लिए सच्चा धर्म है। मेरे ग्राहक ही मेरे भगवान् जैसे हैं।' साधु इस बात पर हैरान था कि वर्षों जंगल में बैठकर जिस तपस्या से प्राप्त शक्ति पर वह इतरा रहा था, वह शक्ति तो एक सामान्य सी गृहिणी के पास भी है तथा एक मांस बेचने वाले कसाई के पास भी है। अपना कार्य निष्ठा एवं ईमानदारी से करना ही सच्चा धर्म है।

इस कहानी में हमारे महान् चिंतकों ने यही संदेश देने का प्रयास किया है कि धर्म के पालन के लिए कर्मकांड बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है; महत्त्वपूर्ण है धर्म के सच्चे स्वरूप तथा उसके मर्म को पहचानना!

एक और साधु की कथा भी याद आती है। एक साधु ने वर्षों तपस्या करके पैदल चलकर नदी पार करने की शक्ति अर्जित कर ली थी। उसके पैदल नदी पार करने के सार्वजनिक प्रदर्शन करने का दिन एवं समय तय हो गया था। सैकड़ों लोग इस अनोखे प्रदर्शन को देखने जुट गए थे। साधु ने नदी को पैदल चलकर वैसे ही पार कर लिया था, जैसे वह सड़क या मैदान पर चल रहा हो। लोगों ने खूब तालियाँ बजाईं, उनके लिए यह निश्चय ही एक विलक्षण अनुभव था। जब यह बात स्वामी रामकृष्ण परमहंस तक पहुँची तो उन्होंने कहा कि नदी पार करने का कार्य मात्र 'आधे पैसे' में भी हो सकता था। कोई भी मल्लाह नदी पार करा देता। इस छोटे से कार्य के लिए जीवन के कई वर्ष बरबाद कर देना कहीं से भी बुद्धिमानी का कार्य नहीं कहा जा सकता। इतने वर्षों तक साधु कुछ नेक कार्य करता, लोगों की भलाई के कार्य करता तो धर्म का अधिक कार्य होता। स्वामी रामकृष्ण परमहंस का संदेश भी यही था कि तपस्या से कोई शक्ति अर्जित कर लेने से अधिक श्रेयस्कर है, परोपकार तथा समाज-सेवा के लिए जीवन को समर्पित करना। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद का वह कथन भी विचारणीय है कि यदि देश में एक पशु भी भूखा है तो उसे चारा खिलाना ही मेरा सच्चा

धर्म होगा। स्वामी विवेकानंद का एक अन्य कथन भी गंभीरता से विचार करने योग्य है। वे कहते हैं कि मैं धार्मिक कट्टरता के शिकार व्यक्ति से किसी नास्तिक को अधिक महत्त्व दूँगा। धार्मिक कट्टरता का शिकार व्यक्ति अपने उन्माद में समाज का अहित कर सकता है। स्वामीजी कहते हैं कि अंधश्रद्धा तथा अंधविश्वास से कभी समाज का कल्याण नहीं हो सकता! संस्कृत के इन श्लोकों पर नजर डालना भी उपयुक्त होगा—

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।
परोपकारं पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

अर्थात् अठारह पुराणों में व्यासजी ने दो ही बातें कही हैं— परोपकार करना पुण्य है, दूसरे को सताना पाप है। इसी बात को महाकवि तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में कहा है—

परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥

संस्कृत का एक अन्य श्लोक भी याद आता है—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दु:खतप्तानम् प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

ईश्वर से प्रार्थना की जा रही है कि न तो राजा बनकर शासन करने की इच्छा है, न ही स्वर्ग की कामना, न पुनर्जन्म की···मात्र दु:खी प्राणियों के कष्ट निवारण की कामना है।

ऐसा भी नहीं है कि संस्कृत में रचे गए महान् ग्रंथों में इस तरह के दो-चार श्लोक हैं। ऐसे कितने ही श्लोक भरे पड़े हैं, जिनमें परोपकार, करुणा, प्रेम एवं मानवता का संदेश दिया गया है। तुलसी कहते हैं—

रामहि केवल प्रेम पियारा।
जान लेह सो जानन हारा॥

प्रभु श्रीराम को 'प्रेम' ही प्रिय है! गाँव-गाँव में, घर-घर में कोई अनुष्ठान होता है तो अंत में कुछ कथन सामूहिक उद्घोष के रूप में दोहराए जाते हैं। उन्हीं में से एक कथन है—'सभी प्राणियों का कल्याण हो,' इस कथन में भी प्राणी शब्द का प्रयोग किया गया है।

ऐसा नहीं कहा गया कि सिर्फ मनुष्यों का कल्याण हो अथवा हिंदुओं का कल्याण हो अथवा किसी जाति विशेष के लोगों का कल्याण हो! प्राणी शब्द के प्रयोग का प्रयोजन ही यही है कि समस्त मनुष्यों, पशु-पक्षियों आदि के कल्याण की कामना की गई है।

परोपकार का आदर्श मात्र ग्रंथों तक या बोधकथाओं या महान् संतों के प्रवचनों तक ही सीमित नहीं रहा वरन् उसे हम सचमुच के प्रसंगों तक भी देख सकते हैं। राजा शिवि एक कबूतर की प्राणरक्षा के लिए उसके बराबर मांस अपनी बाँह काटकर दे देते हैं। पन्ना धाय राजकुमार के प्राणों की रक्षा हेतु अपने 'बेटे' का बलिदान दे देती है! भूख से तड़प रहे रंतिदेव हाथ में आया थाल किसी अन्य को सौंप देते हैं!···जब युद्ध कर रहे महाराणा रानी से कुछ निशानी देने को अपने सैनिक भेजते हैं तो हाड़ा रानी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सिर काटकर निशानी के रूप में दे देती! राजस्थान में एक पेड़ की रक्षा के लिए सैकड़ों लोग अपना सिर कटा देते हैं, किंतु पेड़ नहीं काटने देते।

प्रेम एवं करुणा ही अन्य धर्मों के भी महान् आदर्श हैं। 'लव इज गॉड' (प्रेम ही ईश्वर है) अथवा 'शुरू करें उसके नाम से, जो दयावानों में सबसे दयावान है!' जैसे कथन दूसरे धर्मों में भी हैं। धर्मों के उच्च आदर्शों को जब हम रोजमर्रा के जीवन में वास्तविकता के धरातल पर देखने का प्रयास करते हैं तो अत्यंत निराशाजनक तसवीर सामने आती है। क्या हमारा समाज धर्म के आचरण से या धर्म के मार्ग से भटक गया है? क्या हम सब अपना सच्चा धर्म भुला बैठे हैं?

यदि ऐसा नहीं है तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुखभाग भवेत्' का उद्घोष करने वाले देश में 'ओल्ड होम' (बुजुर्गों के आश्रय स्थल) क्यों बढ़ते जा रहे हैं। 'सबके कल्याण' की बात तो दूर, अपने जन्मदाताओं को भी आश्रय नहीं दिया जा रहा। राम-सीता के देश में तलाक के लाखों मुकदमे क्यों हैं? भाई-भाई के बीच संपत्ति के बँटवारे को लेकर घर-घर झगड़े क्यों हैं? समाचार चैनलों तथा अखबारों में घृणा, हिंसा, अपराध, क्रूरता, संवेदनहीनता, अमानवीयता के भयानक समाचार क्यों छाए रहते हैं? विडंबना तो यह भी है कि कदम-कदम पर पूजास्थल हैं, मोहल्ले-मोहल्ले में धार्मिक अनुष्ठान हो रहे हैं, धार्मिक जुलूसों की संख्या हर वर्ष बढ़ जाती है, धार्मिक पर्यटन जोर-शोर से हो रहा है, लेकिन सच्चे धर्म, प्रेम, करुणा एवं परोपकार के आदर्श कहाँ हैं?

हर अस्पताल में विशेष अवसरों पर भव्य पूजन होता है, मंत्रोच्चार होता है! लेकिन उन्हीं अस्पतालों में विपत्तिग्रस्त मरीजों से अनाप-शनाप धन कमाने की लालसा होती है! बिना जरूरत महँगे-महँगे परीक्षण कराए जाते हैं! अस्पतालों का लक्ष्य तो समाज को रोगमुक्त बनाने का होना चाहिए था।

किसी पुल का शिलान्यास करते समय भी पूजन होता है। लेकिन निर्माण में भ्रष्टाचार के कारण वही पुल कुछ ही समय में टूट जाता है! बात वहीं आकर केंद्रित होती है कि धर्म के सच्चे अर्थ को भूलकर हमने धार्मिकता को अपनी बुराइयाँ ढकने का आवरण बना लिया है। इतने पूजाघर, इतने धार्मिक चैनल, इतने साधु-संत, फिर भी इतना अधर्म! हमें अपने भीतर झाँकना होगा।

(लक्ष्मी शंकर वाजपेयी)

सिंहवाहिनी

● **आचार्य चतुरसेन**

आचार्य चतुरसेन बहुमुखी प्रतिभा के धनी उस विराट् व्यक्तित्व का नाम है, जिसने आधी शताब्दी तक अनवरत रूप से, नाना विधाओं में साहित्य-सृजन किया। लगभग साढ़े चार सौ कहानियों के अतिरिक्त उन्होंने ४० उपन्यास, १० नाटक, १० एकांकी तथा प्रभूत मात्रा में गद्य-काव्य के साथ ही समाज, राजनीति, धर्म, स्वास्थ्य और चिकित्सा आदि विषयों के वृहदाकार ग्रंथों की रचना भी की। उनकी पुरस्कृत रचनाओं और अन्य भाषाओं में हुए अनुवादों की सूची लंबी है। उनकी बहुप्रशंसित एवं क्लासिक स्तर की रचनाओं में 'वैशाली की नगरवधू', 'वयं रक्षामः', 'सोना और खून', 'गोली', 'सोमनाथ', 'आरोग्य शास्त्र' आदि प्रमुख हैं। अंग्रेजी राज में सरकार द्वारा जब्त की गई उनकी आठ रचनाओं में–'सत्याग्रह और असहयोग' तथा 'चाँद' का फाँसी-अंक बहुत प्रसिद्ध हैं। चतुरसेन-साहित्य पर अनेक विश्वविद्यालयों में विद्वानों ने शोधकार्य किया तथा कई शोधग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। यहाँ उनकी एक चर्चित कहानी प्रस्तुत कर रहे हैं।

नारी को पुरुष की प्रेरणा, संबल, उत्प्रेरक, मार्गदर्शक माना गया है। नारी प्रसुप्त शौर्य, आत्मसम्मान और पौरुष को जगा सकती है, प्रसुप्त ज्वालामुखी को जगा सकती है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने नारी के कोमल और कठोर, दोनों ही रूपों को चित्रित किया है।

स्त्री किसी पुरुष के त्याग और वीरत्व को ही पूजती है। उसके कर्तव्यच्युत हो जाने पर उसे त्याग नहीं देती, अपितु उसको सही मार्ग दिखाकर उसे अदम्य साहसी, वीर तथा कर्तव्यनिष्ठ बना देती है। नारी अपने शब्दों से ही नहीं, अपितु अपने मौन और कार्यों से भी चमत्कार कर सकती है, यह बात इस कहानी में देखी जा सकती है।

संध्या का समय था। एक वृक्ष के झुरमुट में दो व्यक्ति धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। एक युवक था। दूसरी युवती।

युवक ने कहा—

"ओह! जीवन का मूल्य कितना है, चलो भाग चलें, मैं इस खद्दर को भस्म किए देता हूँ।"

"और देश-प्रेम?"

"भाड़ में जाए।"

"वह वीर-भाव?"

"नष्ट हो।"

"वे बड़े-बड़े व्याख्यान?"

"बकवास थे।"

"तुम्हीं तो वे थे?"

"जब था तब था।"

"अब?"

"अब मैं और तुम। चलो, भाग चलें।"

"आज की सभा में?"

"मैं नहीं जाऊँगा।"

"क्यों?"

"मुझे सूचना मिल चुकी है कि आज मेरी गिरफ्तारी होगी।"

"तब वे हजारों भोले-भाले मनुष्य?"

"सब जहन्नुम में जाएँ।"

युवती चुप हुई। युवक ने कहा—

"क्या सोचती हो?"

"कुछ नहीं। कब चलोगे? कहाँ चलोगे?"

"यह फिर सोचेंगे। आज रात की गाड़ी से पश्चिम को कहीं का भी टिकट लेकर चल दो, फिर शांति से सोचेंगे।"

"अच्छी बात है, मुझसे क्या कहते हो?"

"रात को ९ बजे तैयार रहना।"

"और कुछ?"

"कुछ नहीं।"

"तब जाओ।"

युवती युवक की प्रतीक्षा किए बिना चली गई।

□

भीड़ का पार न था। रामनाथजी का व्याख्यान होगा। साढ़े आठ का समय था, पर नौ बज रहे हैं। कहाँ है वह सबल वाग्धारा का वीर देशभक्त? हजारों हृदय उसके लिए उत्सुक हैं। अनेक लाल पगड़ियाँ और पुलिस सुपरिंटेंडेंट सुनहरी झब्बे में लौह भूषण छिपाए उसकी प्रतीक्षा में थे।

सभापति ने ऊबकर कहा, "महाशय, खेद है कि आज के वक्ता श्री रामनाथजी का अभी तक पता नहीं है, अतएव आज की यह सभा विसर्जित की जाती है।"

इसी समय एक ओजस्वी स्त्री-कंठ ने कहा, "नहीं।"

आकाश चीरकर यह 'नहीं' जनरव पर छा गया। भीड़ में से एक युवती धीरे-धीरे सभा-मंच की ओर अग्रसर हुई। मंच पर आकर उसने कहा, "भाइयो, रामनाथजी किसी विशेष कार्य में व्यस्त हैं, उसके स्थानापन्न मैं अपने प्राण और शरीर को लिये आई हूँ। मुझे दुःख है कि मैं उनकी तरह व्याख्यान नहीं दे सकती, मगर मैं अभी इसी क्षण मजिस्ट्रेट की आज्ञा का विरोध करती हूँ। मैं अभी निर्दिष्ट स्थान पर जाती हूँ, आपमें से जिसे चलना हो, मेरे साथ चलें। किंतु जो केवल व्याख्यान सुनने के शौकीन हैं, वे कहीं से किराए पर कोई व्याख्याता बुला लें।"

लोग स्तब्ध थे। स्त्री ने क्षण भर जनसमुदाय को देखा, साड़ी का काछा कसा और चल दी। सारा ही जनसमुदाय उसके पीछे चल खड़ा हुआ। दो घंटे बाद वह वीरबाला जेल की अँधेरी कोठरी में बंद थी।

"तुमने यह क्या किया?"

"जो कुछ तुम्हें करना चाहिए था।"

"मुझसे कहा क्यों नहीं?"

"तुम इस योग्य न थे।"

"अब?"

"तुम जाओ, मैं यहीं तुम्हारे स्थान पर हूँ।"

"मैं जाऊँ?"

"तब क्या करोगे?"

"मैं कहूँ?"

"अवश्य।"

"और तुमसे?"

"मुझसे।"

युवती जोर से हँसी, इस हँसी में अवज्ञा थी। उसने कहा, "तुम्हारे त्याग और वीरता के रूप को ही मैंने प्यार किया था; पर उसके भीतर तुम्हारा वह कायर रूप है, इसकी आशा न थी। जाओ, चले जाओ, हिंदू स्त्री एक ही पुरुष को जीवन में प्यार करती है। मैंने जो भूल की है, उसका प्रातिशोध मैं करूँगी। जाओ प्यारे, जीवन का बहुत मूल्य है।"

इस अंक के चित्रकार

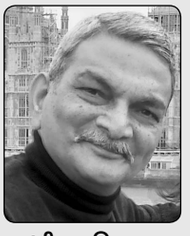

संदीप राशिनकर

जाने-माने लेखक एवं चित्रकार। कई अखिल भारतीय कला प्रदर्शनियों में चित्रों का चयन व प्रदर्शन। राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में हजारों चित्रों/रेखांकनों का प्रकाशन, अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशनों की पुस्तकों के आवरण। भित्ति चित्रों (म्यूरल्स) के क्षेत्र में अनेक स्थानों/प्रतिष्ठानों पर भव्य म्यूरल्स का सृजन एवं अभिनव प्रयोगों से इस शैली में प्रतिष्ठित कार्य। कविताओं के अलावा कला एवं साहित्य-संस्कृति पर समीक्षात्मक लेखन/प्रकाशन।

संपर्क : ११-बी, राजेंद्र नगर, इंदौर-४५२०१२
दूरभाष : ९४२५३१४४२२

इतना कहकर युवती कोठरी में पीछे को लौट गई। वार्डर ने युवक को बाहर कर दिया।

चार मास बाद युवती ने जेल से लौटकर सुना कि रामनाथ का यश दिग्दिगंत में व्याप्त है। वह इस समय जेल में है। इन चार मासों में उसने वीरता की हद कर दी है। वह किसी तरह न रुक सकी। जेल में मिलने गई। रामनाथ जेल के अस्पताल में विषम ज्वर में भुन रहा था।

"कैसे हो?"

"ओह, तुम आ गईं, देखो, कैसा अच्छा हूँ।"

"मुझे क्षमा करो, मैंने तुम्हारा अपमान किया था!"

"तुमने मेरे मान की रक्षा किस तरह की है, यह कहने की बात नहीं!"

"अब?"

"मैं मरूँगा नहीं, आकर फिर कर्तव्य-पालन करूँगा! तब प्रिये, तुम मेरे स्थान पर!"

"पर मैं व्याख्यान नहीं दे सकती।"

"उसकी जरूरत नहीं। तुम्हारे मौन भाषण में वह बल है कि बड़े-बड़े वाग्मियों की मर्यादा की रक्षा हो सकती है।"

"जी कैसा है?"

"अब और कैसा होगा?"

"मैं आशा करती हूँ, शीघ्र अच्छे हो जाओगे!"

"और बाहर आकर, अपनी सिंहवाहिनी को युद्ध करते अपनी आँखों से देखूँगा!"

"मुझे क्या आज्ञा है?"

"यही कि जब-जब मैं कायर बनूँ, अपना प्यार और हृदय देकर मुझे वीर बनाए रखना!"

पताका

● इरा टाक

साढ़े तीन सौ वर्ग गज पर बना चटक पीले रंग का 'सरला सदन' गली में दूर से ही नजर आता था। सरला सदन में बुजुर्ग तिवारी दंपती—केशव और सरला रहते थे। पोर्च में सफेद मारुति ऑल्टो खड़ी रहती थी, जिसे बरसों पुरानी पद्मनी प्रीमियर बेचकर अभी हाल में ही खरीदा गया था। पर गाड़ी चलानी दोनों में से किसी को नहीं आती थी, जब भी कहीं जाना होता, फोन करके जानकार ड्राइवर को बुलाया जाता, जो एक बार के दो सौ रुपए लेता था।

केशव तिवारी लंबी-चौड़ी कद-काठी के आदमी थे, उनकी बाईं आँख के नीचे मोटा सा एक मस्सा था, जिसे वे अपने खानदान की निशानी मानते थे, क्योंकि उनके चारों भाइयों के बाएँ या दाएँ गाल पर ठीक ऐसे ही मस्से थे। उनके मुँह अकसर जर्दे से भरा रहता और सरला की हर बात का वे 'हु, हु' करके जवाब देते। जब बोलना बहुत जरूरी हो जाता, तब वे पास रखी छोटी प्लास्टिक की नीली बाल्टी में जर्दा थूकते थे। तिवारीजी को रिटायर्ड हुए चार साल हो चुके थे। वे सिंचाई विभाग में अभियंता रहे थे। अकसर ही वे घर में आए मिस्त्री या मेकैनिक पर अपने इंजीनियर होने की धौंस जमाते, उन्हें ज्ञान देने लगते—

"सुनो भाई, मैं इंजीनियर हूँ, यह काम ऐसे होगा, ऐसे नहीं, जैसे तुम कर रहे हो।"

कई बार तो कोई गरम-दिमाग मिस्त्री तैश में आकर बोल देता—

"बाबूजी, आप सब जानते ही हो तो हमें काहे बुलाए? खुद ही रिपेयर कर लेते!"

कोई नया मेहमान गलती से अगर यह पूछ लेता—"अंकल, आप तो इंजीनियर रहे थे न?"

तो उसे लंबा लैक्चर सुना देते—

"रहे थे? रहे थे, से क्या मतलब है? मैं आज भी इंजीनियर हूँ, वंस इंजीनियर इज ऑलवेज इंजीनियर!"

सरला तिवारी दुबली-पतली, छोटी भूरी आँखों वाली खूबसूरत महिला थीं, हर हफ्ते मेहँदी लगाने की वजह से उनके बाल नारंगी-कत्थई से हो गए थे। जीवन में कभी ब्यूटी पार्लर नहीं गई थीं, पर अब उम्र के बढ़ते असर को देखते हुए उन्होंने साथी टीचर्स की सलाह पर कभी-कभार फेशियल-मसाज करवाना शुरू किया था। वे सरकारी कॉलेज में फिजिक्स लैक्चरर थीं, रिटायरमेंट को दो साल बचे थे। घर के आगे वाली १२ फीट की जगह पर सरला ने बड़ी मेहनत से कॉलेज और आसपास के घरों से माँगे और कुछ चुराए गए पौधों से बगीचा बना रखा था। अड़ोस-पड़ोस से उन्हें ज्यादा मतलब नहीं रहता था। उनका सारा समय कॉलेज, बगीचे और घर को सजाने-सँवारने में बीतता था। सुबह-सुबह ही घर से सरला की बड़बड़ाने की आवाज आने लगती थी, आवाज के साथ बरतनों की खड़खड़ाहट का तालमेल ऐसा होता था कि किसी भी हुनरमंद संगीतकार को भी पीछे छोड़ दे!

जब से तिवारीजी रिटायर हुए थे, सरला की जिम्मेदारियाँ बढ़ गई थीं। सुबह उन्हें कॉलेज जाने की जल्दी रहती और तिवारीजी की फरमाइशें शुरू हो जातीं। खाने में दो सब्जियाँ, रायता, सलाद और कुछ मीठा तो जरूर हो। बीच में खाना बनाने वाली भी रखी थी, पर उसका बनाया खाना तिवारीजी को पसंद नहीं आता था, इससे पहले कि वे उसे अलविदा कहते, तिवारीजी की मीनमेख से परेशान हो उसने खुद ही काम छोड़ दिया। और मदद के नाम पर तिवारीजी बस सलाद ही काटते थे।

"पूरी जिंदगी बस खाना-खाना, मैं कॉलेज जाऊँ या तुम्हारे लिए छत्तीस भोग बनाऊँ? अब बुढ़ापे में तो थोड़ा सुधर जाओ, वजन देखो अपना आसमान छू रहा है। सुबह उठकर थोड़ा घूम आया करो, थोड़ा हिलाया करो इस बेडौल शरीर को।"

लेखक, चित्रकार और फिल्मकार। अब तक (काव्य-संग्रह) अनछुआ ख्वाब, मेरे प्रिय, कैनवस पर धूप; (कहानी-संग्रह) रात पहेली, कुछ पन्ने इश्क, (उपन्यास) लव इ्रग, चौबीस छत्तीस जीरो वन इत्यादि प्रकाशित। फिल्ममेकर के रूप में पाँच शॉर्ट फिक्शन फिल्म्स। बॉलीवुड में पटकथा लेखन। चित्रकार के रूप में दस एकल प्रदर्शनियाँ। चंदबरदाई युवा रचनाकार पुरस्कार, प्राउड डॉटर ऑफ इंडिया, सरोजनी नायडू अवार्ड, स्त्री शक्ति पुरस्कार प्राप्त।

सुबह से दोनों में नोक-झोंक शुरू हो जाती, जब तक वे कॉलेज में रहतीं, युद्ध विराम रहता, वापस आते ही फिर महाभारत चालू!

तिवारीजी नीली बाल्टी उठाकर पहले मुँह का जर्दा उसमें खाली करते, फिर बोलते—

"मास्टरनी से तो कभी शादी नहीं करनी चाहिए।"

मास्टरनी शब्द सुनते ही सरला मैडम के खून में उबाल आ जाता—

"मास्टरनी? फिजिक्स की लैक्चरर हूँ, कोई प्राइमरी टीचर नहीं, क्लास वन ऑफिसर का पे स्केल है मेरा। तुमने तो कभी अपनी नौकरी ढंग से की नहीं, वरना आज चीफ इंजीनियर से रिटायर होते!"

इस बात को सुन तिवारीजी और भड़क जाते थे, चीफ इंजीनियर न बन पाना उनकी दुखती रग थी, जिसे सरला समय-समय पर दबाती रहती थीं। तिवारीजी और उनकी मैडम दोनों के स्वाभाव में जमीन-आसमान जितना अंतर था, बस एक बात जो उन्हें जोड़ती थी, वह था उनका दु:ख!

उनके इकलौते बेटे आकाश की दो साल पहले एक रोड एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई थी। जब भी आकाश का जिक्र आता, दोनों कहासुनी भूलकर गम के सागर में उतर जाते और एक-दूसरे को डूबने से बचाने की कोशिश में दो-चार दिन उनकी खटपट कम हो जाती। सारा घर वीरान हो जाता। आकाश की मौत के बाद उसकी आदमकद तसवीर उन्होंने अपने कमरे में लगवा ली थी। दोनों चुपचाप उस तसवीर को देखते हुए आँसू बहाते रहते।

आकाश शक्ल-सूरत में अपनी माँ पर गया था। सरला अकसर कहती थीं—"जो लड़के माँ पर जाते हैं, वे बहुत भाग्यशाली होते हैं।"

आकाश भी अपने पिता की तरह इंजीनियर था। आई.आई.टी. रुड़की से बी.टेक. करने के बाद वह अच्छे पैकेज पर न्यूयॉर्क चला गया था। साल में दो बार भारत आता था, उसके आने से पहले घर में उत्सव जैसी तैयारी शुरू हो जाती थी। सरला हफ्ते भर की छुट्टी ले लेतीं, आकाश का कमरा विशेष रूप से सजाया जाता। आकाश के न्यूयॉर्क जाने पर तिवारीजी ने इसे स्टडी रूम बना लिया था, पर उसके आने से दस दिन पहले ही रूम में उनकी एंट्री बंद कर दी जाती। सरला बहुत धार्मिक थीं, आकाश के आने पर सुंदरकांड या सत्यनारायण की कथा जरूर रखती थीं। आकाश तो घोर नास्तिक था, शुरू में विरोध करता था, पर बाद में माँ की इच्छा को देखते हुए खुद ही पूछ लेता—

"मम्मी! इस बार हनु या सत्या?"

आकाश बहुत सहज, सरल लड़का था। पहाड़ी नदी में बरसाती बाढ़ की तरह अब उसके रिश्ते आ रहे थे, पर आकाश सबको मना कर देता था। उसका कहना था कि शादी पैंतीस के बाद ही करेगा, ताकि पहले जिंदगी के सब आनंद ले सके!

सरला अकसर भुनभुनातीं—"मैं पहले ही कहती थी कि अमेरिका जाने से पहले अक्की की शादी कर दो, मगर तुमने कभी सपोर्ट नहीं किया, बत्तीस का हो जाएगा इस साल और फिर भी हर लड़की में खामी निकालता रहता है।"

तिवारीजी बिना कोई जवाब दिए सुडूकू भरने में लगे रहते···अपनी बात को अनसुना होते देख सरला जोर से चिल्लाती—"सारा टाइम सुडूकू सुडूकू···घर की प्रॉब्लम्स से कोई मतलब ही नहीं तुमको, कल से अखबार का सुडूकू वाला पन्ना ही फाड़ दूँगी, लड़का बूढ़ा हो रहा है, मुझे तो डर है, कहीं कोई विदेशी लड़की न उठा लाए!"

"विदेशी लड़का भी तो ला सकता है, आजकल गे मैरिज भी होने लगी हैं अमेरिका में!" कहते हुए तिवारीजी हो-हो करके हँसने लगते।

यह सुनकर सरला मुँह बिचकाकर क्वांटम फिजिक्स की मोटी किताब इस तरह उठातीं, मानो अभी उनके सर पर दे मारेंगी! फिर बैठक की तरफ बढ़ जातीं, यहीं पर रोज शाम चार से सात वे ट्यूशन बैच लेती थीं।

उन्हें तिवारीजी का सारे दिन मुँह में जर्दा दबाए हुए सुडूकू भरना और टी.वी. देखना बिल्कुल नहीं सुहाता था, कई बार बोलतीं—"कहीं कंसल्टेंट इंजीनियर की जॉब कर लो या घर पर ही ऑफिस शुरू कर लो, कुछ पैसे आएँगे तो अच्छा ही होगा न! सारा दिन जुगाली करते हुए टी.वी. में आँखें फोड़ते हो, कितना बिल आता है बिजली का!"

"फील्ड जॉब था मेरा, बरसों धूप में तपा हूँ, मास्टरों की तरह आराम की जॉब तो थी नहीं कि चार-पाँच घंटे टाइम पास करो और महीने-के-महीने मोटी तनख्वाह···अब मुझसे मेहनत नहीं होगी, मरने तक अब खूब आराम करना चाहता हूँ।"

"आराम ही किया है आपने। नौकरी कब की ढंग से? आधे टाइम तो मेडिकल ले लिया, वरना आज चीफ इंजीनियर से रिटायर होते···अगर मैं जॉब में नहीं होती तो आज भी किराए के मकान में सड़ रहे होते।"

"मेरी ईमानदारी के चर्चे थे डिपार्टमेंट में। कभी एक पैसा नहीं खाया, न खाने दिया, तभी तो···।"

"हाँ, तभी तो उम्मेद सिंह आपको पीटने आ गया था!" सरला ने बीच में बात काट दी।

"उम्मेद को बाद में अपनी गलती का अहसास हो गया था, सबके सामने पैरों पर गिर गया था और बोला था, तिवारी सर, आप तो खुदा के भेजे फरिश्ते हैं।"

आकाश भी अपने पिता की तरह इंजीनियर था। आई.आई.टी. रुड़की से बी.टेक. करने के बाद वह अच्छे पैकेज पर न्यूयॉर्क चला गया था। साल में दो बार भारत आता था, उसके आने से पहले घर में उत्सव जैसी तैयारी शुरू हो जाती थी। सरला हफ्ते भर की छुट्टी ले लेतीं, आकाश का कमरा विशेष रूप से सजाया जाता। आकाश के न्यूयॉर्क जाने पर तिवारीजी ने इसे स्टडी रूम बना लिया था, पर उसके आने से दस दिन पहले ही रूम में उनकी एंट्री बंद कर दी जाती। सरला बहुत धार्मिक थीं, आकाश के आने पर सुंदरकांड या सत्यनारायण की कथा जरूर रखती थीं।

"फरिश्ते···हुहुहु···" कहते हुए सरला बाहर गार्डन में पानी देने चली गईं।

इस बार उन्होंने अपने साथ ही पढ़ाने वाली केमिस्ट्री लैक्चरर विभा शर्मा की लड़की रेशम को आकाश के लिए पसंद किया था। लड़की रेशम की तरह ही खूबसूरत और नाजुक थी। हाल ही में उसने जे.आर. एफ. क्लियर किया था। पिता आई.ए.एस. ऑफिसर थे। भाई-भाभी दोनों डॉक्टर थे। इससे बेहतर रिश्ता आकाश के लिए हो ही नहीं सकता और पहली बार तिवारीजी भी उनकी इस बात से पूरी तरह सहमत थे। कॉलेज की टीचर्स उन्हें छेड़ने लगी थीं—'बस ये रिश्ता हो जाए तो केमिस्ट्री और फिजिक्स लैक्चरर्स के बीच सदियों से चली आ रही दुश्मनी रिश्तेदारी में बदल जाएगी और टीचिंग के इतिहास में एक नया चैप्टर लिखा जाएगा।'

आकाश इस बार एक महीने की छुट्टी लेकर आ रहा था। तिवारी दंपती ने सोच लिया था कि चाहे जो हो जाए, इस बार आकाश और रेशम की शादी करवा ही देंगे। सरला ने एक-दो बार रेशम के नाम का इशारा भी कर दिया था। वैसे आकाश कॉलेज टाइम से रेशम को जानता था, वे सोशल साइट पर दोस्त भी थे, अकसर उनकी चैटिंग भी हो जाती थी। तो सरला को पूरी उम्मीद थी कि आकाश इस बार 'न' नहीं कर पाएगा।

उन्होंने तो शादी की शॉपिंग भी शुरू कर दी थी। घर में रंग-रोगन करवाया गया। नए परदे सिलवाए गए, पुराने फर्नीचर को नया करवाया गया। तैयारियाँ जैसे युद्ध स्तर पर थीं। तिवारीजी कंजूस आदमी थे, उन्हें यह सब फालतू लगता था, पर सरला उनकी एक नहीं चलने दे रही थीं, वे अपने घर को दुलहन की तरह सजाना चाहती थीं।

आकाश को आने में पंद्रह दिन रह गए थे। एक दिन आकाश का स्काइप पर कॉल आ रहा था। तिवारीजी ने सरला को आवाज दी। दोनों पति-पत्नी बड़े प्यार से लैपटॉप सामने रखकर सोफे पर पसर गए। उनकी जब भी स्काइप पर बात होती थी, लंबी होती थी। सरला तो लैपटॉप उठाकर कभी रसोई में ले जाती, कभी नए परदे दिखातीं। स्क्रीन पर उसके साथ एक गोरी-चिट्टी फिरंगी लड़की को देख दोनों चौंक गए। आकाश ने झिझकते हुए परिचय करवाया—"पापा-मम्मी, यह आपकी बहू है एलिना! मेरे साथ ही काम करती है, पहले सोचा, आपको इंडिया आकर ही सरप्राइज देंगे, फिर मुझे लगा, पहले बता देना ठीक रहेगा!"

एलिना गुलाबी रंग का सलवार-कुरता पहने थी, उसने सिर झुकाकर 'नमस्ते' बोला। सरला अवाक् रह गई, आकाश इतना बड़ा हो गया कि उसने बिना बताए शादी भी कर ली और वह भी एक विदेशी से! वह आपा खो बैठी और गुस्से में रोने-चिल्लाने लगीं।

तिवारीजी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया था—"तुमने एक बार भी हमसे पूछने की जरूरत नहीं समझी, ऐसी मतलबी औलाद से तो हम बेऔलाद ही ठीक होते!"

"पापा प्लीज···! आप समझने की कोशिश करें, मैं एलिना से बहुत प्यार करता हूँ और मुझे पता था कि आप और मम्मी मेरी शादी उससे होने नहीं देंगे, बहुत प्यारी लड़की है, इस बार मैं उसे लेकर आ रहा हूँ, तब आप···" सरला उसकी बात काटते हुए बोली, "कोई जरूरत नहीं यहाँ आने की···तुम वहीं रहो इस अमेरिकन के साथ, हमारी चिता को आग भी पड़ोसी ही दे देंगे!"

और लैपटॉप का फ्लैप गिरा दिया।

दोनों पति-पत्नी सिर पकड़कर बैठ गए। उनके सारे सपने ताश की इमारत की तरह ढह गए। कई दिन इसी गुस्से और दुःख में बीत गए। उसके पैदा होने से आज तक उन्होंने लाखों उम्मीदें उससे जोड़ी थीं, वे उसके लिए जीते थे। आकाश के इस कदम से उनका दिल टूट गया। इतना सीधा-सादा और आज्ञाकारी दिखने वाला उनका लड़का बिना बताए शादी जैसे महत्त्वपूर्ण फैसला ले लेगा, यह वे सपने में भी नहीं सोच सकते थे।

इस बीच विभा कई बार आकाश के बारे में पूछ चुकी थी। सरला की उन्हें सच बताने की हिम्मत नहीं हो रही थी। आकाश के आने की तारीख भी बीत गई। वह नहीं आया और न ही उसने कोई फोन किया। किसी जरूरी कारण से छुट्टियाँ कैंसिल हो गईं, ऐसा कहकर वे लोग सबको टालते रहे।

माँ-बाप का दिल कब तक पत्थर बना रहता? आखिर उन्होंने ही आकाश को फोन मिलाया, पर उसका फोन स्विच ऑफ आ रहा था। दो-तीन दिन तक जब यही हुआ, तब उन्होंने उसके ऑफिस और इंडियन एंबेसी में पूछताछ की।

"आकाश इस नो मोर।" उधर से सूचना मिली।

इन चार शब्दों ने उन्हें गहरी खाई में धकेल दिया। आकाश की दस दिनों पहले ही एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी और उसकी पत्नी एलिना ने उसका अंतिम संस्कार भी कर दिया था। वे दोनों बिखर गए, आखिरी बार अपने बच्चे को देख भी न सके। जिंदगी उनके साथ इतनी क्रूर हो जाएगी, इसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। जैसे बसे-बसाए सुंदर शहर पर किसी ने बुलडोजर चला दिया हो। दोनों हर समय खुद को कोसते रहते—"कितने कड़वे शब्द बोले हमने आकाश को! कितना दर्द अपने अंदर लेकर गया होगा आकाश! वह शादी कर ले यही तो चाहते थे न, फिर क्यों इतनी नफरत से भर गए उसके एलिना से शादी करने पर? जिंदगी तो उन दोनों को ही साथ बितानी थी, पर भगवान् जानता है, हम बस उससे नाराज थे, उसे कभी मर जाने की बद्दुआ नहीं दी थी।"

सैकड़ों बातें उनके दिलो-दिमाग में तूफानी लहरों की तरह टकरातीं तो, इतनी बेचैनी होती कि साँस लेना दूभर हो जाता। वे एलिना से मिलना चाहते थे। उन्होंने उससे बात करने को फोन किया, तो एलिना ने बोला—"बोथ ऑफ यू आर कलप्रिट्स। यू हैव किल्ड माय हस्बैंड। आई हेट यू··· डोंट कॉल मी एवर।"

वक्त बीतने लगा, पर कुछ जख्म कभी नहीं भरते, वे रिसते रहते हैं और ज्यादा बीमार कर देते हैं। बाहर का गार्डन सूखने लगा था। सरला का वक्त तो किसी तरह कॉलेज और स्टूडेंट्स के बीच गुजर जाता। पर तिवारीजी डिप्रेशन में चले गए, पूरा दिन बिस्तर पर लेटे रहते। कभी-कभार थोड़ी नींद आती तो कभी आकाश की कब्र नजर आती, कभी आकाश रोता हुआ नजर आता। वे नींद में हँसने-रोने लगते। उन्हें मनोचिकित्सक को दिखाना पड़ा, मुट्ठी भर-भर दवाइयाँ लेते, पर मन से अपराध-बोध न जाता। वे इस तरह छटपटाते, जैसे उनको कालकोठरी में बंद कर दिया गया हो, वे रोशनी देखना चाहते थे।

दो साल बड़ी तकलीफ में गुजरे, धीरे-धीरे 'तिवारी होम वॉर' फिर शुरू हो गई, फिर से सुडूकू वाला पन्ना गायब हो जाता या टी.वी. का रिमोट अंडरग्राउंड कर दिया जाता, जर्दे की पुड़िया छुपा दी जाती। सुबह-सुबह उठा-पटक राग चालू हो जाता। मन-ही-मन दोनों को यह आकाश के दु:ख से भागने का सबसे कारगर उपाय लगता था।

कुछ दिनों पहले तिवारीजी ने एक अजीब आदत डाल ली थी। नहाने के बाद वे अपने चड्डी-बनियान पानी में निचोड़कर घर के मेन गेट पर सुखाने को टाँग देते। जब सरला कॉलेज से लौटती तो लोहे के बड़े से गेट के भालों पर नीले पट्टे वाली चड्डी और मटमैली सफेद बनियान देख उनका मूड खराब हो जाता। वे चिड़चिड़ाते हुए उन कपड़ों को उतारती और बैडरूम में तिवारीजी के सामने गुस्से में पटक देतीं—

"कितनी बार कहा है कि अपने चड्डी-बनियान गेट पर झंडे की तरह मत टाँगा करो, घर में दो-दो तार लगे हैं कपड़े सुखाने को!"

"अरे यार, उधर तुम्हारे पौधों ने सारी धूप रोक रखी है, धूप में सुखाने पर कीटाणु मरते हैं।"

"हाँ-हाँ···सारे कीटाणु तुम्हारे कपड़ों में ही हैं, इतनी धूप चाहिए तो छत पर सुखाओ और सौ बार कहा है कि वाशिंग मशीन में डाल दिया करो। पानी से धोने से मैल नहीं निकलता, रंग ही बदल गया है कपड़ों का, सफेद बनियान पीली नजर आती है।" पर तिवारीजी ठहरे मस्तमौला, हमेशा अपने मन की करते थे। तो जब भी मैडम कॉलेज से लौटती, पट्टे वाली चड्डी और बनियान गेट के भालों पर ही टँगी हुई उन्हें मुँह चिढ़ाती हुई दिखती।

"पता नहीं तुम्हें कौन सी भाषा में समझाऊँ? पड़ोसी, ट्यूशन वाली लड़कियाँ, सब हँसते हैं। अगर मैं अपने अंडर गारमेंट्स भी गेट पर टाँगने लगूँ तो कैसा लगेगा तुम्हें?"

"अरे बेगम! इससे पता लगता है कि घर में एक मर्द रहता है। गली में कोई तुम्हें छेड़ने की हिम्मत नहीं करेगा।"

बेटे के न रहने का गम, रिश्तेदारों की लालची आँखें और तिवारीजी की ऐसी हालत, सरला की हिम्मत टूटने लगी थी। उन्होंने कॉलेज से लंबी छुट्टी ले ली। अब वे दिन भर तिवारीजी के साथ बैठी रहतीं। तिवारीजी की फरमाइशों में सेंसेक्स की तरह भारी गिरावट दर्ज की गई थी। वे बहुत ज्यादा नरम स्वभाव के हो गए थे। अब जो खिलाओ खा लेते। सरला कोशिश में रहती, उनकी पसंद का खाना बनाए, वो उनके चेहरे पर हँसी देखना चाहती थीं। दोपहर में सरला उनके पास बैठकर स्वेटर बुनती रहती। रोज शाम को वे उनकी पसंद के नॉवेल का एक चैप्टर पढ़ के उन्हें सुनाती।

"अब बुढ़ापे में कौन छेड़ेगा मुझे?" बड़बड़ाती हुई सरला कपड़े समेटने लगतीं।

एक दिन तिवारीजी नहाने के बाद अपने चड्डी-बनियान सुखाने मेन गेट की तरफ गुनगुनाते हुए बढ़ रहे थे। तभी अचानक उनका पैर फिसला और धम्म से जमीन पर गिर गए। घर पर कोई नहीं था, उनकी दर्द से चिल्लाने की आवाज सुनकर सामने रहने वाले आहूजा साहब ने आकर किसी तरह उन्हें उठाया और उनकी ही ऑल्टो में डालकर अस्पताल ले गए। तिवारीजी की कमर की हड्डी टूट गई थी।

किस्मत जैसे पूरी तरह से दुश्मनी पर उतर आई थी, तिवारीजी की हड्डी क्या टूटी, जैसे घर की रीढ़ चरमरा गई! अचानक सब बिखर गया हो मानो!

कई दिनों तक रिश्तेदारों और दोस्तों का आना-जाना लगा रहा। तिवारीजी का मझला भाई रामफल तिवारी तो अपने बड़े लड़के विक्रम के साथ रोज आने लगा। विक्रम बिल्डर था और वह काफी समय से मकान पर नजर गड़ाए बैठा था। वह पहले भी कई बार इस जगह को बेच मल्टीस्टोरी बनाने की बात तिवारीजी को कह चुका था। एक दिन फिर हिम्मत कर बात छेड़ दी—"ताऊजी, आकाश तो अब रहा नहीं और ताईजी भी अगले साल रिटायर हो जाएँगी, इतने बड़े घर की क्या जरूरत है? यहाँ आराम से आठ २-बी.एच.के. फ्लैट्स निकल आएँगे···।"

"विक्रम सही बोल रहा है केशु भाई साहब, मौके की जगह है। ग्राउंड फ्लोर पर आप और भाभीजी रहना, बाकी फ्लैट हाथो-हाथ बिक जाएँगे।"

"इनकी ऐसी हालत है और आपको यहाँ बिल्डिंग बनाने की पड़ी है।" सरला रसोई से चिल्लाकर बोली।

"भाभीजी, आप बेकार में नाराज हो रही हैं, विक्रम और बहू यहीं आपके पास रह कर आपकी सेवा कर लेंगे, अब आकाश तो रहा नहीं।"

"रामू, हमें पता है कि आकाश नहीं रहा। पर हम अभी इतने लाचार नहीं हुए हैं, यह घर बेचने या मल्टीस्टोर बनाने का फिलहाल हमारा कोई मन नहीं है। बड़े प्रेम से मैंने और सरला ने यह घर जोड़ा है, आगे से इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता हूँ।" केशव तिवारी कठोरता से बोले।

रामफल और विक्रम का चेहरा लटक गया। थोड़ी देर में वे खिसियाए हुए से निकल गए।

बेटे के न रहने का गम, रिश्तेदारों की लालची आँखें और तिवारीजी की ऐसी हालत, सरला की हिम्मत टूटने लगी थी। उन्होंने कॉलेज से लंबी छुट्टी ले ली। अब वे दिन भर तिवारीजी के साथ बैठी रहतीं। तिवारीजी की फरमाइशों में सेंसेक्स की तरह भारी गिरावट दर्ज की गई थी। वे बहुत

ज्यादा नरम स्वभाव के हो गए थे। अब जो खिलाओ खा लेते। सरला कोशिश में रहती, उनकी पसंद का खाना बनाए, वो उनके चेहरे पर हँसी देखना चाहती थीं। दोपहर में सरला उनके पास बैठकर स्वेटर बुनती रहती। रोज शाम को वे उनकी पसंद के नॉवेल का एक चैप्टर पढ़ के उन्हें सुनाती। तिवारीजी कई बार लेटे हुए सरला के बालों में तेल लगा देते। कभी बोलते—"लाओ मुझे सब्जी दे दो, मैं बैठे-बैठे काट देता हूँ, वैसे भी सारे दिन बिस्तर पर पड़ा रहता हूँ।"

तिवारीजी को बिस्तर पर दो महीने हो गए थे, पर अभी तक हड्डी जुड़ नहीं पाई थी। बिस्तर पर ही खिलाना, स्पंज बाथ करवाना, रात को डायपर पहनाना, सारे काम सरला ने अपने जिम्मे ले रखे थे।

हल्की सर्दियाँ शुरू हो गई थीं तो एक दिन सरला काम वाली बाई की मदद से तिवारीजी को व्हील चेयर में बिठाकर बाहर धूप में ले आई, तिवारीजी खुली हवा और धूप में अच्छा महसूस कर रहे थे। जब उनकी नजर तार पर सूख रहे अपने चड्डी-बनियान पर पड़ी तो चुटकी लेते हुए बोले, "अच्छा···सरला, तुमने मेरा ध्वज उतार दिया, एक बार मैं ठीक हो जाऊँ, फिर वही फहराऊँगा!" कहते हुए वे जोर से हँस दिए।

"मुझे इंतजार है कि कब तुम ठीक होकर अपनी हरकतों से मुझे इरीटेट करोगे, जिंदगी ठहर सी गई है केशव!" सरला की आँखों में नमी उतर आई।

अगले दिन सरला बाजार गई हुई थीं, ड्राइवर नहीं आया था तो सरला को ऑटो से ही जाना पड़ा। तिवारीजी लेटे-लेटे रिमोट से टी.वी. के चैनल बदल रहे थे। तिवारीजी जब ठीक थे तो बाहर के काम वही निपटा लेते थे। बाजार से आते वक्त सरला लल्लन हलवाई से केशव की पसंदीदा इमरती और समोसे भी लाई थीं। बाजार से आते ही सरला ने कॉफी बनाई, दो प्लेट्स में समोसे और इमरती सजा, मुसकराती हुई तिवारीजी के पास पहुँचीं। उस दिन तिवारीजी सुबह से ही बेचैन थे, तिवारीजी ने कॉफी मग एक तरफ रख उनका हाथ थाम लिया—

"सरला···तुम गाड़ी चलाना सीख लो, मैं तो शायद अब कभी नहीं सीख नहीं पाऊँगा।"

"ऐसा क्यों कह रहे हो? यह देखो, आज इमरती गरम हैं!"

"सरला, तुम मेरी माँ बन गई हो और मैं तुम्हें कभी कोई सुख नहीं दे सका।"

"ये कैसी बातें कर रहे हो? लो समोसे खाओ, ठंडे हो रहे हैं।"

"ये घर कभी मत बेचना···चाहे कोई कितना भी प्रेशर डाले, मुझे पता है कि तुम न होती तो यह घर भी न होता। तुम इस घर की लक्ष्मी हो सरला।" तिवारीजी जैसे उसकी बात सुन ही नहीं रहे थे, वे अपनी धुन में बोले जा रहे थे।

"हम नहीं होते तो यह घर नहीं होता, केशव! तुम्ही अब मेरे 'आकाश' हो। जल्दी ठीक हो जाओ, फिर हम कहीं घूमने चलेंगे, मेरा कॉलेज जाने का मन नहीं होता, पैंतीस साल नौकरी कर ली, बहुत हो गया।"

दोनों एक-दूसरे को देखते हुए देर तक खामोश बैठे रहे। कितना कुछ वे कहना चाहते थे, पर दर्द का लावा बह न निकले, इस डर से उसे किसी तरह चुप्पी से रोके हुए थे। दर्द उबल रहा था और कॉफी भी ठंडी हो गई थी।

"मैं कॉफी गरम करके लाती हूँ।" कहते हुए वे कप लिये रसोई की तरफ बढ़ गईं।

अपने-अपने आँसू पोंछने को दोनों को वक्त मिल गया था।

रात में तिवारीजी ने खाना नहीं खाया। उनका कहना था कि जी भर के समोसे और इमरती खा लिये। अब कुछ खाने की इच्छा नहीं कर रही। सरला ने थोड़ी सी खिचड़ी खाई और स्वेटर लेकर वहीं बैठ गईं।

"कल यह पूरा हो जाएगा," तिवारीजी के सीने पर अधबुना स्वेटर लगाते हुए बोली।

"सरला, मुझे भी स्वेटर बुनना सिखा दो, मैं भी मरने से पहले एक स्वेटर तुम्हारे लिए बुनना चाहता हूँ।" तिवारीजी सरला के हाथ थामते हुए बोले।

"छी! मरने की बात मत करो!"

"ओके मैडम, स्वेटर बुनना तो सिखा दोगी न?"

सरला मुसकरा दी। आकाश की आदमकद तसवीर भी दीवार पर मुसकरा रही थी।

अगली सुबह सरला की नींद जल्दी खुल गई। वह नहाकर बगीचे में बैठकर स्वेटर बुनने लगीं। एक घंटे में स्वेटर पूरा हो गया। सूरज की सुनहरी रोशनी में स्वेटर का सुरमई रंग चमक उठा।

वे बहुत खुश थीं, जब चाय के साथ स्वेटर लेकर वे तिवारीजी को जगाने पहुँचीं, कंधे पर टँगा स्वेटर उन्होंने तिवारीजी के सीने पर रख दिया। दो-तीन बार आवाज देने के बाद भी वे उठे नहीं। तिवारीजी चिरनिद्रा में सो चुके थे। सरला स्तब्ध रह गईं। चाय का कप हाथों में लिये हुए वे तिवारीजी को पुकारती रहीं। फिर वे बेसुध हो उसी कप से चाय पीने लगीं। उनकी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे।

फिर अचानक जैसे सरला को कुछ याद आया, वे उठी और अलमारी से तिवारीजी के सारे चड्डी-बनियान निकाल कर बाथरूम में जाकर पटक दिया और उनको साबुन लगाकर रगड़-रगड़कर धोने लगीं। तिवारीजी की हड्डी टूटने के बाद से जो भी दर्द और आँसू उन्होंने रोक रखे थे, वे आज बेलगाम बह निकले, पूरे बाथरूम के फर्श पर झाग-ही-झाग था, पानी बाल्टी से लगातार बाहर बहता जा रहा था। उसके शोर में सरला के रोने की आवाज दब गई थी।

सरला सदन में आज भारी सन्नाटा पसरा हुआ है और मेन गेट के भालों पर तिवारीजी के चड्डी-बनियान पताका की तरह लहरा रहे हैं।

साअ

५०/२६, 'सौभाग्य',
सेक्टर-५, प्रतापनगर, सांगानेर,
जयपुर-३०२०३३ (राज.)
दूरभाष : ९४६०४०७२४०

विश्व कल्याणी अर्हं योग प्रार्थना

• मुनि श्री १०८ प्रणम्यसागरजी महाराज

अर्हं दोहावली

अर्हं ही चिज्ज्योति है, अर्हं अर्हत् सिद्ध।
अर्हं साधु मंगलं, अर्हं लोक प्रसिद्ध॥ १॥

अर्हं से सब स्वर सधें, व्यंजन होवें व्यक्त।
अर्हं पूरण ज्ञानमय, करता चित्त सशक्त॥ २॥

अर्हं के सन्नाद से, भागे रोग-विकार।
चित्त शांति शक्ति भरे, जागे शुद्ध विचार॥ ३॥

अहं भाव ही मोह है, भ्रम माया अज्ञान।
अर्हं नाशे अहं को, सत्य मिले सद्ज्ञान॥ ४॥

चंद्र-सूर्य सा तेजमय, अर्हं ध्याता संत।
ज्ञानकेंद्र पर नित्य ही, बन जाता अरिहंत॥ ५॥

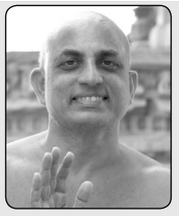

पूर्व (मूल) नाम ब्र. सर्वेशजी। बी.एससी. (अंग्रेजी माध्यम) से शिक्षा प्राप्त। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित।

ओं अर्हं बोल

ओं अर्हं, ओं अर्हं, ओं अर्हं बोल
सभी कार्य की सिद्धि से तू
पहले इसको बोल
ओं अर्हं…

जिसने भी यह मंत्र पढ़ा, दु:ख सारा ही दूर किया
जिसने भी इसको ध्याया, सुख का पारावार लिया
इसकी महिमा इसकी शक्ति, नहीं सका कोई तोल॥ १॥
ओं अर्हं…

भोजन से पहले तू ध्याले, चलते-फिरते भी तू गा ले।
सोने से पहले जग कर के, मन को इसका नाद सुना ले
सिद्ध शुद्ध अविरुद्ध मंत्र से, तू अपना मुख खोल॥ २॥
ओं अर्हं…

दुराचरण को दूर भगाए, सोता तेरा भाग्य जगाए
ध्यान-साधना इसकी करके, मानव अपना भाग्य बनाए
तन-मन-आत्मशुद्धि करे ये, महिमा है अनमोल॥ ३॥
ओं अर्हं…

कुछ हो या न हो

कुछ हो या न हो मेरा मन दुर्बल न हो
प्रेम-भाव से क्षमा-भाव से समतामय मेरा स्वभाव हो
गुणी जनों के दर्शन से मन मंगल-मंगल हो॥ १॥

कुछ हो या न हो मेरे मन में घृणा न हो
कुछ हो या न हो मेरा मन दुर्बल न हो॥
जो भी मिला है मुझको जग में निर्मल-निर्मल लगा है
क्रोध-रहित जो काम-रहित जो ऐसे गुरु की भक्ति नित हो॥ २॥

कुछ हो या न हो मन गुरु-निंदक न हो
कुछ हो या न हो मेरा मन दुर्बल न हो॥
मोक्ष मिलेगा मिलता रहेगा धर्म पलेगा फलता रहेगा
अहंकार तज कुटिल भाव तज मन तुम सरल रहो॥ ३॥

कुछ हो या न हो मेरे मन में छल न हो
कुछ हो या न हो मेरा मन दुर्बल न हो॥

मेरे मन में तेरे मन में

मेरे मन में तेरे मन में सबके मन में हो
बैर न होवे पाप न होवे भाव क्षमा का हो॥

मेरे मन में तेरे मन में सबके मन में हो
मेरा मंगल तेरा मंगल सबका मंगल हो॥

मेरे मन में तेरे मन में सबके मन में हो
मेरा जीवन तेरा जीवन सबका उत्तम हो॥

मेरे मन में तेरे मन में सबके मन में हो
प्रभु के चरणा गुरु के चरणा सबको शरणा हो॥

मेरे मन में तेरे मन में सबके मन में हो
तब निरोगी मन हो निर्भय बोधि समाधि हो॥

मेरे मन में तेरे मन में सबके मन में हो
दुखियारा न कोई होवे मन ज्योतिर्मय हो॥

मेरे मन में तेरे मन में सबके मन में हो…

साअ

टोंक फाटक, जयपुर
दूरभाष : ९९२८०७७२१३

तिरुवल्लुवर रचित 'तिरुक्कुरल' : परिचय, प्रतिपाद्य एवं प्रदेय

● रामनिवास 'मानव'

विश्व की विभिन्न भाषाओं में समय-समय पर ऐसी अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियों का सृजन हुआ है, जिन्होंने अपने मानवतावादी संदेश के कारण, देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण कर, विश्व के एक विशाल जन-समुदाय को प्रेरित और प्रभावित किया है। ऐसी कालजयी कृतियों में संस्कृत भाषा की 'रामायण' (वाल्मीकि) और 'महाभारत' (वेदव्यास), अवधी की 'रामचरितमानस' (तुलसीदास), ग्रीक की 'इलियड' और 'ओडिसी' (होमर), अंग्रेजी की 'पैराडाइज लॉस्ट' (जॉन मिल्टन), जर्मन की 'फॉस्ट' (गेटे) आदि कुछ ऐसी ही कृतियाँ हैं, जो शताब्दियाँ बीत जाने के बाद भी समकालीन परिदृश्य में आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। ये सभी महाकाव्य या प्रबंधकाव्य विधा के अंतर्गत आती हैं। मुक्तककाव्य के रूप में लिखे गए 'तिरुक्कुरल' जैसे ग्रंथों की संख्या बहुत कम, अंगुलियों पर गिनी जाने वाली हैं। महाकवि तिरुवल्लुवर रचित प्राचीन तमिल भाषा का सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रतिष्ठित तथा 'तमिल वेद' और 'पवित्र पुस्तक' के रूप में प्रसिद्ध यह ग्रंथ लगभग दो हजार वर्ष बाद भी अपनी महत्ता अक्षुण्ण रखे हुए है।

'तिरुक्कुरल' का रचना-काल ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर पाँचवीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। नीति-शास्त्र के इस महान् ग्रंथ को धर्म (आराम), अर्थ (पोरुल) और काम (इनबम) शीर्षक तीन खंडों में विभक्त किया गया है, जिनमें क्रमश: ३८, ७० और २५ अर्थात् कुल १३३ अध्याय (अधिगारम) शामिल हैं। प्रत्येक अध्याय में १०-१० कुरल हैं। इस प्रकार इस ग्रंथ में कुल १३३×१०=१३३० कुरल या दोहे सम्मिलित हैं। कुरल एक तमिल छंद है, जिसमें तीन चरण और प्रत्येक चरण में ७-७ शब्द होते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'तिरुवल्लुवर' हों या 'तिरुक्कुरल', दोनों के प्रारंभ में 'तिरु' विशेषण लगा हुआ है, जो हिंदी के 'श्री' शब्द की भाँति, सम्मान या श्रद्धा का सूचक है। इससे यह भी स्पष्ट है कि जैसे उत्तर भारत में राम को 'श्रीराम' और 'भगवद्गीता' को 'श्रीमद्भगवद्गीता' कहकर उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त की जाती है, उसी प्रकार तमिलनाडु में वल्लुवर को 'तिरुवल्लुवर' और कुरल को 'तिरुक्कुरल' कहकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया जाता है। अत: 'तिरुवल्लुवर' का अर्थ हुआ श्रीयुत् वल्लुवर और 'तिरुक्कुरल' का अर्थ हुआ पवित्र छंद।

सुपरिचित रचनाकार। इनकी रचनाओं पर अब तक सत्तर से अधिक शोधार्थी शोध कर चुके हैं। दस अनूदित कृतियाँ प्रकाशित। देश-विदेश की डेढ़ सौ से अधिक संस्थाओं द्वारा हिंदी-साहित्य में विशिष्ट योगदान हेतु विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित।

कवि, संत, दार्शनिक और सिद्ध पुरुष के रूप में विख्यात तिरुवल्लुवर का प्रामाणिक जीवन-वृत्त अभी अज्ञात है। 'तिरुक्कुरल' के प्रथम अध्याय (ईश्वर-स्तुति) में, जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की स्तुति के आधार पर कुछ विद्वान् इन्हें जैन धर्म की श्वेतांबर परंपरा का संत मानते हैं, तो कुछ अन्य चिंतन और दर्शन साम्य के आधार पर इन्हें सनातनी मानने के पक्षधर हैं। सत्य जो भी हो, शैव, वैष्णव, बौद्ध और जैन, सभी इन्हें अपना आराध्य मानते थे। जीवन, दर्शन और काव्य की अद्भुत समानता के कारण दक्षिण भारतीय कवि तिरुवल्लुवर की तुलना उत्तर भारतीय कवि कबीर से की जाती है, जो अत्यंत सटीक और सार्थक जान पड़ती है। दोनों के बीच लगभग दो हजार वर्षों का अंतराल होने के बावजूद उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि एकसमान है, दोनों गृहस्थ थे, दोनों ने ही संन्यास को अधिक महत्त्व नहीं दिया। दोनों का ही विश्वास था कि इनसान गृहस्थ होकर भी, भगवान् में आस्था के साथ पवित्र जीवन व्यतीत कर सकता है। दोनों के लिए मानव-मन की पवित्रता और आचरण की शुद्धता ही धर्म है। दोनों का मानवीय मनोभावों के उन्नयन और सामाजिक उत्थान से भी सीधा संबंध और गहरा सरोकार रहा।

'तिरुक्कुरल' में पुरुषार्थ त्रय को प्रतिष्ठित करने का सार्थक प्रयास तिरुवल्लुवर द्वारा किया गया है। किंतु इस संदर्भ में विस्तृत चर्चा करने से पूर्व 'पुरुषार्थ' के अर्थ और स्वरूप को ठीक से जानना-समझना आवश्यक है। 'पुरुषार्थ' शब्द पुरुष और अर्थ के योग से बना है। यहाँ पुरुष से अभिप्राय विवेकशील व्यक्ति से है तो अर्थ से अभिप्राय है, 'व्यक्ति-जीवन' का लक्ष्य। इसीलिए इसे 'पुरुषैश्यर्ते इति पुरुषार्थ:'

कहकर परिभाषित किया गया है। मोटे तौर पर पुरुषार्थ का अर्थ है, मानव-जीवन का लक्ष्य या उद्देश्य। वेद, पुराण, मनुस्मृति आदि ग्रंथों में चार पुरुषार्थ माने गए हैं, वे हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन्हें 'पुरुषार्थ चतुष्ट्य' भी कहा जाता है। महर्षि मनु पुरुषार्थ चतुष्ट्य के प्रतिपादक माने जाते हैं। भारतीय ऋषि-मुनियों और मनीषियों ने पुरुषार्थ की संख्या अलग-अलग मानी है। चार्वाक केवल दो पुरुषार्थ मानते थे—अर्थ और काम। मनु की धर्म और मोक्ष की अवधारणा को उन्होंने अस्वीकार किया है। महर्षि वात्स्यायन मनु द्वारा प्रतिपादित पुरुषार्थ चतुष्ट्य के समर्थक थे, किंतु उन्होंने मोक्ष अथवा स्वर्ग की अपेक्षा धर्म, अर्थ और काम पर आधारित भौतिक जीवन को अधिमान देते हुए उसे ही सर्वोपरि और सर्वश्रेष्ठ माना है। योग वासिष्ठ के विचार में सिद्धों और शास्त्रों के उपदेश के अनुसार आचरण ही पुरुषार्थ है। तिरुवल्लुवर ने तीन पुरुषार्थ माने हैं—धर्म, अर्थ और काम। इन्हें पुरुषार्थ त्रय या त्रिवर्ग भी कहा जाता है। इनमें मोक्ष सम्मिलित नहीं है। तिरुवल्लुवर की मान्यता है कि धर्म, अर्थ और काम समन्वित जीवन से अलग मोक्ष की कल्पना अतार्किक है। उनका यह दृष्टिकोण बौद्धों, जैनियों और अनास्थावादियों के अधिक निकट जान पड़ता है।

'तिरुक्कुरल' के धर्म-खंड में धर्म के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उससे जुड़े जितने भी विषय हो सकते हैं, उन सबका वर्णन प्रस्तावना, गार्हस्थ्य धर्म, संन्यास-धर्म और प्रारब्ध-प्रकरण शीर्षक चार उपखंडों और अड़तीस अध्यायों में किया गया है। इन विषयों में गृहस्थ-जीवन, संतान-प्राप्ति, प्रेम-भाव, आतिथ्य-सत्कार, मधुर भाषण, कृतज्ञता, संयमशीलता, सदाचरण, क्षमाशीलता, निर्लोभता, लोकोपकार, दानवृत्ति, दयालुता, तपस्या, अस्तेय, सत्य-असत्य, अक्रोध, अहिंसा, संन्यास, सत्य-बोध और प्रारब्ध से लेकर ईश-वंदना, वृष्टि का महत्त्व, संतों की श्रेष्ठता, धर्म का आग्रह, सहधर्मिणी के गुण, परस्त्री मोह-त्याग, प्रलाप-वर्जना, मांसाहार-निषेध, तृष्णा-दमन आदि अन्यान्य विषयों को भी सम्मिलित किया गया है।

'तिरुक्कुरल' के द्वितीय और सर्वाधिक विस्तृत अर्थ-खंड में अर्थ-व्यवस्था, शासन-व्यवस्था, लोक-प्रशासन आदि विषयों का सात उपखंडों और सत्तर अध्यायों में विवेचन किया गया है। इसके शासन-प्रकरण में नरेश-महिमा, शिक्षा-अशिक्षा, बुद्धिमत्ता, दोष-निवारण, शक्ति, समय और स्थान-बोध, सुशासन, दया-दृष्टि, गुप्तचर-व्यवस्था, श्रमशीलता आदि, मंत्रिता-प्रकरण में अमात्य के लक्षण, वाक्पटुता, कर्म-शुद्धि, कार्य-प्रणाली, निर्भीकता, राजा से व्यवहार आदि, दुर्ग-प्रकरण में राष्ट्र और दुर्ग, वित्त-प्रकरण में अर्थ संचय-विधि, मैत्री-प्रकरण में मैत्री-कुमैत्री, स्थायी और कपटपूर्ण मैत्री, शत्रुता का प्रभाव और शत्रु-शक्ति की पहचान, आंतरिक शत्रुता, वार-वनिता, जुआ आदि और प्रजा-प्रकरण में कुलीनता, आत्मसम्मान, महानता, गुण-संपन्नता, शिष्टाचार, लज्जाशीलता, कृषि, दरिद्रता, याचना, नीचता आदि विषयों को सम्मिलित किया गया है।

'तिरुक्कुरल' के तृतीय और सबसे छोटे काम-खंड में प्रेम, सौंदर्य तथा संयोग-वियोग की विभिन्न स्थितियों का वर्णन दो उपखंडों और पच्चीस अध्यायों में कवि ने किया है। इस खंड के गुप्त-प्रेम प्रकरण में नारी-सौंदर्य, संयोग-सुख, सौंदर्य-वर्णन, प्रेम-महिमा, प्रेम-प्रशंसा, लज्जा-परित्याग आदि और पातिव्रत्य-प्रकरण में विरह-वेदना, विरहिणी-व्यथा, विरहजन्य पीड़ा, वियोग-स्मृति, स्वप्नावस्था-वर्णन, दैहिक मलिनता, अधीरता, मिलनातुरता, मान-मनौव्वल का आनंद आदि विषय शामिल हैं।

धर्म-खंड में आत्मा-परमात्मा, भाव-भक्ति, पुण्य-पाप, धर्म-कर्म, तप-त्याग, प्रेम-दया, हिंसा-अहिंसा आदि का वर्णन कवि ने किया है, अत: इसमें दार्शनिक चिंतन की प्रधानता है। इसमें बताया गया है कि जैसे सभी भाषाओं की वर्णमालाओं का आधार 'अकार' है, उसी प्रकार संसार रूपी चक्की का मूल आधार ईश्वर है। जैसे चक्की का पाट चूल के इर्द-गिर्द घूमता है, पूरा ब्रह्मांड ईश्वर की परिक्रमा करता है। अत: ईश्वर में आस्था और उसकी भक्ति आवश्यक है। उससे पाप तो नष्ट होते ही हैं, व्यक्ति का जीवन भी सुधर-सँवर जाता है। कवि के शब्दों में—

आखर सभका पैलड़ा, सै भासां का मूळ।
चाक्की सगळा जगत् सै, पिरभू चाक्की-चूळ॥

× × ×

हिरदै म्हैं पिरभू बसै, चरण भगत का बास।
जूण घणी चोक्खी मिलै, व्है पापां का नास॥

जीवन क्षणिक और नश्वर है। अगले क्षण क्या होगा, कोई नहीं जानता। अत: धार्मिक कार्य को कल पर टालना अनुचित है। धर्म-कर्म को सही समय पर पूर्ण करने से पुण्य-लाभ के साथ आत्मिक शांति भी मिलती है। जीवन में प्रेम का भी बड़ा महत्त्व है। दोनों का ठीक वैसा ही रिश्ता है, जैसा शरीर और प्राणों का होता है। प्रेम बिना जीवन नीरस और प्राण बिना शरीर निर्जीव। धनार्जन में शुद्धता आवश्यक है; एक सीमा से अधिक धन-संचय उचित नहीं। जीवन में प्राणी जो भी पाता है, सब समाज से ही पाता है। अत: सज्जन अपना धन समाज के हितार्थ उसी प्रकार निष्काम भाव से खर्च करता है, जैसे वृक्ष जरूरतमंदों को निस्स्वार्थ भाव से दवा बाँटता है। वस्तुत: जीवन एक साधना है, तपस्या है। जो जितना बाँटता है, उतना ही पाता है; जितना तपता है, उतना ही निखरता है—

छोड्डै मतना काल्य पै, कदे धरम का काम।
फळ पावैगा आम का, गुठळी का बी दाम॥

× × ×

रिस्ता जीवण-प्रेम का, तन-प्राणां का मेळ।
मिलै प्रेम संजोग तैं, सै भावां का खेल॥

× × ×

सज्जण की धन-संपदा, सभकै आवै काम।
सभनैं बांट्टै रूंख ज्यूं, दवा सदा बेदाम॥

× × ×

तप-तपकै सोन्ना बणै, ज्यूं कुंदण अणमोल।
तपतैं उजळै तपसवी, बोल्लै मिट्ठे बोल॥

सभी धर्मों और धर्माचार्यों की भाँति तिरुक्कुरलकार ने भी अहिंसा को परम धर्म माना है। निश्चय ही, सभी धर्मों में अहिंसा सर्वोपरि है, सब धर्मों

का सार है; धर्म का निष्कर्ष है, मूल मंत्र है। धर्म के पश्चात् सच्चाई आती है। जीवन में हर चीज की अति अहितकर होती है, इच्छाओं की भी। सुख धन-संचय से नहीं, मानसिक संतुष्टि से प्राप्त होता है। अभिप्राय यह कि अधिक धन-संग्रह सुख-प्राप्ति की गारंटी नहीं है—

अहिंसा स्रेस्ट धर्म सै, दुज्जा सच नैं जाण।
सभ धरमां का सार यो, सभतैं उप्पर मान॥

× × ×

लिख्या भाग्य म्हैं जै नहीं, सै सुख का संजोग।
कितणा बी धन जोड्य ले, कर ना पावै भोग॥

अर्थ-खंड में अर्थ-व्यवस्था और शासन-प्रशासन संबंधी विभिन्न विषयों, व्यक्तियों, व्यक्तियों के गुण-दोषों, उनकी कार्य-शैली आदि का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। अत: इसमें नीति-शास्त्र का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसमें बताया गया है कि जिस राजा के दर्शन प्रजा को सुलभ हों, यानी जो मिलनसार हो, मधुरभाषी हो, प्रजा की हर बात को सुनने-समझने वाला हो और विवेकशील हो, वही सुशील-सुयोग्य राजा यशस्वी होता है—

जैंका दरसन सुलब व्है, ना व्हैं बचन कठोर।
एस्ये आच्छे निरप का, यस फैलै चहुँओर॥

× × ×

जो बी व्है, सभकी सुणै, आच्छी-भुंडी बात।
सदबुद्दी तैं हे उरै, सच्चाई व्है ग्यात॥

कार्य को ठीक से समझकर और उसे पूर्ण करने का लक्ष्य निर्धारित करके, एकाग्रता और निष्काम भाव से कार्य करने वाले को फल अवश्य मिलता है। लेकिन लाभ के लालच में कभी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे अपना संचित धन नष्ट हो और अपयश भी मिले। गृहस्थ के लिए सर्वाधिक आवश्यक है, घर की सुख-शांति। इससे परिजनों में स्नेह और सद्भाव बढ़ता है। सब मिलकर उत्साहपूर्वक कार्य करते हैं, तो धन-दौलत और ऐश्वर्य की भी वृद्धि होती है। आज टूटते-बिखरते घर-परिवारों और बनते-बिगड़ते संबंधों की क्या स्थिति है, इससे सभी परिचित हैं। अत: ये सब बातें दो हजार वर्ष पूर्व जितनी प्रासंगिक थीं, उससे अधिक आज हैं। देखिए—

लक्स्य मान्यकै काम नैं, ओर समजकै काम।
ध्यान लगाकै जो करै, फळ पावै निस्काम॥

× × ×

कदे लाब का लोभ म्हैं, एस्या करैं न काम।
अपणी पुंजी नस्ट व्है, ओर नाम बदनाम॥

× × ×

बंधु-बांधवां का मिलै, जैंनैं प्रेम अटूट।
घर म्हैं व्है सुख-सानती, दोलत बढै अकूत॥

× × ×

जो माणस व्है आळसी, जमकै भोग्गै भोग।
नस्ट व्है सभ कुलीणता, फंदा डाल्लैं रोग॥

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है, दरिद्रता का वाहक है, रोगों का मूल है। आलसी व्यक्ति बिना हाथ-पैर हिलाए सुख-सुविधाओं का अतिशय उपयोग और उपभोग करता है, भोग-विलास का जीवन जीता है। इससे उसकी प्रतिष्ठा तो धूमिल होती ही है, शरीर भी रोगों का घर बन जाता है। दूसरी ओर, जो व्यक्ति, बैल की भाँति, डटकर परिश्रम करता है, उसकी हिम्मत और उत्साह को देखकर सारे दु:ख सिर पर पैर रखकर भाग खड़े होते हैं, अर्थात् ऐसा कर्मठ व्यक्ति कभी दु:खी नहीं होता—

काम बैल बणकै करै, जो माणस दिन-रात।
हिम्मत ऊंकी देखकै, दुख बी खाज्या मात॥

मानव जीवन में वाणी का बड़ा महत्त्व है। कहा जाता है कि धनुष से निकला तीर और मुँह से निकला शब्द कभी लौटकर नहीं आता। अत: बहुत सोच-समझकर, तौल-मोलकर बोलना चाहिए। वैसे भी व्यक्ति का मुँह खुलते ही पता चल जाता है कि वह कितने पानी में है—

भला-बुरा सभ ग्यात व्है, मुँह तैं निकळै बोल।
सोच्य-समजकै बोलणा, बोलण पैल्यां तोल॥

काम-खंड में प्रेम, प्रेम-महिमा, रूप-सौंदर्य, रूपाकर्षण, संयोग-सुख, विरह-व्यथा, मिलनातुरता, मान-मनौव्वल आदि से लेकर प्रणय-जीवन से जुड़े सभी अन्यान्य विषयों को विवेचन का आधार बनाया गया है। अत: ऐसे विषयों के वर्णन में भावप्रवणता, कल्पनाशीलता और आलंकारिकता की प्रधानता दिखाई पड़ती है। इसे निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है। आकर्षक रूप-सौंदर्य की धनी नवयौवना सुंदर मयूरी जैसी लगती है। कानों की बालियाँ उसके चेहरे को चार चाँद लगा देती हैं। वह यह सोचकर काजल नहीं लगाती कि कहीं इससे उसकी आँखों में बसी प्रेमी की मोहक छवि धुँधली न हो जाए, बादल में छिपे सूरज की भाँति छिप न जाए—

लाग्गै सोंणी सुंदरी, धरै मोरणी रूप।
कान्नां म्हैं बाळी सजी, गोरी लगै अनूप॥

× × ×

प्रेमी नैंनां म्हैं बसै, नैंन बसेरा जाण।
काजळ तैं बी भै लगै, ज्यूं छिप ज्या दिनमाण॥

प्रारंभ में प्रिय के दर्शनमात्र से आनंद मिलता था, किंतु मिलनोपरांत वियोग की आशंका से ही सारा सुख गायब हो जाता है। प्रेम की प्रकृति ही ऐसी है, जितना सुख देता है, बिछड़ने पर दु:ख भी उतना ही देता है, देखिए—

पैल्यां दरसन मात्र तैं, पावै थी आणंद।
संदेह व्है बिछोह का, सुख बी पड़ ज्या मंद॥

× × ×

काम भावना तैं मिलै, आणंद-सुख अपार।
दु:ख बी दे सै काम ही, योहे एंका सार॥

प्रेम की चरम स्थिति में प्रेमिका अपना संपूर्ण अस्तित्व प्रेमी में विलीन कर देती है। प्रेमी से एकाकार होकर वह अलौकिक आनंद का अनुभव करती है और उसके हृदय की सारी पीड़ा समाप्त हो जाती है—

ऊंका मन ऊंका रहा, दे सै ऊंका साथ।
मेरा मन ऊंका हुया, रह्या न मेरै हाथ॥

× × ×

ठंडी छायां कै तळै, ज्यूं मिट्ठा रहै नीर।
त्यूं प्रेमी कै साथ म्हैं, मिटै ह्रिदै की पीर॥

उक्त विवेचन-विश्लेषण से स्पष्ट है कि 'तिरुक्कुरल' मानव-कल्याण, समाज-निर्माण और जगत्-उत्थान के लिए रचित एक उत्कृष्ट काव्य-कृति है, जिसका विषय-वैविध्य देखते ही बनता है। व्यष्टि से समष्टि तक, धरा से गगन तक, कर्म से धर्म तक, जन्म से मृत्यु तक, राजा से प्रजा तक, श्रम से अर्थ तक, प्रेम से क्रोध तक, काम से कामिनी तक, संयोग से वियोग तक, कोई भी विषय कवि से छूट नहीं पाया है। इसमें सत्यं, शिवं और सुंदरम् का; ज्ञान, भक्ति और दर्शन का; शील, शक्ति और नीति का; न्याय, धर्म और कर्तव्य का; काव्य, कला और संस्कृति का; शासन, प्रशासन और अनुशासन का सुंदर सामंजस्य दिखाई पड़ता है। यह किसी जाति, वर्ग, वर्ण, धर्म अथवा क्षेत्र और काल विशेष के लिए न होकर, पूरी मानव जाति, संपूर्ण विश्व और सभी प्राणियों के लिए है। इसीलिए इसका संदेश सार्वजनिक, सार्वभौमिक और सार्वकालिक है।

कवि ने पूरे ग्रंथ में एक ही छंद 'कुरल' का सफल प्रयोग किया है; साथ ही सभी अध्यायों में दस-दस कुरल रखे हैं, जो एक अनूठा प्रयोग है। इससे यत्र-तत्र पुनरावृत्ति-दोष अवश्य आ गया है, किंतु भाव-संप्रेषण में कवि को पूर्ण सफलता मिली है। कसी हुई भाषा, सार्थक अलंकार-प्रयोग, निर्दोष छंद-विधान और मर्मस्पर्शी भावाभिव्यक्ति के कारण यह एक अद्भुत और अद्वितीय काव्य-ग्रंथ बन पड़ा है। विषयवस्तु की दृष्टि से काव्य, नीति और दर्शन, तीनों का सम्यक् संयोग भी इसमें हुआ है।

स्पष्ट है कि 'तिरुक्कुरल' उत्कृष्ट काव्य-कृति और श्रेष्ठ नीति-ग्रंथ होने के कारण एक अनमोल विश्व-धरोहर है। डॉ. आर. चंद्रशेखरन ने उचित ही लिखा है कि 'तिरुक्कुरल' संभवत: संपूर्ण संसार में अकेली ऐसी रचना है, जिसे नि:संकोच वैश्विक साहित्य के प्रतिनिधि उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।···'तिरुक्कुरल' सच्चे अर्थों में साहित्यिक रचनाओं के मध्य एक चमत्कार से कम नहीं है, जहाँ मूल से शिखर तक हर देवता, हर मानवीय गुण, हर सुकृति, हर भाव, हर कर्म और हर संबंध को सार्वभौमिकता प्रदान की गई है। इसीलिए करोड़ों लोगों के लिए यह ग्रंथ आज भी प्रेरणास्रोत बना हुआ है तथा वे इसे धार्मिक ग्रंथ के रूप में पूज्य और प्रणम्य मानते हैं।

५७१, सेक्टर-१, पार्ट-२
नारनौल-१२३००१ (हरियाणा)
दूरभाष : ८०५३५४५६३२

उपकार औषधि

लघुकथा

• सत्य शुचि

उस दिन मन थोड़ा खिन्न-उदास था। अचानक फोन की घंटी घनघनाई और मेरी निगाहें फोन पर जा अटकीं।

"···हलो! हलो!" तुरंत मैंने उगला था।

"हाँ, मैं बोल रहा हूँ···" उसने तेजी से कहा।

"फोन की स्क्रीन पर आपका नाम आ गया···बोलिए!"

"सोचा, आपसे बात की जाए।"

"किस विषय में बात करना चाहेंगे आप?"

"बैठे-बैठे आप याद आने लगे थे, सो···"

"इस खूबसूरत मौके पर मेरी एक नेक सलाह है, यदि आप मानें तो··· ?"

"वह क्या हो सकती है?"

"आप मुझे नहीं, ईश्वर को याद करें तो आपका उद्धार होगा, समझे!"

"नाराज हो गए आप तो।"

"ना-ना··· ! मूलत: आपको समय की कीमत मालूम नहीं है···"

"अपनों के बीच क्या समय की कीमत होती है।"

"मगर एक बात बोलना चाहता हूँ, आप उसे समझने की कोशिश करें।"

"हाँ-हाँ, अंत-पंत, अपनों के अपने ही काम आते हैं।"

"अच्छा···"

"आप बेझिझक कह दीजिएगा।"

"अगर आप अपने मोबाइल से मेरा नाम व नंबर डिलीट कर दें तो···"

"क्या-क्या··· ?"

"हाँ···यह मेरे लिए जिंदगी भर आपका मेरे पर अहसान होगा, रहेगा।"

"बस, इत्ती सी बात!"

"हाँ···यह बात ही मेरे वास्ते बड़ी बात है।" कहते-कहते मैंने अपना स्विच ऑफ किया और पलों में ही बुदबुदाया, 'ऐसों को अपनेपन का आईना दिखलाना ही था।'

साकेत नगर,
ब्यावर-३०५९०१ (राजस्थान)
दूरभाष : ९४१३६८५८२०

सामाजिक समरसता के प्रतिमान थे स्वामी रामानंदाचार्य

• शास्त्री कोसलेंद्रदास

वैदिक सनातन धर्म अति उदार व सहिष्णु है। इसकी दयाशीलता, उदार भावना एवं आत्मनिग्रह की भावना के विचार वास्तविक हैं। वैदिक परंपरा में शांतिपूर्ण ढंग से समाज-सुधार के आंदोलन चलते रहे हैं। इसी वैचारिक विशालता एवं उदारता की ओर संसार का चित्त आकृष्ट करने के लिए सात शताब्दियों पहले चले भक्ति आंदोलन के केंद्र में १२९९ ई. में तीर्थराज प्रयाग में जनमे स्वामी रामानंदाचार्य हैं, जिन्होंने धार्मिक विश्वासों एवं पूजा-उपासना के प्रति सामान्य हिंदुओं के हृदय में भक्ति की ऐसी अलख जगाई, जो आज भी शोभायमान है। रामानंदाचार्य ने काशी के श्रीमठ से रामभक्ति के प्रसार का शंखनाद किया। स्वामी नाभादास द्वारा विरचित भक्तमाल (१६०० ई. के आसपास) के अनुसार उनकी शिष्य परंपरा में १२ महान् संत थे। इनमें महात्मा अनंतानंद, कबीर, सुखानंद, सुरसुरानंद, नरहर्यानंद, पीपा, भावानंद, रविदास, धन्ना जाट और सैना जैसी आध्यात्मिक विभूतियाँ हैं। इनके अतिरक्त दो महिला संत पद्मावती और सुरसरी भी इनकी शिष्य परंपरा में सम्मिलित थीं।

विद्वानों का मानना है कि जगद्गुरु रामानंदाचार्य का प्राकट्य सात सौ वर्ष पूर्व हुआ था। तपोनिष्ठ साधक और वीतराग संन्यासी होते हुए भी परम कारुणिक स्वामी रामानंद ने प्राणिमात्र के कल्याण के लिए जिस सरल हितकर मार्ग का प्रवर्तन किया, जिस अमोघ मंत्र से अभिमंत्रित संदेश को जन-जन तक पहुँचाया, वह आज भी पूर्णत: प्रासंगिक बना हुआ है। धर्म के संबंध में देश-कालजन्य, जो परिस्थितियाँ उस समय थीं, लगभग वही स्थिति आज भी है। यवन आक्रामकों ने सनातन धर्म पर जिस प्रकार कुठाराघात किया था और भारतवर्ष की धर्मप्राण जनता जिस प्रकार क्रूर शासकों के दमन से हतप्रभ थी, अत्याचारों से त्रस्त थी, कई शताब्दियों की परवशता के निष्ठुर पाश से मुक्त होने के बावजूद उसी तरह उसका स्वाभिमान, उसकी धर्मनिष्ठा और आत्मज्ञान आज भी कुंठित है। उस विकट संकट काल में, धर्मरक्षा का व्रत लेकर रामानंदाचार्य ने अवतरित होकर सनातन समाज को उस त्रास से उबारा और धर्म मर्यादा की रक्षा कर उसे पुन: प्रतिष्ठित किया। उन्होंने आर्ष परंपरा को पुनरुज्जीवित किया। मनुष्य-मनुष्य में कल्पित भेद की दीवार को ध्वस्त करते हुए समाज के विभिन्न वर्गों से अपने प्रधान द्वादश शिष्यों का चयन कर धर्म की दीक्षा दी। इससे समाज में समरसता आई और उनके परमोदार मत का जनाधार व्यापक हुआ। स्वामी रामानंद के पश्चात् उनके शिष्यों ने इसी परंपरा को अक्षुण्ण रखते हुए उनकी धर्मपताका को और भी ऊँचे फहराया।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन। धर्मशास्त्र और दर्शनशास्त्र पर पुस्तक लेखनाधीन। संप्रति दर्शन विभाग, जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर में सहायक आचार्य पद पर कार्यरत।

कोई भी वस्तु कितनी ही पुष्ट और सुंदर बनाई जाए, उसके लाख संरक्षण के बावजूद कालप्रभावत: उसमें विकार आना स्वाभाविक है। आज मानव समाज पुन: विकृति की ओर जा रहा है और दुर्दशाग्रस्त हो रहा है। भले भौतिकता से संपन्न हो रहा है, पर आध्यात्मिकता से दरिद्र हो रहा है। रत्नों के लोभ से भ्रमवश काँच-पत्थर के टुकड़ों का संग्रह कर रहा है। धर्म का वास्तविक स्वरूप विलुप्त हो रहा है। निष्ठा मर रही है, आस्था उखड़ रही है, श्रद्धा समाप्त हो रही है और विश्वास विचलित हो रहा है। मानव के भीतर से मानवता निकली जा रही है और स्वार्थ बुद्धि उसे अनाचार के मार्ग पर चलने के लिए उसके कान ऐंठ रही है। धर्म के नाम पर छल-छद्म के ताने-बाने से बुना धर्माडंबर का जामा ओढ़कर परम धार्मिक बनने का ढोंग रचा जा रहा है और इस तरह समाज में धर्माभास और अपसंस्कृति का प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। ऐसी विकट परिस्थिति में सात शताब्दियों पूर्व भगवद्भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक लोकतंत्र की भावभूमि को प्रतिष्ठित करने वाले स्वामी रामानंदाचार्य के भक्ति आंदोलन को पुरातन शास्त्रीय स्थापनाओं से अपार बल मिला था, जिसकी आज भी परमावश्यकता है। परमात्मा श्रीकृष्ण कहते हैं—

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्य: सम्यग्व्यवसितो हि स:॥

तात्पर्य है—'जो अत्यंत दुष्ट होने पर भी मुझे अनन्य भक्ति से भजता है, उसे संत ही माना जाना चाहिए, क्योंकि उसने सही निर्णय लिया है।' आखिर भक्ति का उपक्रम करने वाला भी भक्त ही कहलाता है। ध्यातव्य है कि कोई जीव भगवद्विभूति से बहिर्भूत नहीं है। प्रभु के साथ जीवों का सांसिद्धिक संबंध है। वे महापराधियों के प्रति भी शोभनहृदय हैं। उन्होंने

अपनी ओर से किसी का परित्याग नहीं किया है। यह तो जीव का ही दुर्भाग्य है कि वह अपने पापों के परिणामत: भगवद्विमुख रहता है—जैसे पुत्र माता की गोद में बैठने का सदा ही अधिकारी होता है, एतदर्थ उसे किसी अवांतर योग्यता की आवश्यकता नहीं। परमप्रभु तो अपने इस वचन को सार्थक करने हेतु सर्वदा ही उद्यत रहते हैं—

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोय।
सर्वभाव भजि कपट तजि मोहि परम प्रिय सोय॥

स्वामी रामानंदाचार्य ने इसी उदार भाव को जीव कल्याण का मार्ग बनाया। महात्मा कबीर से उनके मिलने की यह कथा रोमांचित करती है—शताब्दियों पहले बनारस के एक मुसलिम जुलाहे कबीर को गुरु की तलाश थी। उन्हें पता था कि गुरु के बिना सफलता नहीं मिल सकेगी। उनके मन में स्वामी रामानंद को गुरु बनाने की इच्छा थी। तब रामानंद बनारस ही नहीं, बल्कि देश-दुनिया में पहचाने जाते थे। उनका आध्यात्मिक तथा सामाजिक दायरा विशाल और जात-पाँत से परे था। कबीर जानते थे कि आचार्य रामानंद अलसुबह स्नान करने श्रीमठ से पंचगंगा घाट पर उतरते हैं। कबीर सीढ़ियों पर उस जगह लेट गए, जहाँ से रामानंद गुजरते थे। स्नान के लिए गंगाघाट पर उतरे स्वामी रामानंद का पाँव अकस्मात् कबीर पर पड़ा। बहुत अफसोस और अपराधबोध के साथ अँधेरे में स्वामी रामानंद ने झुककर कबीर को उठाया और कहा, 'राम-राम बोलो, तुम्हारा दु:ख दूर होगा।' बस कबीर को राम मंत्र मिल गया। उन्हें गुरु मिल गए और कबीर की 'चदरिया झीनी-झीनी' हो गई। महात्मा कबीर की भक्ति-संवेदना में गुरु का स्थान गोविंद से भी बड़ा है। इसीलिए कबीर जब कभी अपने गुरु रामानंद का नाम लेते हैं तो वे उनका नाम बड़े गौरव और श्रद्धा से लेते हैं—'कहै कबीर दुविधा मिटी गुरु मिल्या रामानंद।' सत्रहवीं सदी में हुए इतिहासकार मुहसिन फनी ने अपनी पुस्तक दबिस्तां-ए-मजाहिब में लिखा है—'कबीर जन्म से मुसलमान थे, पर वे स्वामी रामानंद के शिष्य बनना चाहते थे, क्योंकि रामानंद राम को जानते थे।'

स्वामी रामानंद ऐसे अद्‌भुत गुरु थे, जिन्होंने जातियों और वर्गों में बँटे हिंदू समाज में वह महत्त्वपूर्ण उद्‌घोष किया, जिसकी आज भी जरूरत है। उनकी अप्रतिम घोषणा है—जात-पाँत पूछे नहिं कोई, हरि को भजै से हरि का होई।

स्वामी रामानंद ऐसे अद्‌भुत गुरु थे, जिन्होंने जातियों और वर्गों में बँटे हिंदू समाज में वह महत्त्वपूर्ण उद्‌घोष किया, जिसकी आज भी जरूरत है। उनकी अप्रतिम घोषणा है—जात-पाँत पूछे नहिं कोई, हरि को भजै से हरि का होई। स्वामी रामानंद की १२ शिष्यों की मंडली में कपड़े बुनने वाले बुनकर कबीर ही नहीं थे, बल्कि उसमें संत रविदास भी शामिल थे, जो चमड़े का काम करते थे और काशी की गलियों में जूते सिलते थे। वहाँ एक भक्त धन्ना जाट थे, वहीं दूसरे थे संत सेन नाई, जो लोगों के बाल बनाते थे। उनके शिष्य भक्त पीपा ने गागरौन गढ़ का राजा होने के बाद भी दर्जी की आजीविका को अपना लिया था।

सदन कसाई, कूबा कुम्हार और भक्तमाल के रचयिता नाभादास समेत अनेक संत-भक्त-कवि आचार्य रामानंद के चलाए संप्रदाय के हिस्सा हैं। स्वामी रामानंद ने जन्म सत्ता की बजाय व्यक्ति सत्ता को महत्त्व दिया। भेदभाव को न मानने वाला भारतीय संविधान तो आठ दशकों पहले बना, पर स्वामी रामानंद ने यह नींव १४वीं सदी में ही रख दी थी। उन्होंने अपने प्रवचन और लेखन का आधार संस्कृत के साथ देशज भाषाओं को भी बनाया। उनके कुछ पद्य सिखों के पवित्र 'गुरुग्रंथसाहिब' में संकलित हैं। 'वैष्णव-मताब्ज-भास्कर' में उन्होंने शास्त्रों के आधार पर यह घोषणा ही कर दी थी कि भगवान् अपनी भक्ति में जीवों की जाति, बल और शुद्धता की परवाह नहीं करते। सभी समर्थ और असमर्थ जीव भगवान् को पाने में समान अधिकारी हैं।

उत्तर भारत की लोक-परंपरा स्वामी रामानंद को 'जात-पाँत पूछै नहिं कोई' की घोषणा करके सामाजिक रूप से समावेशी (सोशली इंक्लूसिव) भक्ति-धारणा के प्रतिपादन का श्रेय देती आई है। 'हरि को भजे सो हरि का होई' कहने वाले स्वामी रामानंद मनुष्य की जन्मजात सामाजिक अस्मिता से अधिक महत्त्वपूर्ण उसकी व्यक्ति-सत्ता को मानते थे। ब्राह्मण कुल में जनमे रामानंद ने ब्राह्मण सर्वोच्चता के दंभ को रद्द करके वैष्णवता की जाति-कुलनिरपेक्ष धारणा का प्रचार किया। अपनी अभिव्यक्ति का ही नहीं, साधना का भी माध्यम उन्होंने संस्कृत को नहीं, लोक-भाषा को बनाया।

स्वामी रामानंद के शिष्यों में रामावत संप्रदाय के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों, संस्कृत के विद्वानों के नाम भी हैं, लेकिन अधिक प्रख्यात वे ही हैं, जिन्होंने लोक-भाषा में कविता की और जिनका जन्म तथाकथित 'निम्न' जातियों में हुआ था। पद्मावती नाम की साधिका भी रामानंद की शिष्या थीं।

रामानंद का प्रयत्न संवाद स्थापित करने का था, संप्रदाय निर्माण करने का नहीं। विभिन्न भक्तों, संतों की अद्वितीयता का बखान गागर में सागर भरने के ढंग से करने वाले नाभादास रामानंद के व्यक्तित्व को भी एक मूल सूत्र के जरिए कह देते हैं। दीर्घजीवी रामानंद की स्तुति उनके शिष्यों के नाम गिनाते हुए नाभादास ने (छप्पय ३६ में) इन शब्दों में की है—

अनंतानंद कबीर सुखा सुरसुरा पद्मावती नरहरि
पीपा भवानंद रैदास धन सेन सुरसुर की घरहरि,
औरो शिष्य प्रशिष्य एकटे एक उजागर
विश्वमंगल आधार भक्ति के श्रद्धा के आगर।
बहुत कल वपु धरिकै, प्राणतजनन को पार दिए
श्री रामानंद रघुनाथ ज्यों, द्वितीय सेतु जगतरण किए॥

स्वामी रामानंद ने समाज के विभिन्न तबकों, उनकी जरूरतों और साधनाओं के बीच समझ और विश्वास के पुल बनाए। वैष्णव साधु नाभादास के बाँधे सेतु रूपक की मूल भावना को रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपनी कवि-दृष्टि और कल्प-सृष्टि के जरिए और भी मार्मिक रूप दे दिया। उन्होंने रामानंद पर अनेक कविताएँ रचीं। १९३२ में रची गई 'शुचि' कविता में कबीर चतुर संयोग उत्पन्न करके रामानंद के शिष्य नहीं बन जाते। कवि रवींद्र के रामानंद हृदय की सच्ची 'शुचिता' प्राप्त करने के लिए

कबीर और रैदास तक पहुँचने की पहल स्वयं करते हैं। स्वामी रामानंद के नाम से प्रसिद्ध वह उक्ति याद करें : "जात-पाँत पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।" भगवान् श्रीरामानंद स्वामीजी अपने शिष्यों के प्रति 'वैष्णव-मताब्ज-भास्कर' में कहते हैं—

सर्वे प्रपत्तेरधिकारिणो मता: शक्ता अशक्ता: पदयोर्जगत्प्रभो:।
नापेक्ष्यते तत्र कुलं बलं च न चापि कालो न हि शुद्धतापि वा॥

तात्पर्य है—भगवान् अपनी प्रपत्ति में जीवों के कुल (जाति) बल की और कालशुद्धता की अपेक्षा नहीं करते, इसी कारण समर्थ-असमर्थ सभी जीव भगवान् की शरणागति के अधिकारी हैं।

आचार्य रामानंद द्वारा स्थापित श्रीमठ आज भी काशी में मौजूद है। श्रीमठ में उनकी चरण-पादुकाएँ स्थापित हैं। अनेक संत परंपराएँ आचार्य रामानंद के श्रीमठ से निकलीं। दादू, रामस्नेही, वारकरी, घीसा पंथ, कबीर पंथ और रैदास पंथ जैसी ढेर सारी भक्ति परंपराओं का मूल उद्गम श्रीमठ है। हिंदी साहित्य के अमर ग्रंथ रामचरितमानस के लेखक गोस्वामी तुलसीदास भी स्वामी रामानंद के प्रशिष्य थे।

काशी में गंगा किनारे बना श्रीमठ शताब्दियों से निर्गुण तथा सगुण रामभक्ति परंपरा का मूल केंद्र है। कालांतर में इसकी हर शाखा ने वृक्ष का रूप ले लिया और मूल मरता चला गया। जिस बात पर विवाद है, वह यह है कि श्रीमठ को कब व किसने बनाया? कुछ इसे रामानंद स्वामी का बनाया मानते हैं तो कुछ उनके गुरु स्वामी राघवानंद का बनाया बताते हैं। जिस बात पर कोई विवाद नहीं है, वह यह है कि श्रीमठ मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का सबसे बड़ा केंद्र था।

स्वामी रामानंद का चलाया हुआ संप्रदाय जातीय आधार पर टूट रहे समाज के बीच एक अकाट्य सत्य है। इस संप्रदाय में छुआछूत और खान-पान में कोई भेदभाव नहीं है। यह संप्रदाय समाज को एक सूत्र में बाँधने का धागा है, जो जातीय वैमनस्यता की रामबाण औषधि है। स्वामी भगवदाचार्य के जमाने में महात्मा गांधी ने श्रीमठ को 'सामाजिक समावेशी' मठ की संज्ञा दी थी। रामानंद का वह विशाल श्रीमठ अब काशी में बहुत थोड़ा सा रह गया है। आश्चर्य की बात है कि स्वामी रामानंद का वह विशाल श्रीमठ, जहाँ हजारों फकीर, सैकड़ों जंगम-जोगड़े, नाथपंथी, वैरागी और संन्यासी रहा करते थे, वहाँ अब लोगों के घर हैं, तरह-तरह के पड़ाव हैं, मसजिदें हैं और दुकानें हैं। काशी में श्रीमठ के नाम से बहुत जरा-सी पुण्य भूमि बची हुई है, जहाँ अभी नैयायिक स्वामी रामनरेशाचार्य रहते हैं।

जिस तत्परता और आसानी से रामानंदाचार्य ने अपने समय में धर्म और धार्मिक चेतना से उस समय के समाज की विसंगतियाँ दूर कीं, उसकी आज जरूरत है। मानवता को आधार बनाकर नकारात्मक विचारों के विरुद्ध एक आंदोलन खड़ा करने की जरूरत है। आवश्यकता है एक भाषा, एक मनोवृत्ति और एक प्रतिबद्धता की, जो परस्पर विरोधी धाराओं को इकट्ठा कर उन्हें स्वामी रामानंदाचार्य की तरह रामभक्ति के महासागर में समेट सके।

साअ
अध्यक्ष-दर्शन एवं योग विभाग
जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर-३०२०२६ (राज.)
दूरभाष : ९२१४३१६९९९

एक बाल्टी का व्यवहार

लघुकथा

● **सत्य शुचि**

शादी के बाद आज पहली मर्तबा वह दफ्तर में बगैर नहाए सीट पर था। दरअसल ससुराल से कुछ सगे-संबंधी उसके यहाँ अचानक आ टपके, सो रिश्तेदारों के नहाने-धोने में घर का पानी खलास हो गया था, जिस पर वह निर्वाक् रहा। कदाचित् पत्नी बुरी तरह खफा थी और तत्काल उसने मायके में खुद की मम्मी को फोन खड़खड़ाया था।

"···हाँ बेटी!" मम्मी के स्वर में एक गहरी नाराजगी छितर आई, "तुम्हारे जीजाजी, जीजी कहीं भी आएँ-जाएँ, वह सब तो ठीक है, मगर वह अपने साथ सात-सात जनों को लिये तुम्हारे घर कदम धरे, ऐसा कर उन्होंने अच्छा नहीं किया है। आखिर, तुम्हारा घर कोई होटल-सराय तो नहीं है!"

"हाँ···बिल्कुल सही, मम्मी!" संगीता का लहजा उखड़ा हुआ था, "हालाँकि मेरे घर पर उन्होंने चाय तक नहीं पी थी, बल्कि वे एक आम की पेटी, सेब की पेटी, बच्चों को सौ-सौ रुपए और तुम्हारे जमाई सा को पाँच सौ रुपए देकर ही गए थे···खाली हाथ नहीं थे उनके।"

"फिर भी, रोना तो इस बात का है कि तुझे अपनी पूरी गली से एक बाल्टी पानी जमाई सा के नहाने के वास्ते नहीं मिला···। यह आज के टाइम कितनी बड़ी अद्भुत घटना-दुर्घटना है!"

"हाँ, मम्मीजी···एक बाल्टी पानी के कारण मुझे परिवार में काफी शर्मिंदगी महसूस हुई और अभी मैं फोन रख रही हूँ, मम्मी! ससुरजी इधर को ही आ रहे हैं।"

"अच्छा बेटा,! मैं अब इन रिश्तेदारों की जल्द ही खबर लेती हूँ, तुम ज्यादा सोच-फिकर मत करना, समझी!"

साअ
साकेत नगर,
ब्यावर-३०५९०१ (राजस्थान)
दूरभाष : ९४१३६८५८२०

खुशी की खोज

● गोपाल चतुर्वेदी

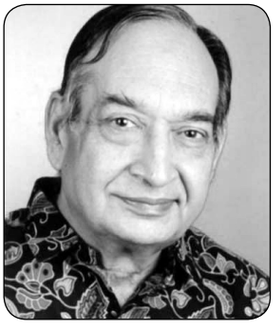

खुशी की खोज युग से लेकर उत्तर-आधुनिक तक की सतत इनसानी तलाश है। यह भी सच है कि आदमी रोते-रोते जन्म लेता है। कौन कहे कि अवचेतन पर इसी का प्रभाव हो कि उसका भरपूर प्रयास रहता है कि उसके भविष्य में ऐसे दु:खद पल नहीं आएँ कि आँखें अनायास गीली हों? कुछ समय के लिए इसमें कुछ सफल भी रहे हैं। हमने स्वयं देखा है। हमारे एक परिचित हमउम्र के जाने पर उनके दोनों पुत्र इस प्रश्न में उलझे थे कि जाते-जाते वृद्ध कितनी दौलत किसके नाम छोड़ गया है? बचपन से यौवन तक जीते-जी दोनों बूढ़े को मुँह नहीं लगाते थे। उनकी अपनी-अपनी व्यस्तताएँ थीं। एक एम.ए. कर रहा था। उसका भविष्य का सपना देश की नेतागीरी था। वह छात्रों की यूनियन में सचिव बनकर अपने भविष्य के मिशन के इसी पूर्वाभ्यास में जुटा रहता। कोई-न-कोई वास्तविक या काल्पनिक समस्या पर वह अपने प्रोफेसर या कुलपति को धमकी देता पाया जाता कि वह छात्रों के व्यापक हित का ध्यान रखें वरना परिणाम अनुकूल न होंगे?

उसका इकलौता लक्ष्य स्थानीय राजनेताओं में संपर्क बनाए रखना था। संभव हो तो, उनके माध्यम से प्रांतीय और राष्ट्रीय नेताओं से। जैसा इधर अकसर होता है, आदर्श, सिद्धांत या उसूलों से, किसी दल विशेष का न होकर, इस विषय में उसका रुख कतई लचीला था। सैद्धांतिक बंधन से मुक्त, उसका इकलौता सिद्धांत उसका निजी स्वार्थ था। कौन दल उसे चुनाव का प्रत्याशी बनाए? किस पार्टी की कब जीत की अधिक संभावना हो? वह उसी का सदस्य-कार्यकर्ता बनने को प्रस्तुत है। बस सवाल अवसर व वक्त का है।

पिताश्री की मृत्यु पर उसने शहर के हर नेता को घर निमंत्रित किया। सब आए भी, पिताश्री की फूलमाला पहने चित्र का दर्शन करने। इस सार्वजनिक संपर्क के बाद उसका पिता जाने की शोकाकुल, रोंआसी मुद्रा का भी अंत हो गया। वह और उसके भाई उनकी पूरी संपत्ति की तलाश में लग लिये। इस सिलसिले में उनके कमरे के लॉकर, मेज के दराज, बिस्तर, दो सूटकेस का, एक-एक कोना, दोनों भाइयों ने मिलकर छान मारा। सरकारी कार्यालय के चक्कर भी काटे, जहाँ से पेंशन आती थी, उस बैंक के भी, जो यह रकम उन्हें हर माह देता था। जहाँ उन्हें बैंक का नंबर दिखा, वह उस बैंक की ओर दौड़ लिये, जमा-राशि की खोज-खबर लेने। हर बैंक की राशि मिलाकर उन्होंने कुल आठ-दस लाख की जमा-पूँजी छोड़ी थी। यह राशि उस घर के अतिरिक्त थी, जो पास के मोहल्ले में किराए पर था। वह इस समय तकरीबन दो करोड़ की राशि दे जाता। रहने वाले घर को शामिल कर बूढ़ा चार-पाँच करोड़ का स्वामी था।

वर्तमान का फिल्मी प्रभाव है। कोई मिलने वाला आता तो दोनों की शक्ल पर शोक की रेखाएँ उभर आतीं। चाचा-ताऊ का परिवार आया तो छोटे-बड़े भाई की अभिनय प्रवीणता की प्रतिभा उभर आई दोनों की नम आँखें, पिता के प्रति स्नेह की कथा, मौन रहकर ही सुना गई। हर मिलने वाले ने स्वर्गवासी पिता के बेटों के गुण गाए 'भाग्यशाली थे रामदुलारे। ऐसे पितृभक्त बेटे सबको कहाँ मिलते हैं?'

बेटों ने पिता की संपत्ति का अनुमान तो लगा ही लिया था। तब से वे उनकी वसीयत की खोज में जुटे थे। दरअसल, वसीयत न होती तो भी, सामान्य तौर पर कुछ फर्क नहीं पड़ता। पर अंत के दो-तीन वर्ष पूर्व, दोनों भाइयों को अब याद आया कि उनके बुढऊ की एक वकील से बहुत पटने लगी थी। सुबह की सैर बूढ़ों का प्रिय शौक है। वहाँ बैंच पर बैठकर बूढ़े अपने लायक-नालायक संतान को कोस लेते हैं, कभी सियासी चर्चा, कभी घटती नैतिकता की बातचीत, कभी महँगाई का रोना, कभी अतीत का स्वर्णिम युग। वक्त का अंत है, विषयों का नहीं। धीरे-धीरे आठ से नौ बजते हैं, तब बेमन वृद्धों को घर की याद आती है। भोर के पंछी, अपने-अपने नीड़ की ओर लौटने को विवश हैं। अभी दोनों भाइयों का विवाह नहीं हुआ था। घर में सिर्फ पिता के जमाने का राजू था। वह भी पिता का समकालीन। उसके बेटे की बहू, चाय-नाश्ते से लेकर खाने-पीने का सारा इंतजाम देखती। उनका पूरा परिवार घर के आउट-हाउस में बसा था। राजू भी पिता के दफ्तर के चपरासी थे और उनके खास विश्वासपात्र। उनसे वकील के नाम, अते-पते की आशा भी व्यर्थ थी। उन्हें वकील में क्या रुचि? बस उनकी स्मृति इस तथ्य तक सीमित थी कि साहब भोर में घूमने जाते हैं और एक-दो घंटे के अंतराल के बाद लौटते हैं।

दोनों भाई एकमत थे कि बाबूजी उर्फ उनके पिता बेटों से अप्रसन्न थे। उनकी महत्त्वाकांक्षा थी कि बेटे प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षा में भाग लें, वहाँ सफल होकर उनका नाम रोशन करें। पर दोनों ने उनकी एक न सुनी। उल्टे एक वकालत की डिग्री लेकर बिना किसी मुवक्किल के वकील बन बैठा। दिन भर वह अपने सीनियर के यहाँ बैठकर बकौल बाबूजी मक्खी मारता, खाली हाथ लौट आता और दूसरा नेतागीरी के सपनों में मगन था। बाबूजी को दूर-दूर तक बेटों की सफलता के आसार तक नजर नहीं आते। उल्टे उनकी निराशा और बढ़ती जाती।

दोनों भाई पिता के काले कोट वाले साथी के प्रति शंकालु थे। कौन कहे, बाबूजी को क्या सूझ बैठे? बाबूजी भी अनबूझ आवेश के चलते कोई दूरगामी कदम न उठा लें? इधर बाबूजी दान, परोपकार और अध्यात्म जैसी व्यर्थ की बातें बहुत करने लगे थे। जब सुनो तो दान-पुण्य की चर्चा। वह सशंकित हुए कि कहीं काले कोट वाला कुछ उल्टी-सीधी वसीयत न बनवा दे? वकीलों का क्या भरोसा? उनका कोई सगा तो होता नहीं है। जब तक केस, तब तक फीस। ताल्लुकात भी पैसे के अवसर अधिकतर केस तक चलते हैं। उसके बाद वकील के अपने और मुवक्किलों में व्यस्त हो जाता है। दोनों भाई इसी भय से आक्रांत थे। बूढ़े वकील के साथ मिलकर कहीं सीमित संपत्ति का दान न कर बैठा हो? तब क्या होगा? दोनों के रहने, खाने और अस्तित्व का प्रश्न था। एक की वकालत की भविष्य की शोहरत और प्रसिद्धि का सवाल था, दूसरे की नेतागीरी का। पिता की मृत्यु से दोनों मन-ही-मन मुदित थे कि डेढ़-दो करोड़ बैठे-ठाले मिले तो लक्ष्य की प्राप्ति में कुछ मदद होगी? पर इस वसीयत के खौफ ने दोनों का चैन हर लिया। उन्हें ऐसा लगता कि उनके पास लैप-टॉप तो है, पर उसे चलाएँ कैसे? उसका 'माउस' ही गायब है। बिन माउस वाले लैप-टॉप का उनके लिए उपयोग ही क्या है?

इस बीच उनके फोन अनजान नंबर से आती कॉल से घनघनाते रहते। उसूलन, वह दोनों इस प्रकार की 'कॉल' बीच में ही काट देते या उठाते ही नहीं। अचानक एक दिन, सबेरे-सबेरे दरवाजे पर खटखट हुई। बिजली दिन में कई बार घंटों अपनी अनजान यात्रा पर निकल पड़ती थी और लौटती ही नहीं। बिजली बोर्ड के विषय में बहुधा यह मजाक लोकप्रिय हो गया था कि वह किसी 'दोष' या 'तकनीकी फाल्ट' होने पर उसे सुधारने के स्थान पर समवेत प्रार्थना करने में जुट जाता है, बिजली अपने आकाशीय प्रेमी से विदा लेकर शीघ्र पधारे। ऐसी स्थिति में दरवाजे पर थाप देना या उसे खटखटाना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। दोनों भाई चौंक पड़े। एक ने दरवाजा खोला तो आगंतुक ने वसीयत की प्रति दिखाई, उसमें स्पष्ट था कि इस घर के अलावा दूसरा मकान और सारा कैश उनके बाबूजी अर्थात् रामदुलारे 'कल्याण वृद्धाश्रम' को दान में दे गए। जो सुरक्षित था, वह उनके सिर की छत अर्थात् यह मकान था। दोनों की आशाओं पर तुषारापात हो गया।

जहाँ कुछ खुशी को विरासत के आधार पर खोजते हैं तो कुछ व्यापार के जरिए। कइयों का धंधा आयात-निर्यात है। इस बहाने विदेशों का सैर-सपाटा भी हो जाता है। सफल रहे तो एक-दो पल खुशी के भी मिलते, पर अधिकतर परिवर्तित दुनिया और समय के अनुरूप इतने झगड़े-झंझट और गुणवत्ता के मसले रहते कि बैठे-ठाले चैन नहीं है। दिमागी उलझन लगी रहती है खुशी के स्थान पर। न पाने का अवसर होना, न उसकी तलाश का।

भ्रष्टाचारियों का इकलौता लक्ष्य ऊपर की कमाई है, जो नियमित वेतन से इतर है। कइयों ने इस कमाई से आट्टालिकाएँ बनवाई हैं, अपने पद के प्रभाव से उसमें बैंक से लेकर व्यापारिक संस्थानों तक को किराए पर दिए हैं। कहीं ऐसा न हो कि पेंशन पर गुजारा करना पड़े? बेटों का जीवन शान से बीते, साथ ही नालायक बेटे का भी। पुश्त-दर-पुश्त उनका आभार मानें जैसे कि भारतीय प्रजातंत्र का चलन है। उसमें एक पारिवारिक प्रजातंत्र की पुनीत परंपरा है। होगा तो प्रधानमंत्री का बेटा प्रधानमंत्री ही होगा, अथवा मुख्यमंत्री का बेटा मुख्यमंत्री ही बनेगा।

एक अन्य घरेलू व्यापार है। उसमें गजब की प्रतियोगिता है। सेल्स टैक्स से लेकर 'जी.एस.टी.' तक का चक्कर है। छोटे-मोटे अफसर अपनी दिन-प्रति-दिन की वसूली के लिए जीभ लपलपाते प्रस्तुत हैं। यह मुद्दा इतना गंभीर है कि कई व्यापारिक संस्थान इसके लिए अलग अधिकारी नियुक्त किए हुए हैं। जिनका काम ही दे-दिवाकर इन रोजमर्रा के प्रतिदिन के मसलों को निबटाना है। अगर कोई गंभीरता से सोचे तो उसे लगता है कि मनुष्य की रगों में खून की जगह भ्रष्टाचार का लहू दौड़ रहा है। यह तथ्य सरकारी-कर्मियों के लिए शत-प्रतिशत सच है, उन सबके लिए भी जो अधिकार के स्थान पर बैठे हैं। इससे एक तथ्य स्पष्ट है। खुशी सोने-चाँदी के सिक्कों में उपलब्ध नहीं है।

भ्रष्टाचारियों का इकलौता लक्ष्य ऊपर की कमाई है, जो नियमित वेतन से इतर है। कइयों ने इस कमाई से आट्टालिकाएँ बनवाई हैं, अपने पद के प्रभाव से उसमें बैंक से लेकर व्यापारिक संस्थानों तक को किराए पर दिए हैं। कहीं ऐसा न हो कि पेंशन पर गुजारा करना पड़े? बेटों का जीवन शान से बीते, साथ ही नालायक बेटे का भी। पुश्त-दर-पुश्त उनका आभार मानें जैसे कि भारतीय प्रजातंत्र का चलन है। उसमें एक पारिवारिक प्रजातंत्र की पुनीत परंपरा है। होगा तो प्रधानमंत्री का बेटा प्रधानमंत्री ही होगा, अथवा मुख्यमंत्री का बेटा मुख्यमंत्री ही बनेगा। 'ऐसे राजसी, शाही परिवार हमारे लोकतंत्र की सामंती शोभा है। कुछ को इस पर गर्व है, ऐसे विश्व में कितने लोकतंत्र हैं, जो अतीत की सामंती गरिमा को साथ लेकर चलते हैं। हमने प्रजातंत्र और सामंत-तंत्र का मध्यम मार्ग चुना है। दुनिया में कहीं का जनतंत्र ऐसा है क्या?'

हमें लगता है कि सरकार हो, व्यापार हो या अन्य कोई रोजगार, सबकी अपनी-अपनी समस्याएँ हैं। कुछ का जीवन इनसे जूझने में ही बीत जाता है, खुशी कहाँ से हासिल हो? कमाई भ्रष्टाचार की हो या ईमानदार व्यापार की, वह अपने साथ जोखिम कठिनाइयाँ लाती है। अवैध कमाई के खतरे हैं। उनके रहते कोई खुश रहे तो कैसे रहे?

ईमानदारी की कमाई में आयकर की खुर-पेंच हैं, आयकर विभाग का काम ही आय बढ़ाने के नए-नए अन्वेषण करना है। कैसे-कैसे करके उसके नए स्रोत तैयार हों? कैसे कर व्यक्ति की भले घटे, सरकार की कमाई बढ़े? कैसे कर को परिभाषित करें उसके दायरे में और अधिक धन आए?

यह इस विभाग की ऐसी सिफत है, जिससे रोजगार बढ़ता है। सनदी लेखाकार (चार्टर्ड अकाउंटेंट) हर व्यापारिक उद्यम की एक अनिवार्य आवश्यकता है। इसी प्रकार आयकर के विशेषज्ञ वकील भी होते हैं, जो संस्थानों की ओर से इनकम टैक्स विभाग के काल्पनिक या वास्तविक अन्यायों के विरुद्ध मुकदमे लड़ते हैं। कतई साँप और नेवले के मिथकीय

युद्ध का किस्सा है। देखा न आपने है, न हमने, पर उसका जिक्र तो करना ही पड़ता है।

कभी-कभी हमें प्रतीत होता है कि खुशी स्थायी रूप से तो किसी को उपलब्ध नहीं है, पर उसका एकाध पल सबके जीवन का अंग है, जैसे पहली बार झूला झूलना या हरियाले बगीचे के खिलते फूलों को देखना या जीवन का प्रथम प्रेम। कहीं खुशी, उस हँसती-मुसकराती चंचल लड़की के समान तो नहीं है, जो घर से स्कूल या बाजार जाते-जाते गायब हो जाए और इनसानी पाशविक प्रवृत्तियों की शिकार हो? पुलिस ने बहुत प्रयास करके उसकी क्षत-विक्षत लाश बरामद की है। उसके पल भर के दर्शन तो सबने किए हैं, पर उसकी स्थायी गुजर-बसर किसी के साथ नहीं है। यह जीवन की क्रूर सच्चाई है, जिससे इनकार करना कठिन ही नहीं, असंभव है। कौन कहे यह सिर्फ रूमानी साहित्य का न होकर, जिंदगी की वास्तवकिता का वर्णन है!

खुशी की खोज में, अपने-अपने अंदाज में सब लगे हैं, पर पूरी तरह सफल शायद कोई नहीं हुआ है। यह कुछ-कुछ नश्वर जीवन में अमरता की तलाश है।

सा.अ.

९/५, राणा प्रताप मार्ग,
लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ९४१५३४८४३८

क्षणिका

बारह क्षणिकाएँ

• हरकीरत हीर

सुपरिचित रचनाकार। अब तक 'इक-दर्द', 'खामोश चीखें', 'दीवारों के पीछे की औरत' (काव्य-सग्रह), 'बदमाश औरतें', 'आग की अक्षर', 'अवगुंठन की ओट से सात बहनें', 'माँ की पुकार', '६० कवियों की माँ' विषयक रचनाओं का काव्य-संग्रह (संपादन), केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा 'दर्द की महक' काव्य-सग्रह को एक लाख का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त।

: एक :

किताबें
जिनके बीच
रखे रहते हैं मुहब्बत के फूल
बरसों बाद भी महकती हैं
इक इक अक्षर में···

: दो :

कागज तो
बहुत खुशबूदार था
कलम भी बेशकीमती
मगर कलम से
निकलने वाले लफ्ज
खारे थे
नज्म जिंदा रहती भी तो कैसे?

: तीन :

पता है
तुम्हारे सबसे कमजोर
लफ्ज कौन से होते हैं?
जब भी तुमने
ऊँची आवाज से
नज्म को दबाना चाहा···

: चार :

खामोश सी
रहने लगी है नज्म
जब से मुहब्बत करने लगी है
पता नहीं गलती वक्त की थी
या मुहब्बत की
मगर बहुत अंदर तक
तबाही मचाते हैं वे शब्द
जो लिखे नहीं जाते···

: पाँच :

मैंने नज्म से कहा
तुम्हें लफ्जों से अपनी
पाकीजगी साबित करने की
जरूरत नहीं
पाकीजगी किसी की जुबाँ से नहीं
नजरों से
खुद बयाँ होती है···

: छह :

नज्म का
लफ्जों का रिश्ता
अनजाने में ही बन गया था
जब दर्द हावी हो
जिंदगी से जुड़ गया था···

: सात :

मेरी नज्म को
किसी दिल में तो जगह नहीं मिली
मगर···
वो जमाने की
दुआओं में तो है···

: आठ :

ऐ नज्म!
मत चाहा कर किसी को
इस तरह···
यहाँ इनसान और मुहब्बत तो क्या
जिंदगी तक बेवफा है···

: नौ :

कुछ रिश्ते
कभी नहीं मरते
बातों से जख्मी होकर
आँखों से बहते हैं
जो आँखों से नहीं बह पाते
उम्र भर जलते हैं···

: दस :

इक नजर में
तुम्हें मेरी नज्में
समझ आतीं भी तो कैसे
इन्हें पढ़ने के लिए
नजरों में
मुहब्बत की फहम चाहिए···

: ग्यारह :

मेरी नज्में
जिंदगी से ताउम्र
समझौता करती रहीं
खुदाया!
शौक जीने का
इतना भी नहीं था उन्हें···

: बारह :

फासलों में
तुमने वही पढ़ा
जो···
मेरी नज्म ने लिखा ही नहीं···

सा.अ.

१८ ईस्ट लेन, सुंदरपुर
गुवाहाटी-७८१००५ (असम)
दूरभाष : ८६३८७६१८२६

प्रयाग महाकुंभ और गंगा की निर्मलता

• प्रमोद कुमार अग्रवाल

भगवद्पुराण में लिखा है कि गंगा ने प्रदूषण के भय से पृथ्वी पर आने से मना कर दिया था, तब भगीरथ ने मनुष्य जाति की ओर से उनकी शुचिता की रक्षा करने का वायदा किया था। भारतीयों द्वारा इस वायदे को पूरा करने के लिए सन् १९८५ में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की अध्यक्षता में गंगा कार्य योजना लागू की गई, जिसका उद्देश्य था कि गंगा में ७० प्रतिशत प्रदूषण को रोकना तथा १९८९ के कुंभ मेले के दौरान गंगाजल की स्नान योग्य गुणवत्ता सुनिश्चित करना। स्नान योग्य जल के लिए उसका बी.ओ.डी. (बायो ऑक्सीजन डिमांड) ३ मि.ली. ग्राम प्रति लीटर या इससे कम हो। पीने योग्य पानी में २ मि.ली. ग्राम प्रतिलीटर या उससे कम तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा प्रति लीटर कम-से-कम ५ मि.ली. ग्राम प्रति ली. हो, पी.एच. ६.५ से ८.५ के बीच में अब नहाने योग्य जल में कुल घुलित कॉलीफॉर्म की संख्या ५०० से बढ़ाकर २५०० फीकल कॉलीफॉर्म प्रति १०० मि.ली. तक कर दी गई है। ये मानक २५ सितंबर, २००० को भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित हैं।

वर्तमान में संगम, प्रयागराज पर जल की स्थिति की जानकारी आवश्यक है। वर्ष १९८९ और २०१३ में कुंभ मेले के दौरान गंगाजल की गुणवत्ता उपलब्ध कर ली गई थी। वर्तमान में भी उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार जून २०२३ में संगम पर बी.ओ.डी. २.९ मि.ली. ग्राम प्रति लीटर है, जो संतोषजनक है। उसके पश्चात् गंगा की सफाई योजना का काम सरकारी योजना की भाँति हो गया तथा इसमें देश की अधिकांश नदियाँ सम्मिलित कर ली गई थीं। गंगा कार्य योजना के स्थान पर राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना हो गई एवं पर्यावरण हेतु संपूर्ण देश में धनराशि आवंटित हुई, पर जहाँ राज्य सरकारें अपना अंशदान न दे सकीं, उन प्रदेशों में योजना लागू नहीं हो सकी।

सन् १९८९ में प्रयागराज नगर की जनसंख्या प्राय: दस लाख थी, वह संगम पर गंगाजल की गुणवत्ता प्रदूषित करने वाली जनसंख्या प्राय: १५ लाख हो गई। अत: जो आज प्रयागराज में प्रदूषण बोझ है, वह प्राय: ८१ नालों के जरिए २ करोड़ लीटर मलजल प्रतिदिन हो गया है, जबकि १९८९ के दौरान यह १० करोड़ लीटर मलजल से अधिक नहीं था। इस योजना में सीवर लाइन की सफाई, पंपिंग स्टेशनों की क्षमता वृद्धि, सामुदायिक एवं घरों में जलधौत शौचालयों का निर्माण एवं नदी पर पक्के घाटों तथा धोबी घाटों का निर्माण। सन् २०२५ के महाकुंभ के समय योजनाओं की बाढ़ सी आ गई है। यह तो सरकारी कार्यदायी विभागों या संस्थाओं को चुनौती है कि

भारतीय प्रशासनिक सेवा से अवकाश प्राप्त डॉ. प्रमोद कुमार अग्रवाल हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। वे १९८७ से १९९२ तक गंगा निर्मलीकरण योजना में केंद्र सरकार की ओर से उ.प्र. में निदेशक रहे। हिंदी में पचपन पुस्तकें तथा अंग्रेजी में बीस से अधिक पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाओं में सम-सामयिक विषयों पर लेख प्रकाशित।

क्या वे श्रद्धालु जनता के लिए संगम, प्रयागराज तथा गंगा-यमुना में स्नान योग्य मानक जल सुनिश्चित कर सकेंगे। गंगा या यमुना में मलजल को संगम तक पहुँचाने के पूर्व ही उसके रोकने तथा दूर ले जाकर शुद्धीकरण करने की व्यवस्था की गई है, क्योंकि कोई भी नदी सफाई योजना, उसके किनारे रहने वालों के घरों से ही प्रारंभ होती है तथा मलजल को संगम से ८-१० कि.मी. दूर गिरने से रोकना आवश्यक है, क्योंकि एक अनुमान के अनुसार गंगाजल ८ कि.मी. चलकर स्वयं शुद्ध हो जाता है। यह गंगाजल में अंतर्निहित क्षमता अन्य नदियों के जल से अधिक है, क्योंकि गंगाजल हिमालय से यात्रा करते समय अपने में वे जड़ी-बूटियाँ समाहित कर लेता है, जो सभी प्रकार की गंदगी से लड़ सकती हैं, फिर गंगा रेत, गंगाजल को निरंतर साफ करती रहती है। यही कारण है कि प्रयागराज संगम में जल की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए यमुना नदी पर अधिक योजनाएँ ली गई हैं, क्योंकि संगम पर यमुना जल की मात्रा गंगाजल से अधिक है। यमुना गंगा की बड़ी बहन भी है। अत: कोडरा, सुलेमसराय, पोनघाट, नोमा पाडरी तथा नैनी आदि स्थानों पर प्राय: दस शुद्धीकरण संयंत्रों का जाल फैलाकर संगम पर गंगाजल की गुणवत्ता को स्नानयोग्य सुनिश्चित किया गया। इससे करोड़ों स्नानार्थियों तथा तीर्थयात्रियों को जहाँ एक ओर विशुद्ध जल उपलब्ध होगा, वहाँ प्रयागराजवासियों को आगामी दशक में निश्चिंत होकर शहर में नगरीय सुविधाएँ प्राप्त होंगी, जो उत्तर प्रदेश के ही नहीं अपितु अन्य नगरों में दुर्लभ हैं।

औद्योगिक प्रदूषण एक बड़ी समस्या है तथा वह प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। उद्योगपतियों को औद्योगिक प्रदूषण को नियंत्रण करने के लिए उत्सर्जित अवशिष्ट जल को साफ करने के लिए संयंत्र लगाना चाहिए। क्या औद्योगिक घरानों के व्यक्तिगण गंगा प्रेमी नहीं हैं? वे समाज में अधिक शिक्षित एवं क्षमताशील व्यक्ति हैं।

उन्हें अपने प्रदूषण को स्वयं सँभालना चाहिए, ताकि वे समाज से अलग-थलग न पड़ जाएँ।

गंगा में स्नान करते समय जो शिकायतें सामने आती हैं, वे स्थानीय प्रदूषण की हैं, जैसे शवदाह गृहों की स्थापना के बावजूद लोग शवों को नदी में बहा देते हैं। नदी के किनारे मल विसर्जन करते हैं। घर का सब कचरा फेंकते हैं तथा पुराने फूल, मूर्तियाँ तथा दूध आदि सामान बहा देते हैं। इसके लिए जनजागरण आवश्यक है, जो कुंभ एवं मेलों के दौरान बड़े पैमाने पर देखा जाता है। फिर भी कुंभ के दौरान लोग बीमार नहीं पड़ते।

प्रयागराज के अधिकांश नालों का बहाव यमुना की ओर है। उसमें तीन बड़े नाले घाघर, चाचर एवं मोरीगेट नाला संगम से ४ कि.मी. से कम दूरी पर हैं। इनसे बहने वाला मलजल नियंत्रित होना ही चाहिए। ऐसा न हो कि दिन में मलजल नियंत्रित हो तथा रात के अँधेरे में उसे छोड़ दिया जाए। अब तो इन योजनाओं के रख-रखाव पर भी केंद्रीय सरकार ने ७० प्रतिशत अंशदान देने की पेशकश की है। अत: इन योजनाओं का रख-रखाव नागरिकों को लेकर बनाई गई समिति की देख-रेख में होना चाहिए तथा भ्रष्ट एवं लापरवाह कर्मचारियों तथा अधिकारियों को भी पर्यावरण अधिनियम के अंतर्गत दंडित करने का प्रावधान होना चाहिए। कम-से-कम मुख्य स्नान के दिनों संगम, गंगा एवं यमुना के जल की गुणवत्ता की जनता को सूचना होनी चाहिए, जैसे वायु प्रदूषण की सूचना मोबाइल पर भी दी जाती है।

शहरी और औद्योगिक ठोस अपशिष्ट पदार्थों जैसे कूड़ा-करकट आदि से विभिन्न रासायनिक विधियों द्वारा अन्य उपयोगी पदार्थ बनाए जा सकते हैं। यहाँ तक कि उनसे विद्युत् भी उत्पन्न की जा सकती है। इन पदार्थों को जलाने या पुन: चक्रण की व्यवस्था करना अति आवश्यक है। आशा है कि संपूर्ण प्रयागराज शहर एवं आस-पास जलधौत शौचालय का निर्माण करके मल ढोने की प्रथा बंद करने के इलाहाबाद महानगरपालिका के प्राक्तन मेयर पं. जवाहर लाल नेहरू का वर्ष १९२७-२८ का स्वप्न पूरा हो गया। जानवरों का गंगा-यमुना में नहलाना बंद करके लोग गंगा-यमुना के जल को पीने योग्य बनाने का प्रयत्न करेंगे।

हमारे देश में उत्तम श्रेणी के तकनीशियनों तथा अभियंताओं का अभाव नहीं है। आशा है कि वे पूर्ण इच्छाशक्ति से संगम की सफाई में जुटेंगे तथा प्रशासनिक एवं राजनैतिक प्रबल इच्छाशक्ति उन्हें इस महायज्ञ में सहयोग करेगी।

कुंभ क्षेत्र में निरंतर यज्ञों का आयोजन प्रदूषण कम करने में सहायता करता है। वायु अपने साथ में यज्ञीय स्थल की यज्ञीय औषधों को बहाकर ले जाती है और शुद्ध वायु शरीर में प्रवेश कर नीरोग करती है और आयु को बढ़ाती है तथा पर्यावरण को भी शुद्ध करती है। शुद्ध वायु के सेवन से हमारा रक्त शुद्ध होता है। उसमें रोग के कीटाणु-प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। अंतत: जल प्रदूषण भी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत प्रचेष्टा से या सफाई से अपने शरीर में जाने से रोक सकता है।

अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में लिखा है कि शहंशाह अकबर गंगाजल ही पीना पसंद करता था। उसके लिए उसने एक अलग विभाग का गठन किया, जिससे हर समय शुद्ध एवं ताजा गंगाजल ऊँटों पर लादकर ले जाया जाता था। उसके उत्तराधिकारी जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब ने भी इस परंपरा को जारी रखा।

धन्वंतरि ने कहा है कि गंगाजल एक औषधि है तथा चरक ने कहा कि गंगाजल एक अति उत्तम भोजन है। भारत के सभी लोग मिलकर गंगा की प्राचीन शुचिता को फिर से लौटाने का प्रयत्न करेंगे। गंगा भारत की संस्कृति तथा सभ्यता की प्रतीक है। अत: गंगा एवं अन्य नदियों को उनका अपना मौलिक स्वास्थ्य लौटाना हमारा राष्ट्रीय एवं संवैधानिक कर्तव्य है, जिसकी अवधारणा भारत के संविधान के ५१क अनुच्छेद में निहित है। यह कार्य केवल सरकारी योजनाओं एवं प्रयत्नों से नहीं पूर्ण हो सकता। उसके लिए गैर-सरकारी संगठनों, स्थानीय निकायों तथा जनता की भागीदारी आवश्यक है।

४०९, मार्बल होम्स,
सेक्टर ६१, नोएडा-२०१३०१
दूरभाष : ९६५०००२५६५

पाठकों से निवेदन

- जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, कृपया वे सदस्यता का नवीनीकरण समय से करवा लें। साथ ही अपने मित्रों, संबंधियों को भी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित करने की कृपा करें।
- सदस्यता के नवीनीकरण अथवा पत्राचार के समय कृपया अपने सदस्यता क्रमांक का उल्लेख अवश्य करें।
- सदस्यता शुल्क यदि मनीऑर्डर द्वारा भेजें तो कृपया इसकी सूचना अलग से पत्र द्वारा अपनी सदस्यता संख्या का उल्लेख करते हुए दें।
- चैक **साहित्य अमृत** के नाम से भेजे जा सकते हैं।
- ऑन लाइन बैंकिंग के माध्यम से बैंक ऑफ इंडिया के एकाउंट नं. 600120110001052 IFSC-BKID 0006001 में **साहित्य अमृत** के नाम से शुल्क जमा कर फोन अथवा पत्र द्वारा सूचित अवश्य करें।
- आपको अगर **साहित्य अमृत** का अंक प्राप्त न हो रहा हो तो कृपया अपने पोस्ट ऑफिस में पोस्टमैन या पोस्टमास्टर से लिखित निवेदन करें। ऐसा करने पर कई पाठकों को पत्रिका समय पर प्राप्त होने लगी है।
- सदस्यता संबंधी किसी भी शिकायत के लिए कृपया फोन नं. 011-23257555, 8448612269 अथवा sahityaamritindia@gmail.com पर इ-मेल करें।

अनिल भाई साहब का जाना अखर गया

● **आशुतोष चतुर्वेदी**

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।

गीता के इस श्लोक का भावार्थ है कि हर जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है, इसलिए जो अपरिहार्य है, उसके विषय में शोक नहीं करना चाहिए। सनातन परंपरा में भी अकसर कहा जाता है कि विधि का विधान है कि जो इस संसार में आया है, उसका जाना तय है। एक उम्र के बाद चलते-फिरते चले जाना एक तरह से ईश्वर का अनुग्रह है। लेकिन न केवल दिल्ली, बल्कि देश के जाने-माने चिकित्सक डॉ. अनिल चतुर्वेदी का जाना अखर गया। मैं उन्हें अनिल भाई साहब के नाम से संबोधित करता था, इस चार जनवरी को वे अस्सी साल के होते। राँची आने के बाद भाई साहब से यदाकदा ही मुलाकात होती थी, लेकिन उनसे लगातार फोन पर बात होती रहती थी। उनका नियमित फोन मेरे पास आता था, जिसमें वह न केवल मेरा, बल्कि पूरे परिवार का हालचाल लेते थे। उसके बाद उनसे थोड़ी देर राजनीतिक और साहित्यिक चर्चा होती थी।

वरिष्ठ पत्रकार, अपने कॅरियर की शुरुआत पत्रिका 'माया' से प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में की। उसके बाद इंडिया टुडे, संडे ऑब्जर्वर, जागरण, बी.बी.सी. लंदन और दिल्ली जैसे प्रतिष्ठित मीडिया संस्थानों में कार्य किया। बाद में 'अमर उजाला' के कार्यकारी संपादक और अब 'प्रभात खबर' के प्रधान संपादक हैं। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के साथ एक दर्जन देशों की यात्रा। एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के सदस्य।

जब मैं दिल्ली 'इंडिया टुडे' में नौकरी करने आया, तब उनसे परिचय प्रगाढ़ हुआ। मेरी यह शुरुआती नौकरियों में से एक थी। जैसा कि हम सब जानते हैं कि दिल्ली महासागर है। मैं मथुरा जैसे छोटे स्थान से आया था, दिल्ली में रचने-बसने की कला मुझे नहीं आती थी, मुझे याद है कि भाई साहब ने सबसे पहले सहारा दिया और दिल्ली को जानने-समझने की तमीज सिखाई। भाई साहब दिल्ली में रचे-बसे थे—डॉक्टर, राजनेता, ब्यूरोक्रेट, साहित्यकार और पत्रकार ऐसा कौन सा वर्ग है, जिसके शीर्ष लोगों से भाई साहब का परिचय न हो। उस समय भाई साहब का फ्लैट तैयार हो रहा था और थोड़ा लंबा खिंचता चला जा रहा था तो वे पटपड़गंज के ध्रुव एपार्टमेंट में रहते थे, बाद में वह एकता गार्डन में अपने फ्लैट में रहने आ गए। मैं पास में ही मयूर विहार में रहने आ गया था और मेरा बड़ा भाई स्व. अमिताभ पटपड़गंज में ही भाई साहब के बिल्कुल बगल के धर्मा एपार्टमेंट में रहने लगा था, बस उसके बाद तो भाई साहब से मिलने का सिलसिला चल पड़ा। मैं अकसर उनके घर जाता, जहाँ उनके अलावा उनके पिता स्व. बैकुंठ नाथजी, जिन्हें हम सब बड़े चाचा कहते हैं, उनसे भी मुलाकात होती थी, वह बड़े शिक्षाविद् और जिंदगी के अनुभवों से तपे हुए व्यक्ति थे। हमारा संपर्क सूत्र हमारी ताई स्व. कनक चतुर्वेदी थीं, जिनके अनिल भाई साहब छोटे और प्रिय भाई रहे हैं।

स्व. डॉ. अनिल चतुर्वेदी से मार्गदर्शन लेते आशुतोष चतुर्वेदी

भाई साहब 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में कंसल्टेंट डॉक्टर थे और टाइम्स के दरियागंज स्थित उनका नियमित आना-जाना था। साहू रमेश जैन से भी उनका गहरा नाता था और मुझे याद है कि उन्होंने एक बार मेरी मुलाकात भी उनसे कराई थी। उन्होंने ही मेरा परिचय वरिष्ठ पत्रकार पद्मश्री आलोक मेहता से कराया था, जो आज भी प्रगाढ़ है। वह जैसे एक बरगद के पेड़ थे, जिसके साये में जाने कितने लोगों को अपनी जिंदगी के सफर को आगे बढ़ाने में मदद मिली। मेरे छोटे बेटे अनंत के जन्म से पहले मैं भ्रम में था कि डिलीवरी कहाँ कराई जाए, मुझे याद है कि भाई साहब ने शांति मुकंद अस्पताल का रास्ता दिखाया और जहाँ उसका सकुशल जन्म

हुआ। इस दौरान किसी भी डॉक्टरी सहायता के लिए भाई साहब लगातार सुलभ रखते थे। सुजाता भाभी का मार्गदर्शन और सहयोग अलग रहता था। अनिल भाई साहब के व्यवहार में मैंने एक और चमत्कार देखा है, वे जिस अस्पताल से जुड़े, उसका प्रमोटर उनके आगे-पीछे मँडराता दिखता था, लेकिन उन्होंने कभी अपने आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया। मेरा मानना है कि मैं ही अकेला नहीं हूँ, जिसने भी उनकी ओर मदद का हाथ बढ़ाया, उसकी उन्होंने भरपूर मदद की है। लेकिन उनकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि मजाल है कि किसी को यह पता लग जाए कि उन्होंने क्या मदद की।

अनिल भाई साहब के कई रूप हैं, उनका एक रूप मददगार का है तो एक रूप पुराने संस्कारों और परंपराओं को बरकरार रखते हुए प्रगतिशील व्यक्ति का भी है। उन्हें पढ़ने-लिखने का खासा शौक था और उनकी भाषा-शैली किसी बड़े पत्रकार और साहित्यकार से कमतर नहीं थी। शेरो-शायरी का उन्हें विशेष शौक था और भाषण वे लाजवाब देते थे, वह लोगों को जोड़ना जानते थे, इन्हीं संस्कारों के कारण वे इस दौर में भी परिवार को एक सूत्र में बाँधे हुए थे। जो भाई साहब की शरण में गया, उसका उन्होंने उद्धार किया। उन्हें यदि पता चल जाए कि कोई रिश्तेदार बीमार है तो वे रिश्तेदार को बुलाकर अपने घर पर रखकर उसका इलाज करवाकर और दुरुस्त करके भेजते थे। उनकी पत्नी सुजाता भाभी का भी योगदान कम नहीं आँका जा सकता है, उनकी मदद के बिना भाई साहब शायद इतनी मदद नहीं कर पाते। इतने बड़े परिवार को उन्होंने जिस खूबसूरती से एक सूत्र में बाँधे रखा, वह सराहनीय है। बड़ा परिवार है, जिसकी वजह से उनके घर रिश्तेदारों का आना-जाना अकसर लगा रहता था, लेकिन सुजाता भाभी के प्रेम में कभी किसी ने रत्ती भर भी फर्क महसूस नहीं किया होगा, वह सबका सत्कार करतीं और मजाल है कि इस दौरान उनके चेहरे पर कभी कोई शिकन आई हो। ऐसे विरले जोड़े कहाँ देखने को मिलते हैं, जिनमें ऐसी गजब की आपसी समझ हो। सबसे बड़ी बात यह कि उनके परिवार के सभी सदस्यों ने उनके गुणों को आत्मसात् किया है, उनके कारण पूरे परिवार का वातावरण ऐसा बन गया है, जिससे प्रभावित हुए बिना कोई नहीं रह सकता है। उनके बेटों सौरभ व समर्थ और बेटी शुचि ने भी भाई साहब और भाभीजी के गुणों को आत्मसात् किया है।

अनिल भाई साहब में मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था थी। उनके व्यक्तित्व से एक ही तसवीर उभरती है—वृहद् परिवार और समाज के प्रति आदर तथा पूर्ण समर्पण। अनिल भाई साहब बहुत उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और उनकी दृष्टि में अपने-पराए सब एक समान थे। भाई साहब ने अपने क्षेत्र में बड़ी प्रतिष्ठा अर्जित की और उन्हें अनेक पदकों और पुरस्कारों से नवाजा भी गया। पुराणिक आख्यान है कि पिता एक प्रकार से जड़ है और बेटा और बेटी उस जड़ की जगह लेते हैं और यह प्रक्रिया सतत चलती रहती है। भाई साहब ने भी अपने सारे गुण अपने परिवार को दे दिए हैं, उम्मीद है कि अगली पीढ़ी भी इन विरले गुणों को आत्मसात् करेगी और यह परंपरा चलती रहेगी। हम सब भाई साहब के हृदय से ऋणी हैं।

साअ
प्रभात खबर, राँची
दूरभाष : ७७५९९६१७७७

बेईमान ही आगे

कविता

• बिर्ख खडका डुवर्सेली

तारीफ

तारीफ करूँ मैं
कैसे उसकी
शब्दों का
अभाव गहराया है
जिसने हमें
हमारा परिचय
सारे जगत् में
कराया है;
जो पल-पल
जीता है
हमारी खातिर
दुश्मनों की गालियाँ
खाता है
धैर्य धारणकर
संतों सा वह
जीवन-मूल्य
सिखाता है;
पाँच हजार साल का
इतिहास उसने हमें
नए सिरे से
समझाया है
वह तो हमारी
संतति का भविष्य
बनाने आया है।

संग्राम जारी है

लक्ष्य तो मेरा सदा
ऊपर ही उठने का है
पर क्या करें
सब रास्ते नीचे की ओर
लुढ़कते हैं,
हर काम मैं
देशहित में करता हूँ
पर क्या करें
देशद्रोही ही हकदार
बनते हैं,
ईमान कभी बेचता नहीं हूँ
पर क्या करें
बेईमान ही आगे
निकलते हैं,
फिर भी संग्राम जारी है
संततियों के भविष्य की खातिर
आज भी जंग भारी है।

साअ
आमा खडकालय,
दुर्गागढ़ी, प्रधाननगर,
दार्जिलिंग-७३४००३ (प.बं.)
दूरभाष : ९७४९०५२८५७

जायसी के काव्य में स्त्री-चिंतन एवं दृष्टि

• रवि कुमार गोंड़

भक्तिकालीन निर्गुण काव्य धारा के हीरक हस्ताक्षर महाकवि जायसी की गणना श्रेष्ठ कवियों में की जाती है। अन्योक्ति और समासोक्ति द्वारा जायसी ने स्त्री के सौंदर्य, उसकी पीड़ा एवं मनोविज्ञान को बहुत बारीकी के साथ प्रस्तुत किया है। वास्तव में स्त्री ही जीवन का आधार है। उसकी कर्मनिष्ठा, लगन और तपस्या से ही जीवन का समाजशास्त्र जुड़ा हुआ है। पुराणों एवं शास्त्रों में स्त्री की महत्ता एवं समाज में उसकी प्रतिष्ठा का वर्णन सन्निहित है। हिंदी साहित्य में स्त्री के नख-शिख का चित्रण बहुत सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है। उसके जीवनदर्शन का अध्ययन लेखकों और कवियों ने आदिकाल से लेकर अबतक बहुआयामी दृष्टिकोण से करने की कोशिश की है, परंतु उसके जीवन-सौंदर्यशास्त्र को अभी तक समझ नहीं सके हैं। कवि जायसी ने अपने काव्य में स्त्री का चित्रण बहुत ही संयमित और गूढ़तम रूप में किया है, जो अद्वितीय है।

कवि मलिक मुहम्मद जायसी निर्गुण काव्यधारा की प्रेमाश्रयी शाखा के मूर्धन्य कवि थे। उनकी रचनाओं में जीवनबोध, युगबोध, स्त्री-चित्रण, स्त्री-अस्मिता की पड़ताल, स्त्री-सौंदर्य का वर्णन बहुत ही सूक्ष्म ढंग से मिलता है। १४६२ ई. में जायस नामक स्थान पर जन्म लेने वाले जायसी ने समाज को शुद्ध प्रेम का पाठ पढ़ाया और स्त्री महत्ता का ज्ञान दिया। वह स्त्री को पार ब्रह्म का स्वरूप मानते हैं। उन्हें यह ज्ञात है कि स्त्री शक्ति स्वरूपा होती है। उन्होंने नागमती और पद्मावती के माध्यम से स्त्री के सौंदर्य एवं संघर्ष का चित्रण बड़े ही सुंदर ढंग से किया है। कवि जायसी लिखते हैं—

बसौ माँग सीस उपराहीं। सेंदुर अबही चढ़ा जेहि नाहीं॥
बिनु सेंदूर अस जानत दीआ। उजियर पंथ रैनि महँ कीआ॥

जायसी को प्रेम के पीर का कवि कहा जाता है। वह सच्चे अर्थों में विरह के सम्राट् हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री विरह का चित्रण बड़े ही प्रभावी ढंग से दृष्टिगोचर होता है। वह प्रेम के चितेरे कवि हैं। नागमती वियोग वर्णन में स्त्री विरह की पराकाष्ठा को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने स्त्री का मनोवैज्ञानिक चित्रण बहुत ही भावुक रूप में किया है। कवि जायसी लिखते हैं—

अब तक महेंद्र प्रताप सिंह की साहित्य-साधना, डॉ. निशंक का कथेतर साहित्य : मनन एवं मूल्यांकन, डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ. निशंक के कथा साहित्य में समकालीन विमर्श, डॉ. निशंक के कथा साहित्य में पर्यावरणीय चिंतन पुस्तकें प्रकाशित। संप्रति सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

सुआ काल होइ लेइगा पीऊ। पिउ नहिं जात, जात बर जीऊ॥
भयए नरायन बावन करा। राज करत राजा बलि छरा॥

कवि जायसी ने अन्योक्ति के द्वारा स्त्री, गुरु, शैतान आदि का वर्णन बहुत ही सुंदर एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया है। इनकी रचनाओं में एक तरफ आध्यात्मिकता का सुंदर सामंजस्य है तो वहीं दूसरी ओर काव्य में मानवीय चेतना बसी हुई है। वह जीवन की सच्चाई से सबको अवगत कराते हैं। कवि जायसी लिखते हैं—

'मैं एहि अरथ पडितन्ह बूझा। कहा कि हम्ह किछु और न सूझा॥
चौदह भुवन जो तर उपराही। ते सब मानुष के घट माही॥
तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल, बुधि पदमिनि चीन्हा॥
गुरु सुआ जेइ पंथ दिखावा। बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा॥
नागमती यह दुनिया धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा॥
राघव दूत सोई सैतानू। माया अलाउदीन सुल्तानू॥
प्रेम कथा एहि भाँति विचारहू। बूझि लेहु जो बूझै पारहू॥

जायसी स्त्री के माधुर्य गुण का चित्रण बहुत ही उत्कृष्ट ढंग से किया है। संयोग और वियोग दोनों में स्त्री के चितेरे प्रेम को उद्घाटित करने का कार्य उनके द्वारा सफलतापूर्वक किया गया है। लौकिक परिभूमि से अलौकिक का दर्शन सिर्फ जायसी के काव्य में ही संभव प्रतीत होता है। कवि जायसी लिखते हैं—

पिय धनिगही दीन्हि गलबाहीं। धनि बिछुरी लागी उर माहीं॥
ते छकि रस नवकेलि करेहीं। चोका लेइ अधर रस लेहीं॥

जायसी ने पद्मावती के रूप-सौंदर्य का विश्लेषण बहुत ही संयमित

ढंग से किया है। वह स्त्री-सौंदर्य में परमसत्ता के दर्शन का अद्भुत दर्शन करते हैं। उन्होंने आध्यात्मिकता के माध्यम से पारब्रह्म से साक्षात्कार की अनुभूति को अभिव्यंजित करने का कार्य किया। उनकी रचना में सूफी प्रेम पद्धति का चित्र समाहित है। कवि जायसी लिखते हैं—

सुनतहि राजा गा मुरझाई। जानी लहरि सुरूज कै आई॥
अहुठ हायतन सरवर, हिया कंवल तेहि माहि।
नैनन्हि जानहु नियरे, कर पहुँचत अवगाह॥
विरह-भँवर होइ भाँवरि देई। खिन-खिन जीव हिलो रहि लेई॥
खिनहि निसास बूड़ि जिउ आई। खिनहि उठे बिससै बौराई॥
खिनहि पीत खिन होई मुख सेता। खिनहि चेत खिन होई अचेता॥

मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावती के माध्यम से स्त्री के नख-शिख का वर्णन अद्वितीय रूप में किया है। उन्होंने समासोक्ति का सहारा लेते हुए परमसत्ता के सौंदर्य का वर्णन किया है। उनके काव्य में जीवन-दर्शन का अद्भुत समन्वय में मिलता है। इतना ही नहीं बल्कि की विदाई संवाद, प्रेम संवाद, सुवा संवाद आदि के माध्यम से जीवन के संदर्भ एवं सौंदर्य को प्रस्तुत किया है। स्त्री-सौंदर्य एवं दर्शन की महत्ता को प्रस्तुत करते हुए कवि जायसी लिखते हैं—

देखि मानसर रूप सोहावा। हिये हुलास पुरइन होइ छावा॥
गा अँधियार रैनि मसि छूटी। भा भिनसर किस रवि फूटी॥
अस्ति-अस्ति सब साथी बोले। अंध जो अहै नैन विधि खोले॥
जेहि दिन दसन जोति निरमई। बहुते जोति ओहि जोति भई॥
रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती॥
जंह-जहं बिहँसि सुभावहि हँसी। तह-तह छिटकि जोति परगसी॥

उपर्युक्त उद्धरणों के आधार पर हम क्या कह सकते हैं कि कवि मलिक मुहम्मद जायसी का पद्मावत ग्रंथ सूफी काव्य परंपरा का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है, जिसमें स्त्री महत्ता, स्त्री-सौंदर्य, स्त्री विरह, स्त्री मनोविज्ञान, स्त्री दर्शन आदि का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। उनके काव्य में एक तरफ भारतीय प्रेमपद्धति का ज्ञान निहित है तो वहीं दूसरी ओर जीवन का अलौकिक दर्शन-बोध समाहित है।

सा अ

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मलकागंज, दिल्ली-११०००७
दूरभाष : ७८०७१११७३७

लघुकथा

और मैं भी

• सत्य शुचि

छोटू बागवान की जिंदगी का एक अहम हिस्सा वह थैला था, जिसमें कैंची, खुरपी, कटर वगैरह हमेशा रहते थे। कैंची कटिंग के लिए, खुरपी खुदाई के वास्ते व कटर डाली काटने के तईं काम आती थी। काम के समय ये उसके साथी थे और फिलहाल कई घर उसकी कमाई से बँधे हुए थे। इसीलिए करीबन महीने भर में मेरे घर का नंबर आता था।

उस रोज छत पर गमलों की खुदाई में वह रमा था। वस्तुतः घर की चारों दीवारें गमलों से अँटी थीं और गमलों की विविधता से वातावरण खुशगवार था। मसलन, वहाँ गुलाब के फूल, कनेर के फूल, तुलसी, आँवला, बेल-पत्र, केले के वृक्ष, बड़, मीठा नीम, कड़वा नीम, गिलोय, सदा सुहागन पौधा, लीली, मोरपंख, देशी गुलाब, अशोक वृक्ष आदि गमले मनोहारी लगे जा रहे थे और उस दृश्य से अभिभूत मैं कहीं खुशमिजाजी में डूबा सा था।

समय का पता ही नहीं चला उस वक्त। देखा, बागवान छोटू अपना काम खत्म कर औजारों को थैले में समेटता खुद की कमीज की बाँह से चेहरे का पसीना पोंछने में लीन है।

"···अच्छा बाबूजी, मैं चलता हूँ!" अचानक वह बोला।

"हाँ-हाँ··जरूर!" और हम दोनों साथ-साथ सीढ़ियों से ड्राइंगरूम में आ गए।

अभी थोड़ी देर तक मैं उसके संग ही था कि यकायक मैं चौंका था। "अरे···छोटू, तुम्हारे पास तो साइकिल होती थी न···!"

"थी न, बाबूजी···!" भोलेपन में वह कह गया, "शहर के एक समाजसेवी मोहन खत्री हैं, उनका बाग-बगीचा मैं ही देखता हूँ। उन्होंने कृपा की और मेरी दयनीय हालत जानकर अपनी बाइक दे दी···।

"तो तुम मेरी भी सुनो, अब···"

"क्या बाबूजी···!"

"आगे से जब भी गाड़ी में पेट्रोल खाली हो तो पेट्रोल गाड़ी में मैं भरवाता रहूँगा, समझे!"

"क्या कह रहे हैं, बाबूजी?"

"बिल्कुल सच कह रहा हूँ।" और उसे नजरअंदाज करता-सा मैं भीतर आ गया।

"···मुश्किल से मानव तन पाया है तो ऐसे दो-चार नेक कामों के लिए किसे पूछना!" और मैं मुदित सा बुदबुदाया।

सा अ

साकेत नगर,
ब्यावर-३०५९०१ (राज.)
दूरभाष : ९४१३६८५८२०

परवरिश

• प्रदीप कुमार शर्मा

रात को सबके सोने के बाद मालती ने अपने पति जयंत के कान में धीरे से फुसफुसाया, "अजी, सो गए हैं क्या?"

"नहीं, क्या बात है मालती? मैं देख रहा हूँ कि तुम पिछले कुछ दिनों से बहुत ही परेशान लग रही हो, आखिर हुआ क्या है?" जयंत ने पूछा।

"परेशानी की ही तो बात है जी। हमारी रीना अब तेरह साल की हो चुकी है।" कहकर रुक गई वह।

"तो क्या हुआ? उम्र तो रुकने से रही न? इसमें परेशान होने की क्या बात है?" जयंत ने सहज भाव से कहा।

"उसे अब तक महीना शुरू नहीं हुआ है।" मालती ने बताया।

"तो तुम उसे किसी अच्छी लेडी डॉक्टर को दिखाओ न।" जयंत ने पुन: सहज भाव से कहा।

"दिखा चुकी हूँ जी।"

"क्या कहा डॉक्टर ने?"

"डॉक्टरनी साहिबा ने जाँच करके बताया है कि इसे कभी महीना ही नहीं आएगा।" मालती ने मानो जयंत के कानों में गरम लावा उड़ेल दिया।

"क्या··· ? ऐसा कैसे हो सकता है?" बड़ी मुश्किल से बोल सका वह। उसे अपने कानों पर मानो विश्वास ही नहीं हो रहा था।

"हाँ, ऐसा ही हुआ है जी। ईश्वर ने बड़ा ही क्रूर मजाक किया है हमारे साथ। डॉक्टरनी साहिबा ने बताया है कि हमारी रीना न तो पूरी तरह से लड़का है और न ही पूरी लड़की है।" मालती रोते-रोते एक ही साँस में बोल गई।

"तो···"

"तो क्या··· ? इसे कहीं बहुत दूर छोड़ आओ। इतनी दूर कि इसका मनहूस साया हमारे परिवार पर न पड़े। कल को जब लोगों को पता चलेगा कि यह हिजड़ा है, तो क्या इज्जत रह जाएगी समाज में हमारी? क्या मुँह दिखाएँगे बिरादरी में हम?" मालती ने तो मानो रीना से छुटकारा पाने का अंतिम निर्णय ले लिया था।

"पागल हो गई है तू मालती? होश में तो है? अरे, नौ महीने तक अपने पेट में पाला है इसे तुमने? ये हमारी तीनों बेटियों में सबसे होनहार भी है। कल तक तो इस पर अपनी जान न्योछावर कर रही थी और आज इससे मुक्ति पाने की बातें कर रही है।" जयंत बोला। अब तक जयंत का दिमाग शांत हो चुका था।

"नौ महीने तो मैंने अपने उन दो बच्चों को भी पेट में पाला था। अब इस चुड़ैल की वजह से उनके भविष्य से तो खिलवाड़ नहीं कर सकती मैं। कल को जब इसकी वजह से हमारी बदनामी होगी तो उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? आज तो मैंने डॉक्टरनी साहिबा को कह दिया है कि किसी को भी यह बात मत बताना।" मालती कुछ भी सुनने को तैयार नहीं लग रही थी।

विभिन्न विधाओं की १७ पुस्तकें तथा देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं में १००० से अधिक रचनाएँ तथा पुस्तक समीक्षा प्रकाशित। संप्रति छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर में विद्योचित/ग्रंथालयाध्यक्ष के पद पर हैं।

"अपने उन दो बच्चों के भविष्य की तो तुम्हें चिंता है और इसके भविष्य के बारे में क्या सोचा है कुछ? यह कहाँ जाएगी, कहाँ रहेगी, क्या खाएगी?"

"मालती, अब जमाना बदल गया है। तुम भी अपनी सोच को बदलो। ऐसा कुछ भी नहीं होगा, जैसा कि तुम सोचकर डर रही हो। रीना भी हमारे उन दोनों बच्चों की तरह ही है, बस उसके शारीरिक बनावट में थोड़ी सी विभिन्नता आ गई है। इसमें उसकी कोई गलती नहीं है, फिर बेवजह उसकी सजा वह क्यों भुगते?" जयंत ने कहा।

"तो··· ? अब हम क्या कर सकते हैं?" मालती जयंत की बातें सुनकर असमंजस में पड़ गई थी।

"देखो मालती, अभी यह बहुत ही छोटी है। इसका इलाज करवाकर हम इसे सामान्य जिंदगी जीने लायक बना सकते हैं। इसे हम खूब पढ़ा-लिखाकर आगे बढ़ाएँगे। तुम देखना, एक दिन यह भी बहुत आगे तक जाएगी और हमारा नाम रोशन करेगी।" जयंत ने उसे प्यार से समझाया।

"सच···क्या ऐसा हो सकता है?" मालती ने पूछा।

"एकदम सच मालती, रीना के प्रति अब हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है। आज यदि हम उसका सपोर्ट नहीं करेंगे तो यह भी बहुसंख्यक हिंजड़ों, जिन्हें ट्रांसजेंडर भी कहते हैं, उनकी तरह मजबूरी में भीख माँगकर, यौनकर्मी बनकर या गा-बजाकर नरक-सी जिंदगी बिताएगी या फिर कहीं जाकर आत्महत्या कर लेगी, जो न तो वह चाहेगी, न ही हम।" कहते-कहते जयंत बहुत ही भावुक हो गया था।

कुछ देर रुककर जयंत फिर से बोला, "मालती, सामान्यत: हम लोग स्त्री और पुरुष, दो ही लिंग को सामान्य मनुष्य मानते हुए तृतीय लिंग, अर्थात् थर्ड जेंडर को बहुत ही हिकारत की दृष्टि से देखते हैं, जबकि ये भी

हमारे-तुम्हारे जैसे ही सामान्य मानव हैं। कभी स्त्री तो कभी पुरुष की पहचान में फँसे ट्रांसजेंडर की अपनी स्वतंत्र पहचान तो प्रारंभ से ही रही है, लेकिन अब वे समाज की मुख्यधारा में जुड़कर नया इतिहास रचने जा रहे हैं।"

"क्या? नया इतिहास?" मालती ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ मालती। अप्रैल २०१४ में सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया ने एक ऐतिहासिक फैसले में ट्रांसजेंडर्स को थर्ड जेंडर के रूप में कानूनी मान्यता दे दी है। इससे हमारे देश के तकरीबन बीस लाख ट्रांसजेंडर्स को एक नई पहचान मिली है। वैसे भी वैदिक काल से लेकर आज तक का इतिहास साक्षी है कि जब भी अवसर मिला, तृतीय लिंग के लोगों ने अनेक असाधारण कार्य कर अपनी उपयोगिता साबित की है। हिंदू धर्म में तो हम लोग अर्धनारीश्वर की पूजा भी करते हैं। महाभारत काल के महारथी शिखंडी हों या आज के जमाने के मध्य प्रदेश राज्य के सोहागपुर क्षेत्र की पूर्व विधायक शबनम मौसी या छत्तीसगढ़ राज्य के रायगढ़ के महापौर मधुबाई प्रधान या फिर जज बनीं जोयता मंडल और स्वाति बरुआ, इन लोगों ने ऐसे-ऐसे कार्य किए, जो एक साधारण मनुष्य के लिए भी मुश्किल थे। मालती, तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि सन् २०१८ में मिस स्पेन एक ट्रांसजेंडर एंजेला पोंस बनी है। केरल के कोच्चि शहर में ट्रांसजेंडर स्टूडेंट्स के लिए सहज इंटरनेशनल बोर्डिंग स्कूल के नाम से एक स्कूल संचालित है, जहाँ के सभी टीचर्स ट्रांसजेंडर हैं। आज हमारे देश में तृतीय लिंग के कई लोग अध्यापक, प्राध्यापक, जज ही नहीं, रेलवे और पुलिस विभाग में भी अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। मालती, हमें अपने बच्चों और हमारी परवरिश पर विश्वास करना होगा। क्या पता, आगे चलकर हमारी रीना भी एक ऐसी ही मिशाल बन जाए।" जयंत ने कहा।

"पर लोगों को हम क्या जवाब देंगे?" मालती ने पूछा।

"कौन लोग मालती? लोगों का तो काम ही है कहना। हमें लोगों को जवाब देने की क्या जरूरत है? क्या लोग हमें या हमारे बच्चों को पालेंगे? हम लोगों की परवाह कर अपने पैदा किए हुए बच्चे का त्याग क्यों करें? हम अपने बच्चे का समुचित इलाज करवाकर, उसको खूब पढ़ा-लिखाकर आत्मनिर्भर बनाएँगे। क्या यह करारा जवाब नहीं होगा?" जयंत ने प्यार से अपनी पत्नी का हाथ पकड़कर समझाया।

"तो अब क्या करें हम? क्या इसका कुछ इलाज भी होता है?" मालती ने पूछा।

"करना क्या है, मैं कल ही कुछ पैसों की व्यवस्था कर लूँगा, फिर कुछ दिनों की छुट्टी लेकर शहर में रीना का उपचार करा लेंगे। मैंने कहीं पढ़ा है कि कम उम्र में ही थर्ड जेंडर की पहचान हो जाने पर डॉक्टर एक मामूली-सी सर्जरी करके ठीक कर सकते हैं, जिससे ये सामान्य जीवन बिता सकते हैं।"

"यह तो बहुत ही अच्छी बात बताई आपने। कुछ पैसे मैंने भी बचाकर रखे हैं जी, ताकि आड़े वक्त में काम आएँ। आप उन्हें भी रख लीजिए। जितना बेहतर उपचार हो सके, हम अपनी बेटी का कराएँगे।" मालती बोली।

"ठीक है मालती, लेकिन हाँ, तुम उसे कभी यह अहसास नहीं होने देना कि वह हम सबसे अलग है। ध्यान रहे हिजड़ापन शरीर से नहीं मन से होता है।" जयंत ने कहा।

"जी, बिल्कुल सही कह रहे हैं आप। अज्ञानतावश कितनी बुरी-बुरी बातें सोच बैठी थी मैं। आपने तो मेरी आँखें ही खोल दी हैं।" कहते हुए मालती ने अपने पति को बाँहों में भर लिया।

अगली सुबह उनके जीवन में रोशनी की नई किरण लेकर आई।

एच.आई.जी. ४०८, ब्लॉक डी,
कंचन अश्व परिसर, डंगनिया,
पो.ऑ.-पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर-४९२०१० (छ.ग.)
दूरभाष : ९८२७९१४८८८

सफाई-पसंद आदमी

लघुकथा

• सत्य शुचि

आवागमन के विकास-विस्तार के दृश्यों से उसका जी भर उठा और गौरतलब बात यह है कि फोरलेन सड़क पर घंटों से उसकी गाड़ी दौड़े जा रही थी कि अकस्मात् उसे पेशाब की तलब हुई।

अभी गाड़ी को किसी सुनसान इलाके में रोकने का उसका मानस था, किंतु वह निराशा में उदास हो चला। अब वह ज्यादा देर नहीं रोक सकता था पेशाब; और एक डर एकदम उसको सताने लगा कि शरीर के भीतर भारी दवाब के चलते कहीं उसका ब्लेडर फट गया तो···! वह पसीने-पसीने हो गया।

उसी दौरान संभावित खतरे से उबरते हुए उसने तुरंत गाड़ी सड़क किनारे रोकी और गाड़ी की ओट में खड़े होकर वह पेशाब से फारिग हो चुका था। लिहाजा वह जीवन में साफ-सफाई को पसंद करता रहा है। तभी दन्न से वह गाड़ी में जा बैठा था और सामान्य रूप से गाड़ी चलाने के लिए वह स्थिर चित्त हो गया।

यदि रास्ते में शौचालय होता तो वह कदापि पेशाब की पॉलीथिन थैली को अपने साथ लेकर नहीं चलता···। और तनिक विचारता-सा वह अंदर-ही-अंदर थोड़ी राहत महसूस करता चला गया।

साकेत नगर,
ब्यावर-३०५९०१ (राजस्थान)
दूरभाष : ९४१३६८५८२०

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में वर्णित लोकजीवन

● रोशनी

पं. विद्यानिवास मिश्र भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, साहित्य तथा भाषा के मर्मज्ञ विद्वान् हैं, साथ ही भारतीय लोक जीवन और लोक संस्कृति को उन्होंने गहराई से आत्मसात् किया है। उनके निबंधों में जहाँ एक ओर विद्वत्ता और व्यापक ज्ञान का परिचय मिलता है, वहीं लोकतत्त्वों के कारण निबंध में एक नया पक्ष जुड़ जाता है। मिश्रजी के प्रमुख निबंध-संग्रह—'तुम चंदन हम पानी', 'तमाल के झरोखे से', 'संचारिणी', 'आँगन के पंछी' और 'बंजारा मन', 'परंपरा बंधन नहीं', 'लागौ रंग हरी', 'मैंने सिल पहुँचाई', 'छितवन की छाँह' आदि हैं। प्रमुख निबंधों में एक ललित निबंध के रूप में 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध आता है। मिश्रजी हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध ललित निबंध लेखक रहे। उन्होंने अपने निबंधों के जरिए शब्दों और भावों की मिठास को पाठकों के लिए आकर्षक बनाया है। मिश्रजी एक अच्छे कथात्मक निबंधकार रहे। उनके निबंधों में कल्पना और भावों की प्रधान रही है।

ललित निबंध को आत्मपरक, विषयप्रधान और व्यक्तिनिष्ठ निबंध भी कहते हैं। ललित शब्द १९४० के बाद रचित हिंदी के व्यक्ति-व्यंजक निबंधों के लिए रूढ़-सा हो गया है। 'ललित निबंध' निबंध के साथ 'ललित' विशेषण से बना है। ललित से तात्पर्य विदग्धता और रस प्रवणता है। यह सभी विशेषताएँ इस निबंध में वर्णित लोक जीवन में लोक कथाओं और लोक गीतों के माध्यम से देखी जा सकती हैं।

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में निबंधकार ने साधारण विषयों को पौराणिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भों से जोड़कर प्रभावशाली बनाया है। उन्होंने इस निबंध के जरिए यह बताने का प्रयास किया है कि पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी के लिए चिंतित है, लेकिन नई पीढ़ी को उनकी चिंता की कोई परवाह नहीं है। इस निबंध में मुकुट को उदार चरित्र और महान् व्यक्ति के ऐश्वर्य का प्रतीक माना गया है। लोक जीवन से जुड़े संदेशों पर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि उत्कृष्ट व्यक्ति संसार में निर्वासन की व्यथा भोगता है, लेकिन लोकमन उसका अभिषेक करता है। इस निबंध के जरिए लेखक की मन:स्थिति का भी पता लगाया जा सकता है कि किस प्रकार से राम के बारे में सोचते-सोचते लोक जीवन के बारे

बी.एड., यू.जी.सी. नेट एवं पीएच.डी.। स्नातक पाठ्यक्रम पर चार पुस्तकें प्रकाशित। उच्चशिक्षा/साहित्य एवं शोध के क्षेत्र में अक्षर वार्त्ता अंतरराष्ट्रीय अवार्ड, २०२४।

में सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इस निबंध में दो पीढ़ियों के विचारों एवं उनकी सोच में अंतर की समस्या को भी उजागर किया गया है।

लोक जीवन अर्थात् परंपराओं को साझा करने वाले लोगों के समूहों में होने वाला जीवन। लोक जीवन, लोक संस्कृति का अभिन्न अंग होता है। लोक संस्कृति की आत्मा भारतीय साधारण जनता है, जो गाँव, वन-प्रांतों में रहती है। लोक साहित्य साधारण जनता से जुड़ा साहित्य होता है। लोक साहित्य में जनजीवन की सभी प्रकार की भावनाएँ बिना किसी कृत्रिमता के समाई रहती हैं। लोक गीतों और लोक कथाओं में लोक जीवन की जैसी सरलता, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यक्ति मिलती है।

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' एक ललित निबंध है, इस निबंध में लेखक ने राम-वनवास पर लिखे गए एक लोक गीत के माध्यम से मनुष्य के अपने बच्चों के प्रति ममत्व भाव की व्याख्या की है। उन्होंने मनुष्य के आंतरिक मनोभाव की रागात्मकता पर भी प्रकाश डाला है और मनुष्यत्व की उत्कृष्टता को भी रेखांकित किया है। इस निबंध में लेखक की निजता, आत्मीयता, उदात्तता तथा भारतीय संस्कृति और साहित्य के अध्येता के रूप आदि का परिचय मिलता है।

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में लेखक के मन में राम के मुकुट को भीगने की चिंता होती है। लेखन के दौरान मुकुट भीगने की चिंता से उनका व्यथिक मन का पता चलता है। इतना ही नहीं, लक्ष्मण के दुपट्टे और सीता की माँग के सिंदूर के भीगने की चिंता सताती रहती है। निबंध में उनका चिरंजीव और मेहमान लड़की का एक कार्यक्रम से लौटने में देरी होती है, तो लेखक अपने दादी-नानी के गाए उन गीतों को गुनगुनाने के लिए विवश हो जाता है, जिसके बोल है—"मेरे लाल को कैसा वनवास मिला था।" पुरानी पीढ़ी की इस व्याकुलता को उस दौर में तो समझ नहीं

आता था, लेकिन आज इस स्थिति में पहुँचने पर व्याकुलता के सजीव दर्शन होने लगते हैं। दादा-नानी के गाए गीतों के एक-एक शब्दों का भाव और अर्थ सार्थकता के साथ सामने प्रस्तुत होने लगते हैं। मन उन लाखों-करोड़ों कौसल्याओं की ओर दौड़ जाता है, जिनके राम वन में निर्वासित हैं और उनके मुकुट भीगने की चिंता है। मुकुट लोगों के मन में बसा हुआ है। काशी की रामलीला आरंभ होने से पहले निश्चित मुहूर्त में मुकुट की पूजा की जाती है। इन परंपराओं में लोक जीवन देखा जा सकता है।

मुकुट तो मस्तक पर विराजमान है। राम भीगे तो भीगे पर मुकुट न भीगने पाए। इसी बात की चिंता है। राम के उत्कर्ष की कल्पना न भीगे, वह हर बारिश में, हर दुर्दिन में सुरक्षित रहे। राम तो वन से लौटकर राजा बन जाते हैं, परंतु सीता रानी होते ही राम द्वारा निर्वासित कर दी जाती हैं। निबंध में वर्णित प्रमुख अंश इस प्रकार हैं—

"लागति अवध भयावह भारी, मानहुँ कालराति अँधियारी।
घोर जंतु सम पुर नरनारी, डरपहिं एकहि एक निहारी।
घर मसान परिजन जनु भूता, सुत हित मीत मनहूँ जमदूता।
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं, सरित सरोवर देखि न जाहीं।"

राम के साथ लक्ष्मण हैं, सीता हैं, सीता वन्य पशुओं से घिरी हुई विजन में सोचती हैं—"प्रसव की पीड़ा हो रही है, कौन इस वेला में सहारा देगा, कौन प्रसव के समय प्रकाश दिखलाएगा, कौन मुझे सँभालेगा, कौन जनम के गीत गाएगा?" मिश्रजी की इसी बेचैनी की स्थिति में उनको दो-तीन रात पहले की एक घटना स्मरण हो उठती है, जहाँ उनका एक साथी, साथ में उनका पुत्र एवं महानगरीय परिवेश में पली एक मेहमान कन्या रात को नौ बजे संगीत कार्यक्रम को सुनने के लिए गए हुए थे। शहरों की असुरक्षित स्थिति एवं एक-डेढ़ घंटे ही नहीं, रात के बारह बजे तक उनका न लौटना उनके दिमाग में दुश्चिंता की धारा को प्रवाहित कर रही थी, जिससे उनकी पत्नी झल्ला उठी। इतने में अचानक बारिश शुरू हो गई। बारिश की शुरुआत मन का आकुलापन एवं आजकल की असुरक्षित स्थिति से लेखक के मन में दादी-नानी द्वारा निरंतर गाए जाने वाले एक लोक-गीत स्मरण हो उठा—

"मोरे राम के भीजै मुकुटवा, लछिमन के पटुकवा
मोरी सीता के भीजै सेनुरवा, त राम घर लौटहिं।"

(मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा, मेरे लखन का पटुका (दुपट्टा) भीग रहा होगा, मेरी सीता की माँग का सिंदूर भीग रहा होगा, मेरे राम घर लौट आते।)

बचपन में दादी-नानी द्वारा गाए गए यही गीत अर्थात् उनकी विवशता एवं चिंतन पर उन्हें व्यंग्य सूझती थी, परंतु पिता के रूप में दादी-नानी की वही चिंता आज उनके मन को विद्रोहित करती है। अपने बच्चों की चिंता उनकी सुरक्षा एवं उनके साथ वहन किए हुए मान-प्रतिष्ठा की चिंता प्रत्येक माता-पिता को ही होती है। जैसे पत्नी सीता, भाई लक्ष्मण के साथ राम का वनवास माता कौशल्या की व्याकुलता का कारण है। लेखक का मन कौशल्या के मन के तरंग के साथ जुड़ गया। राजा राम उनके प्रियजन के रूप में प्रकट हो गए। राम के वनवास से लौटकर आने से मन को ठीक उसी प्रकार संतोष होता है, जिस प्रकार प्रियजन के वापस लौटने से होता है। लेखक का मन कल्पना लोक में विचरने लगा, जहाँ उनके मन में राजा राम का उनके मुकुट के साथ अभिषेक हो गया। मुकुट के साथ ही उनके वनवास की यात्रा भी शुरू हो गई। मुकुट के साथ राजा राम सबके मन में प्रतिष्ठित हो गए। मुकुट के संग ही अयोध्या की मान-प्रतिष्ठा, मर्यादा, ऐश्वर्य एवं उत्कर्ष भी राजा राम के साथ वनवास चला गया। अखंड सौभाग्यवती सीता की माँग का सिंदूर भी असुरक्षा के घेरे में गिर गया। 'कमरबंद दुपट्टा' अर्थात् प्रहरी की जागरूकता उत्कर्ष, मर्यादा, मान-सम्मान एवं ऐश्वर्य के प्रतीक 'मुकुट' की रक्षा भावना में सदैव ही जागरूक रहे। उदात्त गुणों से परिपूर्ण ऐश्वर्य का प्रतीक 'मुकुट' कभी किसी बारिश या विपत्ति के ज्वार में भीगने न पाए।

सोचते-सोचते लगा कि इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौसल्या है; जो हर बारिश में बिसूर रही है—'मोरे राम के भीजै मुकुटवा' (मेरे राम का मुकुट भीग रहा होगा)। मेरी संतान, ऐश्वर्य की अधिकारिणी संतान वन में घूम रही है, उसका मुकुट, उसका ऐश्वर्य भीग रहा है, मेरे राम कब घर लौटेंगे; मेरे राम के सेवक का दुपट्टा भीग रहा है, पहरुए का कमरबंद भीग रहा है, उसका जागरण भीग रहा है, मेरे राम की सहचारिणी सीता का सिंदूर भीग रहा है, उसका अखंड सौभाग्य भीग रहा है, मैं कैसे धीरज धरूँ?"

"पुरा यत्र स्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरितां,
विपर्यासं यातो घनविरलभावः क्षितिरुहाम्।
बहोः कालाद् दृष्टं ह्यपरमिव मन्ये वनमिदं,
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति।"

उक्त पंक्तियों के माध्यम से यह कहने का प्रयास किया गया है कि इंतजार की वेदना कितनी कष्टकारी होती है। चिरंजीव के मेहमान लड़की के साथ कार्यक्रम के लिए जाने और वापस आने में देरी होने पर यह सोचने के लिए विवश हो जाते हैं कि तुम लोगों को इसका क्या अंदाजा होगा कि हम कितने परेशान रहे हैं। भोजन-दूध धरा रह गया, किसी ने भी छुआ नहीं, मुँह ढाँपकर सोने का बहाना शुरू हुआ, मैं भी स्वस्ति की साँस लेकर बिस्तर पर पड़ा, पर अर्द्धचेतन अवस्था में फिर जहाँ खोया हुआ था, वहीं लौट गया। अपने लड़के घर लौट आए, बारिश से नहीं संगीत से भीगकर, मेरी दादी-नानी के गीतों के राम, लखन और सीता अभी भी वन-वन भीग रहे हैं। तेज बारिश में पेड़ की छाया और दु:खद हो जाती है, पेड़ की हर पत्ती से टप-टप बूँदें पड़ने लगती हैं, तने पर टिकें तो उसकी नस-नस से आप्लावित होकर बारिश पीठ गलाने लगती है। जाने कब से मेरे राम भीग रहे हैं और बादल हैं कि मूसलधार ढरकाए चले जा रहे हैं, इतने में मन में एक चोर धीरे से फुसफुसाता है, राम तुम्हारे कब से हुए, तुम, जिसकी बुनावट पहचान में नहीं आती, जिसके व्यक्तित्व के ताने-बाने तार-तार होकर अलग हो गए हैं, तुम्हारे कहे जाने वाले कोई हो भी सकते हैं कि वह तुम कह रहे हो, मेरे राम! और चोर की बात सच लगती है, मन कितना बँटा हुआ है, मनचाही और अनचाही दोनों तरह की हजार चीजों में। दूसरे कुछ पतियाएँ भी, पर अपने ही भीतर प्रतीति नहीं होती कि मैं किसी का हूँ या कोई मेरा है।

नारी के सौभाग्य, पति के सुख का प्रतीक नारी के मस्तक पर सुशोभित उसकी माँग का सिंदूर होता है। वही सिंदूर सीता की माँग को उज्ज्वलित कर रहा है। सीता की माँग का सिंदूर असुरक्षित न हो पाए, परंतु राम के सुख की चिंता करने वाला समाज एवं सीता की माँग का सिंदूर तो राम को वनवास से अयोध्या वापस लौटने के लिए सक्षम रहा। लेकिन सौभाग्यवती सीता अपने प्रसव के दर्द को लेकर पुन: वनवास की एकांत ज्वाला को भोगने के लिए मजबूर हो गई। प्राचीन काल की यही परंपरा आधुनिक काल में भी अपना वर्चस्व बनाए हुए सबसे अधिक उन कष्टों को झेलती है। असुरक्षा के इस दौर में नारी मिश्रजी अपने इस भावानुकूल मन में विचारते ही हैं कि भोर के चार बज जाते हैं। तब कहीं अचानक उनके पुत्र एवं कृष्णा का संगीत कार्यक्रम से आगमन होता है। लेकिन वर्षों से चले आ रहे वनवास की यात्रा को भोगते राम की कथा लेखक के मन में तब भी विराजमान है।

इस निबंध में उन्होंने लिखा है कि इतनी असंख्य कौसल्याओं के कंठ में बसी हुई, जो एक अरूप ध्वनिमयी कौसल्या है, अपनी सृष्टि के संकट में उसके सतत उत्कर्ष के लिए आकुल, उस कौसल्या की ओर, उस मानवीय संवेदना की ओर ही कहीं राह है, घास के नीचे दबी हुई। पर उस घास की महिमा अपरंपार है, उसे तो आज वन्य पशुओं का राजकीय संरक्षित क्षेत्र बनाया जा रहा है, नीचे ढकी हुई राह तो सैलानियों के घूमने के लिए, वन्य पशुओं के प्रदर्शन के लिए, फोटो खींचने वालों की चमकती छवि-यात्राओं के लिए बहुत ही रमणीक स्थल बनाया जा रहा है। उस राह पर तुलसी और उनके मानस के नाम पर बड़े-बड़े तमाशे होंगे, फुलझड़ियाँ दगेंगी, सैर-सपाटे होंगे, पर वह राह ढकी ही रह जाएगी, केवल चक्की का स्वर, राह तलाशता रहेगा—किस ओर राम मुड़े होंगे, बारिश से बचने के लिए? किस ओर? किस ओर? बता दो सखी।

कैसे मंगलमय प्रभात की कल्पना थी और कैसी अँधेरी कालरात्रि आ गई है? एक-दूसरे को देखने से डर लगता है। घर मसान हो गया है, अपने ही लोग भूत-प्रेत बन गए हैं, पेड़ सूख गए हैं, लताएँ कुम्हला गई हैं। नदियों और सरोवरों को देखना भी दुस्सह हो गया है। केवल इसलिए कि जिसका ऐश्वर्य से अभिषेक हो रहा था, वह निर्वासित हो गया। उत्कर्ष की ओर उन्मुख समष्टि का चैतन्य अपने ही घर से बाहर कर दिया गया, उत्कर्ष की, मनुष्य की ऊर्ध्वोन्मुख चेतना की यही कीमत सनातन काल से अदा की जाती रही है। इसलिए जब कीमत अदा कर ही दी गई तो उत्कर्ष कम-से-कम सुरक्षित रहे, यह चिंता स्वाभाविक हो जाती है।

कैसे मंगलमय प्रभात की कल्पना थी और कैसी अँधेरी कालरात्रि आ गई है? एक-दूसरे को देखने से डर लगता है। घर मसान हो गया है, अपने ही लोग भूत-प्रेत बन गए हैं, पेड़ सूख गए हैं, लताएँ कुम्हला गई हैं। नदियों और सरोवरों को देखना भी दुस्सह हो गया है। केवल इसलिए कि जिसका ऐश्वर्य से अभिषेक हो रहा था, वह निर्वासित हो गया। उत्कर्ष की ओर उन्मुख समष्टि का चैतन्य अपने ही घर से बाहर कर दिया गया, उत्कर्ष की, मनुष्य की ऊर्ध्वोन्मुख चेतना की यही कीमत सनातन काल से अदा की जाती रही है। इसलिए जब कीमत अदा कर ही दी गई तो उत्कर्ष कम-से-कम सुरक्षित रहे, यह चिंता स्वाभाविक हो जाती है। नर के रूप में लीला करने वाले नारायण निर्वासन की व्यवस्था झेलें, पर नर रूप में उनकी ईश्वरता का बोध दमकता रहे, पानी की बूँदों की झालर में उसकी दीप्ति छिपने न पाए। उस नारायण की सुख-शेष बने अनंत के अवतार लक्ष्मण भले ही भीगते रहे, उनका दुपट्टा, उनका अहर्निशि जागर न भीजे, शेषी नारायण के ऐश्वर्य का गौरव अनंत शेष के जागर संकल्प से ही सुरक्षित हो सकेगा और इन दोनों का गौरव जगज्जननी आद्याशक्ति के अखंड सौभाग्य, सीमंत, सिंदूर से रक्षित हो सकेगा, उस शक्ति का एकनिष्ठ प्रेम पाकर राम का मुकुट है, क्योंकि राम का निर्वासन वस्तुत: सीता का दुहरा निर्वासन है। राम तो लौटकर राजा होते हैं, पर रानी होते ही सीता राजा राम द्वारा वन में निर्वासित कर दी जाती हैं।

निबंध के माध्यम से भारत विशेष तौर पर अवध क्षेत्र के आसपास के क्षेत्र के लोक जीवन में राम की करुणामयी कहानी को प्रदर्शित करने का सफल प्रयास किया गया है। मानवीय चिंता का वर्णन भी देखा जा सकता है। इसमें संगीत कार्यक्रम की घटना का उल्लेख किया गया है। घर आने वाली मेहमान लड़की संगीत कार्यक्रम में बेटे के साथ जाती है, जब उनको लौटने में देर होती है, तो मन में चिंता होना स्वाभाविक होती है। इस चिंता में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी की सोच के अंतर को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

इस निबंध के माध्यम से परंपराओं पर भी कटाक्ष किया गया है कि काशी में रामलीला के आरंभ होने के पूर्व बाकायदा मुहूर्त निकालकर राम के मुकुट की पूजा-अर्चना की जाती है। यानी सभी को भीगने की चिंता होती है, लेकिन आज करोड़ों लोगों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता, जो अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश हैं।

मिश्रजी के निबंध में मौलिक चिंता, पांडित्य शैली, संस्कृति-बोध तथा लोक जीवन के प्रति गहन संवेदना प्राप्त होती है। 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध में लेखक ने सीता, लक्ष्मण, भगवान् राम एवं कौशल्या के जरिए आधुनिक युवक की त्रासदी को उजागर करने की नितांत कोशिश की है। निबंधकार अपने अनुभवों के साथ ईश्वरी कथाओं को सम्मिलित कर लोक जीवन के प्रति गहरी संवेदनशीलता प्रकट करते हैं। इस निबंध के जरिए लेखक की मन:स्थिति का भी वर्णन किया गया है, जो राम के बारे में सोचते-सोचते समाज के सभी वर्ग के लोगों के बारे में सोचने के लिए विवश हो जाता है। जैसे सीता की मनोदशा का वर्णन करते-करते उन सभी माँ के प्रति सहानुभूति प्रकट करने का प्रयास किया है, जो कष्ट सहन कर भी पति का साथ नहीं छोड़ती हैं। इस प्रकार से संवेदना के माध्यम से अंतर वेदना को व्यक्त करने का कार्य बड़ी सावधानी के साथ किया है।

निबंध के जरिए लोक जीवन से जुड़े उस पहलू को व्यक्त करने

का भी प्रयास किया गया है कि जीवन में कष्टों का कोई अंत नहीं है। दूसरा कष्ट सामने आने के बाद पहला कष्ट आसान नजर आने लगता है। लिखित निबंध में सीता दो बार जंगल के जीवन की पीड़ा को भूल जाती है, लेकिन दूसरी बार का निर्वासन अत्यंत कष्टकारी और दयनीय हो जाता है। इसके साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से बेरोजगार युवकों की पीड़ा को सीमांकन करने का भी प्रयास किया गया है, लेकिन यह सीमांकन पूरा नहीं हो पाता है।

राम के वनवास को करुणा का प्रतीक बताया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान लोक जीवन से जुड़े इन्हीं पहलुओं की विस्तार से विवेचना की गई है। राम के साथ लक्ष्मण वन में गए थे, ताकि मुकुट की रक्षा की जा सके। निबंधकार ने राम के कमरबंद दुपट्टे को प्रहरी की जागरूकता का प्रतीक माना है। अप्रत्यक्ष रूप से आज के लाखों-करोड़ों बेरोजगार राम इस लोक में दर-दर भटक रहे लोगों के प्रति चिंता व्यक्त की। इस प्रकार से ललित निबंध के जरिए लोक जीवन के कई पहलुओं को छूने का प्रयास किया गया है। बेघर एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों का वर्णन किया है, जिनको समाज भूल गया है।

राम के वनवास को करुणा का प्रतीक बताया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान लोक जीवन से जुड़े इन्हीं पहलुओं की विस्तार से विवेचना की गई है। राम के साथ लक्ष्मण वन में गए थे, ताकि मुकुट की रक्षा की जा सके। निबंधकार ने राम के कमरबंद दुपट्टे को प्रहरी की जागरुकता का प्रतीक माना है। अप्रत्यक्ष रूप से आज के लाखों-करोड़ों बेरोजगार राम इस लोक में दर-दर भटक रहे लोगों के प्रति चिंता व्यक्त की। इस प्रकार से ललित निबंध के जरिए लोक जीवन के कई पहलुओं को छूने का प्रयास किया गया है।

इस निबंध के जरिए उन्होंने पुरानी पीढ़ी की अपनी संतान के लिए चिंता को उजागर करने का प्रयास किया। वनवासी होने पर भी उसे मुकुट पहनाया जाता है और उस मुकुट को भीगने से बचाना होता है। लेखक ने लोक जीवन की अंतर्वेदना को राम के राजतिलक के समय की घटना के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है।

निबंध के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया कि जिस व्यक्ति का राज-अभिषेक हो रहा था, विडंबनावश उसे राजसिंहासन की अपेक्षा वनवास हो गया। यानी जीवन में समय का महत्त्व है, परिस्थितियों के हिसाब से कभी भी बदलाव हो सकता है। कुछ भी इस संसार में निश्चित नहीं है।

साअ

मकान नं.-२१, सरदार पटेल नगर कॉलोनी,
भारत टॉकीज के पीछे, हमीदिया रोड,
भोपाल-४६२००१ (म.प्र.)
दूरभाष : ८९८९०९३६०४

साहित्य अमृत (मासिक)

(फॉर्म नं. ४, नियम ८ के अनुसार स्वामित्व संबंधी विवरण)

समाचार-पत्र का नाम	:	साहित्य अमृत
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
भाषा जिसमें प्रकाशित होनी है	:	हिंदी
प्रकाशन स्थान	:	४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२
संपादक का नाम	:	लक्ष्मी शंकर वाजपेयी
नागरिकता व पता	:	भारतीय, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२
प्रकाशक का नाम	:	पीयूष कुमार
नागरिकता व पता	:	भारतीय, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२
मुद्रक का नाम व पता	:	न्यू प्रिंट इंडिया प्रा.लि., ८/४-बी, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-IV, गाजियाबाद-२०१०१०
उन व्यक्तियों के नाम व पता, जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या हिस्सेदार हों	:	पीयूष कुमार, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२

मैं, पीयूष कुमार, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार दिए गए विवरण सत्य हैं।

नई दिल्ली, २० फरवरी, २०२५

पीयूष कुमार

गाँव में वसंत और मेरा संकट

● **भैरूँलाल गर्ग**

गाँव के बचपन में कैसा वसंत? फिर हमारा गाँव तो किसी प्राकृतिक सुषमा के परिवेश में नहीं था। जहाँ कोई नदी बहती हो, कोई सुरम्य झील हो, हरीतिमा से युक्त पहाड़ियाँ हों या सघन वृक्षों से भरा-पूरा वन-प्रांतर। एक बात अवश्य थी कि गाँव विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से निरापद था। न भूकंप आता, न बाढ़ और न ही तूफानी हवाएँ। उत्तर से आनेवाली बर्फीली हवाएँ भी यहाँ तक आते-आते अपना अत्यधिक शीतकारी प्रभाव खो चुकी होती थीं। बचपन में यह अवश्य था कि सर्दी, गरमी और वर्षा बहुत संतुलित प्रभाव रखती थी। आज मौसम का तंत्र जिस तरह गड़बड़ाया हुआ है, वैसा बिल्कुल भी नहीं था। ऋतुएँ अपना प्राकृतिक और सहज प्रभाव लिये होती थीं। इन तीन प्रमुख ऋतुओं के पश्चात् वसंत ऋतु ही सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र और आह्लादकारी हुआ करती थी।

शरद, शिशिर और हेमंत के पश्चात् वसंत। हिंदी ऋतुचक्र के अनुसार यद्यपि वसंत ऋतु का प्रभाव बहुत बाद में परिलक्षित होता था, अब भी ऐसा ही है, लेकिन इस ऋतु का आरंभ माघ शुक्ल पंचमी से माना जाता है। इसे वसंत पंचमी कहते हैं। हमारे गाँव में ही नहीं अपितु मेवाड़ के ग्राम्यांचल में इस वसंत पंचमी को लोग 'जौ बाँधणी पाँचाँ' कहते हैं। इस दिन कृषक ही नहीं, समस्त ग्रामवासी अपनी पगड़ी अथवा साफे में जौ की बालियाँ बाँधते थे अथवा खोंसते थे। जो सिर पर पगड़ी नहीं बाँधते, वे अपने कान में बाली को टाँकते थे, अथवा अपने कुरते की जेब में रख लेते थे। मुझे बहुत बाद में समझ आया कि आखिर जौ की बालियाँ ही सिर पर क्यों बाँधते हैं? क्योंकि एक तो यह कि हमारे इधर रबी की फसल में गेहूँ की अपेक्षा जौ की खेती ही अधिक की जाती थी। ऐसा पानी की कमी के कारण भी था और वैसे गेहूँ की अपेक्षा जौ अधिक पौष्टिक खाद्यान्न माना गया है। मुझे अच्छी तरह याद है, घरों में वर्ष भर केवल सर्दी की ऋतु को छोड़कर जौ ही खाया जाता था। गेहूँ का प्रयोग तो केवल त्योहार अथवा मेहमानों के आने पर ही किया जाता था। मेवाड़ का लोकप्रिय भोजन 'लड्डू बाटी' भी अकसर जौ का ही बनाया जाता था।

वसंत पंचमी के दिन गाँव का दमामी परिवार ही घर-घर में जौ की बालियाँ पहुँचाता था। ये लोग एक दिन पहले ही अपने खेतों से जौ की बालियों का गट्ठर बाँधकर ले आते थे। पंचमी के दिन दमामी परिवार

सुपरिचित लेखक। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध/आलोचना, बाल साहित्य आदि रचनाएँ निरंतर प्रकाशित। 'बालवाटिका' मासिक के संस्थापक संपादक। 'बाल साहित्य भारती' सम्मान सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित।

का एक सदस्य ढोल बजाते हुए, गाँव के सभी गली-मुहल्ले होता हुआ घर-घर जाता था, उसी के पीछे-पीछे दूसरा सदस्य अपने साथ जौ की बालियों का गट्ठर लिये होता था और घर के हर छोटे-बड़े पुरुष सदस्य को एक-एक जौ की बाली बाँटता हुआ चलता था। लोग बड़े सम्मान के साथ जौ की बाली को ग्रहण करते और अपने सिर में लगाते, बाँधते अथवा जेब में रखते थे। इसे बहुत ही सौभाग्य का प्रतीक माना जाता था। बच्चे तो दौड़-दौड़कर बड़ी उत्सुकता से बालियाँ ग्रहण करते थे। प्रतिदान में ढोल बजाने और बालियों के बदले में हर घर से अनाज दिया जाता था, जिसे 'त्योहारी' कहते थे। अर्थात् त्योहार पर दिया जानेवाला अनाज 'त्योहारी'। कई बार तो हम बच्चे भी ढोल के साथ-साथ चलते हुए पूरे गाँव का चक्कर लगा लेते थे। मेरा सहपाठी रामबख्श ढोल बजाता था तो उसका छोटा भाई सोहन जौ की बालियाँ बाँटता था। कभी-कभी यह काम इन दोनों के बड़े भाई शंकर दादा करते थे। मैंने इनके ताऊजी घीसू बा को भी ढोल बजाते हुए देखा था। कभी-कभी तो रामबख्श के साथ जौ की बालियाँ लेने के लिए हम एक-दो साथी भी खेत पर चले जाते थे।

वसंत पंचमी के दिन विद्यालय में उत्सव मनाया जाता था। इस दिन बच्चे अधिकतर पीले कपड़े पहनकर आते थे। उस दिन निर्धारित गणवेश की छूट रहती थी। पिताजी मेरे लिए भी पीली पोशाक का प्रबंध करते थे। रेजी का (मोटे सूत से बना कपड़ा) मेरा कुरता और पाजामा, जो सफेद होता था, उसे एक दिन पहले पीले रंग से रँग देते थे। अकसर विद्यार्थी हाफपेंट पर पीला कुरता ही पहनकर आते थे, उन दिनों 'बुश्शर्ट' का प्रचलन नहीं था। बड़े लोग भी कुरता ही पहना करते थे। बालिकाएँ पीली फ्रॉक पहनकर विद्यालय आती थीं। विद्यालय में 'वसंत पंचमी' को विशेष रूप से 'सरस्वती जयंती' के रूप में मनाया जाता था, जैसा कि आज भी प्रचलन है। इस दिन विद्यालय में प्रार्थना सभा के पश्चात् सरस्वती का

पूजन, वंदन होता था। वसंत पर शिक्षकगण बच्चों को उद्‌बोधन देते थे, इसकी महत्ता और संदेश पर विशेष प्रकाश डाला जाता था। कविता-पाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ करता था। उस समय हमारी चौथी कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक में 'वसंत' पर एक कविता थी। हम बच्चे अधिकतर उसी का पाठ करते थे। उस कविता के रचनाकार का तो मुझे ध्यान नहीं है, लेकिन वह कविता आज भी मुझे पूरी-की-पूरी याद है—

आया वसंत आया वसंत,
वन-उपवन में छाया वसंत।
गेंदा और गुलाब चमेली,
फूल रही जूही अलबेली।
देखो आमों की हरियाली,
कैसी है मन हरने वाली।
जाड़ा बिल्कुल नहीं सताता,
मजा नहाने में है आता।

वसंत पंचमी के पश्चात् सर्दी कम हो जाया करती है। दिन का तापमान बढ़ जाता है, लेकिन सुबह-शाम और रात्रि में तो मौसम अपेक्षाकृत ठंडा ही रहता है। उन्हीं दिनों की मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय घटना है, जिसे याद कर आज भी मैं सिहर उठता हूँ। उस समय मेरी पढ़ाई छूटते-छूटते बाल-बाल ही बची थी। यह कल्पना करके ही डर लगने लगता है कि अगर उस समय मेरी पढ़ाई छूट गई होती तो मेरे भावी जीवन का क्या होता? निश्चित रूप से आज जहाँ, जिस रूप में हूँ, वहाँ तक तो किसी भी तरह नहीं पहुँच पाता। भगवान् ने रक्षा की, मेरी पढ़ाई बनी रही।

हुआ यों कि उन दिनों मैं छठी कक्षा में पढ़ता था। हमारे गाँव में तो प्राथमिक विद्यालय ही था। आगे की पढ़ाई के लिए मैं अपने गाँव से लगभग ८ कि.मी. दूर कालियास के 'मिडिल स्कूल' (आठवीं कक्षा तक वाला विद्यालय) में भरती हुआ था। उस सत्र में मैं, मेरे सहपाठी बंशीलाल, रामबख्श और रामलाल, हम चारों इस स्कूल में भरती हुए थे। उन दिनों सरकारी स्कूलों में आज की तरह बजट आवंटित नहीं हुआ करता था। स्कूलों को अधिकतर जन-सहयोग पर निर्भर रहना पड़ता था अथवा छात्रों के परिश्रम पर।

छठी कक्षा में जब हम लोग इस विद्यालय में भरती हुए तब विद्यालय भवन में कक्षा कक्ष तो लगभग पर्याप्त थे, लेकिन विद्यालय भवन के चारदीवारी (बाउंड्रीवाल) नहीं थी। प्रधानाचार्यजी आदि ने चार दीवारी बनाने संबंधी एक योजना बनाई। यह तय किया गया कि विद्यालय के पास पीछे ही जो विशाल तालाब है, अब उसमें पानी कम हो गया है, अत: वहाँ की गीली मिट्टी से ईंटें बनाकर क्यों न विद्यालय परिसर की चारदीवारी बनाई जाए। संकाय सदस्यों ने भी इस योजना के लिए सहमति दे दी। तय किया गया कि कुछ दिनों तक दोपहर के बाद बच्चों से ईंटें बनवाने का काम करवाया जाए। यह भी निर्णय लिया गया कि यह कार्य कक्षा छह से लेकर कक्षा आठवीं तक के छात्रों से ही करवाना है, क्योंकि इन कक्षाओं के बच्चे बड़े होते हैं और यह शारीरिक श्रम वे आसानी से कर सकते हैं।

ईंटें बनाने के लिए काम में ली जाने वाली सामग्री, जैसे तगारियाँ, फावड़ा, गेती, लकड़ी का साँचा, पानी का मटका, बाल्टियाँ जो भी आवश्यक थी, उसकी व्यवस्था कर ली गई। एक-दो दिन बाद ईंटें बनाने का काम शुरू कर दिया गया। आठवीं कक्षा के बच्चे ईंटें बनाने का काम करने लगे तो छोटी कक्षा के बच्चे मिट्‌टी आदि सामग्री लाने का काम। तगारियाँ भर-भरकर लाने का काम जल्दी होना था, इससे ईंटें जल्दी बन सकती थीं। एक बात और तय की गई कि काम भले ही सभी मिलकर करें, लेकिन हर कक्षा के छात्रों को कितनी ईंटें तैयार करनी हैं, यह भी निश्चित कर दिया गया। इससे किसी भी कक्षा के बालक आलस्यवश टालमटोल नहीं कर सकते थे। दोपहर बाद हर कक्षा के छात्रों के लिए एक शिक्षक की भी ड्यूटी लगा दी गई थी। मुझे याद है, यह समय सन् १९६४ की सर्दी का था, उस समय विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री यमुनादत्तजी थे। वह बहुत ही अनुशासनप्रिय और बड़े सख्त थे। उन दिनों छात्रों को सजा देने की दृष्टि से आज जैसी कोई रोक-टोक नहीं थी। शिक्षक से लेकर प्रधानाध्यापक के हाथ में डंडा लगभग अनिवार्य रूप से होता था। उस समय कुछ और अध्यापक भी बच्चों को सजा देने की दृष्टि से कोई संकोच नहीं करते थे। पढ़ाई अथवा अनुशासन आदि की दृष्टि से दिन में एक बार तो हर छात्र की पिटाई अथवा उसका मुर्गा बनना तय था।

ईंटें बनाने के लिए काम में ली जाने वाली सामग्री, जैसे तगारियाँ, फावड़ा, गेती, लकड़ी का साँचा, पानी का मटका, बाल्टियाँ जो भी आवश्यक थी, उसकी व्यवस्था कर ली गई। एक-दो दिन बाद ईंटें बनाने का काम शुरू कर दिया गया। आठवीं कक्षा के बच्चे ईंटें बनाने का काम करने लगे तो छोटी कक्षा के बच्चे मिट्‌टी आदि सामग्री लाने का काम। तगारियाँ भर-भरकर लाने का काम जल्दी होना था, इससे ईंटें जल्दी बन सकती थीं। एक बात और तय की गई कि काम भले ही सभी मिलकर करें, लेकिन हर कक्षा के छात्रों को कितनी ईंटें तैयार करनी हैं, यह भी निश्चित कर दिया गया। इससे किसी भी कक्षा के बालक आलस्यवश टालमटोल नहीं कर सकते थे।

यही मानसिकता प्रधानाध्यापकजी और शिक्षकों की ईंटें बनाने के काम को लेकर भी थी। अगर कोई बालक मिट्‌टी लेकर धीरे चलता अथवा तगारी में कम मिट्‌टी ले जाता तो उसको एक-दो डंडे लगाना तो सामान्य बात थी। दो-तीन दिन तक तो मैं यह काम अन्य छात्रों के साथ करता रहा, लेकिन बाद में मुझे थकान होने लगी। एक तो मेरा स्वास्थ्य आरंभ से ही कमजोर था, दूसरा मैं था पढ़ाकू। पढ़ाई में सबसे आगे रहने के कारण घर पर भी नियमित पढ़ाई करता। उस पर अपने गाँव से पैदल चलकर (८ कि.मी.) कालियास जाना और पैदल चलकर ही घर आना। घर पहुँचते-पहुँचते शाम हो जाती थी, सूर्यास्त तो रास्ते में ही हो जाता था।

अब मुझे चिंता सताने लगी कि यह ईंटों वाला काम तो कई दिन चलेगा और मैं इसमें लगा रहा तो निश्चित ही बीमार हो जाऊँगा। जैसे-

तैसे एक-दो दिन और स्कूल गया। तभी मेरे पिताजी के ननिहाल से एक कार्यक्रम का निमंत्रण आया। मैंने विद्यालय में छुट्टी के लिए प्रार्थनापत्र भिजवा दिया और पिताजी, माताजी, छोटा भाई गणपत और मैं भी पिताजी के ननिहाल आसींद आ गए। दो-तीन दिन यहाँ रहे, मुझे थोड़ी शांति मिली। लेकिन चिंता मेरा पीछा नहीं छोड़ रही थी। जब गाँव आ गए तो अब स्कूल जाना ही था, लेकिन मेरी हिम्मत नहीं हो रही थी। मैं स्कूल नहीं गया। पिताजी ने कारण पूछा तो पेटदर्द होना बता दिया। दिन भर सोचता रहा, चिंता में डूबा रहा। तभी पिताजी रास्ते से गुजर रहे बद्री महाराज को बुला आए और उनसे कहा कि भैरूँ का पेट दर्द कर रहा है, आप देखें, कहीं इसकी धरण या नश तो नहीं डिग गई है। बद्री महाराज ने मुझे लिटाकर पेट पर हाथ फिराया और पिताजी से कहा कि ऐसा तो कुछ भी नहीं है, खाने-पीने से पेट दर्द हो गया होगा।

मैं कभी झूठ बोला होऊँ याद नहीं पड़ता, लेकिन इस समय तो मैंने बहाना भी बनाया है और झूठ भी बोल रहा हूँ, यह सब जानकर मैं भी बड़ा दु:खी था। एक दिन मेरा साथी बंशीलाल घर आया, उसने पिताजी से कहा कि कक्षा अध्यापकजी ने कहलवाया है कि भैरूँ स्कूल क्यों नहीं आ रहा है, तुम उसके घर जाकर पता करके आना। पिताजी ने मेरी स्थिति जानकर बीमारी का कारण बताते हुए बंशीलाल से कहा कि ठीक होते ही यह स्कूल आ जाएगा।

दो-चार दिन और बीत गए। मैं परेशान, घरवाले सभी परेशान। मुझे खोद-खोदकर पूछने लगे कि आखिर तू स्कूल क्यों नहीं जा रहा है? मैं जानता था कि पिताजी का गुस्सा बड़ा खतरनाक है, वे किसी को नहीं बख्शते। उन्हें क्या कहूँ कि स्कूल में हमसे ईंटें बनवाई जा रही हैं और मैं यह काम बिल्कुल नहीं कर सकता। अब तो सूख चुकी ईंटों को लेकर स्कूल तक पहुँचाने का भी काम शुरू होना था। एक ईंट का वजन लगभग १० कि.ग्रा. था। ये ईंटें मरड़ा (एक विशेष प्रकार की मिट्टी) से बनाई जा रही थीं। इन्हें पकाया नहीं जाता, ये कच्ची ही दीवार बनाने में प्रयुक्त होती हैं।

एक दिन माताजी ने भी पिताजी से चिंता व्यक्त की कि भैरूँ स्कूल नहीं जा रहा है तो आप स्वयं इससे शांति से पूछें और हो सके तो इसके साथ जाकर स्वयं प्रधानाध्यापकजी से मिलें। मैं आरंभ से ही संकोची प्रकृति का रहा हूँ, सो आगे होकर कुछ बात कहने की हिम्मत तो दूर, किसी बात के लिए 'हाँ' या 'ना' कहने का भी साहस नहीं जुटा पाता था। विशेषकर पिताजी के सामने तो 'मौनं स्वीकृतिर्लक्षणम्' से ही काम लिया करता था।

लेकिन पढ़ाई का नुकसान हो रहा था, यह मेरे लिए भी कम चिंता का विषय नहीं था। मेरी दयनीय दशा देखकर एक शाम माताजी के साथ बिठाकर पिताजी ने मुझे बड़े प्यार से स्कूल न जाने का कारण पूछा तो एकाएक मेरी रुलाई फूट पड़ी। पिताजी ने ढाढ़स बँधाया तो मैंने अपनी समस्या उनको बता दी। यह आशंका भी प्रकट कर दी कि ईंटों का काम न कर पाने के कारण सभी छात्रों के सामने मेरी पिटाई हो सकती है और ऐसा हो गया तो मैं इस अपमान को कैसे सहन कर पाऊँगा? क्योंकि मैं कक्षा का सबसे होशियार छात्र था और अगर किसी भी तरह मुझे अपमानित होना पड़ा तो यह स्थिति मेरे लिए बहुत ही दु:खद होगी।

अंतत: पिताजी ने हारकर यह स्वीकार कर लिया कि अब मुझे स्कूल नहीं भेजेंगे। बड़े भाई सा सिलाई करते थे, वह केवल तीसरी कक्षा तक ही पढ़ पाए थे। मेरे लिए भी सोच लिया और कहा कि अब तो कान्हा (बड़े भाई सा) के काम में हाथ बँटा, बड़ा होने पर अच्छी सिलाई सीख जाएगा तो भी कोई बात नहीं। सभी कौन सी नौकरी करते हैं, कमाकर तो खा ही लेगा। एक-दो दिन और निकल गए। मैं भाई सा के काम में हाथ बँटाने लगा। आरंभ में कपड़ों के 'काज-बटन' आदि का छोटा-मोटा काम या सीधी सिलाई का काम करना शुरू किया। लेकिन मन भी कम बेचैन न था। रह-रहकर पढ़ाई छूट जाने की चिंता।

एक दिन रविवार को अपने साथी बंशीलाल के घर गया और उसको सारी बात बताई। वह मेरे साथ घर आया, माताजी को मेरी बात बताई। शाम को पिताजी को भी मेरी स्थिति और चिंता से अवगत करा दिया। माताजी के आग्रह पर पिताजी दूसरे दिन मुझे साथ लेकर प्रधानाध्यापकजी से मिलकर बात करने के लिए तैयार हो गए।

तब तक ईंटें बनाने का काम बंद हो गया था। त्रैमासिक जाँच परीक्षा निकट आ जाने से बच्चों की पढ़ाई पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। मुझे पिताजी के साथ देखकर कई सहपाठी उत्सुकता से मुझे स्कूल न आने का कारण भी पूछने लगे और पिताजी के स्कूल में आने के बारे में भी जिज्ञासा प्रकट करने लगे। मैंने उनसे यही कहा कि यह सब मैं बाद में बताऊँगा, पहले प्रधानाध्यापकजी से मिल लेते हैं।

पिताजी ने प्रधानाध्यापकजी को सारी बात बताई। उन्होंने पिताजी के सामने ही कक्षा अध्यापकजी को भी बुलवा लिया, मेरे बारे में उनसे जानकारी ली। कक्षा अध्यापकजी ने बताया कि यह कक्षा का ही नहीं, बल्कि पूरे स्कूल का सबसे होशियार छात्र है।

प्रधानाध्यापकजी ने यह सब जानकर मेरी पीठ थपथपाई और कहा कि अरे, अब तो ईंटें बनाना भी बंद हो गया है और भविष्य में ऐसी कोई स्थिति आई तो भी तुम्हें उस काम में नहीं लगाया जाएगा। तू तो जा आराम से पढ़, कोई चिंता मत कर। अगर कोई और भी बात हो तो निसंकोच मुझसे कहना। मैं समझ गया था कि प्रधानाध्यापकजी मेरी होशियारी के कारण ही मेरा पक्ष लेते हुए यह सब कह रहे हैं। मेरी समस्या का समाधान हो गया।

घर पर आकर पिताजी ने माताजी को सारी बात बताई। माताजी यह सब जानकर बहुत प्रसन्न हुईं। मेरी बेपटरी होती हुई पढ़ाई की गाड़ी फिर पटरी पर आई ही नहीं, दौड़ने लगी। उस स्थिति से उबरना मैं अपना बहुत बड़ा सौभाग्य मानता हूँ।

साअ

नंदभवन, शिवाजीनगर,
भीलवाड़ा-३११००१ (राज.)
दूरभाष : ९४१३२११९००

रामदरश मिश्र के यात्रा-साहित्य की अंतर्दृष्टि

• मंजु मुकुल कांबले

जीवन एक अनवरत यात्रा है। एक अनवरत धारा है। एक बहती हुई नदी है। जिसका प्रवाह कभी थमता नहीं है। इस यात्रा में हर दिन एक नया अध्याय, एक नया अनुभव लेकर आता है। इन अनुभवों में से कुछ अनुभव मील का पत्थर बनकर हमारी स्मृतियों में अंकित हो जाते हैं। यात्राओं में अर्जित स्मृतियों में अंकित अनुभवों के माध्यम से ही यात्रा-साहित्य का जन्म हुआ।

यात्राओं के भीतर जीवन और रोमांच की अनुभूति को शब्दों में उतारते हुए 'घुमक्कड़शास्त्र' के रचनाकार राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं—"महानदी के वेग की तरह घुमक्कड़ की गति को रोकने वाला दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ। बड़े-बड़े पहरे वाली राज्य सीमाओं को घुमक्कड़ों ने आँख में धूल झोंककर पार कर लिया। मैंने स्वयं ऐसा एक से अधिक बार किया है (पहली तिब्बत यात्रा में अंग्रेजों, नेपाल राज्य और तिब्बत के सीमा रक्षकों की आँख में धूल झोंककर जाना पड़ा था)।"

इस तरह गति की ऊर्जा यात्रा-साहित्य का प्राणतत्त्व है। यह प्राणतत्त्व ही जीवन को गतिमान किए रहता है और व्यक्ति अनवरत यात्राओं के बीच अपने-आप को पाता है। यहाँ यह तथ्य ध्यातव्य है कि यात्रा का संबंध पर्यटन से होने के बावजूद यह साधारण पर्यटन से कुछ अलग है। यहाँ सवाल केवल परिदृश्य का ही नहीं अपितु परिदृश्य में अनुगूँजित परिवेश और जीवन का भी है। यात्रा-साहित्य एक जीवन से दूसरे जीवन में स्मृतियों के माध्यम से प्रवेश की तरह है। एक ही जीवन में अनेक जीवन जीने की अभिलाषा की तरह है। इसलिए यात्राओं को हमेशा ज्ञान-अर्जन और ज्ञान-विस्तार के साथ जोड़कर देखा जाता रहा है। यह न केवल ज्ञान का विस्तार है अपितु अनुभवात्मक संबंधों और रागात्मक चेतना का भी विस्तार है।

इस तरह कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आत्मकथा आदि महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विधाओं के माध्यम से अपनी सृजनशीलता को विस्तार देने के बाद प्रतिष्ठित साहित्यकार रामदरश मिश्र जब यात्रा-साहित्य में प्रवेश करते हैं तो यह अनुभवात्मक चेतना और रागात्मकता के विलक्षण विस्तार का एक विशिष्ट रूप है। मिश्रजी के यात्रा-साहित्य के शब्द-शब्द से झाँकते उनके यात्रा-अनुभव समय की रेत पर छूटे हुए गहरे निशान की तरह हैं। रामदरश मिश्र रचनावली (यात्रा-संस्मरण, निबंध एवं अन्य) के खंड-दस की भूमिका में संपादक स्मिता मिश्र लिखती हैं—"नवें दशक में उन्हें उत्तर कोरिया जाना पड़ा। वहाँ जाने के क्रम में चीन और रूस को भी देखा। फिर १९९२ दक्षिण कोरिया की यात्रा की। १९९७ में नेपाल और इंग्लैंड की यात्राएँ हुईं। मिश्रजी ने अपनी विदेश यात्राओं के अनुभवों को तो लेखों में उतारा ही, कुछ स्वदेशी यात्राओं—शिलांग, अहमदाबाद, तिरुपति की यात्राओं पर भी इस दौर में लिखा। उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया की यात्राओं पर उन्होंने विशद रूप से लिखा और ये यात्रा-निबंध क्रमशः 'तना हुआ इंद्रधनुष' या 'भोर का सपना' में पुस्तकाकार हुए।"

प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय। आधुनिक हिंदी साहित्य, संप्रेषण, भाषा विज्ञान, अनुवाद, मीडिया, दलित-साहित्य आदि विषयों पर लगभग ग्यारह पुस्तकें तथा विभिन्न शोध-जर्नल व पत्र-पत्रिकाओं में शोध-आलेख प्रकाशित। शोध-निर्देशन में अनेक शोध-छात्र पीएच.डी. डिग्री तथा एम.फिल. कर चुके हैं। विशेषज्ञ—आधुनिक हिंदी साहित्य, अनुवाद।

उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, चीन, रूस, इंग्लैंड आदि देशों की यात्राओं का अनुभव संसार बहुत व्यापक है। 'बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे' जैसे गीत के रचनाकार रामदरश मिश्र जिस गहरे संतोष के साथ अपने ख्वाबों के परों को धीरे-धीरे अपने जीवन-जगत् से साहित्य-जगत् में उड़ान की आजादी दे रहे हैं, उस उड़ान की सीमाओं में यात्राओं के अनेक अनुभव शामिल होने के लिए बेचैन रहे, लेकिन उनकी चित्तवृत्ति कुछ अलग ही रही। इस चित्तवृत्ति पर बात करते हुए स्मिताजी लिखती हैं—"मिश्रजी यायावर वृत्ति के व्यक्ति नहीं हैं, अतः वे स्वेच्छा से यात्राएँ नहीं करते। जहाँ जाना पड़ जाता है, जाते हैं, नहीं तो अपने घर पर ही रहते हैं। वे अध्यापक तथा साहित्यकार हैं, अतः अकादमिक तथा साहित्यिक प्रसंग उन्हें घर से बाहर खींचते ही रहते हैं और उन्हें बाहर जाना पड़ता रहा है।"

यात्रा-साहित्य में जिस यायावरी या घुमक्कड़ी मानसिकता की चर्चा हमेशा होती रहती है, वह रामदरश मिश्रजी के व्यक्तित्व में नहीं है। इस पर वे स्वयं लिखते हैं—"किंतु जाने से दो-तीन दिन पूर्व मेरी तबीयत खराब हो गई। हल्का-सा बुखार और जुकाम हो आया। फिर मेरे बिदकू मन को न जाने का एक बहाना मिल गया।"

रामदरश मिश्र के यात्रा-साहित्य में यायावरी मनोवृत्ति के स्थान पर

कवि और कथाकार की सूक्ष्म, सघन और एंद्रिय चित्तवृत्ति बहुत गहरी है। यह चित्तवृत्ति आत्मकथात्मक संस्मरणों के स्थान पर रागात्मक एंद्रिय बोध और दृष्टि के साथ अनुभूत क्षण को चेतना में उतारने के लिए शब्दों में अनुगूँजित होती है। निरंतर बदलते हुए समय की आहट को पन्नों में उतार देने का भाव इन यात्राओं में साथ-साथ चला है। जीवन और यात्राओं के बीच समय का पहिया निरंतर घूमता हुआ दिखाई देता है। यह निरंतरता, समय के साथ गहरी घनिष्ठता को साधने में भी सफल होती दिखाई देती है। 'तना हुआ इंद्रधनुष' में उत्तर कोरिया के अपने शुरुआती अनुभव पर कलम उठाते हुए वे लिखते हैं—

"तमाम देशों के रंग-बिरंगे वेशधारी लोग। वसंतोत्सव-सा लगता था, जिसमें मनुष्यों के फूल खिले थे और एक भीनी-भीनी खुशबू वातावरण में व्याप्त थी। न जाने क्या-क्या चिंताएँ, समस्याएँ इनके भीतर रही होंगी, किंतु सभी ऊपर से इस उत्सव में मिलकर उसकी रंगीन धारा में बहते दिखाई पड़ रहे थे। सामूहिकता की अपनी लय होती है, जो न जाने कितनी व्यक्ति-इकाइयों को उनकी अपनी निजी चिंता से कुछ देर के लिए मुक्त कर एक बड़े अनुभव का अंग बना देती है।"

रामदरशजी की कविताओं में कथातत्त्व का प्रवेश भी मिलता है और उनकी कहानियों में काव्य-बिंब की सघन एंद्रियता भी अपनी विलक्षणता के साथ मौजूद है। जो खनखनाहट और लय उनके गीतों में है, वही लयात्मक प्रवाह उनके यात्रा-साहित्य में देश-विदेश की यात्राओं के बीच अनुगूँजित होता हुआ दिखाई देता है। उत्तर कोरिया के इंटरनेशनल शॉपिंग सेंटर की भीड़ को देखकर इस तरह के काव्यात्मक बिंब का मानस में उभरना और फिर उसे इतनी खूबसूरती से चित्रित कर देना रामदरशजी के यात्रा-साहित्य को विलक्षण और विशिष्ट बनाता है। भीड़ में सामूहिकता की लय को खोज लेना ही साहित्यिक दृष्टि है। यह व्यष्टि का समष्टि में तिरोहित होना है, जिस पर कवि की कलम काव्यात्मक हो उठती है। यहाँ यथार्थ-चित्र के भीतर से एक साहित्यिक-यथार्थ निर्मित हो गया है।

अज्ञेय 'एक बूँद सहसा उछली' में लिखते हैं—"यह पुस्तक मार्गदर्शिका नहीं है। यूरोप की यात्रा करने वाला जान लेना चाहे कि कैसे वह कहाँ से कहाँ जा सकेगा या कैसे मौसम के लिए कैसे कपड़े उसे ले जाने होंगे या कहाँ कितने में उनका खर्च चल सकेगा तो उसे निराशा होगी।"

अज्ञेय 'एक बूँद सहसा उछली' में लिखते हैं—"यह पुस्तक मार्गदर्शिका नहीं है। यूरोप की यात्रा करने वाला जान लेना चाहे कि कैसे वह कहाँ से कहाँ जा सकेगा या कैसे मौसम के लिए कैसे कपड़े उसे ले जाने होंगे या कहाँ कितने में उनका खर्च चल सकेगा तो उसे निराशा होगी।"

रचनाकार के अनुभवों में अवस्थित हो स्थितियाँ और घटनाएँ साधारणीकरण की सीमा तक पहुँचने से पहले रचनात्मक चेतना से अनुप्राणित हो उठती हैं। तथ्यात्मकता, रागात्मकता में तिरोहित हो जाती है। सूचना, चिंतन का अंग बनने लगती है। यही रचना और रचनाकार की विशिष्टता है। तथ्यात्मक अनुभव संवर्धित हो रागात्मक अनुभव में बदल जाता है। स्थानीय अनुभव, वैश्विक बनने की प्रक्रिया में प्रवेश कर जाता है। उत्तर कोरिया में पर्वतीय वातावरण के भीतर 'चैयोचगसन प्रपात' को देखने के अनुभव को रामदरशजी 'तना हुआ इंद्रधनुष' में इसी तरह चित्रित करते हैं—"ऊपर झरने की स्रोत ऊँची पहाड़ी की अगम्य ऊँचाई थी, नीचे उसकी मंजिल की अछोर दिशा थी। बीच में हम एक बिंदु पर बैठे उसको पूरी सघनता से कुछ देर के लिए जी लेना चाहते थे; उसके रूप, स्वर और स्पर्श को अपने अनुभव में उतार लेना चाहते थे। समय का दबाव था, कुछ और जगहें देखकर शाम को प्यांगयांग लौटना था, अत: यहाँ से उठना पड़ा। अलविदा दोस्त, मैं तुम्हें अपने अनुभवों में ले जा रहा हूँ और अपने यहाँ के झरनों की लय में तुम्हें गूँथ दूँगा। उनसे कहूँगा कि दूर देश में तुम्हारे भाई-बंधु से मिलकर आ रहा हूँ। वे भी तुम्हारी ही तरह हँसते-गाते हैं और आदमी को अपनी खुशी बाँटते हैं। परिवेश थोड़ा भिन्न है तो क्या हुआ, तुम सभी चेतना और रूप की एक ही लय में बँधे हुए हो।"

प्रकृति के मनोरम दृश्य, देश और काल की सीमा से परे जाकर एक शाश्वत आह्लाद की स्थिति निर्मित कर पाने में सक्षम हैं। प्रकृति के उपादानों का चिर स्थायी प्रभाव देश और दुनिया की दूरी को पाट देता है। उत्तरी कोरिया में बहते जलप्रपात को अपने देश के निर्झरों की लय के साथ जोड़ना एक अद्‌भुत संगम के क्षण की तरह प्रतीत होता है। यही रामदरशजी के यात्रा-साहित्य की विशेषता है कि यहाँ देश और काल की दूरियों से ऊपर उठकर विश्व मानवता का स्वर प्रकृति में भी अनुगूँजित होता हुआ लेखक को दिखाई देता है। यह स्थानीयता के भीतर वैश्विकता और वैश्विकता के भीतर स्थानीयता की स्थापना का क्षण है। जिसके अनेक उदाहरण रामदरशजी के यात्रा-साहित्य में देखने को मिलते हैं।

यात्रा-साहित्य की आंतरिक मनोभूमि पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ. धीरेंद्र वर्मा लिखते हैं—"यात्रा करने मात्र से कोई सामाजिक यायावर की संज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता और न यात्रा-विवरण प्रस्तुत कर देना मात्र यात्रा-साहित्य है। उसमें रचनाकार की संवेदना का वह अंश भी अनिवार्यत: समाविष्ट रहता है, जो साहित्य का मुख्य तत्त्व है।"

रामदरशजी के यात्रा-साहित्य में साहित्यकार के रूप में उनकी मनोभूमि और रचनात्मकता का अंश मौजूद है। रचनात्मकता का समावेश यात्रा की वर्णनात्मकता को कथात्मकता और बिंबों की सघन अनुभूति में परिवर्तित कर देता है। कथात्मकता और बिंब, वर्णनात्मकता के सपाट प्रवाह को पाठक के अनुभव में उतरती हुई बात में परिवर्तित कर देते हैं। विशिष्टता रामदरशजी के यात्रा-संस्मरणों को घनीभूत रागात्मकता की चरम स्थिति में प्रवेश करा देती है। लेकिन यहाँ ध्यान देने की बात यह भी है कि साहित्यकार को केवल प्रकृति ही नहीं लुभाती, बल्कि भाषा और व्यवस्था के कई सवाल भी समय-समय पर मानस की दहलीज पर दस्तक देते रहते हैं।

अपने यात्रा-साहित्य में चिंतन की भूमि को रामदरशजी लगातार बनाए रखते हैं। भाषा के सवाल को तुलनात्मक संदर्भ के साथ बहुत सशक्त तरीके से उठाते हुए वे लिखते हैं—

"चीन, कोरिया, मास्को जहाँ-जहाँ मैं गया, लोगों को अपनी भाषा में तने हुए, मुसकराते हुए, जीते हुए, जगाते हुए, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को क्रिया में उतारते हुए देखा और विश्वास तथा उन्नति के शिखरों की ओर तेजी से बढ़ते हुए देखा। और हम? अपने बच्चों के सुकुमार हृदयों में अंग्रेजी का आतंक बोते चले जा रहे हैं। कोरिया में अंग्रेजी वे ही पढ़ते हैं, जो मूलत: दुभाषिए का काम करते हैं। प्रोफेसरों में कुछ ही लोग मिले, जो अंग्रेजी भी जानते थे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अंग्रेजी जानने वाले समाज का वहाँ क्या स्थान है?"

अस्मिता के साथ भाषा का सवाल बहुत गहरे जुड़ा हुआ है। भाषा में स्वाभिमान और गौरव के साथ तना भी जाता है। मुसकान के माध्यम से संप्रेषण भी होता है। भाषिक-समुदाय के भीतर जीवन का एक प्रवाह चलता है और भाषा ही जन-जागरण का महत्त्वपूर्ण माध्यम बनती है। इस बात को रामदरशजी ने बहुत ताकतवर तरीके से प्रस्तुत किया है। भाषा का आतंक प्रतिभाओं की मौलिकता को नष्ट करता है। भाषा में सहजता नवनवोन्मेषकारिणी प्रतिभा का उन्मेष करती है। यात्रा के प्रवाह में चिंतन का यह प्रस्फुटन रामदरशजी के यात्रा-साहित्य की बड़ी उपलब्धि है।

यात्रा-साहित्य के भीतर चिंतन के इन क्षणों में रामदरशजी की अभिव्यक्ति-शैली में भी बदलाव देखने को मिलता है। यहाँ भाषा कुछ-कुछ निबंध-शैली के निकट जाती हुई दिखाई देती है। इस तरह की स्थिति की संभावना का विश्लेषण करते हुए डॉ. रघुवंश लिखते हैं—

"निबंध-शैली की व्यक्तिपरकता, स्वच्छंदता तथा आत्मीयता आदि गुण यात्रा-साहित्य में भी पाए जाते हैं। निबंधकार जिस प्रकार अपने विषय को अपनी मानसिक संवेदन-स्थिति में ग्रहण करता और उसी प्रेरणा से विस्तार भी देता है, बिल्कुल उसी प्रकार यात्री भी अपनी यात्रा के प्रत्येक स्थल और क्षणों में उन्हीं क्षणों को सँजोता है, जिनको वह अनुभूत सत्य के रूप में ग्रहण करता है।"

कथाकार रामदरश मिश्र का यात्रा-साहित्य किस्सागोई के तत्त्व को भी समाए हुए है। साथ-ही-साथ यात्रा के दौरान परिवेश और व्यवस्था से संबंधित चिंतन के क्षण भी अपनी-वैचारिकता के साथ मौजूद हैं। विदेशों में महिलाओं की स्थिति और मूल्यांकन का भी एक विशेष नजरिया रामदरशजी के यात्रा-साहित्य में देखने को मिलता है—

"मुझे (बल्कि हमें) लगा कि इस देश में स्त्रियों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्हें बस चलाते देखा। तमाम चौराहों पर उन्हें अत्यंत सक्रिय और स्मार्ट पुलिस के रूप में देखा, तमाम स्थानों पर उन्हें गाइड के रूप में देखा, सड़कों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर उन्हें सार्वजनिक कार्य करते देखा। सर्कसों और नाटकों में उन्हें खेल करते और अभिनय करते तो देखा ही, प्रबंधक और निर्देशक के रूप में भी देखा। शैक्षिक क्षेत्र में तो वे थीं ही। यानी अपने देश के निर्माण में वे पुरुषों की तरह सक्रिय हैं भीतर और बाहर। उनके होने से केवल काम ही नहीं होता, बल्कि वातावरण में एक स्निग्धता और प्रियता भरी होती है। स्त्री-पुरुष के बीच कोई कृत्रिम दीवार नहीं, इसलिए वहाँ उस दीवार से उत्पन्न कुंठा और कुरूप व्यवहार की गुंजाइश कम दिखती है। स्वस्थ तन और स्वस्थ मन का खुलापन चारों ओर नजर आया।"

विदेशी जमीन पर महिलाओं की सशक्त, सक्रिय उपस्थिति लेखक को प्रभावित करती है। निर्माण में महिलाओं की भागीदारी सर्वथा प्रशंसनीय है। महिलाओं की पूर्ण भागीदारी ही समाज को विकास के रास्ते पर आगे ले जा सकती है। इस स्थिति के मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर भी लेखक का ध्यान गया। स्वस्थ तन और स्वस्थ मन के विकास के लिए समाज में स्त्री-पुरुष की बराबर भागीदारी सर्वथा आवश्यक है। यात्रा के मनोरम प्रवाह में चिंतन के ये क्षण रामदरश मिश्र के यात्रा-साहित्य के प्रभाव-क्षेत्र को विस्तृत कर देते हैं।

एक साहित्यकार के रूप में रामदरशजी की मनोभूमि का केंद्रीय तत्त्व गाँव है। वे मानते हैं कि समाज के जीवन का यथार्थ, सहजता, जुड़ाव जितना गाँव में देखने को मिलता है, उतना शहरों में नहीं है। गाँव की जमीन के साथ उनका अनुभवात्मक संबंध बहुत गहरा है। वे गाँव को बहुत करीब से पहचानते हैं। उनकी साहित्यिक-चेतना प्रत्येक शहर में एक गाँव खोज लेती है और दुनिया के हर गाँव में अपने गाँव का प्रतिबिंब देख लेती है। वे अपनी ऐसी ही एक यात्रा की चर्चा करते हुए लिखते हैं—

"ये खेत मुझे अपने खेत ही लगे, उनमें काम करते चेहरे भी मुझे अपने चेहरे लगे। इस गाँव के लोगों ने जिस आत्मीयता और निश्छलता से हमें खिलाया-पिलाया, वह पश्चिम की आधुनिक सभ्यता में प्राय: नहीं है और मैं इनके माध्यम से अपने गँवई लोगों के बीच पहुँच गया। यहाँ के लोगों के चेहरों पर जो हँसी है, आँखों में जो भोलापन है, शरीर में जो मेहनत की ऊर्जा है, वह हमें हमारे गाँवों में पहुँचा देती है। मैंने कहा, वास्तव में एशिया महाद्वीप के पूर्वी तट के देश सांस्कृतिक दृष्टि से एक ही परिवार के लगते हैं। डॉ. यंग मन मुसकराए और मेरी बात का समर्थन किया।"

वस्तुत: यात्रा-साहित्य केवल वृत्तांत ही नहीं, संवाद भी है। संस्कृतियों के बीच होने वाला संवाद। अपने देश से बाहर, परिवेश से बाहर दूसरे देशों की यात्राओं का अनुभव एक संवाद की तरह ही होता है। एक तुलनात्मक मन:स्थिति में चित्त लगातार उलझा रहता है। यह समग्र जीवन अनुभवों से गुजरकर अपने-आप में लौटने की तरह है। यह अपने-आप को देने में ही अपने-आप को पाने जैसा अनुभव है। विदेश यात्रा के बाद अपने देश लौटने के इस अनुभव को रामदरशजी साझा करते हुए कहते हैं—"विदेश से लौटने के बाद अपना देश मुझे और प्यारा लगा और मेरे भीतर अपने देश का अनुभव बाहरी देशों के मानवीय अनुभवों के साथ मिलकर और बड़ा हो गया।"

साअ

प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
दूरभाष : ९९७१२३०५९९

१९४७ संतोषाबाद पैसेंजर

मूल : **मधुरंतकम नरेंद्र**

अनुवाद : **राहिला रईस**

श्री मधुरंतकम नरेंद्र का जन्म १९५७ में आंध्र प्रदेश के दामलचेरुवु गाँव में हुआ था। वह तिरुपति स्थित श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय से २०१९ में अंग्रेजी के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्हें कहानी-लेखन की प्रेरणा अपने पिता और प्रसिद्ध तेलुगु लेखक श्री राजाराम मधुरंतकम से मिली। उनके कई कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए, जिनमें से 'कुंभमेला' और 'अस्तीतवानीकी अटू इटू' अत्यंत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने कई उपन्यासों, कविताओं और नाटकों की भी रचना की। उन्होंने अपनी कहानियों में आस-पास के माहौल और वातावरण का विस्तार से वर्णन किया है। यह उनकी कहानी कला की विशेषता है।

जब तक मैं पेदम्मा चौल्ट्री पर मुड़ा, तब तक संतोषाबाद पैसेंजर कोथेरू स्टेशन पर पहुँच चुकी थी, जहाँ पर वह केवल दो मिनट के लिए ही रुकती थी। मैंने लगभग १०० मीटर की दूरी पर स्थित टिकटघर की ओर सरपट दौड़ लगा दी। मेरी साँस फूल रही थी।

'संतोषाबाद', मैंने हाँफते हुए कहा।

'आप तेज दौड़ो अधिक समय नहीं है', टिकट खिड़की पर बैठे व्यक्ति ने सहायतावश परामर्श दिया।

मैं डिब्बे के प्रवेश द्वार पर यात्रियों की भीड़ में से किसी तरह अपने शरीर को भीतर धकलने में सफल रहा। अलबत्ता मैं कह नहीं सकता कि भीतर स्वयं घुस सका या ईश्वर ने या किसी और ने मुझे वहाँ पहुँचा दिया था। गार्ड ने सीटी बजा दी। मैं अभी भी सीट के लिए यहाँ-वहाँ देख रहा था। इंजन ने एक तेज कर्कश चीख मारी। ट्रेन दो बार लड़खड़ाई, आगे-पीछे हुई, फिर पीछे की ओर लुढ़की, यात्रियों को भय हुआ कि कहीं यह रुक न जाए। हालाँकि अजीब आवाजें करती हुई यह धीरे-धीरे आगे बढ़ी। कुछ चिंता के साथ मैंने अपनी जेब थपथपाई। चिंता की बात नहीं। साक्षात्कार पत्र अंदर सुरक्षित था।

रेल ने चिंतालावानका का पुल पार कर लिया था और गति पकड़ ली थी। एक गहरी साँस भरकर मैंने डिब्बे का जायजा लिया। महिलाएँ सीट नहीं पा सकने के कारण संतोषाबाद में बेची जाने वाली सब्जियों और पान की टोकरियों के साथ डिब्बे के प्रवेश द्वार पर उकड़ूँ बैठी थीं। उस स्थान पर अपना आधिपत्य जमाते हुए उन्होंने आने-जाने वाले यात्रियों का मार्ग अवरुद्ध कर रखा था।

औरतों और उनकी टोकरियों के बीच विभिन्न मुद्राओं में लड़के खड़े थे, जो पहली दृष्टि में छात्र प्रतीत होते थे। रेल के गति पकड़ लेने के पश्चात् भी कुछ लोग खिड़की की पट्टियों से डिब्बे से बाहर हवा में लटकते रहे और बाद में संतोषाबाद में उनके द्वारा देखी जाने वाली फिल्मों की चर्चा करते रहे। यह देखकर मुझे निराशा हुई कि रेलवे मेल सेवा के कर्मचारियों ने आधी बोगी पर कब्जा जमा रखा था। अब दो डिब्बों के बीच सीटों की केवल चार कतार ही बची हुई रह गई थीं।

प्रवेश द्वार के निकट शौचालय का दरवाजा पूरी तरह से खुला हुआ था। उसकी दुर्गंध यात्रियों के पसीने की महक में घुल-मिल गई थी। शौचालय की दीवार से टिके हुए जलाऊ लकड़ी के दो गट्ठर जोश से हिल रहे थे। इन्हें भीतर तक ढोने वाले दोनों व्यक्ति काले शरीर और झबरे बालों वाले कंकाल सरीखे लोग थे। इनके कपड़े फटे हुए थे। दोनों गट्ठर के पास खड़े होकर बीड़ी पी रहे थे। भिखारियों का एक दूसरा परिवार, जिनका सारा निजी सामान एक पुराने बोरे में भरा हुआ था, दरवाजे के दूसरी ओर डेरा डाले हुए था। इनमें पुरुष टूटे हुए दरवाजे, स्त्री अधजले कुंदे तथा उनके बच्चे क्षतिग्रस्त टेढ़े-मेढ़े अल्मुनियम के बरतनों के समान प्रतीत हो रहे थे। उनसे आगे परंतु शौचालय के द्वार से पीछे खड़े व्यक्ति के हाथों के स्थान पर दो ठूँठ थे और उसका चेहरा भी विकृत था, इसने लोगों में घृणा और कुष्ठ रोग का भय बढ़ा दिया था।

देर से आने वालों के रेले ने मुझे कुछ और भीतर धकेल दिया, मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैं अचानक एक अनोखे संसार में पहुँच गया हूँ, एक अभेद्य जंगल, जिसमें विचित्र जानवर और भयावह ठग रहते हैं, जो कि रेगिस्तान से गुजरने वाले व्यापारियों के कारवाँ को लूटा करते थे।

गाड़ी सभी प्रकार के पुरुषों और महिलाओं से खचाखच भरी हुई थी, दुधमुँहे बच्चे से लेकर झुकी कमर वाले बूढ़े व्यक्ति तक। मैंने सोचा, यह जनसांख्यिकीय विविधता का एक उत्साहवर्धक तमाशा है। महिलाओं में न कोई शालीनता थी और न पुरुषों में कोई गरिमा। समय मानो हजारों साल पीछे चला गया था। कोई भी चित्रकार इन लोगों द्वारा पहने गए वस्त्रों के रंग बनाने के लिए रंगों का संयोजन नहीं बना सकता था।

चिड़ियाँ इनके उलझे बालों में सरलता से अपने घोंसले बना सकती थीं। वे फेरीवालों द्वारा बेची जाने वाली हर चीज को खरीद रहे थे और खा रहे थे, जिससे सीटें कूड़ादान बन चुकी थीं। बिस्तरों और बक्सों से भरी हुई ऊपरी बर्थ पर सब अपनी प्रभुता जमाए हुए थे। इनसान और सामान इस कदर भरे हुए थे कि चींटी भी प्रवेश नहीं कर सकती थी। विचित्र चीखों-पुकार के द्वारा उन्होंने डिब्बे में हंगामा मचा रखा था।

रेल हिली, खड़खड़ाई और आगे बढ़ गई।

"तुम थोड़ा सा भी आगे क्यों नहीं बढ़ रहे हो? क्या हम ऐसे ही इन डंडियों से लटके रहेंगे?" कोई गुस्से से बाहर से चिल्लाया। मेरे शरीर को पीछे से एक और धक्का लगा। मुझे जोर से दूसरे डिब्बे में फेंक दिया गया, यह एक दूसरी ही दुनिया थी। खिड़की की ओर बैठी उपन्यास पढ़ने में लीन नवयुवती के चेहरे पर उसके चरित्रों के घटिया कारनामों का प्रभाव झलक रहा था। उसके पास ही चश्मे वाला व्यक्ति बैठा था, जो संभवत: उसका पति था, जो अपने हाथ में पकड़े लाल किनारी वाले जासूसी उपन्यास में हमलावर को खोजने का प्रयत्न कर रहा था। रेशमी कमीज पहने एक मोटा सा व्यक्ति बर्थ पर फैल-फूलकर बैठा था, जो तंबाकू का धुआँ उगलते खादी पहने एक व्यक्ति और क्रिकेट की राजनीति पर बहस करते दो युवाओं के लिए थोड़ी जगह प्रदान करने पर कुढ़ रहा था। उसके गले में पड़ी सोने की चेन चमक रही थी। बाहर सूर्य आग के गोले की तरह धधक रहा था। पूरी रेल भट्ठी में धकेली गई लोहे की छड़ की तरह तप रही थी। गति से ज्यादा गरमी अनुभव हो रही थी। जंग लगे पंखे, जो किसी को भी राहत पहुँचाने में असमर्थ थे, पराजय स्वीकार कर चुके थे। यात्री पसीने में डूबे हुए थे, वे समझ नहीं पा रहे थे कि कहाँ, कब और कैसे पहुँचेंगे।

लड़के दरवाजे की डंडियों को कसकर पकड़े, दर्जनों बोगियों को ढोने वाले आगे लगे इंजन से निकलने वाले कोयले के गर्दे से बचने के लिए आसरा चाहते थे। कुछ लड़के रेंगते हुए भीतर आने में सफल हो सके थे और बर्थ पर सोए रेशमी कमीज पहने व्यक्ति को जगाने का प्रयास कर रहे थे। धुआँ उगलते खादी वाले व्यक्ति ने संकेत से उन्हें प्रतीक्षा करने को कहा। लड़कों ने, जो अब तक कोयला खदान में काम करने वाले खनिकों के समान लग रहे थे, उसकी ओर शिकायती नजरों से देखा। "ऐसा प्रतीत होता है कि इसने पूरा टिकट लिया है। तभी वह कह रहा है कि इसका बर्थ पर पूर्ण अधिकार है। वह उठकर नहीं बैठ रहा, जबकि उसे सोने की इच्छा भी नहीं है। मैं अपने अनुभव से तुम्हें बताता हूँ, भिंड के छत्ते में हाथ डालना बुद्धिमानी नहीं है। पिछले स्टेशन पर इस मुद्दे पर एक बड़ी जंग छिड़ गई थी। हम इसे इसके प्रतिद्वंद्वियों से बचाते हुए लगभग गिर ही गए थे।" खादी वाले व्यक्ति ने कहा।

"ठीक है, बूढ़े आदमी। हम इन मामलात को सुलझाने में कोई नए नहीं हैं। हम इस यात्रा को टाल नहीं सकते हैं। क्या यह समझता है कि हमने टिकट नहीं खरीदी? मैं भी देखता हूँ यह कैसे नहीं उठता।" एक लड़के ने कहा; साथ ही उसने रेशमी कमीज वाले व्यक्ति का हाथ पकड़ उसे जबरदस्ती उठाना चाहा। दूसरे लड़के ने कपड़े के गट्ठर की तरह उसको उठाकर एक ओर धकेल दिया। तीसरे लड़के ने जबरन उसकी आँखें खोल

युपरिचित कहानीकार। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कहानी, शोध-पत्र, अनुवादित कहानियाँ प्रकाशित। नाथद्वारा की प्रसिद्ध संस्था 'साहित्य मंडल' द्वारा सम्मानित। संप्रति अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर (हिंदी) के रूप में कार्यरत।

दीं। रेशमी कमीज वाले व्यक्ति का चेहरा लाल भभूका हो उठा। वह अपने दाँतों को किचकिचाते हुए विचित्र वाद्ययंत्रों वाले ऑर्केस्ट्रा की धुनों की तरह आवाज कर रहा था। लेकिन जल्लादों के समान अपने ऊपर खड़े लड़कों को देखकर उसने हार मान ली थी।

"गुरुजी, अगर आप मुर्दे के समान मुद्रा में रहना चाहते हैं तो बैगों और बक्सों की संगत में बर्थ के नीचे चले जाएँ। हमें बुरा नहीं लगेगा," घुँघराले बालों वाले युवा लड़के ने कहा। रेशमी कमीज वाला उन्मत्त के समान लहराते हुए अपना सूटकेस लेकर दरवाजे की ओर बढ़ा और चिल्लाया, "प्रतीक्षा करो, मैं अगले स्टेशन पर पुलिस से तुम्हारी शिकायत करूँगा।"

तीन लड़कों ने उसके द्वारा खाली की गई सीट पर कब्जा जमा लिया और मुझे भी बैठने के लिए आमंत्रित किया। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और धम से सीट पर बैठ गया। जासूसी उपन्यास में डूबे चश्मे वाले व्यक्ति ने लड़कों की प्रशंसा करते हुए कहा, "तुम लोगों ने बहुत अच्छा किया। बधाई और धन्यवाद।" उसकी पत्नी ने भी अपनी पुस्तक से सिर उठाया और उन्हें एक बड़ी सी मुसकान दी। इस अनपेक्षित प्रशंसा से उत्साहित होकर घुँघराले बालों वाले लड़के ने पूछा, "वह अपनी रेशमी कमीज और गले की चैन से कोई बड़ा व्यापारी प्रतीत हो रहा था, वह प्रथम श्रेणी में यात्रा क्यों नहीं करता?" चश्मा पहने वाले व्यक्ति को सुनकर आश्चर्य हुआ कि उनकी इस पैसेंजर ट्रेन में प्रथम श्रेणी भी है।

"इस ट्रेन में दो प्रथम श्रेणी के डिब्बे हैं, लेकिन रेलवे अधिकारियों को मुफ्त यात्रा करने के लिए भी उसमें मुश्किल से स्थान मिल पाता है। और फिर चुनाव के समय हमारी झोंपड़ियों में आकर थके हुए बेचारे राजनीतिक नेता भी तो हैं। उन्हें प्रथम श्रेणी में आराम करने दो।" पूरी तरह से चित्रों से ढकी हुई कमीज पहने हुए लड़के ने कहा।

एक अन्य लड़के ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "उन्होंने तृतीय श्रेणी तो समाप्त कर दी, किंतु क्या वह तृतीय श्रेणी के लोगों को बाहर रख सकते हैं! गोबर के ढेर पर मक्खियों के झुंड के समान वे हर जगह हैं, हर बोगी के प्रवेश द्वार पर और शौचालयों के इर्द-गिर्द।"

"इस ट्रेन की प्रथम श्रेणी तक में भारी भीड़-भाड़ है। सुविधाएँ न के बराबर हैं। अगर अगले स्टेशन पर इतना समय मिला तो मैं एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ लूँगा।" खादी पहने व्यक्ति ने कहा।

एक लड़के ने याद दिलाते हुए उससे कहा कि "उस स्टेशन पर एक्सप्रेस ट्रेन के टिकट नहीं बिकते।"

"मैं उस एक्सप्रेस ट्रेन के सभी टिकट-परीक्षकों को जानता हूँ।" खादीवाले व्यक्ति ने अपनी भौंहे चढ़ाते हुए कहा।

अगले कंपार्टमेंट में अचानक हंगामा फूट पड़ा। यह सैकड़ों

लाउडस्पीकरों द्वारा प्रवर्धित आवाजों के विस्फोट जैसा था। भावनाएँ बम की तरह फट पड़ीं। चिंतित, चश्मे वाले व्यक्ति और उसकी पत्नी ने अपनी आँखें घुमाते हुए आवाजों के स्रोत का पता लगाने का प्रयास किया। "सब ठीक है, श्रीमान! हमारे गैंग का एक सदस्य उन्हें अनुशासन सिखा रहा था।" चित्रों वाली कमीज पहने लड़के ने जोर से हँसते हुए कहा।

"ये झड़पें आम बात हैं। ऐसा लगता है कि कोई ईश्वर संतोषाबाद के पास अपने लिए मंदिर निर्मित करवा रहा है। हर प्रकार के लोग यहाँ आते हैं। हम उनकी भाषा नहीं समझते। कुछ की भाषा टीन के डिब्बे में पत्थरों के खड़खड़ाहट जैसे होती है, जबकि कुछ की कराहती हुई सी लगती है। यह गिरोह किसी भी डिब्बे में घुस जाते हैं और जैसे ही अंदर जाते हैं, प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर दरवाजा बंद कर लेते हैं। वह समझते हैं, मानो संपूर्ण बोगी उन्हीं की है। गलती से भी अगर कोई बाहरी व्यक्ति भीतर आ जाए तो वह तृतीय विश्वयुद्ध छेड़ देते हैं।" लड़के ने आगे कहा।

ट्रेन काँप उठी और रुक गई। चित्रों वाली कमीज पहने लड़के ने अपना भाषण रोक दिया और चिल्लाया, मानो उसे कोई दूरदर्शी संदेश मिला हो, "साहब! किसी ने चेन खींची है" और फिर यात्रियों की भीड़ को चीरते हुए दरवाजे तक पहुँच गया। यह जानने के लिए, क्या हुआ, युवा यात्री अपनी बोगियों से बाहर कूद पड़े। बंजर लाल मिट्टी के पार मजबूती से जमे हुए पत्थरों की बड़ी शिलाएँ तथा घास के मैदान में चरते हुए मवेशियों का दिल को छू लेने वाला दृश्य दिखाई दे रहा था। खड़ी हुई ट्रेन को घेरे खड़े यात्री ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो मरे हुए साँप के आस-पास चींटियाँ।

"क्या हुआ?" बंदूक की गोली की तरह दनदनाते हुए चश्मे वाले व्यक्ति ने प्रश्न किया। जब किसी ने उत्तर न दिया तो गुस्से में वह बोला, "अनुशासन में दिन-ब-दिन गिरावट आती जा रही है। क्या कोई नहीं है, जो चेन खींचे जाने की इन घटनाओं पर ध्यान दे?"

"क्या हुआ?" बंदूक की गोली की तरह दनदनाते हुए चश्मे वाले व्यक्ति ने प्रश्न किया। जब किसी ने उत्तर न दिया तो गुस्से में वह बोला, "अनुशासन में दिन-ब-दिन गिरावट आती जा रही है। क्या कोई नहीं है, जो चेन खींचे जाने की इन घटनाओं पर ध्यान दे?"

"क्या चेन खींचे जाने के जुर्माने के बारे में आप जानते हैं? क्या आपने कभी चेन के नीचे लिखी चेतावनी देखी है?" उसने कहा। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं उसके गुस्से का निशाना क्यों बन गया हूँ।

"वह सब जानते हैं कि चेन किसने खींची है। कंपार्टमेंट में सब मासूमियत का नाटक करते हैं। इसी बीच अपराधी बचकर भाग जाता है।" किसी ने कहा।

चश्मे वाले व्यक्ति ने ज्ञानवान होने का प्रदर्शन करते हुए कहा कि "अगर ड्राइवर वैक्यूम बंद कर दें तो चेन खींचने पर भी रेल नहीं रुकेगी।"

"एक बार ड्राइवर ने ऐसा ही किया था। कोई व्यक्ति अचानक से बीमार हो गया और चेन खींचने पर भी ट्रेन नहीं रुकी। उन्होंने ड्राइवर की शिकायत कर दी। ड्राइवर बेचारा रोता रहा।" उसके पास बैठे हुए लड़के ने कहा।

इस घटना को सुनकर चश्मे वाले व्यक्ति को झटका सा लगा। उसने उपन्यास को वापस सूटकेस में डाल दिया और सिगरेट का पैकेट निकाल लिया। एक मिनट बाद ही धुआँ उगलती एक लंबी सिगरेट उसके होंठों से लटक रही थी। ऊबकर वह छत पर टँगे पंखे के इर्द-गिर्द छुपन-छिपाई खेल रही छिपकलियों को देखने लगा। मैंने उसको थोड़ा और सताने का निश्चय किया। "आपने चेन के नीचे लिखी सूचना को तो देखा, पर उसके किनारे पर लिखी सूचना को नहीं देखा।" मैंने कहा और खिड़की के ऊपर लिखी सूचना की ओर संकेत किया। 'धूम्रपान निषेध है' तख्ती पर लाल अक्षरों में चेतावनी थी। इस सूचना को देखने के पश्चात् युवा व्यक्ति का चेहरा छुईमुई की पत्ती की तरह मुरझा गया। जल्दी से उसने अपनी सिगरेट होंठों से निकाली और अपने पैरों तले कुचल दी। फिर झेंपते हुए उसने सिगरेट का टोटा उठाया और उसे खिड़की के बाहर फेंक दिया।

उपन्यास की विषयवस्तु में डूबी उसकी पत्नी ने अपना सर उपन्यास से बाहर निकाला और क्रम से हमारे चेहरे देखने लगी। पाँच मिनट बीतने के बाद पति ने मुझसे कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला, "वह व्यक्ति पिछले एक घंटे से सिगार सुलगा रहा है। तब तुम्हें कोई आपत्ति नहीं। फिर मुझसे ही क्यों?"

मुझे समझ नहीं आया कि क्या जवाब दूँ। इस बीच हमने यह ध्यान ही नहीं दिया कि ट्रेन अपने अनिर्धारित स्टॉप को छोड़ चुकी थी और आगे बढ़ रही थी। उसने फिर कहा, "मैं तुम्हारे जैसे लोगों को जानता हूँ। तुम किसी ऐसे आदमी को चुन लेते हो, जो सभ्य हो, परंतु यदि वह मजबूत हो तो तुम उसकी तरफ से आँखें मूँद लेते हो।"

"अरे, तुम मुझे कठोर कहते हो!" खादीवाला व्यक्ति गुस्से से बोला।

बात को अचानक बदलते हुए देखकर चश्मेवाले व्यक्ति की पत्नी ने उसे डाँटते हुए कहा, "तुम हर चीज में अपनी नाक क्यों घुसाते हो? क्या तुम कुछ देर के लिए चुप नहीं रह सकते? तुम बहुत बड़ा सरदर्द बन गए हो।" ट्रेन ने जोर से मानो जम्हाई ली और कुछ क्षण के लिए आगे-पीछे हिलने लगी। जो लोग सैर करने के लिए बाहर निकल गए थे, वे जल्दी दरवाजों की डंडियों से लटकने के लिए वापस आ गए। ट्रेन ने खिसकना आरंभ कर दिया। यह चुंबक की तरह लग रही थी, जिससे यात्री लौह चूर्ण की तरह चिपके हुए थे।

जो लड़के कंपार्टमेंट छोड़कर चले गए थे, वे वापस आकर तेल के लैंप से बनने वाली छाया के समान खामोशी से मेरे पास बैठ गए। वह छोटे बच्चों के समान एक-दूसरे से सांकेतिक भाषा में बातें कर रहे थे। "और लोग कहाँ है?" मैंने कुछ संदेह से उनसे पूछा। उन्होंने संकेतों से बताया कि टिकट कलेक्टर आसपास घूम रहा है।

इससे पहले कि मैं उनके संकेतों को समझ पाता, मैंने गलियारे के दूसरे छोर पर हलचल महसूस की। पाँच मिनट बाद टिकट कलेक्टर प्रकट हुआ, उसने पसीनों के धब्बों वाला काला कोट पहन रखा था, जिस पर

उसका ओहदे का बैच पिन किया हुआ था, उसने अपने से अधिक लंबे व्यक्ति को गरदन से पकड़ा हुआ था। "साले, तूने सोचा कि तू मुझे चकमा दे सकता है। अरे, तुम्हारा बाप भी ऐसा नहीं कर सकता! तू मुझे इस तरह घूर क्यों रहा है? मैं तुम जैसे हजारों रोज देखता हूँ। तुम्हें लगता है, तुम मुझे धमका लोगे? मैं तुम सबको कूलर में डाल दूँगा! क्या टिकट कलेक्टर इतने सस्ते होते हैं? यहीं रुको। मैं तुम्हें मार डालूँगा, अगर तुम यहाँ से जरा भी हिले तो। दूसरे कंपार्टमेंट का चक्कर पूरा करने के बाद मैं वापस आकर तुम्हारा मामला सुलझाऊँगा।" टिकट कलेक्टर ने उस काले रंग के युवा को एक कोने में धकेल दिया और यात्रीसूची का क्लिपबोर्ड अपनी बगल में दबाकर चला गया।

वह बदमाश एक फँसे हुए चूहे के समान डरता हुआ वहाँ खड़ा रहा। वह २५ वर्ष से अधिक का नहीं था। उसका गहरे रंग का बलिष्ठ शरीर उसके कृषि पृष्ठभूमि से होने को दरशा रहा था।

"उसके वजन को तो देखो। वह भारोत्तोलक के समान नहीं लग रहा? वह बिना टिकट भीतर घुसा ही क्यों? ऐसे ही लोग यात्रा को कष्टकारी बना देते हैं। उन्हें बीच यात्रा में निकालकर बाहर फेंक देना चाहिए।" चश्मेवाले व्यक्ति ने भावुक होकर कहा।

"तुम फिर वही कर रहे हो। तुम्हें रास्ते में जो भी मिलता है, तुम उससे बहस करने लग जाते हो? तुम क्या करोगे अगर वह पलटकर हमला करें तो?" उसकी पत्नी ने उलाहना दिया।

"क्या, पलटवार? क्या वह मुझसे ताकतवर है? तुम मुझे जानती नहीं हो, उसकी मांसपेशियाँ मेरी नैतिक शक्ति के सामने क्या हैं?" पति ने अपनी मुट्ठियाँ भींची और कोने वाले लड़के को देख मुँह बिचकाया।

"मैंने तुमसे भाषण देने को नहीं कहा। चुप रहो।" पत्नी ने तीखी नजरों से देखते हुए कहा।

ट्रेन की गति धीमी होने लगी। ब्रेक के पहियों पर दबाव पड़ने और इंजन के चरमराने और चीखने की आवाज के साथ धातु की खनक भी सुनी जा सकती थी। ट्रेन दोहरी पटरियों पर चलते हुए नादिमपल्ली रेलवे स्टेशन में प्रवेश कर गई। वह घुरघुराई, फुफकारी और रुक गई।

"एक्सप्रेस आने वाली है। इसलिए पैसेंजर ट्रेन को लूप में डाल दिया गया है।" घुँघराले बालों वाले आदमी ने कहा। उसके बगल में बैठे चित्रों वाली कमीज पहने लड़के ने साँस भरी, "ईश्वर जाने एक्सप्रेस कब आएगी। कुछ पता नहीं वह बाहरी सिग्नल पर है या नहीं और कितनी देर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। चलो उतरते हैं।" वह अपने दोस्तों के साथ नीचे उतर गया।

मिट्टी के लंबे प्लेटफॉर्म के साथ ही पेड़ों की कतार थी, जिनके सारे पत्ते झड़ चुके थे। एक जीर्ण-शीर्ण आश्रय पर अंग्रेजी में लिखा CANTEEN साफ देखा जा सकता था। अंग्रेजों द्वारा वर्षों पहले बनवाए गए पुराने स्टेशन से नींद में चलता गुँजले हुए कपड़े पहने, लाल और हरे दो झंडे पकड़े स्टेशन मास्टर प्रकट हुआ। रेलवे क्वार्टर के अतिरिक्त वहाँ कोई भी रिहाइश नहीं दिख रही थी। संभवत: स्टेशन से डरकर कस्बा दूर चला गया था। कोई नहीं बता सकता कि उन्होंने यह स्टेशन यहाँ क्यों बनाया। फटे हुए कपड़ों में बच्चे और धूल-धूसरित कपड़ों में दुबली-पतली स्त्रियाँ मिठाइयाँ और स्नैक्स बेच रहे थे। भूखे यात्री हर उपलब्ध चीज खा रहे थे। एकमात्र पानी के नल के पास भारी भीड़ जमा थी।

"मैं पिछले जंक्शन तक सुपर एक्सप्रेस में यात्रा कर रहा था। क्या आरामदेह यात्रा थी! हमारा प्रथम श्रेणी भी उसके द्वितीय श्रेणी की समानता नहीं कर सकता। उसके प्रथम और ए.सी. क्लास तो स्वर्ग के जैसे हैं। रॉकेट की रफ्तार। मुझे उसी से पूरी यात्रा करनी चाहिए थी। बिना पैसे की जिंदगी वास्तव में जिंदगी ही नहीं है।" युवा व्यक्ति ने खुद से कहा।

ड्राइवर और उसका सहायक इंजन से उतर आए तथा एक पुरानी बोतल से पानी पीने लगे। युवा व्यक्ति एवं खादीवाला व्यक्ति प्रथम श्रेणी कंपार्टमेंट के पास खड़े होकर कोला गटकने और लंबी सिगरटें फूँकने लगे। टिकट कलेक्टर द्वारा भगाए जाने के पश्चात् भिखारियों का एक परिवार प्लेटफॉर्म पर बैठा था, वे दयनीय दिख रहे थे। ट्रेन को रुके हुए आधे घंटे से भी ज्यादा समय हो चुका था। प्लेटफॉर्म पर लगे नल से पानी आना भी बंद हो चुका था। यात्रियों के बार-बार पूछने से चिढ़ा हुआ स्टेशन मास्टर बता चुका था कि बिजली न होने के कारण मोटर नहीं चल सकता। फेरीवाले बिक्री से अल्पमात्रा में मिली रेजगारी गिन रहे थे।

एक्सप्रेस के हूटर की तीखी आवाज दूर से सुनाई पड़ी। पाँच मिनट बाद एक लंबी रेलगाड़ी मुख्य ट्रेक पर तेजी से गुजरी।

"आपने ध्यान दिया? यह हमारी पैसेंजर से तीन गुना बड़ी थी, पर उसमें केवल इससे एक-तिहाई ही यात्री थे।" मेरे सामने बैठे लड़के ने कहा।

यात्रियों के धैर्य की परीक्षा ले लेने के पश्चात् अंतत: गैंगमैन ने ड्राइवर को लाइन क्लीयरेंस दे ही दिया। हॉर्न बज उठा। गार्ड ने कमजोर आवाज में सीटी बजाई। भिखारियों के परिवार को प्लेटफॉर्म पर असहाय छोड़कर ट्रेन चल पड़ी।

"१६ टिकटों पर वह २३ लोग यात्रा कर रहे थे। न तो वह जुर्माना भर रहे थे, न ही बाहर जा रहे थे। लेकिन अपनी तमाम चालाकियों के बावजूद वह मेरी दृष्टि से नहीं बच सकते।" टिकट कलेक्टर ने हमारे पास आकर हमारे टिकट देखते हुए कहा। चश्मे वाले व्यक्ति का टिकट देखकर वह खादीवाले व्यक्ति की ओर मुड़ा, पर वह हिला नहीं और धीमे खर्राटे भरने लगा।

"यह थोड़ी देर पहले जाग रहा था।" चश्मे वाले व्यक्ति ने कहा।

"बेचारा आदमी लंबी यात्रा पर निकले हुए प्रथम श्रेणी के यात्री जैसा लग रहा है। उसे रहने दो। मैं दुबारा में देख लूँगा, जब वह जगा हुआ होगा।" टिकट कलेक्टर ने कहा और युवा भीड़ की ओर मुड़ गया और टिकट माँगने लगा।

घुँघराले बालों वाले और चित्रों वाली कमीज वाले लड़कों ने अपनी चुप्पी तोड़ी और एक स्वर में कहा, "पास, पास।" टिकट कलेक्टर की आँख अब काले बलिष्ठ आदमी पर टिक गई। "बताओ तुम कहाँ से चढ़े हो?" उसने काले बलिष्ठ व्यक्ति से पूछा।

"पिछले स्टेशन से।" व्यक्ति ने कहा।

बिना एक और शब्द कहे टिकट कलेक्टर ने अपनी पुरानी पुस्तक निकाली और उससे कहा, "पिछले जंक्शन से जुर्माना भरो। एक सौ पैंतीस रुपए।" "साहब, साहब, मैं फिर कभी बिना टिकट यात्रा नहीं करूँगा, कृपया मुझे इस बार छोड़ दें।" आदमी गिड़गिड़ाया।

"अपनी कहानियाँ सुनाना बंद करो और मुझे अपना नाम बताओ। तुम्हारे साथ चुहलबाजी करने को मेरे पास समय नहीं है। ऐ चोर, तुम यहाँ आओ।" टिकट कलेक्टर ने व्यक्ति की एकमात्र जेब पर जोर से हाथ मारा और कुछ १० रुपए के नोट और पान के पत्ते इसमें से खोज निकाले।

"साहब, ये मेरे पैसे नहीं हैं।" उसने कहा और टिकट कलेक्टर के हाथ से पैसे पुन: प्राप्त कर पाने का प्रयास किया।

"मा···द, तुम मेरे हाथ से पैसे छीन रहे हो! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!" टिकट कलेक्टर ने एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिया, जो कि उँगलियों के निशान व्यक्ति के चेहरे पर छोड़ गया। व्यक्ति की आँखों में आँसुओं का समंदर उमड़ आया। "तुम समझते हो, लड़कियों की तरह रोओगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूगाँ।" टिकट कलेक्टर ने कहा और गुस्से से भरकर अपनी किताब में प्रविष्टि भरने लगा।

चित्रों वाली कमीज पहने लड़के ने यथासंभव विनम्रता से टिकट कलेक्टर से कहा, "साहब, यह लड़का हमारे गाँव का है। इसके परिवार को दो समय का भोजन भी नसीब नहीं होता। इसके खेत में जिस तालाब से पानी आता था, वह बहुत पहले ही सूख गया था। आखिरी फसल कई साल पहले काटी गई थी। ऐसा लगता है कि वह कुछ दवाइयाँ खरीदने के लिए शहर जा रहा है। कृपया आप उसके लिए जो भी कर सकते हैं, करें।" "ठीक है, ठीक है, इसके कहने पर मैंने तुम पर केवल ७५ रुपए का जुर्माना लगाया है।" टिकट कलेक्टर ने कहा और खुले पैसे तथा रसीद व्यक्ति के हाथ में थमा दिए और पान के पत्ते अपनी जेब के हवाले किए।

"मा...द, तुम मेरे हाथ से पैसे छीन रहे हो! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!" टिकट कलेक्टर ने एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिया, जो कि उँगलियों के निशान व्यक्ति के चेहरे पर छोड़ गया। व्यक्ति की आँखों में आँसुओं का समंदर उमड़ आया। "तुम समझते हो, लड़कियों की तरह रोओगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूगाँ।" टिकट कलेक्टर ने कहा और गुस्से से भरकर अपनी किताब में प्रविष्टि भरने लगा।

"कृपया मुझे बताएँ कि यदि आप इसी तरह दया दिखाते रहेंगे तो नुकसान की भरपाई कौन करेगा?" चश्मेवाले व्यक्ति ने बंदूक की गोली की तरह प्रश्न दागा। टिकट कलेक्टर इस अप्रत्याशित प्रश्न से झल्ला गया। उसने कहा, "सच। क्या आप जानते हैं इस नौकरी में बहुत सारी कठिनाइयाँ हैं? हम नहीं चाहते, पर प्रतिदिन कम-से-कम आधा दर्जन यात्रियों को हमें परेशान करना पड़ता है। वह हमें कोसे देते हैं। घर पर हमारे बीवी-बच्चे हैं। हमें डर रहता है कि उनके कोसे हमारे परिवारों के लिए अशुभ न हो जाएँ।"

"फिर भी, यह सही नहीं है कि जुर्माना इस तरह से कम कर दिया जाए। बेहतर है कि आप उन्हें कुछ दिनों के लिए सलाखों के पीछे डाल दें।" चश्मेवाले व्यक्ति ने सुझाव देते हुए कहा।

टिकट कलेक्टर ने अनसुना करके बाहर की ओर बढ़ते हुए बुदबुदाते हुए कहा, "किसी ने फिर चेन खींच दी। मेरे लिए अच्छा है, मैं दूसरे कंपार्टमेंट की जाँच कर पाऊँगा।"

जैसे ही ट्रेन रुकी, दूर की एक बोगी से यात्रियों का एक बड़ा समूह बाहर आया और आपस में हाथापाई करने लगा। कुछ ने अपनी धोतियाँ समेट लीं और ट्रैक पर पड़े पत्थर उठाकर एक-दूसरे को मारने लगे। कुछ मिसाइल बने पत्थरों ने डिब्बों की खिड़कियों के शीशे तोड़ दिए, जिससे कुछ यात्री घायल हो गए। कुछ लोगों ने खिड़कियों के शटर गिराकर अपने कंपार्टमेंट को किलों में परिवर्तित कर लिया। बाहर हंगामा चरम पर पहुँच गया। पाँच-छह लोग खून में लथपथ लोगों को ले जाते हुए दिखाई दिए। चित्रों वाली कमीज पहने लड़का, जो उत्साह के साथ इस झड़प को देख रहा था, वापस आया और बोला, "कुछ लोगों, जो अजीब सी बोली बोल रहे थे, ने कंपार्टमेंट में दूसरों के प्रवेश का मार्ग अवरुद्ध कर उस पर कब्जा जमा लिया था। प्रतिद्वंद्वी दल जबरन कंपार्टमेंट के भीतर घुस आया और फिर जमकर खून-खराबा हुआ। उन्होंने खून से लथपथ घायलों को ट्रैक पर रख दिया है, जिससे ट्रेन रुक गई है। दोनों गुट इंजन के सामने बैठ गए हैं और कसम खा ली है कि जब तक न्याय नहीं मिलेगा, वह न तो हटेंगे और न ही ट्रेन को चलने देंगे।"

"टिकट कलेक्टर क्या कर रहा है? क्या आप-पास कोई रेलवे पुलिस का आदमी नहीं है? ड्राइवर को क्या हुआ है?" चश्मे वाले व्यक्ति की पत्नी ने अफसोस जताते हुआ कहा।

टिकट कलेक्टर की चर्चा सुनकर लकड़हारा अपने छुपने के स्थान से बाहर आकर बीड़ी फूँकते हुए काले, बलिष्ठ व्यक्ति को बहस में सम्मिलित करते हुए बोला, "तुम टिकट कलेक्टर को देखते ही गायब क्यों नहीं हो गए?"

उस आदमी ने कहा, "मैं टिकट खिड़की तक पहुँच पाता, उससे पहले ही ट्रेन आ गई, मुझे समय ही नहीं मिल पाया।"

"तुम बहुत सीधे हो, मैं यह नहीं पूछ रहा हूँ कि तुम टिकट क्यों नहीं खरीद पाए। मैंने पूछा, तुम टिकट कलेक्टर को देखकर कैसे गायब होना, यह भी नहीं जानते तो इस दुनिया में कैसे जीवित रह पाओगे?"

"यह लड़का? यह बच नहीं पाएगा, यह बेवकूफ।" चित्रों वाली कमीज पहने लड़के ने बातचीत में शामिल होते हुए कहा। जब टिकट कलेक्टर इसका जुर्माना बना रहा था, वह वहीं उसके सामने बैठा आँसू बहाता रहा। इसे नहीं पता कि टिकट कलेक्टर को कैसे मनाना है। अगर मैं बीच में न कूदता तो टिकट कलेक्टर पूरे भाड़े का बिल इस पर थोप देता।

"तुम समझते हो हमारे पास पास हैं? घुँघराले बालों वाले लड़के ने चश्मे वाले व्यक्ति को मजाकिया नजरों से देखते हुए पूछा। विशेष दस्ता तो कभी-कभी ही आता है। फिर हम क्यों अपने पैसे खर्च करें? ऐसी बहुत सी चीजें हैं, जो हम इन पैसों से कर सकते हैं, जब हमने कह दिया

कि हमारे पास पास है तो टिकट कलेक्टर की इतनी हिम्मत है कि वह हमारी जाँच कर सके।"

चश्मे वाले व्यक्ति के चेहरे का रंग बदलने लगा था। उसके माथे पर पसीने की बूँदे उभर आई थीं। घुँघराले बालों वाला लड़का नई खबर के साथ भागा हुआ आया। "वह खून में डूबे लोगों को नहीं हटा रहे हैं। घायल बिना चिकित्सा के मर ही जाएँगे। जो भी उन्हें समझाने जाता है, वह उस पर हमला कर देते हैं।"

"वह क्या कर सकते हैं, अगर हम सब एक हो जाएँ? आओ, हम सब चलें और इस सबको समाप्त कर दें।" भावनाओं से परिपूर्ण होकर चित्रों वाली कमीज पहने लड़के ने कहा।

मैंने सुना है, कोई कह रहा था कि उन लोगों की यह योजना है कि हमें भड़काकर बाहर निकालें और हमारी सीटों पर कब्जा कर लें। हमें वहीं रहना चाहिए, जहाँ हम हैं और अगर वे भीतर आकर झगड़ा करते तो उन्हें उचित उत्तर दें, घुँघराले बालों वाले लड़के ने डिब्बे में फिर से प्रवेश करते हुए कहा।

बीड़ी पीते हुए लकड़ी काटने वाले ने कहा, "अगर हम अपनी आँखें खुली रखें और हर कदम सावधानी से उठाएँ, तब ही इस यात्रा को सलामती से पूरा कर पाएँगे।" "जब से मेरे पिता की साँप के काटने से मृत्यु हुई है, तब से मैं बिना टिकट के इस ट्रेन में यात्रा कर रहा हूँ। मुझे नहीं पता कि टिकट कैसा होता है। यह कलियुग है, जब धर्म एक पैर पर लँगड़ा रहा है। आपके पास झगड़ालू टिकट कलेक्टर और गार्ड्स हैं। कभी-कभी कुछ नेक लोग होते हैं, जो एक या दो रुपए के लिए बगलें झाँकने लगते हैं।" बीड़ी वाले ने कहा और दूसरी बार कश लेने के लिए भीतर चला गया।

खादीवाले व्यक्ति ने भी ताजा सिगार निकाला और सौम्य मुसकान के साथ उपदेश दिया, "अगर जियो तो कोयल की तरह जियो, न कि कौए की तरह।" अब तक दो टिकट कलेक्टर आए। एक में भी इतनी हिम्मत नहीं थी कि मुझे उठाकर टिकट का पूछ सकें। जादू कपड़ों में है।"

"फिर भी, तुम्हारी किस्मत अच्छी है। तुम्हें सताने वाला तो एक ही है। हमें तो फॉरेस्ट गार्ड से भी निपटना होता है, लेकिन यह ट्रेन सिर्फ उनकी नहीं है। यह हमारी भी है। बिना टिकट के चढ़ जाओ, लेकिन टिकट कलेक्टर को चकमा देना सीखो।" लकड़ी काटने वाले व्यक्ति ने आँख मारते हुए कहा।

"मेरी बात सुनो," चश्मे वाले व्यक्ति ने गला साफ करते हुए कहा, मैं ध्यान से तुम्हारी बातें सुन रहा था। अगर टिकट कलेक्टर चाहता था कि तुम जुर्माना भरो तो क्या तुम उसे गुत्थम-गुत्था करके अपने पैसे वापस नहीं छीन सकते थे? तुमने अपना शरीर पहलवान की तरह बनाया हुआ है। तुम उससे भिड़ क्यों नहीं गए?" उसने कहा।

मैं भौचक्का था! वह आदमी अचानक अपना पाला बदलकर बहुमत में सम्मिलित हो गया था। मुझे अहसास हुआ कि मैंने यात्रा के लिए जो समय चुना था, वह शुभ नहीं था। मैं जानता था कि घिसे हुए पहियों वाले इंजन से चलने वाली यह ट्रेन जर्जर डिब्बों को खींचते हुए बड़ी कठिनाई से चल रही है। लेकिन मुझे विश्वास था कि वहाँ हमेशा ऐसे लोग मौजूद होते हैं, जो किसी भी यांत्रिक खराबी को ठीक कर सकते हैं। हालाँकि मेरा विश्वास अब उतार पर था।

क्या यह मुसीबत कभी खत्म होगी? क्या यह ट्रेन कभी चलेगी और संतोषाबाद पहुँचेगी? मैं असहाय भाव से चश्मेवाले व्यक्ति की ओर ताकने लगा।

मेरी जेब में पड़ा साक्षात्कार का कॉल लेटर मेरे दिल में काँटे के समान चुभ रहा था। क्या मैं समय पर पहुँचकर साक्षात्कार दे पाऊँगा।

सा.अ.

सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग, अ.मु.वि
अलीगढ़-२०२००२ (उ.प्र.)
दूरभाष : ७५०३३८५९२४

लेखकों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
- पूर्व स्वीकृति बिना लंबी रचना न भेजें।
- केवल साहित्यिक रचनाएँ ही भेजें।
- प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- किसी अवसर विशेष पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम तीन माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
- रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

गिरिजा कुमार माथुर : प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य के पुजारी

• सुदेश कुमार

नई कविता के अत्यंत समर्थ आधार-स्तंभ के रूप में कवि गिरिजा कुमार माथुर हैं, जिन्होंने किसी वाद से प्रभावित होकर कविता की रचना नहीं की वरन् युगीन माँगों और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इन्होंने अपना लेखन कार्य किया। फलस्वरूप इन्होंने रंग, रस और रोमान से संबंधित विषयवस्तु को केंद्र में रखकर प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य को अपनी कविताओं का मुख्य घटक माना है। इसलिए गिरिजा कुमार माथुर को मूलत: रोमानी कवि माना जाता है।

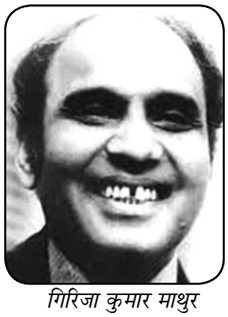

गिरिजा कुमार माथुर

साहित्य ही एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा कोई साहित्यकार अपने मन की समझ और उसके भावों को शब्दों का रूप देकर उसे कविता, कहानी, नाटक या उपन्यास के रूप में संप्रेषित करता है। साहित्य को समाज का दर्पण इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसमें व्यक्ति, समाज, मनोभावों और परिस्थितियों को भावपूर्ण तरीके से गढ़ा जाता है। साहित्य के प्रत्येक कालखंड की अपनी एक अलग विशेषता और विशिष्टता होती है, जो उसे दूसरे से भिन्न बनाती है और उन कालखंडों में अनेक ऐसे साहित्यकार आए, जो अपने-अपने कालखंड को विशिष्टता की धरा पर पहुँचाते हैं। ठीक उसी प्रकार आधुनिक काल के साहित्यकारों ने भी अपने विचारों को पंख दिए, जिससे उन रचनाकारों ने कालखंड को अपनी रचनाओं के माध्यम से समृद्ध किया है। उसी शृंखला में महान् विचारक, नाटककार एवं प्रेम और सौंदर्य के कवि गिरिजा कुमार माथुर का नाम सम्मान से लिया जाता है। प्रत्येक साहित्यकार समाज को जीता है और उस समाज में उपस्थित विभिन्न विषयों को विभिन्न विधाओं के माध्यम से समाज के सामने उस आईने को प्रस्तुत करता है।

प्रेम मनुष्य के जीवन का वह केंद्रबिंदु है, जिसके चारों ओर उसका जीवन घूमता रहता है। क्योंकि इस प्रेमतत्त्व के कारण ही मनुष्य मनुष्य से और मानवेतर सभी से बँधा हुआ होता है। जिससे उनमें आकर्षण और जिज्ञासा का भाव विद्यमान रहता है। प्रेम वह शाश्वत अनुभूति है, जिस पर उम्र और समय का प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रत्येक काल में प्रेम के महत्त्व को स्वीकार गया है।

गिरिजा कुमार माथुर बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं मूलत: रोमानी भाव के कवि थे। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रेम एवं सौंदर्य को प्रधान स्वर के रूप में स्थान दिया है। माथुरजी को समझौता और समन्वय का कवि भी कहा जाता है। उनकी अधिकांश कविताओं का विषय प्रेम और रोमानियत से परिपूर्ण है, इसलिए उन्होंने रूप, रस और मांसल चित्रों में प्रेमानुभूति की प्रामाणिकता और मिलन की उत्कंठा एवं वियोग के स्वर मुखर हैं। गिरिजा कुमार माथुरजी का भी दृष्टिकोण वैयक्तिक कवियों की भाँति भोगवादी एवं ऐंद्रिय है। इनकी आरंभिक कविताओं में प्रेम-प्रसंग अपेक्षाकृत संकेत मात्र ही है। किंतु कालांतर दूसरे कविता-संग्रह 'नाश और निर्माण' में कवि ने प्रेमिका के साथ व्यतीत किए गए प्रेममयी क्षणों का सुंदर एवं बेझिझक चित्रांकन किया है। जैसे—

पिछली इसी बसंत की रात की याद उमड़ जाती है
जब तुम पहली बार मिली थी
पीले रंग की चुनर पहिने
देख रही थी चोरी-चोरी
मेरे मीठे गीत प्यार के
मैंने पास अचानक जाकर
छीन लिया था उन्हें तुम्हारे मेहँदी रँगे हुए हाथों से
और लाल होकर क्वारी लज्जा से तुमने
मुख पर आँचल खींच लिया था
जल्दी से निज चाँद छुपाने।

गिरिजा कुमार माथुरजी के शब्दों में उनकी प्रवृत्ति रोमानियत, मानसिक प्यास, स्थूल ऐंद्रियता, चित्रमयता, भौतिक जीवन के रसमय और रंगीन पक्ष के प्रति लाल सा तथा मोह की है।

गिरिजा कुमार माथुरजी शारीरिक प्रेम को जीवन का एक प्रेरक तत्त्व मानते हैं और इस तत्त्व को मनुष्य के व्यक्तित्व का अनिवार्य यंत्र मानते हैं। प्रणय की अंतर्निष्ठ, मार्मिक, चित्रमयी, रोमांटिक एवं शालीन ढंग से चित्रित करने में विश्वास रखते हैं। वह स्वयं लिखते हैं कि 'प्रणय या सेक्स को यदि पूर्ण रूप से उखाड़कर नंगा कर दिया जाए तो जीवन के एक अत्यंत प्रेरक तत्त्व की सूक्ष्म प्रतिक्रियाओं को ही हम भोथरा बना देंगे। इसका अर्थ

यह होगा कि हम विस्मय तथा आदिम जिज्ञासा को जीवन के एक बहुत बड़े महत्त्वपूर्ण क्षेत्र से निर्वासित कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में मानवीय आकर्षणों की परिसमाप्ति आदमी के प्रेरक स्रोतों को ही बाँझ बना देगी।

गिरिजा कुमार माथुरजी के अंतर्मन में नारी के प्रेम और सेक्स संबंधी एक नई नैतिकता विकसित हुई है। उनका मानना है कि नारी जो पहले केवल भोग की वस्तु समझी जाती थी, अब वह भोग-विलास की वस्तु या सजावट की सामग्री नहीं है और न ही वह शारीरिक सुख का माध्यम है, बल्कि वह अब अंत: प्रेरणाओं का स्रोत है। अब वह रोमानियत में भी समान रूप से सहभागी एवं समान आनंद की अधिकारिणी है। माथुरजी ने स्त्री को प्रसाद जी की भाँति 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' के रूप में अपने काव्य में निरूपित नहीं किया है, बल्कि उसे पुरुष के साथ मिलन और आनंद के बिंदु पर संकेंद्रित हो जाने वाली तरलता और जीवन की ऊर्जा के रूप में चित्रित किया है। माथुरजी नारी को केवल हमारी इंद्रियों में संवेदना उत्पन्न करने वाली नहीं मानते, बल्कि वह पुरुष को मृत्यु से संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करने की एक मूर्त दीप्ति है। जैसे—

शक्ति दो मुझको, सलोनी, प्यार से
लड़ सकूँ मैं मौत की ललकार से।

प्रकृति चिरकाल से ही मानव जीवन की सहचारिणी रही है। मनुष्य जन्म से ही प्रकृति के सौंदर्य के प्रति आकर्षित रहा है। प्रकृति के सान्निध्य के फलस्वरूप ही मनुष्य में संवेदना और भाव जाग्रत् होते रहे हैं। गिरिजा कुमार माथुर प्रकृति के इस सान्निध्य से अछूते नहीं रहे हैं। उनके समकालीन कवियों की अपेक्षा उन्होंने प्रकृति को प्रचुर मात्रा में चित्रित किया है। उनकी कविताओं में प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन देखने को मिलता है। प्रकृति के संदर्भ में माथुरजी अपने साक्षात्कार में स्वयं कहते हैं कि "प्रकृति हमारे यहाँ अलग नहीं है, अपितु आदमी के परिवेश का अंग बनकर आई है। आलंबन, उद्दीपन आदि नहीं है। भारतीय कविता की विशेष पहचान है कि हम लोग प्रकृति के अधिक निकट रहे हैं। प्रकृति के विराट् रूप तथा माधुर्य रूप ने मुझे अधिक आकर्षित किया है।"

माथुरजी ने प्रकृति को चेतन रूप में स्वीकारा है और उसका अपनी कविताओं में मानवीकरण किया है। 'आषाढ़ की रात' कविता में गिरिजा कुमार माथुर ने संपूर्ण नगर का मानवीकरण किया है और उसे सुरा की गहरी नींद में सोते हुए गोरे बालक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

छोटा सा यह नगर सो रहा
ठंडे गाल लिये गोर बालक सा
सुरा की गहरी नींदों में।

गिरिजा कुमार माथुर रोमानी भावों की अभिव्यक्ति में प्रकृति को पृष्ठभूमि के रूप में चित्रित किया है। अपनी कविता 'रेडियम की छाया' में माथुरजी ने सूनी रात का चित्रण किया है, जिसमें सिमटा हुआ कोहरा चाँद-कटोरे की सिकुड़ी कोरों से धीरे-धीरे चाँदनी का पान कर रहा है। इस चित्रण के माध्यम से कवि अप्रत्यक्ष मिलन का चित्र अंकित करने का प्रयास कर रहा है—

सूनी आधी रात
चाँद-कटोरे की सिकुड़ी कोरों से

'तारसप्तक के कवियों की काव्यभाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग में शोधरत। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित। वर्तमान में हिंदी-विभाग, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय में अतिथि शिक्षक के रूप में अध्यापन।

मंद चाँदनी पीता लंबा कुहरा
लिपट-लिपटकर।

इसी प्रकार कवि गिरिजा कुमार माथुर प्रेम के सौंदर्य का चित्रण सुनहरे ढंग से करते हैं। वे प्रिया के प्रति विशेष अनुरक्त है। उसके रूप और सौंदर्य के आकर्षण ने कवि के तन-मन पर जादू कर रखा है। उसका आगमन कवि ऐकांतिक और नीरस जीवन में सरसता का समावेश करता है। जैसे—

तुम मेरे शरीर पर काले जादू की तरह छा गई हो
तुम्हारी देह मेरे भीतर ताल देती है
किसी जंगली गीत की बहती हुई
अजनबी लय की तरह लगातार

× × ×

तुम मेरे रंगहीन जन्म के अकेलेपन में
एक बाहरी फूल की तरह लग गई हो
मेरे शब्दों की खुशबू
तुम्हारी बाँहों में लिपटती गंध है।

माथुरजी मूलत: रंग, रस और रोमांस के कवि कहे जाते हैं। उनके काव्य के मूल में रोमानी तत्त्व मौजूद है। कवि ने एक ओर जहाँ इस तत्त्व के स्थूल रूप एवं बाह्य सौंदर्य का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर उसके अंत: सौंदर्य को भी प्रमुखता से स्थान दिया है और उसको चित्रण करने में किसी भी प्रकार की अश्लीलता का प्रभाव नहीं पड़ता। उनकी कविता निर्मल और पावन है, जो पाठक को अपनी ओर एकाएक आकर्षित करती है।

कवि अपनी प्रेमिका के भोलेपन पर सर्वस्व समर्पित है, जिसका चित्रण कवि ने अपनी कविता 'अभी घूम रही है रात' में इस प्रकार किया है—

आज तेरा भोलापन चूम
हुई चूनर भी अल्हड़ प्रान
हुए अनजान अचानक ही
कुसुम से मसले बिखरे साज

कवि अपनी प्रेयसी के भोलेपन और लज्जा से भरी आँखों और उसके चेहरे की मुसकान को बार-बार याद करता है।

कवि गिरिजा कुमार माथुर ने प्रेम के आलंबन को विशेष रूप से रूपायित किया है। कवि ने स्वयं कहा है, "जीवन के सुंदर, मधुर, मांसल, ऊष्म, कमनीय तथा प्रगाढ़ इंद्रिय अनुभवों को व्यक्त करने के लिए मैंने अपनी कविता में अपने संवेदनात्मक व्यक्तित्व को मुक्त रूप से उड़ेल दिया है। लेकिन मेरी प्रेम और सौंदर्य संबंधी कविताओं में

रीतिकालीन शृंगारिकता, रूप-रसकुलता, वासना, रुग्ण विलासिता या मात्र देह-रस नहीं है। उनमें पारिवारिक प्रेम, प्रणय, ममता और स्वस्थ ऊष्मा की अभिव्यक्ति हुई है, जो मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देती है।" प्रेम के प्रति जो कवियों का दृष्टिकोण था, उसको इन्होंने मार्क्स और फ्रायड के विचारों का प्रभाव न मानकर, भारतीय मानसिकता की उपज माना है।

गिरिजा कुमार माथुरजी के काव्य में सभी जगह प्रणय-चित्रों का चित्रांकन किया गया है। यहाँ आँखों में लज्जा, दीपक का सारी रात जलना, ठीक से रात को सो न पाना और प्रात:काल प्रतिदिन की अपेक्षा जल्दी जागना आदि मिलन वेला की ओर इंगित करता है। उनके इन्हीं चित्रों को देखकर डॉ. नगेंद्र ने कहा है—"यह शृंगार न तो भूखे तन और भूखे मन का आहार है और न किसी अदृश्य आलंबन के साथ कल्पना-विहार है। कवि ने जीवन की मधुर भावना को बड़े ही हल्के हाथों से किंतु पूरी गहराई के साथ बिंबित करने का सफल प्रयास किया है।"

कवि माथुर ने जहाँ प्रेम के संयोग पक्ष को उल्लास, तीव्र आसक्ति के साथ उसका कुशल अंकन किया है, वहीं प्रेम के दूसरे वियोग पक्ष का भी मार्मिक वर्णन किया है। माथुरजी ने संयोग के मादक, मांसल तथा स्थूल चित्रों को जितनी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है, उतने ही बेहतरीन ढंग से वियोग की लकीरों को चित्रित किया है। उनकी पीड़ा का यह स्वर उनकी प्रारंभिक रचनाओं मंजीर, नाश और निर्माण और धूप के धान में मुख्य रूप से उजागर हुई है।

प्रेम के दोनों पक्षों का एक क्रम चलता है, जिस प्रकार दिन और रात्रि का क्रम चलता है, उसी प्रकार प्रेम में एक समय तक संयोग की धारा बहती है, उसके पश्चात् वियोग की धारा। ठीक उसी प्रकार माथुरजी के संयोग के मधुर क्षणों के समाप्त होते ही कवि का मन प्रिय विछोह की व्यथा से उद्विग्न हो उठता है। और उस असीम पीड़ा ही स्वत: शब्दों में विस्फुटित होकर कविता का रूप धारण कर लेती है और यह कवि का रुदन भी गान बन जाता है। इसी पर छायावाद के प्रकृति के सुकुमार कवि पंतजी ने सत्य ही कहा है कि 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।' ठीक उसी प्रकार माथुरजी ने अपने रुदन को गीत के रूप में लिखना आरंभ कर देते हैं—

विदा समय क्यों भरे नयन हैं
अब न उदास करो मुख अपना
बार-बार फिर कब है मिलना,
चलते समय उमड़ आए इन पलकों में जलते सावन हैं
मेरे गीत किन्हीं गालों पर रुके हुए दो आँसूकन हैं।

'मंजीर' में उनके रोमांटिक भाव की कविताओं की छाप मिलती है, जिसमें सूक्ष्म सौंदर्य-बोध उपस्थित है। दूसरा काव्य-संग्रह 'नाश और निर्माण' में रोमांटिक भाव का थोड़ा ह्रास दिखाई देता है और जीवन के यथार्थ को कविता के माध्यम से निरूपित करने का प्रयास किया गया है। यह सच है कि गिरिजा कुमार माथुर प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे निराला प्रेम के कवि हैं। उन्हें देह का रस-रंग और रूप बेहद आकर्षित करता है। यह दो कारणों से हो सकता है—पहला, उम्र का प्रभाव और दूसरा शृंगारिकता का प्रभाव। छायावाद के कवियों ने अपनी कविताओं में प्रेम के अमांसल रूप का चित्रण किया है, जबकि माथुरजी ने उस छायावादी अमांसलता के विपरीत प्रेम के मांसल रूप का चित्रण किया है, माथुरजी देह को छूते, टटोलते, मसलते और भोगते हैं। जैसे—

तुम्हारे आते ही
मेरे कमरे का रंग गोरा हो जाता है
हर आईने का चेहरा
प्यारा हो जाता है
हर चीज पर पड़ता अक्स
तेज हो जाता है
हर मामूली शब्द
मुसकराहट बन जाता है।

माथुरजी प्रेम के संबंध में अपनी कविताओं में लिखते हुए कहते हैं कि प्रेम के लिए कोई उम्र, जाति और समय की कोई पाबंदी नहीं होती है। यह उम्र के किसी भी पड़ाव में किसी भी व्यक्ति से किया जा सकता है। प्रेम में एक ऐसा आकर्षण होता है, जिसके प्रभाव में ऐसी शक्ति है कि इसे पाकर व्यक्ति अपने जीवन अधिक रंगीन, मादक एवं जीवन में और संघर्ष की क्षमता को विकसित कर लेता है। जीवन का मूल आधार प्रेम है, इसका अंदाजा मनुष्य को उम्र के बढ़ते हर पड़ाव पर महसूस होता है। जीवन के अन्य सभी संबंध झूठे पड़ जाते हैं, परंतु प्रेम चिरकाल तक जीवित रहता है—

अब मैंने जाना
उम्र के हर चरण पर
कितने फरक नमूनों में
यह मन सतरंग हो जाता है
कैसे हर निकष झूठा पड़ता है
सिर्फ प्यार रह जाता है
कैसे छोटा सा मोह
बड़ा सत्य बन जाता है।

गिरिजा कुमार माथुरजी के काव्य को देखने से यह ज्ञात होता है कि उनका अधिकाशत: काव्य प्रेम और उसके सौंदर्य तथा प्रकृति की भूमि पर पल्लवित होकर पुष्पित हुआ है। जीवन के मधुर पक्ष से संबंधित अंतरंग अनुभूतियों को भी उन्होंने अत्यंत कुशलता के साथ चित्रित किया है। उनके सौंदर्य चित्रण में यौन कल्पनाओं के दर्शन होते हैं, जैसे—चुंबन, आलिंगन, मिलन के मार्मिक चित्र उनके काव्य में कहीं-खिन दिखाई देते हैं। माथुरजी के कविताओं में प्रेम और उसकी सरसता को देखते हुए निरालाजी 'मंजीर' काव्य-संग्रह की भूमिका में कहते हैं—"श्री गिरिजा कुमार माथुर निकलते ही हिंदी की निगाह खींच लेने वाले तारे हैं।"

साअ

म.सं.-८५, द्वितीय तल, वैशाली, सेक्टर-४
गाजियाबाद-२०१०१० (उ.प्र.)
दूरभाष : ७४०८६६५११४

नीली राजकुमारी

● जय प्रकाश पांडेय

विभू आज बड़ा खुश था। सवेरे जब उसकी मम्मी ने उसके माथे पर चुंबन लेकर उठाया तो वह मुसकराते हुए ही उठा। मम्मी ने पूछा, "आज मेरा राजा बेटा बहुत खुश है। लगता है, रात में कोई राजकुमारी मेरे बेटे से मिलने आई थी।"

विभू एकदम से उछलकर जोर से माँ के गले लग गया। उसे बड़ा आश्चर्य होता है कि उसकी माँ उसके मन की बात कैसे जान जाती है! जब-जब ऐसा होता है तो वह मम्मी के गले लग जाता है और फिर पैर पटक-पटककर कूदने लगता है। आज भी वह सोच में पड़ गया कि मम्मी को राजकुमारी की बात कैसे पता चल गई।

मम्मी विभू के मन के भावों को समझ रही थी। उसने पूछा, "अच्छा बताओ तो, तुमने कौन सा सपना देखा?"

विभू माँ की गोद में बैठ गया और बताने लगा। माँ, एक नीला महल बादलों के बीच उड़ रहा था। यह बहुत बड़ा और खूबसूरत महल था। माँ, आपको पता है, वह इतना बड़ा महल एक गुब्बारे की तरह उल्टा-पुल्टा हो सकता था।

इस नीले महल की एक बहुत बड़ी नीली मीनार थी। मीनार कभी उल्टी होती तो अगले पल सीधी हो जाती। मीनार बड़ी लचकदार थी और टेढ़ी-मेढ़ी भी हो रही थी। माँ की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।

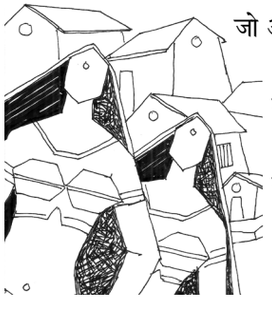

तभी विभू के पापा भी पार्क से टहलकर वापस आ गए। अंतिम बात उन्होंने सुन ली थी। मेरा बेटा किस नीले महल की बात कर रहा है? विभू दौड़कर अपने पापा की गोद में चढ़ गया। पापा, मैं नीले बादलों में घूमने वाले नीले महल की बात कर रहा हूँ।

नीले महल के चारों ओर नीले पक्षी हवा में मँडरा रहे थे। पापा, वे नीले पक्षी बोल सकते थे। उन्होंने मुझसे बात भी की थी। एक पक्षी तो मेरे हाथ पर आकर बैठ गया था। उसकी गोल-गोल आँखें बहुत सुंदर थीं। उसने मेरा नाम भी पूछा और जैसे ही मैंने उसे अपना नाम बताया, वह उड़कर अपने दोस्तों के पास चला गया।

फिर क्या हुआ—पापा ने विभू के बालों को सहलाते हुए पूछा। पापा उस नीले महल से थोड़ी दूर पर एक नीले रंग की चट्टान थी। जिस पर एक राजकुमारी अपनी दोनों बाँहें फैलाए महल की ओर मुँह करके खड़ी थी। राजकुमारी ने नीले रंग के कपड़े पहन रखे थे। उसका नीला कपड़ा हवा के झोकें से चारों तरफ लहरा रहा था।

अब तक चार पुस्तकें प्रकाशित, जिनमें 'पगडंडी में पहाड़', 'नीली राजकुमारी' बाल कहानी-संग्रह, 'दूर नीड़ के पक्षी' कहानी और 'दरिया के दो पाट' काव्य-संग्रह प्रमुख हैं। प्रशासन और साहित्य सेवा के क्षेत्र में अनेक पुरस्कार प्राप्त। विभिन्न कवि सम्मेलनों, दूरदर्शन और आकाशवाणी से नियमित काव्य पाठ के साथ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहते हैं। वर्तमान में अपर सचिव, संघ लोक सेवा आयोग के पद पर कार्यरत।

विभू के मम्मी और पापा एक-दूसरे की ओर देखकर मुसकरा रहे थे।

विभू अपनी रौ में बोले जा रहा था।

फिर नीली परी धीरे-धीरे मेरे पास आई। उसने मुझे भी नीले वस्त्र पहनने को दिए। मैं भी उन कपड़ों को पहनकर उड़ने लगा। राजकुमारी मेरा हाथ पकड़कर हवा में तैरने लगी थी। राजकुमारी मुझे लेकर महल के पास गई।

मैं, राजकुमारी, नीला महल और नीले पक्षी देर तक हवा में साथ-साथ तैरते रहे।

सभी नीले पक्षी प्यारा-सा गाना गा रहे थे। मम्मी वह वही गाना था, जो आप मुझको सुलाते हुए सुनाती हो।

राजकुमारी ने मुझसे सूरज, चाँद और तारों के बारे में ढेर सारी बातें की।

मम्मी ने पूछा—अच्छा राजकुमारी ने विभू से क्या बात की। जरा मुझे भी तो बताओ?

मम्मी वे सब बातें मुझे याद नहीं।

मुझे तो बस याद है—

नीला महल

नीली राजकुमारी

नीले पक्षी

नीला आसमान

यह कहते-कहते विभू बाहर दोस्तों को अपना सपना सुनाने के लिए दौड़ गया।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
दूरभाष : ८८२६३०९६०५

कॉलोनी के दंत चिकित्सक

● **कैलाश मंडलेकर**

पहले इस कॉलोनी में दाँत का एक भी दवाखाना नहीं था। दाँत में दर्द होने पर लोग भागकर शहर जाते थे। शहर में भी डेंटल हॉस्पिटल कम थे। दाँत के मरीजों को देर तक बैठना पड़ता था। डेंटिस्ट के वेटिंग रूम में दाँत दबाकर बैठे रहो और दीवार पर लगे दाँतों के रंगीन चित्र देखते रहो। इन चित्रों में ज्यादातर सुंदर महिलाओं की धवल दंत पंक्तियाँ दिखाई देती हैं। दीवार पर आदमियों के चित्र नदारद हैं। मानो पुरुषों के तो दाँत ही न होते हों। यह सरासर नाइनसाफी है। दाँतों के मामले में यह एकांगी और पक्षपातपूर्ण नजरिया है। लैंगिक दुराग्रह। वेटिंग रूम में दाँत दबाए देर तक बैठने से मन में बहुत नकारात्मक विचार आने लगते हैं, लेकिन क्या करें, उन दिनों दंत चिकित्सालयों की बहुत कमी हुआ करती थी। दाँत का दर्द बहुत तकलीफ देता है। दाँत के दर्द की यह खासियत होती है कि पहले से पता नहीं चलता है कि यह होने वाला है। संडे है और आप सुबह हँसते-मुसकराते हुए उठकर पोहा-जलेबी खा रहे हैं कि थोड़ी देर में दाँत का दर्द शुरू हो गया। एकदम अप्रत्याशित। दाँत का दर्द धीरे-धीरे शुरू होता है, फिर अचानक तेज हो जाता है। जैसे एरोप्लेन टेक ऑफ से पहले हौले-हौले रेंगता है और अचानक आसमान से बातें करने लगता है। दाँत का दर्द हवाईजहाज जैसा होता है। शुरुआत में व्यक्ति घर वालों को नहीं बताता कि उसके दाँत में दर्द है, वह उस स्थान पर जीभ घुमाता रहता है और बहुत हुआ तो छूकर हिलाने की भी कोशिश करता है। थोड़ी देर में दाँत का दर्द तेज हो जाता है और व्यक्ति को इसकी सार्वजनिक घोषणा करनी पड़ती है। यार, आज दाँत में दर्द हो रहा है!

मैंने देखा है कि दाँत दर्द के मामलों में परिवार वाले ज्यादा मददगार साबित नहीं होते। आप सौजन्यतावश मुँह खोलकर ऊपरवाली दाढ़ बताना चाहते हैं, जहाँ दर्द हो रहा है, पर वे आपके मुँह में झाँकने के बजाय बाहर सड़क पर मेंगनी कर रही बकरियों को देखना पसंद करते हैं। यह सरासर बेरुखी है, लेकिन क्या किया जा सकता है। मैंने कहा न कि दाँत के दर्द में परिवार वाले ज्यादा मददगार साबित नहीं होते। आप उन्हें बाईं तरफ की ऊपर वाली दाढ़ बाताएँगे तो वे अपनी स्मृति के आधार पर सिर्फ यही कहेंगे कि इसमें पहले भी दर्द हुआ था। आप

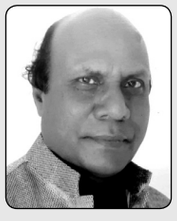

पत्र-पत्रिकाओं में विगत ३० वर्षों से व्यंग्य लेखन। हिंदी रंगमंच कला समूह में सक्रिय भागीदारी तथा दुलारी बाई, बाप रे बाप आदि नाटकों में जीवंत अभिनय। आकाशवाणी इंदौर के पत्रिका कार्यक्रम में कई वर्षों तक व्यंग्य पाठ। प्रथम रामेंद्र द्विवेदी व्यंग्य पुरस्कार। सिंगाजी सम्मान, वयम सम्मान, संचार सारथी पुरस्कार, पहला ज्ञान चतुर्वेदी सम्मान, शब्दशिल्पी सम्मान तथा म.प्र. साहित्य अकादमी का व्यंग्य पुरस्कार।

उनकी स्मृति को आदर देने के लिए चाहें तो मुंडी हिलाकर स्वीकार्यता देने का उपक्रम कर सकते हैं। इस संक्षिप्त से घरेलू वार्त्तालाप के बाद आपकी दंतकथा का लगभग समापन हो जाता है, लेकिन दाँत का दर्द हर्गिज समाप्त नहीं होता।

बहरहाल जैसा कि मैंने ऊपर कहा कि पहले इस कॉलोनी में दाँत के दवाखाने नहीं थे, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में चार-पाँच खुल गए। अभी भी खुलते जा रहे हैं। हर दो-तीन महीने में एक-न-एक दंत चिकित्सालय खुलने का निमंत्रण मिल रहा है। यह राहत की बात है। सरकारी भाषा में कहें तो दाँत के अस्पतालों के बाबत हम आत्मनिर्भर हो रहे हैं। मैं सोचता हूँ, यहाँ दाँत के अस्पताल इसी गति से खुलते रहे तो इस कॉलोनी का नाम यमुना विहार से बदलकर डेंटल कॉलोनी रखा जा सकता है। दाँत के दवाखानों के आधिक्य के चलते अब लोग अपने घर का वास्तु भी बदलने लगे हैं। नया घर बनाने वाले अब अपने घर के सामने एक दस बाई दस का रूम निकालना जरूरी समझते हैं। ऐसा वे इसलिए करते हैं कि देर-सबेर कोई भी डेंटिस्ट किराए पर ले लेगा। दाँत के दवाखाने अब लैंडमार्क के लिए भी प्रयुक्त होने लगे हैं। लोग अपने पते के साथ दाँत के दवाखाने का उल्लेख करते हैं। 'आर सी भदोरिया, डॉ. बतरा के दंत चिकित्सालय के सामने' या डॉ. दास के डेंटल क्लीनिक के पीछे। या डॉ. फलाने के बाजू में।

दाँत के दवाखानों की वजह से अनेक लापता लोगों के पतों को प्रतिष्ठा मिलती जा रही है। यहाँ हर गली में एक दाँत का दवाखाना है। कॉलोनी में दाँत के अस्पतालों की बाढ़-सी आ गई है। जैसे-जैसे दाँत के

दवाखाने खुल रहे हैं, लोगों का दाँत दर्द बढ़ते जा रहा है। यह भी देखने में आया है कि विवाह योग्य डेंटिस्ट शादी के लिए ऐसी लड़की चुनते हैं, जो दाँत की डॉक्टर हो। पति-पत्नी दोनों दंत चिकित्सक हों तो मरीजों को भी सुविधा हो जाती है। पत्नी से दाँत न उखड़े तो वह अपने पति की मदद लेकर कैसे भी अड़ियल दाँत को उखाड़ सकती है। दाँत निकालने के दौरान यदि कोई मरीज डेंटल चेयर से उठकर भागने की कोशिश करे तो डेंटल दंपत्ती उसे आसानी से पकड़ सकते हैं। कई बार दाँत के मरीज को वश में करना एक आदमी के बूते की बात नहीं होती। दंत दंपत्ती कहने में भी अनुप्रास का मजा आता है। डेंटल कपल। वाह!

कॉलोनी में भाँति-भाँति के दंत चिकित्सक आ गए हैं। एक डॉक्टर दास हैं, जो नाम से भले ही दास हों, पर रवैये में एकदम मालिकों जैसे हैं। मरीज को डेंटल चेयर पर लिटाकर मुँह खोलने के लिए ऐसे दुत्कारते हैं, मानो अपने नौकर को डाँट रहे हों। 'मुँह खोलो, रात को क्या खाया था? ऊपर की दाढ़ है या नीचे की?' मरीज जवाब दे, इसके पहले ही डॉक्टर साब का मोबाइल बज उठता है। वे मोबाइल पर बात करने में लगे हैं और मुँह खोले हुए मरीज के चेहरे की मांसपेशियाँ दुखने लगी हैं। कई बार खुले हुए मुँह में मच्छर भी आवाजाही करने लगते हैं। लेकिन डॉक्टर साब की बात खत्म ही नहीं होती। डॉ. शर्मा अपने मरीजों को एक खास किस्म का मंजन देते हैं, जो इतना बदबूदार और बेस्वाद होता है कि उसे देखते ही उलटी करने का मन करता है। लेकिन डॉक्टर साब की हिदायत है कि इस मंजन को करने के बाद थूकना नहीं है। मरीज पूछता है कि डॉक्टर साब गलती से थूक दिया तो क्या होगा? डॉक्टर साब कहते हैं कि फिर से मंजन कर लो। मरीज कहने लगा कि डॉक्टर साब, फिर से भी थूकने में आ जाए तो क्या करें! डॉक्टर साब झल्ला उठते हैं, यार, तुम्हें दाँत की बीमारी है या थूकने की? यदि थूकने की बीमारी है तो सिन्हा साब को दिखाओ, वे थूक के डॉक्टर हैं। कुछ डॉक्टर केवल रूट कैनाल के विशेषज्ञ होते हैं। उन्हें हर दाँत में बैक्टेरियल संक्रमण दिखाई देता है। वे हर दाँत की रूट कैनाल करना पसंद करते हैं। जबकि कुछ डॉक्टर केवल आड़े-तिरछे दाँतों में तार बाँधने में पारंगत होते हैं। दाँतों में कैप लगाने वाले विशेषज्ञ अलग होते हैं, जबकि लगी हुई कैप को उखाड़ने वाले अलग। दाँत की बीमारियों के विशेषज्ञ बढ़ते जा रहे हैं।

आगे चलकर हर दाँत का एक अलग विशेषज्ञ होगा। 'जी नहीं, मैं केवल बाईं दाढ़ निकालता हूँ, दाहिने तरफ की निकालना है तो डॉ. रेवारी से मिलो।' दाँत केवल बत्तीस हैं, पर विशेषज्ञों की संख्या बढ़ती जा रही है। हमारे एक मित्र हैं, रामसजीवन। कल से उनके दाँत में तेज दर्द है। अपने दाँत दर्द को लेकर वे एक अजीब साँसत में फँसे हैं। कहने लगे, समझ नहीं आ रहा है, क्या करूँ। मैंने कहा, कॉलोनी में ढेरों दंत चिकित्सक हैं, कहीं भी जाकर दिखा दो। कहने लगे—भाई साब, इतना आसान नहीं है। पत्नी कहती है, डॉ. वर्मा के पास मत जाना, उसकी मिसेज बहुत अकड़बाज है। इससे अच्छा तो डॉ. दास को दिखा दो। परसों दास भाभी हल्दी कुंकुम में आई थी तो मेरी साड़ी की बहुत तारीफ कर रही थी। दास भाभी बहुत अच्छी हैं। लेकिन डॉ. दास के यहाँ जाने से बिटिया मना करती है, उसका कहना है कि दास अंकल की बेटी बहुत स्मार्ट बनती है, कल उसने मुझे स्कूटी पर लिफ्ट नहीं दी। इससे अच्छा तो सिन्हा साब को दिखा दो। लेकिन सिन्हा साब को दिखाने से बेटा मना करता है। रामसजीवन कहते हैं कि अपने घर वालों की वजह से उन्होंने दवाखाना जाने का इरादा बदल दिया है। वे सुबह से गरम पानी में पोटाश डालकर कुल्ले कर रहे हैं।

कहते हैं कि हाथी के दाँत खाने के अलग होते हैं और दिखाने के अलग, जबकि आदमी के पास यह सुविधा नहीं है। आदमी के पास खाने और दिखाने के लिए सिर्फ एक ही प्रकार के दाँत होते हैं। हाँ, यदि आपके मुँह में दाँत नहीं हैं तो आप दाँत निपोरने की हरकत से बच सकते हैं। जबकि नौकरशाही के इस दौर में दाँत निपोरने के अनेक फायदे हैं। दाँत न हों तो दाँतों तले उँगली नहीं दबाई जा सकती, जबकि इन दिनों दाँतों तले उँगली दबाने के अनेक कारनामे हो रहे हैं। प्रधानमंत्री अभी चीन में थे और पलक झपकते ही अमेरिका पहुँच गए, ऐसे में आदमी के पास दाँत हों तो कम-से-कम वह दाँतों तले उँगली तो दबा सकता है। रामचरितमानस में दाँतों का जिक्र बहुत नकारात्मक ढंग से हुआ है। हनुमानजी जब लंका जाकर विभीषण के हालचाल पूछते हैं तो वह कहता है कि उसकी स्थिति दाँतों के बीच जीभ जैसी है। आठों पहर खतरे में।

सुनहु पवनसुत रहन हमारी। जिमि दाँतन बीच जीभ बिचारी॥

विभीषण की अपनी विवशताएँ हो सकती हैं, जबकि चेहरे के सौंदर्य के लिए दाँतों का होना बहुत जरूरी है। शौर्य और वीरता की प्रामाणिकता के लिए दुश्मन के दाँत खट्टे करने की परंपरा आदिकाल से ही चली आ रही है। दाँत तोड़ने के पीछे जो नजरिया है, उसके मूल में सामने वाले को सिर्फ दंत विहीन करना ही नहीं है, बल्कि चेहरे के सौंदर्य को भी नष्ट करने की अवधारणा है। वैदिक साहित्य में दाँत तोड़ने की घटना का विवरण पढ़कर लगता है कि दाँत प्राचीन युग से ही निशाने पर रहे हैं। कहते हैं कि भगवान् शंकर जब दक्ष यज्ञ का विध्वंश करने के लिए गए तब पूषण नामक देवता दाँत दिखाकर हँसने लगा। लिहाजा शिवजी को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने पूषण देव के दाँत तोड़ दिए।

पूषणप्तयः पिष्टदो भग्रदन्तो अभवत पुरा
दक्षाय कुपितं जहसि विवृत द्वजः।

खैर, सिद्धांत की बात यह है कि आदमी के दाँत और मसूढ़े स्वस्थ तथा मजबूत होने चाहिए। खाने को चाहे भरपेट न मिले, पर दाँतों का बचे रहना जरूरी है। हमारी कॉलोनी के दंत चिकित्सक इस काम में गंभीरता से जुटे हैं।

१५-१६, कृष्णपुरम् कॉलोनी, जेल रोड,
सिविल लाइंस, माता चौक,
खंडवा-४५०००१ (म.प्र.)
दूरभाष : ९४२५०८५०८५

पतित पावन

● नंदन पंडित

समीर बढ़कर अग्रिम उपत्यका पर अपने पाँव रखता, इस विश्वास के साथ कि कदाचित् यह अंतिम चढ़ाई हो, परंतु थोड़ी दूर पहाड़ चढ़ते ही मन का यह भ्रम दिवास्वप्न की नाई पल भर में टूट जाता। सामने उससे भी अधिक उन्नत गगनचुंबी उपत्यका चुनौती देती खड़ी होती। पूरा गात पसीने से तर-बतर हो चला था, वसन निचोड़ दो तो एक नूतन पहाड़ी नाला बह निकले। शिवजी के तो केवल शीश से गंगा निकलती हैं, किंतु उसके शरीर के हर एक रोम-कूप से स्वेद के निर्झर झर रहे थे।

मोटे-मोटे, ऊँचे-ऊँचे अंतरिक्ष से बात करते हुए धूप के वृक्ष, उस एकाकी पथिक के लिए रोमांच से अधिक भय उत्पन्न करने वाले थे। उस निर्जन पहाड़ी प्रदेश में राह चलती सुपारी की एवं अन्य पहाड़ी झरबेर सदृश झाड़ियाँ उसको विश्राम का मौन निमंत्रण दे रही थीं, जैसे सागर सीता की खोज के समय हनुमानजी को आमंत्रण दे रहा था। शरीर थककर चूर, उसकी शरणागत में अपने को समर्पित कर देना चाहता था। मन करता कि वह वहीं चट्टान पर लेटकर कुछ काल के लिए जगत् और उसकी वंचनाओं से स्वयं को पृथक् कर ले। चलते-चलते जूते का तल्ला घिसकर यवनिका विहीन हो चला था। नुकीले पत्थर अब उसकी झूठी सीमा पार करके सीधे पाँव के तलवे पर वार करने लगे थे। परिणाम छालों के रूप में स्पष्ट दृष्टिगोचर था। पिंडली की नसों ने गरदन अकड़कर नागिन की तरह उसे अपने आलिंगन में जकड़ लिया। पाँव उठाना कठिन हो गया। घुटनों ने पाँव का बोझा उठाने से हाथ खड़े कर दिए तो लाचार होकर समीर वहीं बैठ गया।

पसीना आँखों में चुनचुना रहा था। उसने हथेली उठाई उसे पोंछने के लिए तो दाएँ आँख की भौंह सूजी प्रतीत हुई। उँगली नेत्र के सम्मुख आई, तो ताजी लाल रक्त की गाढ़ी बूँदों ने व्यग्र कर दिया। दाहिने घुटना तले फिल्ली का घाव पैंट फाड़कर झाँक रहा था। दृष्टि बदली तो दाईं कलाई भी लालिमा लिये हुए थी। भय ने घड़ी भर भी बैठना दुश्वार कर दिया। बिना घोड़ा पहुँचे सुख की साँस नहीं ली जा सकती। मित्र के किए का फल तो भुगतना ही पड़ेगा। प्रभात की सारी घटना समीर के मन-मस्तिष्क में चलचित्र की भाँति नाच उठी।

स्वर्ग दुआरी पहुँचकर पाँचों मित्रों ने जयघोष किया—प्रभुनाथ बाबा की जय! पाँचों सखा उत्तर प्रदेश राज्य के गोंडा जनपद के रहने वाले

सुपरिचित लेखक एवं रचनाकार। अँखुआ (गीत-संग्रह), बोल कबूतर (बाल-काव्य), रेती की सौंह (उपन्यास), माड़ौ होइ गे (उपन्यास)। संप्रति अध्यापन, बेसिक शिक्षा, गोंडा, उत्तर प्रदेश।

थे। सभी ने उत्साह व श्रद्धा से प्रभुनाथ बाबा का दर्शन-पूजन किया। दर्शनोपरांत थकान मिटाने के लिए सभी मित्र बाबा के पहाड़ से नीचे उतरकर एक होटल में किराए का कमरा लेकर विश्राम करने लगे।

सुबह किवाड़ पर थाप से हुई। द्वार खुलते ही होटल स्वामी ने प्रश्न किया, "पानी की टोटी किसने तोड़ी है?"

"मैंने नहीं।"

"मैंने नहीं।"

"हमने नहीं तोड़ी है।"

"तुमने ही तोड़ी है।" होटल स्वामी गरजकर बोला।

प्रत्युत्तर में किसी ने कुछ नहीं कहा। तत्समय वह वहाँ से डोल गया।

थोड़ी देर पश्चात् वह पुनः घूमकर आया और बिगड़कर बोला, "हमने सभी कमरों में पता कर लिया। टोटी तुम लोगों ने ही तोड़ी है। हमने रात को ध्वनि सुनी थी।"

"तो तभी पकड़ना चाहिए था।" तेज स्वर सुनकर समीर की नींद भंग हो गई। उसने आँख मिचमिचाते हुए कहा।

"तू चुपकर। जिसने तोड़ा है, बता दो अन्यथा एक हजार रुपए अर्थदंड लेकर ही तुम लोगों को यहाँ से हिलने देंगे।"

"हम क्यों देंगे? जिसने तोड़ा हो, उससे लो।" समीर पुनः बोलने से स्वयं को रोक न सका।

"इसका अर्थ, तुमने ही तोड़ा है। अर्थदंड दे दे, अन्यथा बहुत बुरा होगा।"

"जब हमने तोड़ा नहीं तो फाइन क्यों भरें?"

"चुप अंग्रेजी पिल्ले! क्षतिपूर्ति तो तुझे भरनी पड़ेगी।"

समीर पेट के बल लेटा हुआ ही बात कर रहा था कि उस हट्टे-कट्टे होटल स्वामी ने एक झन्नाटेदार झापड़ उसके गाल पर जड़ दिया। समीर का सारा ब्रह्मांड हिल गया। होटल वाला दूसरा प्रहार करने ही जा

रहा था, तब तक कमरे में लेटे हुए अन्य साथियों को ललकारकर लखन उस पर पिल पड़ा।

"साले भिखारी, हमारे भारत की दया पर जीता है! हमें चूड़ियों वाला समझ रखा है?"

"पहाड़ी जानवर! चोर नेपाली! गरीब की लुगाई समझा है?"

भीषण लात-घूसे चले। होटल वाले ने देखा, चाल उल्टी पड़ गई। पासा पलटता हुआ देख वह वहाँ से होटल के स्टॉफ रूम में भाग खड़ा हुआ।

समीर ने सभी साथियों से तुरंत सामान पैक कर चलने को कहा। एक मित्र बाहर था। उसका भी सामान आनन-फानन में सबने समेटा। कंधे पर बैग व सामान लादकर सभी तेजी से बाहर निकले।

बाहर निकास-द्वार पर होटल स्वामी के आदमी हाथ में लोहे व लकड़ी के छड़ लेकर खड़े थे। देखते ही वे उन सब पर टूट पड़े। मार पड़ते ही भगदड़ मच गई। सभी मित्र तितर-बितर हो गए। बाहर गए हुए मित्र की प्रतीक्षा में समीर देर तक उन लोगों से लड़ता रहा। उनके प्रहार से समीर का घुटना और सिर बुरी तरह घायल हो गया। इतने में बाहर गए मित्र ने समीर को पुकारा। अन्य मित्रों के साथ वह भी भाग रहा था। समीर को वहाँ से बच निकलना कठिन लगा तो उसने होटल स्वामी की गरदन कस के पकड़ ली, बोला, "दोनों अब साथ मरेंगे।"

पहाड़ी भोर के अभी साढ़े चार भी ठीक से न बजे थे, तथापि देखते-ही-देखते लोगों की भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ के ही किसी अच्छे व्यक्ति के कारण समीर को वहाँ से बच निकलने का अवसर मिल गया। वह तुरंत विद्युत् गति से भाग निकला।

मित्र दिख नहीं रहे थे, रास्ता अपरिचित था। दूर तक पहाड़-ही-पहाड़। जिधर सिर उठाओ, दुगुने गर्व से अकड़ते पर्वत दिखते। थोड़ी दूर सड़क पर भागते हुए उसने मित्रों को पुकारा। अधिक सोचने-विचारने का समय न था। उसने तुरंत निर्णय लिया, वे चार हैं, सरलता से अपने देश पहुँच जाएँगे। उसे अकेले भागकर प्राण बचाना होगा। इतना सोचते ही वह इन अज्ञात, अथाह, गगनचुंबी पहाड़ियों में उतर गया।

दिन ढलने से पूर्व रत्ननाथ बाबा के मंदिर में पहुँच जाते तो अच्छा होता। विचार विवर्त से बाहर निकलकर उसने अपने मन में कहा। कलाई में बँधी घड़ी देखने के बाद उसने चोटियों के ऊपर मार्तंड की खोज में शीश उठाया। इधर-उधर पूरे तीन सौ साठ अंश घूमने के उपरांत प्राची दिशा का बोध हुआ। भगवान् भास्कर को जरापन दबोचता जा रहा था। तथापि अभी लगभग एक घंटा समय उन्हें प्रस्ताचल जाने में लगेगा।

उसने अपनी चाल बढ़ा दी। पार्श्व में धूप का एक वृक्ष गिरा पड़ा था। तनिक प्रयास के पश्चात् वह उसकी एक टहनी तोड़ने में सफल रहा। लँगड़ाते पाँव को निर्जन पहाड़ी पर धूप के एक डंडे का सहारा मिल गया। दसेक मीटर चढ़ते ही साँस पुन: फूलने लगी। विचित्र दुविधा आन पड़ी। थकान पाँव उठने नहीं दे रही थी और भय रुकने। हे प्रभुनाथ बाबा! अब तुम्हीं सहाय्य हो। किंतु भय कहाँ ठहरने देता है? समीर आगत उपत्यका के लिए, वर्तमान पहाड़ी की चोटी से नीचे उतर गया। तनिक दक्षिण पार्श्व में एक निर्झर झर रहा था। उसके समीप तीन-चार पहाड़िन लड़कियाँ बैठी किलोल कर रही थीं। एक हँसती हुई किशोरी बोली, "हेर, कोही मर्ने छ।" (देख, कोई मरने जा रहा है।)

"मर्न देउ।" (मरने दो।) दूसरी ने अनमने भाव से कहा।

"जवान छ।" (जवान है।)

"बिहे गर्नु।" (तो ब्याह कर ले।)

एक अधिक सुडौल नैन-नक्श वाली किशोरी कहीं अन्यत्र विचारों में खोई थी। सखियों के खिलखिलाने से उसका विचार प्रवाह भंग हुआ तो चीखकर वह कहने लगी, "ए···ओह! त्यो केटा।" (अ···अरे रे! वह लड़का!)

"लो तपस्विनी देवना पनि उठिन्।" (लो तपस्विनी देवना भी जाग गई।) शेष सभी लड़कियाँ एक साथ हँस पड़ीं।

देवना लजा गई। एक ओर सखियों की छेड़खानी थी, दूसरी ओर पथिक के मृत्यु का भय। मन में आशंका और लज्जा में द्वंद्व छिड़ गया। अंत में आशंका की विजय हुई। वह किंचित् मंद स्वर में बोली, "हेर कता जाँदैछ? ···तल!" (देखो, कहाँ जा रहा है?···नीचे!)

"त्यसैले नरोक्नुहोस्। तपाईं धेरै खयाल गर्नुहुन्छ।" (तो रोक न। तुझे बड़ी चिंता रहती है सबकी।)

"मर्नेछन्। भारतको हराएको यात्री जस्तो देखिन्छ।" (मर जाएगा। कोई हिंदुस्तान का भटका हुआ पथिक प्रतीत होता है।)

सखियाँ कुछ न बोलीं।

"सायद बाबा प्रभुनाथको वास आएको होला!" (कदाचित् बाबा प्रभुनाथ के धाम आया होगा!)

"तर मेरो घरबाट होइन।" (किंतु मेरे घर का नहीं है।)

"तिमी तीनै जना कति स्वार्थी र निर्दयी छौ।" (कितनी स्वार्थी व निष्ठुर हो तुम तीनों।)

बात आई-गई हो गई। लड़कियाँ बतरस पान करने लगीं। लगभग आधे घंटे का समय बीत चला। देवना का मन नहीं लगा। कहाँ गया होगा वह युवक? कहीं उतर तो नहीं गया उस मृत्यु प्रवाह में। कोसों तक चौड़ी नदी का पाट पार करना सरल कार्य नहीं है। लेकिन अब तक लौट आना चाहिए उसे? हे जानकी मैया! बेचारा!

मस्तिष्क में कौंधती अनेकानेक कल्पित शंकाओं में से इस आशंका ने हृदय कँपा दिया उसका। देवना उठ खड़ी हुई। सहेलियों ने पूछा, "के भयो?" (क्या हुआ?)

उसे प्रत्युत्तर देना आवश्यक प्रतीत न हुआ। अभी ये सब विविध प्रकार के अनर्गल अभिप्राय निकालकर उसे चिढ़ाएँगी। उधर एक हतभागे के जीवन-मरण का प्रश्न है। वह जाएगी अवश्य। कोई कुछ कहे, वह देखेगी तो क्या हुआ? सखियों की नूतन प्रतिक्रिया का ध्यान किए बिना वह सीधे उसी रास्ते से पहाड़ों की ढलान में उतर गई, जिधर से वह दिग्भ्रमित पथिक युवक गया था।

साँझ ढलती जा रही थी। वह अभी लौटा नहीं। देवना ने अपनी चाल बढ़ा दी। थोड़ी देर में वह उस स्थान पर पहुँच गई, जहाँ से उस पहाड़ी का

अंत्य होकर नदी का विस्तृत, गहरा प्रांत दृष्टिगोचर होता था तथा विकराल सरित का भयानक रोर सुनाई पड़ता था। तनिक दृष्टि ऊँची करने पर समीर का लाल अँगरखा दिखाई पड़ा। वह सरिता की निम्नता में उतर रहा था।

देवना तीव्र स्वर में चिल्लाई, "ठहर जाओ पथिक!"

वह और द्रुत गति से नदी की माँद में उतरने लगा।

"मर जाओगे!" वह पूरे बल से बोली।

"आप कौन?" वहीं से समीर ने भी भर शक्ति चिल्लाकर पूछा।

"देवना। आपकी शुभचिंतक, पहाड़न। समझो प्रभुनाथ बाबा ने भेजा है।"

'देवना!' समीर तनिक देर को रुका तत्पश्चात् पुन: साहस बटोरकर थोड़ा-थोड़ा सरकने लगा।

"मैं कहती हूँ, रुक जाओ पथिक! क्यों अपने प्राण देने पर तुले हो? मैं आपकी शत्रु नहीं। एक पल रुककर मेरी बात सुन लो।"

पता नहीं उसके अनुरोध पर या सामने प्रत्यक्ष नग्न व विकराल काल देखकर अबकी बार समीर के पाँव थम गए। देवना बड़बड़ाती हुई उसके पास पहुँची। इतना विशाल देश भारत, महाशय को मरने के लिए वहाँ दो गज धरती न मिली, जो मरने के लिए नेपाल चले आए!

देवना के उलाहने में अपनों जैसी चिंता थी। अपनत्व भरे बोल सुनकर समीर अपने मन को सबल कर कंधे से बैग उतारकर वहीं उसके समीप एक टीले पर धम्म से बैठ गया।

"हिंदुस्तानी समीर ने आपका क्या बिगाड़ा है? जो उसे उतरने नहीं दे रही?"

"समीर हो तो चाहे जहाँ चल दोगे? निर्दयी! प्राणों का कुछ मोह नहीं? सैकड़ों फीट गहरी कुलंकषा नहीं दिखती?"

"तो क्या करूँ?"

"सही मार्ग गहो।"

"मार्ग ही तो खोज रहा हूँ।" समीर का अभिप्राय सरल न था।

"बाबा के यहाँ आए थे?"

"हाँ।"

"यहाँ कैसे?"

"कहा तो पथ भटक गया हूँ।"

"किसी से पूछ लेऽऽऽते···" सहसा समीर की भौंरी की तरह सूजी हुई आँख और लथपथ घुटने देखकर उसने प्रश्न की दिशा को मोड़ दिया, "चोट कैसे लग गई?"

समीर सकपका गया। स्वर्ग से गिरा खजूर में अटका। अब फँसा!

"यही पूछना था? अब मैं चलता हूँ। रात होने वाली है। अधिक निशा किए बिना घोड़ाही पहुँचना है।"

"किंतु रात तो हो गई।" वह खिलखिलाकर हँस पड़ी, "यह पर्वत है। रात को यहाँ प्रचलित ढर्रों पर भी आवागमन नहीं होता, तुम तो पथ ही भटक गए हो। रजनी में यहाँ मनुष्य नहीं दस्यु घूमते हैं।"

"जाना तो होगा ही! उससे पहले कोई अन्य ठिकाना नहीं है।"

देवना ने देखा—छरहरे गात का पुष्ट, सजीला नवयुवक, जिसकी दाढ़ी अभी पूरी भरी न थी। उसके पाँव विश्राम करना चाहते थे। थकान से लोचन और मुखमंडल की दीप्ति मलिन पड़ गई थी।

"मैं आपको अपने प्राण संकट में डालने नहीं दूँगी।"

समीर के शंकालु मन ने मन में प्रश्न किया। कहीं इसे सारी बातें ज्ञात तो नहीं? कहीं यह उसकी परिचित तो नहीं? वह डंडे का सहारा लेकर खड़ा हो गया। अँधेरा तीव्र गति से बढ़ रहा था।

"आपकी सदाशयता के लिए आत्मीय आभार।" कहकर समीर चल दिया।

देवना ने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया। वह कहने लगी, "मैं पहाड़न हूँ, पर्वत की अंगजा! अपने सामने आपको मृत्यु के मुँह में जाने नहीं दूँगी।"

समीर ने ध्यानपूर्वक उसकी ओर निहारा। कोई बीस-एक बरस की नव यौवना, जिसके कपोलों पर यौवन की लालिमा तो थी, नयनों में सरिता की लज्जा तो थी, किंतु माथा पर्वतों की तरह गर्वोन्नत था।

यह वैसी नहीं हो सकती। इसकी निष्कल्मष आँखें, निर्मल गंगा की तरह कितनी निश्छल हैं! एक-एक शब्द मर्यादा की चाशनी में पगा हुआ है! नहीं, यह नहीं हो सकती। इससे कोई भय नहीं है। हृदय ने अपना मत प्रकट किया। तथापि उसके पापी मन का एक हरकारा घबरा रहा था। उसने अपना विश्वास और पुष्ट करने हेतु कहा, "नहीं, मैं एक अपरिचित पथिक हूँ। मुझ पर अकारण भरोसा करना उचित नहीं। कोई बुद्धिमान प्राणी ऐसे किसी अपरिचित पर विश्वास नहीं करता। फिर तुम तो एक लड़की हो।"

"लड़की हूँ, पर माँ सीता के भूमि की हूँ। जो दशमाथ की सारी निशाचरी माया समझते हुए भी अपना आतिथ्य धर्म निभाने के लिए स्वयं को दाँव पर लगाने से न ठिठकीं। तुम तो सही मानुष जान पड़ते हो।"

देवना की इन बातों को सुनकर समीर का सारा पापी अविश्वास नष्ट हो गया, जैसे कि भानु के उदित होने पर पापमयी अँधेरा।

"लेकिन तुम एक लड़की···तुम्हारे परिवार का कोई सदस्य होता तो और बात थी।" समीर ने इस अंतिम प्रश्न के द्वारा अपने को उसके किसी भी निहोरा से मुक्त कर लेना चाहा।

"प्रश्न बहुत हुआ, अब चलिए। वह उसके बाद वाली उपत्यका पर मेरा घर है।" तर्जनी अंगुली से दाईं ओर दूर एक चोटी दिखाती हुई वह बोली।

समीर इस पहाड़न की असीम ऊँचाई पर झुक गया। देवना आगे चल दी। उसके पीछे पदचाप करते हुए वह चल पड़ा।

"आप इतनी सुंदर हिंदी कैसे बोलती हो?" राह चलते हुए समीर ने पूछा।

"हमारे देश का मुख्य आय-स्रोत विदेशी पर्यटक हैं, विशेषकर भारतीय पर्यटक। हिंदुस्तान से प्रतिवर्ष लाखों लोग बाबा प्रभुनाथ और

पशुपतिनाथ धाम आते हैं। जिनसे हमारी रोटी-पानी चलता है। अत: यहाँ के प्राय: सभी लोग थोड़ी-मोड़ी हिंदी बोलना और समझना जानते हैं।"

"लेकिन आप थोड़ी-मोड़ी से बहुत आगे हो।"

"हाँ, क्योंकि हम अपने घर में भी हिंदी ही बोलते हैं। मेरी माँ भी अच्छी हिंदी बोलती हैं।"

"आश्चर्य की बात है!"

"कोई आश्चर्य नहीं। मैं आठ वर्ष हिंदुस्तान में रही हूँ। मेरे पिताजी गोरखा रेजिमेंट में सिपाही थे। एक आतंकवादी हमले में उनके बलिदान हो जाने के बाद मैं माँ के साथ पुन: अपने देश में आ गई।"

"ओह! क्षमा करें। मैंने आपके हृदय को दु:ख पहुँचाया।"

"कोई बात नहीं! लो यह आ गया मेरा दु:ख निकेतन।"

समीर को घर के ओसारे में बैठने को कह, ताख में जल रहे दीपक की बाती सरकाकर देवना स्वयं घर के भीतर चली गई। उसका घर दो उपत्यकाओं के मिलान पर था। पत्थर की दीवारों पर छत इस्पात की पुरानी चद्दरों से निर्मित था, जो लकड़ी की कड़ियों के ऊपर आश्रित था। घर के मुख्य द्वार की ऊपरी दीवार से इस्पात के दो चद्दर लटकाकर ओसारे का निर्माण किया गया था। ओसारे में धूप की लकड़ी की एक चौकी पड़ी थी, थोड़ी देर प्रतीक्षा करके समीर उसी पर बैठ गया।

देवना किवाड़ खोलकर भीतर घुसी, खाँसता हुआ निर्बल स्वर उभरा, "आ गई देवना? कहाँ रह गई थी? तेरी सहेलियाँ तो कबकी लौट आईं?"

"हाँ माँ, तनिक नदी की ओर चली गई थी।" देवना ने हड़बड़ाकर उत्तर दिया।

"क्या हुआ उस लड़के का?"

माँ के मुँह से यह प्रश्न सुनकर वह अज्ञात भय से चौंक उठी।

"तेरी सखियाँ बता रही थीं कि कोई नवयुवक पथिक भटककर उधर चला गया था।" देवना के कुछ बोलने से पहले ही उसकी माँ पुन: कहने लगीं।

"हाँ-हाँ माँ। वह बाहर बैठा है।"

"क्या?" अचानक उसकी माँ के स्वर में भय के साथ आश्चर्य समा गया।

"माँ रात हो रही थी। वह अकेला, अपरिचित पथ पर था, अस्तु उसे मैं अपने साथ ले आई।"

"किसी को भी घर में ले आएगी, पागल लड़की? न उसके प्रकृति का पता, न उसके देश का। कहीं कोई लुटेरा आदि निकला तो?"

"नहीं, माँ वह ऐसा नहीं दिखता! वह हिंदुस्तानी, प्रभुनाथ बाबा का भक्त है। रास्ता भटककर इधर आ गया। बेचारा बड़ा सज्जन जान पड़ता है।"

हिंदुस्तान का नाम सुनकर उसकी माँ तनिक नरम हुई। फिर भी युवा हो रही अपनी पुत्री को भविष्य के लिए सावधान कर देना उन्होंने अपना कर्तव्य समझा। वे पुन: समझाने लगीं, "पुत्री, आजकल बहुत सारे विदेशी अपराधी बाबा के भक्त बनकर घूमने आ जाते हैं। अतएव सावधान रहने में ही बुद्धिमानी है।"

माँ की आशंका सुनकर देवना चुपचाप उनके पास खड़ी हो गई। उसका सारा उत्साह मर गया।

उसकी माँ जान गई कि देवना के हृदय को उनकी बातों से आघात पहुँचा है। थोड़ी देर सोचकर उन्होंने कहा, "क्या हुआ? ऐसे ही खड़ी रहेगी? लाई हो उसे द्वार पर तो भोजन-पानी न पूछोगी? पता नहीं कबका खाया-पिया हो? जा, बस तनिक चौकस रहना।"

माँ का अनुशासन पाकर देवना समीर के लिए पानी और मीठा लेकर ओसारे में गई। वह माँ-बेटी दोनों का वार्त्तालाप सुन चुका था। बातचीत की ध्वनि बहुत स्पष्ट तो न थी, किंतु स्वरों का आरोह-अवरोह नि:संदेह उसी की ओर इंगित कर रहा था। उनकी चिंता सायास न थी। ठगी की ऐसी अनेकानेक घटनाएँ आए दिन घटती रहती हैं। देवना को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "चलता हूँ। मैंने तो पहले ही आपको मना किया था।"

रँगे हाथ चोरी पकड़ ली गई थी, देवना झेंप गई।

पीछे-पीछे लाठी टेकती हुई उसकी वृद्ध माँ भी अपने अनुभवी लोचनों से समीर को टटोलने आ गई। समीर की बात सुनकर वह कहने लगीं, "न बेटा। तुम्हें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। कुँआरी, युवा बेटी की माँ हूँ, दूसरा कोई आगे न पीछे, आशंका स्वभाविक है।"

समीर देवना से तो प्रभावित था ही, उसकी माँ की सहृदयता और वाक्पटुता से भी प्रभावित हुए बिना न रहा। मानवता की प्रतिमूर्ति हैं दोनों।

वह पुन: तख्त पर बैठ गया। देवना की माँ लाठी के सहारे ओसारे से बाहर निकल गईं।

"पानी पीजिए!" देवना ने मुसकराकर कहा।

समीर ने एक बार मिठाई की ओर हाथ बढ़ाया, किंतु तुरंत ही अपना हाथ वापस खींच लिया।

देवना बोली, "क्या है? पियो न!"

"प्यास नहीं है।" काँपते हुए अधरों से सूखे कंठ उसने कहा।

"अरे नहीं। आप नि:संकोच पानी पीजिए। हम लोग भी शाकाहारी हैं।" उसकी मनोदशा भाँपकर देवना बोली।

आत्मग्लानि से समीर ने ग्रीवा झुका ली। निष्प्राण स्वर में फीकी हँसी हँसकर बोला, "य···ये बात नहीं है।"

"छुपाइए न, मैं समझती हूँ।" वह मुसकराने लगी, "वैसे इसमें कोई बुराई नहीं है, अपना आहार-व्यवहार, अपना धर्म दूसरों के प्रभाव में नहीं तजना चाहिए। जिसने अपने संस्कार तज दिए, समझो वह उसी छिन मृत हो गया।"

समीर उसकी बातों से सम्मोहित हो गया। वह उसे बहुत भली लगी। बहुत देर से कोई बात उसके अधरों पर आकर अवगुंठन में लौट जाती थी। देवना के शिष्ट व्यवहार से उसे संबल मिला। आश्वस्त होकर उसने पूछा, "आप पहाड़ी लकड़ियाँ माँग में सिंदूर नहीं लगातीं?"

"क्यों?"

"आप नहीं लगाई हो?"

वह हँस पड़ी। बोली, "बड़े चालाक हो आप। बैठने का स्थान पाते

ही लेटने की व्यवस्था बनानी आरंभ कर दी। प्रकट पूछना भी नहीं चाहते और सबकुछ जान भी लेना चाहते हो। फिर भी···मेरा ब्याह अभी नहीं हुआ है। मैं बारहवीं उत्तीर्ण हूँ, माँ अच्छे घर-वर में विवाह करना चाहती हैं, किंतु इतना उनका सामर्थ्य नहीं।"

चोरी पकड़ लिये जाने से समीर झेंप गया।

"पानी पी लो तो मैं भोजन तैयार करूँ अन्यथा आपकी पत्नी कहेगी कि नेपाल में जाकर मेरा पति दुबला हो गया। सारा संसार वैसे ही हमें भिखारी कहता है, आपकी स्त्री भी हम नेपालियों को भिखारी मानने लगेगी।" उसने भी उसी का अनुकरण किया।

एक बार को तो समीर काँप गया, यह तो वही शब्द हैं, जो उन लोगों ने होटल स्वामी को कहा था। हे राम! किस जाल में फँस गया मैं? परंतु स्वयं ही अपनी दुर्बलता जताना उचित नहीं। आगत की आशंका में वर्तमान को गँवा देना बुद्धिमानी नहीं। दूसरे ही क्षण सयाने मस्तिष्क ने समझाया। वह सँभलकर कहने लगा, "स्त्री? हुँहुँहूँ! पैसे कमाने के चक्कर में अभी तक कुँवारा हूँ। तीन माह पहले अभियांत्रिकी विभाग में सहायक लेखाकार के पद पर नियुक्ति मिली तो प्रथम भृति पाते ही मनौती निपटाने बाबा के धाम आ गया।" कहकर समीर ने मिठाई उठाकर मुँह में रख ली।

देवना घर के भीतर से तरोई उठा लाई और उसी के सामने बैठकर छीलने लगी। समीर चोरी-चोरी उसे निहारने लगा। जितना सुंदर मन, उतना ही निर्दोष तन। वह उसकी ओर आकर्षित होता गया। देर तक तरोई छीलने की खिच्-खिच् के अतिरिक्त उभय ओर मौन व्याप्त रहा।

"आपको हिंदुस्तान अच्छा लगता है?" साहस बटोरकर समीर ने पूछा।

"हाँ, क्यों?" देवना ने साश्चर्य उत्तर दिया।

"तो किसी हिंदुस्तानी से विवाह कर लीजिए। सदा के लिए हिंदुस्तान के हृदय में बस जाओ।"

देवना ने उसकी आँखों में झाँका। वहाँ विनम्र अनुराग झलक रहा था।

वह उसका मनोरथ समझकर लजा गई और मुसकराती हुई घर के अंदर चली गई। उसकी माँ पड़ोस से चावल ले आई। देवना ने भोजन पकाया। समीर दो दिवस का भूखा था। उसने क्षुधा भरकर भोजन किया और थकान के मारे वहीं पसर गया।

चूल्हा-चौका सहित सारे कार्य से देवना निवृत्त हुई तो उसकी माँ ने कहा, "पथिक को भीतर कोठरी में लिटा दो, मैदानों का रहने वाला है, बाहर भयभीत हो सकता है। और हाँ, उसे कई स्थानों पर चोट लगी है, पीड़ा हो रही होगी, उस पर हल्दी, तेल लगा देना। सबसे बड़ा गृहस्थ-धर्म है, अतिथि की सेवा-सत्कार करना। और यह तो तीर्थयात्री है, इसकी सेवा करने से थोड़ा फल तुझे भी मिलेगा।"

इतना कहकर वे आँगन में सोने चली गईं। देवना हल्दी, तेल गरम करके उसके पास पहुँची। उस समय समीर की आँखें बंद थीं। देवना को स्वर्णिम अवसर मिला। यही सही समय है समीर की आकारिकी जाँचने का। आह! कितना आभावान है चेहरा! पूरे मुखमंडल पर बला की सौम्यता व निश्छलता बिखरी हुई है! उसका स्वप्न कुमार भी तो ऐसा ही है! कदाचित् यह वही तो नहीं। किंतु क्या ऐसा हो पाएगा? वह उस निर्धना से ब्याह क्यों करेगा? हिंदुस्तान में तो उसके लिए पहले से ही बहुत सारी कुँवारियाँ प्रतीक्षारत होंगी।

हल्दी ठंडी हो रही थी। देवना ने अपने दक्षिण हाथ की चारों अंगुलियों में हल्दी, तेल लगाया और उसे समीर की चोटिल भौंह पर रख दिया। उष्णता की अनुभूति होते ही समीर ने तुरंत दोनों नेत्र खोल दिए। देवना भय खाकर दो पग पीछे हट गई।

समीर ने एक प्रश्नवाचक दृष्टि उस पर डाली।

"गरम हल्दी है। माँ ने चोट पर लगाने को कहा है। इससे पीड़ा मिट जाएगी।" डरती हुई देवना ने अपना पक्ष रखा।

"टेव बिगाड़ दोगी, वहाँ (भारत में) कौन करेगा?" समीर ने झूठे रोष से कहा।

देवना तो नहीं, किंतु उसकी आँखों ने कहा, 'मैं! मुझे ब्याह के ले चलो!'

समीर अपलक उन दो निर्मल पहाड़ी निर्झरों में नहाने लगा। लजाकर देवना अपने हल्के हाथों से उसके आहत अंगों पर हल्दी-तेल का लेप मलने लगी।

समीर का रोम-रोम एक अपरिचित आनंद में डूब गया। उसकी हथेलियों का मृदु स्पर्श उसे स्वर्ग का पर्यटन कराने लगा। लोचन लाल होकर उष्ण हो गए। देवना के शरीर की भी विचित्र दशा हो गई। उसके संपूर्ण बदन में झुनझुनी होने लगी। उत्तरीय कंधे से नीचे सरक गया। नासा-छिद्रों से तप्त वायु बहने लगी। कनखियों से झाँकती हुई दोनों की दृष्टियाँ अचानक टकरा गईं। समीर झेंप गया। देवना लजा गई। अपना उत्तरपट सँभालकर कहने लगी, "चलिए भीतर सो जाइए, यहाँ नींद न पड़ेगी।"

समीर आज्ञाकारी की भाँति अपना बैग उठाकर अंदर प्रविष्ट हुआ। देवना ने बाहरी किवाड़ बंद कर दिया। कमरे में चारपाई बिछी थी, उसने संकेत किया, तो वह उसी पर लेट गया।

उसको वहाँ पौढ़ा कर देवना कमरे से बाहर निकलती हुई बोली, "अब शांतिपूर्वक सोइए। पानी चारपाई के नीचे रख दिया है। और कोई काम होगा तो पुकारना। मैं और माँ आँगन में ही रहेंगी।"

यह कहकर उसने उस कोठरी का आँगन में खुलने वाला किवाड़ भी बंद कर दिया।

आधी रात को देवना की नींद उचट गई। कोई उससे कह रहा था, अतिथि राष्ट्र का वैरी है। उसने देश के साथ घात किया है। शत्रु को शरण दिया है उसने। वह सिर से पाँव तक हिल गई।

साहस जुटाकर वह दबे पाँव उठी और समीर का निरीक्षण करने के लिए धीरे से कोठरी का किवाड़ खोल दिया। भीतर समीर बड़बड़ा रहा था।

…पहले उसने ही मुझे मारा है। देख लो यह मेरे फुटे हुए घुटने, सूजी आँख और घायल कलाई। हमने केवल बचाव में वार किए।

…नहीं, नहीं। पहले उसने हमारी मुद्रा पर बने गांधीजी के चित्र को चप्पल से मारा। हमें और हमारे राष्ट्रपिता को गाली दी। बापू को पाखंडी बोला। हमें ब्रितानियों का दास कहा।…तो मैंने भी आपके राष्ट्रीय प्रतीक स्तंभ पर थूका।

…रहने दो। मैं निर्दोष हूँ। मुझे बंद न करो। माँ मेरे बिना मर जाएगी।

बोलते-बोलते समीर नींद में ही रोने लगा। देवना ने उसके मस्तक पर हाथ रखा। वह भय के कारण पसीने से पूर्णत: भीग चुका था। उष्ण हथेली का स्पर्श पाकर उसका बड़बड़ाना बंद हो गया।

देवना पसीना-पसीना हो गई। कितनी बड़ी भूल हो गई उससे? वह पढ़ न सकी चेहरा। बड़ा अपराध कर डाला उसने? देश के शत्रु को अपने घर में शरण दिया। दूसरे ही क्षण उसका मुखमंडल क्रोध से लाल हो उठा। पातकी! मेरे देश का अपमान कर मेरे ही देश में पहुनाई कर रहा है।

हृदय में भर आए घृणा को मुँह से थूककर धीरे से वैसे ही किवाड़ लगाकर वह चुपचाप अपने बिछावन पर आकर लेट गई। उसकी माँ जाग रही थीं। उन्होंने पूछा, "क्या हुआ पुत्री? कहाँ गई थी?"

"कहीं नहीं माँ। पथिक कदाचित् किसी स्वप्न से डर गया था। अब सो गया है। तुम भी सो जाओ।" माँ से झूठ बोलकर देवना ने दूसरी ओर मुँह घुमाकर आँख मूँद ली।

सुबह समीर एक संपूर्ण अँगड़ाई लेकर उठा। भास्कर का बिंदुवत् उजाला किसी छिद्र से कोठरी में झाँक रहा था। कलाई में बँधी घड़ी में लगे रेडियम का प्रकाश उससे मिलकर समय स्पष्ट दिखा रहा था। भारतीय समयानुसार प्रात: के साढ़े नौ हो रहे थे। यह पर्वतीय प्रांत है, अन्यथा भारत में तो अब तक हर ओर कोलाहल का साम्राज्य होता। वसुंधरा को प्रणाम करने के लिए उसने हाथ नीचे किया तो यह क्या? हाथ धरती पर पहले से ही क्षैतिज पड़ा था। उसने चौंककर नेत्र खोला।

"य् य क् कहाँ आ गया मैं?" वह चीखते हुए उठकर खड़ा हो गया।

"तुम नेपाल की प्रहरी चौकी में हो।" एक प्रहरी ने उसका चिल्लाना सुनकर कोठरी के लौह द्वार के पास जाकर कहा।

"मैं यहाँ कैसे आया? मैं तो देवना के घर में था।"

"तुम यहाँ बंदी बनाकर लाए गए हो।"

"क्यों?"

"तुमने हमारे राष्ट्रीय प्रतीक स्तंभ का अपमान किया है। होटल स्वामी को बर्बरता से मारा है।"

"झूठ! मारा उसने है, मैंने केवल अपना बचाव किया है। यह देखिए, मेरा घायल सिर, आँख, कलाई और घुटना।" समीर प्रहरी को अपने घायल अंग दिखाते हुए बोला।

"यह मुझे नहीं, बड़े साहब आएँगे तब दिखाइएगा।"

समीर ने अपने बाल नोच लिये। पहाड़न पर विश्वास घातक हो गया। वह कपटी निकल गई। उसका कहा न मानकर वह अपने पथ चलता जाता तो कदाचित् बंदी नहीं बनता और दो-चार दिन में अपने देश लौट जाता। हे प्रभुनाथ बाबा! इसीलिए बुलाया था मुझे अपने धाम। उसके लोचनों में सावन-घन उमड़ आए। माँ! पिताजी!!

उसका हृदय चीख उठा। रोते-रोते कोठरी की दीवार पर चार-छह बार सिर मारकर वह विचार-शून्य हो गया। शाम होते-होते उसे प्रहरी चौकी से जिला कारागार में स्थानांतरित कर दिया गया।

"चलो बाहर निकलो। तुम बंधन मुक्त हुए।" कारागार रक्षक ने कारागार का द्वार खोलते हुए समीर से कहा।

"कैसे? न्यायालय को तो प्रत्याभूति चाहिए थी? किसने दिया?" समीर ने आश्चर्य से पूछा।

"उसने।" कारागार प्रमुख के पास खड़ी किशोरी की ओर संकेत करके रक्षक ने कहा।

समीर ने देवना को देखा तो क्रोध से उबल पड़ा वह। विश्वासघाती! पहाड़ी नागिन! कपटी लड़की! अभी कुछ शेष है? वह लपककर उसकी ओर बढ़ा।

देवना और कारागार प्रमुख में वार्त्तालाप चल रहा था। सुनकर वह ठिठक गया।

"लेकिन बेटी, तुम्हीं ने उसे निरुद्ध कराया था?" कारागार प्रमुख ने अपनी टोपी उठाकर उसके नीचे बाल खुजलाते हुए जिज्ञासा प्रकट की।

"क्योंकि उसने हमारे राष्ट्र का अपमान किया था। हमारे प्रतीक स्तंभ पर थूका उसने। कोई मेरे देश का अपमान करे, यह मुझे सहन नहीं। उसने अपराध किया था और अपराध की सजा अपराधी को मिलनी ही चाहिए!"

"किंतु फिर तुम्हीं ने अपने गहने बेचकर उसको मुक्त कराया? तुम्हारा रहस्य कुछ समझ में न आया!"

देवना एक फीकी हँसी हँसी। फिर व्यंग्यात्मक स्वर में बोली, "रहस्य मेरा नहीं, हृदय की विषयवस्तु है। जो कर्मेंद्रियों पर अंकुश गोदकर प्राणी को सर्वदा कर्तव्य-अकर्तव्य के मध्य नचाता रहता है। जो प्रत्यक्ष पर अविश्वास करता है तो परोक्ष के भी पाँव पूज लेता है। जो स्वयं के अतिरिक्त स्वयं को ही सही मानता है। देश सबका प्यारा होता है। किसी के समक्ष उसके देश का अपमान करोगे, तो उसकी प्रतिक्रिया भी वैसी ही होगी। हम किसी पर शूल फेंकेगे तो वह हम पर फूल नहीं फेंकेगा। न्यायालय को उसे मुक्त करने के लिए पचास हजार रुपए तथा किसी नेपाली नागरिक का आश्वासन चाहिए था। मैं छोड़ दूँ तो उसका यहाँ कौन बैठा है?" इतना कहकर वह पटल पर भुगतान रसीद की छायाप्रति छोड़कर शीघ्रता से बाहर निकल गई।

समीर ने कोने में रखा अपना बैग उठाया और आँसू पोंछता हुआ उसके पीछे पहाड़ी में उतर गया।

साअ

गाँव-गजाधरपुर
पोस्ट-अयाह, इटियाथोक
जनपद-गोंडा-२७१२०२ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९४१५१०५४२५)

अहिल्याबाई होलकर : भारतीय संस्कृति और सैन्य उत्कृष्टता की अनुपम प्रेरणा

• चंद्र शेखर

अहिल्याबाई होलकर १८वीं शताब्दी की एक महान् योद्धा रानी, भारतीय इतिहास में अपने अद्वितीय सैन्य नेतृत्व, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सामाजिक सुधारों के लिए प्रमुख स्थान रखती हैं। १७२५ में महाराष्ट्र के चोंडी में जनमी अहिल्याबाई ने अपने पति खंडेराव होलकर और ससुर मल्हारराव होलकर की मृत्यु के बाद १७६७ में मालवा की सत्ता सँभाली। उनका शासन (१७६७-१७९५) न केवल मालवा राज्य को समृद्ध और सुदृढ़ बनाता है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर के संरक्षण का प्रतीक भी है। उनके नेतृत्व में मालवा एक सैन्य और सांस्कृतिक शक्ति के रूप में उभरा। उनकी रणनीतियाँ और सुधार भारतीय इतिहास में एक प्रेरणास्रोत के रूप में आज भी प्रासंगिक हैं।

वर्तमान में एक रिसर्च एसोसिएट, जो डिफेंस एंड सिक्योरिटी अलर्ट (डी.एस.ए.) पत्रिका से जुड़े हुए हैं। जे.एन.यू. से आपदा अध्ययन में मास्टर्स और अनेक प्रोजेक्ट्स व शोध-कार्यों में विशेष योगदान दिया है। कई सम्मेलनों में शोध-पत्र प्रस्तुत किए। भारतीय सेना से गैलेंट्री अवार्ड, NCC से DG प्रशंसा कार्ड प्राप्त।

सैन्य शक्ति और पुनर्गठन

अहिल्याबाई का शासनकाल उस समय प्रारंभ हुआ, जब मालवा राज्य आंतरिक अस्थिरता और बाहरी खतरों से ग्रस्त था। उनके शासन के पहले वर्षों में ही यह स्पष्ट हो गया था कि यदि उन्हें अपने राज्य को स्थिर और सुरक्षित रखना है तो एक मजबूत सैन्य ढाँचे का निर्माण करना अत्यावश्यक होगा। उन्होंने लगभग ३०,००० घुड़सवार और १०,००० पैदल सैनिकों की एक स्थायी सेना गठित की, जो उस समय की अपेक्षा एक विशाल सैन्य शक्ति थी। यह सेना तीरंदाजी, तलवारबाजी और तोपखाने जैसी युद्धक कलाओं में निपुण थी और यह उनके राज्य की रक्षा के लिए एक अभेद्य दीवार साबित हुई।

सैन्य संरचना को मजबूत करने के लिए अहिल्याबाई ने साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में सुदृढ़ सैन्य चौकियों की स्थापना की। ये चौकियाँ सामरिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण थीं, क्योंकि ये सीमाओं पर किसी भी संभावित खतरे का तुरंत जवाब देने में सक्षम थीं। इन चौकियों ने मालवा को एक ऐसा सैन्य संरक्षित राज्य बना दिया, जो बाहरी हमलों के खिलाफ पूरी तरह तैयार था। अहिल्याबाई के सैन्य सुधारों में छापामार युद्धनीति भी शामिल थी, जिसे उन्होंने अपने सेनापतियों के साथ मिलकर विकसित किया था। इस रणनीति से उनकी सेना ने दुश्मनों पर घात लगाकर हमला किया, जिससे बड़े और शक्तिशाली दुश्मन भी आश्चर्यचकित रह गए।

सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर की रक्षा

अहिल्याबाई होलकर का शासन केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं था; उन्होंने भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर के संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक था—१७७७ में काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण। यह मंदिर, जिसे मुगल सम्राट् औरंगजेब ने ध्वस्त कर दिया था, अहिल्याबाई के संरक्षण में फिर से स्थापित हुआ। इस पुनर्निर्माण ने भारतीय समाज में उनके प्रति गहरे आदरभाव को और भी बढ़ाया, क्योंकि उनका यह प्रयास भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बना।

अहिल्याबाई ने केवल काशी विश्वनाथ मंदिर ही नहीं, बल्कि सोमनाथ, गया और उज्जैन के मंदिरों समेत पूरे भारत में १०० से अधिक धार्मिक स्थलों के निर्माण और पुनर्निर्माण में भी विपुल धन खर्च किया। इसके लिए उन्होंने राज्य के राजस्व का एक बड़ा हिस्सा आवंटित किया, जिससे मालवा राज्य धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में

उभर सका। इस प्रयास से न केवल आध्यात्मिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था भी पर्यटन और तीर्थ-यात्राओं के माध्यम से समृद्ध हुई।

धार्मिक स्थलों की रक्षा के लिए अहिल्याबाई ने प्रमुख धार्मिक केंद्रों के पास सैन्य इकाइयों की तैनाती की। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि किसी भी बाहरी हमले या अव्यवस्था के प्रयास का तुरंत प्रतिकार हो सके। इस प्रकार के सैन्य और सांस्कृतिक समन्वय ने उनके शासनकाल को विशेष पहचान दी एवं उनके दृष्टिकोण की गहराई को प्रदर्शित किया, जिसमें धर्म, संस्कृति और शासन की परस्पर निर्भरता को प्राथमिकता दी गई थी।

कूटनीति और सहयोगी की नीति

अहिल्याबाई ने केवल सैन्य उपायों पर निर्भर न रहते हुए कूटनीति की महत्ता को भी समझा। उन्होंने स्किंडिया और पेशवा जैसे पड़ोसी शासकों के साथ रणनीतिक गठबंधन बनाए। ये गठबंधन मालवा की संप्रभुता और सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण थे। उन्होंने अपनी कूटनीति से यह सुनिश्चित किया कि उनके राज्य के हित सुरक्षित रहें और मालवा बाहरी खतरों से बचा रहे। इस कूटनीतिक कुशलता के कारण उनके शासनकाल में मालवा ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की बढ़ती ताकत का सामना सफलता से किया और अपनी स्वायत्तता को बनाए रखा।

उनके राजनीतिक दृष्टिकोण में यह अद्वितीयता थी कि उन्होंने ऐसे समझौते किए, जो उनके राज्य के दीर्घकालिक हित में थे। अहिल्याबाई के समय में जब अन्य भारतीय राज्य ब्रिटिश प्रभाव में आ रहे थे या पराजित हो रहे थे, तब मालवा एक स्वतंत्र और सशक्त राज्य बना रहा। उनके समय में हुए कूटनीतिक समझौतों ने यह सुनिश्चित किया कि मालवा की संप्रभुता पर कोई आँच न आए।

महिलाओं के लिए सशक्त दृष्टिकोण

अहिल्याबाई के शासन की एक और विशेषता थी, महिलाओं के प्रति उनका प्रगतिशील दृष्टिकोण। उन्होंने महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए अनेक नीतियाँ बनाईं। उनके दरबार में महिलाओं को न केवल प्रशासनिक, बल्कि सैन्य भूमिकाओं में भी रखा गया। कई महिलाओं को हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे वे संकट के समय राज्य की सुरक्षा में योगदान कर सकें। उनके द्वारा बनाई गई नीतियों ने महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और संपत्ति के अधिकार प्रदान किए, जिससे उनका सामाजिक दर्जा बढ़ा।

इतिहासकार अनुपमा राव के अनुसार, "अहिल्याबाई होलकर ने महिलाओं को आत्मनिर्भर और समाज का एक अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए नीतियाँ बनाईं, जो उस समय के लिए बहुत ही क्रांतिकारी थीं।" उनके इन प्रयासों ने आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा दी और उनके द्वारा स्थापित परंपराओं ने भारतीय समाज में महिला सशक्तीकरण की नींव रखी।

सामाजिक सुधार और न्याय प्रणाली

अहिल्याबाई का शासन न्यायप्रियता के लिए भी जाना जाता था। उन्होंने अपने शासनकाल में एक न्याय प्रणाली स्थापित की, जो सभी वर्गों के लिए समान और निष्पक्ष थी। उनके न्यायालय में गरीब और कमजोर वर्गों के लोगों को न्याय दिलाने पर विशेष ध्यान दिया जाता था। उनके शासन में सभी लोगों के अधिकारों की रक्षा होती थी और सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने के प्रयास किए जाते थे। उनके इन सुधारों ने एक ऐसा वातावरण तैयार किया, जहाँ राज्य के सभी नागरिक स्वयं को सुरक्षित और संरक्षित महसूस कर सकते थे।

निष्कर्ष

अहिल्याबाई होलकर का योगदान भारतीय इतिहास के सैन्य, सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अमूल्य है। उनके द्वारा की गई सैन्य संरचना, कूटनीति और सांस्कृतिक संरक्षण ने न केवल उनके समय में, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का कार्य किया। २०२३ में महाराष्ट्र सरकार द्वारा अहमदनगर जिले का नाम बदलकर 'अहिल्यानगर' रखा गया, जो उनकी स्थायी विरासत और उनके अद्वितीय योगदान को सम्मान देने का प्रतीक है।

उनका जीवन हमें सिखाता है कि साहस, दूर दृष्टि और करुणा के माध्यम से न केवल एक साम्राज्य को सुरक्षित किया जा सकता है, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक आदर्शों को भी आगे बढ़ाया जा सकता है। अहिल्याबाई होलकर का नाम भारतीय इतिहास के पन्नों में सदैव जीवित रहेगा और उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

साअ
बी-८३, जगत पुरी, गली नं.-७,
दिल्ली-११००५१
दूरभाष : ९९९०४७८८७१

एक डॉक्टर की रहस्यमयी कथा

● जूल्स वर्न

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक जूल्स वर्न घुमक्कड़ी के शौकीन थे। इसी शौक के कारण बारह वर्ष की उम्र में वे एक बार भारत जानेवाले जहाज 'कोराली' के कैबिन बॉय की कोठरी में छिप गए थे। जहाज चलने पर पता लगा तो उन्हें उतार दिया गया। इस उद्दंडता के लिए उनके पिता ने उनकी खूब पिटाई की। प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद वे वकालत की पढ़ाई के लिए पेरिस चले गए। लेकिन वहाँ उनका रुझान नाटक-लेखन की ओर बढ़ता गया। उन्होंने थिएटर के लिए अनेक नाटक लिखे। साथ ही कुछ यात्रा-कथाएँ भी लिखीं। संघर्ष के उन्हीं दिनों में उनकी भेंट प्रसिद्ध लेखक अलेक्जेंडर ड्यूमाज और विक्टर ह्यूगो से हुई। जूल्स वर्न को लेखन के लिए और भी प्रोत्साहन मिला। उनकी कृतियों 'फाइव वीक्स इन अ बैलून' और 'अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज' ने लोकप्रियता के शिखर को छुआ। यहाँ उनकी एक प्रसिद्ध कहानी का हिंदी रूपांतर दे रहे हैं।

विस्तृत फैला हुआ, दूर तक दिखता मेगालोक्रिदा समुद्र।

तेज तूफानी हवाएँ और घनघोर बारिश। वोल्सिनियाई सागर-तट पर क्रीमा पर्वत के साथ-साथ लगे पेड़ हवा के झंझावात और बारिश के अंधाधुंध थपेड़ों से दोहरे हुए जा रहे थे। पेड़ों के एक ओर ऊँची चट्टानों की कतार थी, जिसे समुद्र की लहरों की धौंकनी की आती चपेट कुतर-कुतर जा रही थी।

पूरा माहौल शोर से भरा हुआ था। एक ओर तेज बारिश की जोर से उठती छपाक् और उसके साथ पेड़ों को चीरती हवाओं का चीखता हुआ हाहाकार।

नीचे तट से लगा हुआ एक छोटा सा कस्बा ल्यूकट्रॉप था, जिसमें मुश्किल से सौ घर होंगे। उसे घेरती हरियाली भरी चौहद्दी, जो अपने भरसक इस कोशिश में रहती कि कस्बे को जंगली हवाओं के हमले से जितना हो सके, बचाए रखे। उसमें चार-पाँच सड़कें—उन्हें सड़कें कहना मजाक करने जैसा है, बेहतर है उन्हें खड्ड कहा जाए—ऊबड़-खाबड़, कंकड़-पत्थरों और राख से भरा रास्ता, जो वहीं तनकर खड़ा, जिंदा ज्वालामुखी पहाड़ उगलता रहता है। 'वौग्लोर' नाम का यह ज्वालामुखी वहाँ से बस कुछ ही दूर होगा। दिन में उस पहाड़ के भीतर से गंधक की भाप छूटती रहती है और रात भर रुक-रुककर आग की जबरदस्त लपटें, मानो कोई लाइट हाउस डेढ़ सौ कर्तेज (दूरी का स्थानीय माप) दूर तक अपनी रोशनी फेंक रहा हो। वह वौग्लोर नाम का ज्वालामुखी ल्यूकट्रॉप कस्बे के तटीय क्षेत्र के कई इलाकों को रोशन किए रहता है, जिनके मछुआरों की नावें मेगालोक्रिदा सागर की लहरों को छितराती रहती हैं।

कस्बे के दूसरी तरफ क्रिमेरियन काल के खँडहर फैले हुए थे। वह इलाका बेहद गँवई था—चट्टानों से खड़ी की गईं दीवारें और सूरज की छत। दूर से देखने में वह बस यूँ ही छितरे पत्थरों का ढेर नजर आता था। कहा जा सकता है कि वह इलाका वक्त के हाथों फेंका गया एक ऐसा पासा था, जिसमें अंक कभी भी नहीं बदले जा सकते थे।

वहीं एक शानदार जगह थी, जिसे 'दसघरा' नाम दिया गया था। दसघरा इसलिए कि उसमें दस दरवाजे थे—एक तरफ छह और दूसरी तरफ चार।

उधर एक बड़ी सी दीवार, जिसमें घंटियाँ टाँगने की खूँटियाँ लगी हुई थीं, कस्बे की ओर हिकारत से देखती थी। यह चौकोर सी चौहद्दी संत फिल्फिना के नाम पर बनी हुई थी और उसमें टँगी हुई बहुत सारी घंटियाँ तेज तूफानी हवाओं से एक साथ बज उठती थीं। यह अपशकुन का संकेत माना जाता था और वहाँ के रहनेवाले उन घंटियों की आवाज सुनकर भय से दहल जाते थे।

ऐसा था ल्यूकट्रॉप, जो देश में एक फफूँद जैसा उग आया था, ब्रिटेनी की तरह। लेकिन यह तो ब्रिटेनी नहीं है। क्या यह फ्रांस में है? मुझे नहीं मालूम। मैं नहीं बता सकता कि क्या यह यूरोप में है। आप भी कभी भूलकर इसे दुनिया के नक्शे में खोजने की कोशिश मत करिएगा।

□

ठक···ठक···ठक।

दसघरा के सँकरे दरवाजे पर दस्तक की आवाज हुई। यह रुए

मेसग्लिरे के बाएँ कोनेवाला दरवाजा था। दसघरा ल्यूकट्रॉप इलाके के सबसे अमीर आदमी का घर था। भले ही अमीरी होती क्या है, यह किसी को पता नहीं था। इसमें एक ऐसा अमीर आदमी रहता था, जो हमेशा लाखों सिक्कों की दौलत, चाहे जैसे भी उलटे-सीधे तरीके से, खसोटने में माहिर था और इसलिए खूब अमीर था।

ठक-ठक दस्तक की आवाज के जवाब में एक जंगली भौंकने का खूँखार स्वर गूँजा। ऐसा लगा जैसे कोई भेड़िया गुर्राया हो। तभी दसघरा के दरवाजे के ऊपर एक खिड़की खुली और एक गुस्सैल से स्वर में कहा गया, ''ड्यूस, देखो कौन परेशान करने चला आया है?''

एक छोटी लड़की बारिश में भीगी, सर्दी से काँपती हुई दरवाजे पर खड़ी थी। उसके बदन पर बस एक झीना सा कपड़ा था।

उसने पूछा, ''क्या डॉ. त्रिफुल्गास घर पर हैं?''

''वह हैं या नहीं हैं, यह हालत पर निर्भर करता है।''

''मैं उन्हें अपने बीमार व मरणासन्न पिता के पास ले जाने के लिए आई हूँ।''

''वह कहाँ मर रहे हैं?''

''वाल कार्नियो में, बस यहाँ से चार कर्तेज की दूरी पर।''

''क्या नाम है उनका?''

''वोर्ट कर्तिफ।''

''वोर्ट कर्तिफ! वो नमकीन मछलीवाला?''

''हाँ, अगर डॉ. त्रिफुल्गास···''

''डॉ. त्रिफुल्गास घर पर नहीं हैं।''

और फटाक से खिड़की बंद होने की आवाज तेज हवा की बहरा कर देनेवाली चीख में गुम हो गई।

□

पत्थर का बना एक आदमी था डॉ. त्रिफुल्गास, जिसमें इनसानियत का कतरा भी नहीं था। वह कभी किसी मरीज को, बिना उससे नकद फीस लिये नहीं देखता था। उससे ज्यादा हमदर्द दिल शायद उसके बुलडॉग सरीखे बूढ़े कुत्ते हुर्जोफ में होगा। दसघरा मकान का दरवाजा कभी किसी गरीब के लिए नहीं खोला गया। वह हमेशा पैसेवाले मरीज के लिए खुलता था। इसके अलावा, इस डॉक्टर ने अलग-अलग बीमारी जैसे टायफाइड, मिरगी, दिल की बीमारी और दर्जनों दूसरी खुद रची बीमारियों के लिए अलग-अलग फीस तय कर रखी थी। अब वोर्ट कर्तिफ ठहरा गरीब इनसान, वह भी तुच्छ नमकीन मछली बेचनेवाला। उसके लिए भला यह डॉक्टर क्यों परेशानी उठाएगा, वह भी इस तूफानी रात में!

'कोई वजह नहीं है, जो मैं बिस्तर छोड़कर चल पड़ूँ।' डॉक्टर ने बड़बड़ाते हुए खुद से कहा, वह भी सिर्फ दस सिक्कों फीसवाली बीमारी के लिए।

मुश्किल से बीस मिनट बीते होंगे और दसघरे के दरवाजे पर फिर एक हथौड़े जैसी चोट पड़ी।

''कौन है?'' वह चिल्लाया।

''मैं, वोर्ट कर्तिफ की बीवी।''

''वो वाल कार्नियो का नमकीन मछलीवाला?''

''जी हाँ। अगर आपने जाने से इनकार किया तो वह मर जाएगा।''

''ठीक है, तब तुम विधवा हो जाओगी।''

''मेरे पास ये २० सिक्के हैं।''

''चार कर्तेज दूर, यहाँ से वाल कार्नियो जाने के लिए २० सिक्के। बस, भागो यहाँ से!''

खिड़की फिर बंद हो गई। '२० सिक्के, क्या बड़ी दौलत बताई। इतनी रकम के लिए बीमार होने का खतरा उठाना! बकवास, खास तौर पर तब, जब कल दौलतमंद मरीज एडजिंगोव महाशय को देखने किलट्रेनो जाना है। वह गठिया का मरीज है, जिसकी एक बार की फीस ५० सिक्के है।' अपने सामने के इस शानदार मौके को याद करके डॉक्टर त्रिफुल्गास पहले से भी कहीं ज्यादा मीठी नींद में लुढ़क गया।

तेज हवा के थपेड़े और बारिश की बौछार का शोर अभी भी जारी था। उसके बीच दसघरा के दरवाजे पर मजबूत हाथों के तीन मुक्के एक के बाद एक पड़े। डॉक्टर सोया हुआ था। वह एक डरावने आवेग के साथ उठा और खिड़की खोली। हवा के एक झोंके ने उस पर हमला किया।

''मैं नमकीन मछलीवाले के लिए आई हूँ।''

''फिर वही कमबख्त, नमकीन मछलीवाला!''

''मैं उसकी माँ हूँ।''

''कोई भी हो—उसकी माँ, बीवी, बेटी—सब भाड़ में जाओ।''

''उसे दौरा पड़ा है।''

''वह खुद भोगे!''

''हमारे पास कुछ रकम आई है।'' उस बुढ़िया ने बोलना जारी रखा—''रे मेसग्लिरे के कमांडर डोउटूप ने उस घर की किस्त की रकम हमें दी है, जो हमने उसे बेचा है। आगे आप नहीं गए तो मेरी पोती यतीम हो जाएगी, मेरी बहू विधवा हो जाएगी और मैं निपूती रह जाऊँगी।''

उस बुढ़िया की आवाज में गहरी दयनीयता और एक भयावह लहर थी, जिससे पता चल रहा था कि ठंडी हवा से उसका खून जम गया है और बारिश ने उसकी बिना मांस की पतली चमड़ी को भेदकर उसकी हड्डियों तक को गीला कर दिया है।

''हुँह! २०० सिक्के लगेंगे।'' पत्थर दिल डॉक्टर ने जवाब दिया।

''मेरे पास केवल १२० सिक्के हैं।''

''नमस्ते!'' और खिड़की फिर बंद हो गई। लेकिन तुरंत ही लगा

कि डॉक्टर के दिमाग में कुछ हलचल हुई। मिनट भर में उसने सोचा, डेढ़ घंटे का आना-जाना और आधे घंटे का समय मरीज के पास। बस, इतनी देर में १२० सिक्के खरे भले ही यह बहुत ज्यादा नहीं हैं, लेकिन इन्हें भी क्यों छोड़ा जाए।?

दोबारा बिस्तर में जाने के बजाय डॉक्टर ने अपना कीमती गरम कोट पहना, मौसम के अनुकूल जूते पहने और उसके फीते कस लिये। उसके ऊपर बरसाती कोट चढ़ाया, सिर को गरम टोपी से ढका, गले में मफलर लपेटा और हाथ पर दस्ताने चढ़ाए। उसने अपना जलता हुआ लैंप अपनी डॉक्टरी दवाओं के ग्रंथ के पास छोड़ दिया, जिसका 197 नंबर का पन्ना खुला हुआ था।

दसघरा का दरवाजा खोलकर बाहर आते-आते वह दहलीज पर ठिठका। वह बुढ़िया वहीं पर अपनी छड़ी के सहारे टिकी हुई खड़ी थी। अस्सी बरस के कठोर यातनामय जीवन ने उसे झुका दिया था।

''१२० सिक्के लीजिए। ईश्वर आपकी इस रकम को सौ गुना बरक्कत दे।''

''हुँह, ईश्वर! उसने कभी दौलत का मुँह देखा भी है!''

डॉक्टर ने अपने मुँह से सीटी मारकर अपने कुत्ते हुर्जुफ को बुलाया और एक छोटी सी लालटेन उसे लेकर चलने के लिए दे दी। डॉक्टर अपने कुत्ते हुर्जुफ के साथ समुद्र की ओर जानेवाले रास्ते पर चल पड़ा। वह बुढ़िया औरत भी उनके पीछे-पीछे चलने लगी।

□

आँधी-पानी से भरा हुआ मौसम है। तूफानी हवाएँ संत फिल्फेलेना की घंटियाँ बजा रही हैं। यह अपशकुन का संकेत है। लेकिन डॉ. त्रिफुल्गास कोई अंधविश्वासी आदमी नहीं है। वह तो किसी भी चीज में विश्वास नहीं करता, अपनी डॉक्टरी की साइंस में भी नहीं। बस, उस रकम में विश्वास है, जो उसे डॉक्टरी देती है। क्या तो खराब मौसम और क्या तो खराब रास्ता, नुकीले पत्थर और ज्वालामुखी पहाड़ की उगली हुई राख, जो फिसलन भरी मुश्किल भी खड़ी कर रही है। हुर्जुफ के पास की लालटेन के अलावा रोशनी का नामोनिशान नहीं और उस लालटेन का भी क्या भरोसा। बीच-बीच में वॉग्लोर ज्वालामुखी अपनी लपटों की चमक छोड़ता है, जिनसे अजीब सी काली-काली आकृतियाँ कौंध जाती हैं। चट्टानों के बीच दर्रे हैं और वास्तव में किसी को भी इनकी गहराई का पता नहीं है। वहाँ से शायद किसी दूसरे लोक की आत्माएँ प्रकट होती हैं।

डॉक्टर और वह बुढ़िया उस तटीय रास्ते पर बढ़ते जा रहे हैं। समुद्र अपनी उज्ज्वल सफेद छटा लिये फैला हुआ है—जैसे शोक-संवाद की शुभ्रता का विस्तार हो। लहरों से रेत के महीन कण उछलकर हवा में ऐसे छितरे जा रहे हैं, मानो वहाँ जुगनू थिरक रहे हों।

वे दोनों लोग रेतीले पहाड़ों के बीच से चलते-चलते एक मोड़ पर आ जाते हैं, जहाँ नुकीली पत्तियोंवाली झाड़ियाँ आपस में टकराकर किसी खुकरी की तरह लहराती हैं। कुत्ता अपने मालिक के पास आकर साथ-साथ चलने लगा है, मानो उससे कह रहा हो—बढ़ते चलो, अपनी तिजोरी में १२० सिक्कों के लिए बढ़ते चलो···। किस्मत ऐसे ही खुलती है। अंगूर के बाग की जमीन कुछ और बढ़ेगी। भोज की मेज पर कुछ और पकवान सजेंगे। वफादार कुत्ते हुर्जुफ के हिस्से में गोश्त का एक और टुकड़ा आ जाएगा। दौलतमंद अपाहिजों की खिदमत में लगे रहो। जितना जिसमें माल हो, उसी के हिसाब से उनका ध्यान रखो।

एक जगह पहुँचकर वह बुढ़िया ठहर गई। अपनी कँपकँपाती उँगली उठाकर उसने परछाइयों के बीच एक ललछहँ रोशनी की ओर इशारा किया। वोर्ट कर्तिफ, नमकीन मछलीवाले का घर वह है।

''वहाँ?'' डॉक्टर ने पूछा।

''हाँ।'' उस बुढ़िया ने जवाब दिया।

''हुर्रर···'' हुर्जुफ कुत्ता गुर्राया।

अचानक ज्वालामुखी वॉग्लोर में तेज विस्फोट हुआ, जो उसकी जमीन तक हिला गया। एक चरखी की तरह नाचती लपट ऐसे कौंधी, मानो स्वर्ग की तलवार हो और चमककर बादलों के बीच खो गई। डॉ. त्रिफुल्गास लड़खड़ाकर जमीन पर गिरा और चक्कर खा गया। वह उठा और आसपास देखने लगा।

वह बुढ़िया वहाँ नहीं नजर आई। क्या वह जमीन की किसी दरार की भेंट चढ़ गई या कोई धुंध भरी हवा उसे उड़ा ले गई? कुत्ता हुर्जुफ अभी भी वहीं, अपनी दोनों पिछली टाँगों के बल खड़ा था और उसके जबड़े खुले हुए थे। उसकी लालटेन भी बुझ गई थी।

'कुछ भी हो, हम अंदर जरूर जाएँगे।' डॉ. त्रिफुल्गास बुदबुदाया। उस ईमानदार आदमी को उसके १२० सिक्के मिल चुके थे और अब उसे उन्हें कमाना था।

□

बस, कुछ ही दूरी पर उजाले की एक झलक दिख रही थी। वह मरणासन्न व्यक्ति का चिराग था या शायद वह आदमी मर ही चुका था। बेशक, वह नमकीन मछलीवाले का ही घर है। उस बूढ़ी औरत ने अपनी उँगली उठाकर यही घर दिखाया था। किसी गलती का सवाल ही नहीं है। तूफानी हवाओं और बारिश की बौछारों के

हाहाकार के बीच डॉक्टर के कदम तेजी से बढ़ने लगे। वह ज्यों-ज्यों पास पहुँचता गया, उसकी नजर के आगे पूरे परिदृश्य में वह घर और साफ दिखाई देने लगा।

यह हैरतवाली बात थी कि वह घर डॉ. त्रिफुल्गास के दसघरा से काफी मिलता-जुलता-सा था। खिड़कियों की वैसी ही व्यवस्था और वैसा ही छोटा सा दरवाजा। दरवाजा पूरी तरह बंद नहीं है। डॉक्टर उसे धकियाकर खोलता है और भीतर आ जाता है। उसके पीछे हवा दरवाजे को बंद कर देती है। कुत्ता हुर्जुफ बाहर ही रह जाता है और रह-रहकर गुर्राता है।

आश्चर्य! भीतर का दृश्य देखकर कोई भी कह सकता है कि डॉक्टर खुद अपने ही घर वापस आ गया है, जबकि वह कहीं घूमे-भटके नहीं हैं। वह वाल कर्निओन में ही हैं, ल्यूकट्रोप में नहीं। लेकिन यहाँ भी वैसे ही नीची छतवाले मेहराबदार गलियारे हैं, वैसी ही लकड़ी की सीढ़ियाँ हैं, जिनके जँगले बार-बार हाथ लगाने से घिस-से गए हैं। वह ऊपर जाता है, कमरे में पहुँचता है। फर्श के नीचे से पीली रोशनी वैसे ही झलकती है, जैसे दसघरा में दिखती है। क्या यह कोई जादुई भ्रम है? हल्की रोशनी में डॉ. त्रिफुल्गास को अपना कमरा पहचान में आता है। वही उनके जैसा पीला सोफा, दाहिने हाथ की तरफ नाशपाती की लकड़ी की पुरानी अलमारी और बाईं ओर पीतल मढ़ी मजबूत तिजोरी, जिसमें वह अपने १२० सिक्के सँजोने वाला था। वहीं उसकी आराम कुरसी रखी है, जिस पर चमड़े की गद्दियाँ लगी हैं। साथ में उसकी घुमावदार पायोंवाली मेज रखी है। मेज पर अब-तब बुझने को तैयार लैंप है और डॉक्टरी दवाओं का वह ग्रंथ, जिसका 197 नंबर का पन्ना अभी भी खुला हुआ है।

'यह मुझे क्या हो रहा है?' वह बुदबुदाया।

उसे यह क्या हो रहा है? भय! उसकी आँखों की पुतलियाँ फैल गई हैं। बदन कँपकँपाकर अकड़ गया है। शरीर से बहता हुआ ठंडा पसीना चमड़ी पर बर्फ-सा जम गया है। शरीर के तमाम रोंगटे खड़े हो गए हैं।

हठात, तेल खत्म हो जाने से लैंप बुझ गया है और वह मरणासन्न आदमी भी। डॉक्टर वहाँ पर एक बिस्तर भी देख रहा है—उसका अपना बिस्तर, जिस पर परदेदार मसहरी तनी हुई है। पलंग भरपूर लंबा-चौड़ा है। क्या यह मुमकिन है कि यह शानदार पलंग उस कंगाल नमकीन मछलीवाले का है? अपने थरथराते हाथों से डॉ. त्रिफुल्गास परदे थामते हैं और उन्हें हटाकर भीतर झाँकते हैं।

एक मरणासन्न, खुले हुए चेहरेवाला आदमी है—एकदम निस्पंद, जैसे कि उसने बस, अभी-अभी अपनी अंतिम साँस ली हो। डॉक्टर उस पर झुकता है।

ओह, एक हृदय-विदारक चीत्कार-सी उठी और उसके जवाब में बाहर से कुत्ते ने किसी अनसुने-से स्वर में प्रतिकार किया।

वह मरणासन्न आदमी नमकीन मछली बेचनेवाला वोर्ट कर्तिफ नहीं है। वह है, डॉ. त्रिफुल्गास हाँ, वह खुद है। मस्तिष्क की रक्त वाहिनियों में अचानक तनाव से शरीर पर पक्षाघात, वह भी घाव लगे हिस्से की दूसरी तरफ, जिससे वह घाव को बचा भी नहीं सकता।

हाँ, वह डॉ. त्रिफुल्गास ही था, जिसके लिए वह भेजा गया था और उसे १२० सिक्के दिए गए थे। वही, जिसने निर्दयतापूर्वक अंतिम साँस ले रहे नमकीन मछलीवाले को देखने से इनकार कर दिया था।

डॉ. त्रिफुल्गास पगला-से गए हैं। वह समझ रहे हैं कि वह गए। हर नए पल उनकी मौत के लक्षण बढ़ते जा रहे हैं। न केवल उनके सारे अंग शिथिल होते जा रहे हैं, बल्कि उनके फेफड़ों और दिल ने भी काम करना बंद कर दिया है। फिर भी उनमें चेतना बची हुई है। क्या किया जा सकता है? अभी भी हिचकिचाहट है...खून बहे...? डॉ. त्रिफुल्गास मर चुके हैं। उस जमाने में मरने के बाद भी खून बहता था और आज डॉक्टरी पेशे के लोग मिरगी के उन मरीजों को भी ठीक कर देते हैं, जो मरने को भी तैयार नहीं थे।

डॉ. त्रिफुल्गास अपने थैले में से एक नश्तर निकालते हैं और अपने हमरूप की बाँह में एक नस काट देते हैं। खून नहीं बहता। वह उसकी छाती पर जोर-जोर से मालिश करते हैं और उनकी साँस धीरे-धीरे डूबने-सी लगती है। वह उसके पैरों को गरम ईंट से सेंकते हैं और उनके खुद के पैर ठंडे होते जाते हैं।

तभी उनका हमरूप जरा सा उठता है और धम्म से पीछे गिर जाता है। यहीं उसकी आखिरी साँस छूटती है। डॉ. त्रिफुल्गास ने जो कुछ भी डॉक्टरी पढ़ाई के दौरान सीखा था, वह ज्ञान उनका साथ नहीं देता और वह उसी पल अपनी ही बाँहों में दम तोड़ देते हैं।

□

अगले दिन सुबह दसघरा में एक लाश पाई जाती है। वह लाश डॉ. त्रिफुल्गास की है। लोग उस लाश को एक ताबूत में रखकर बड़ी शान-ओ-शौकत से ल्यूकट्रोप के उसी कब्रिस्तान में ले जाते हैं, जहाँ उस डॉक्टर ने बहुतों को अपने पेशेवर तरीके से पहुँचाया था।

उस बूढ़े कुत्ते हुर्जुफ के बारे में लोग बताते हैं कि वह जलती हुई लालटेन लेकर लावारिस की तरह इधर-उधर भटकता हुआ देखा जाता है। पता नहीं, सच क्या है; लेकिन ल्यूकट्रोप के पास, खासतौर से वोल्सिनिया में, अजीब-अजीब सी घटनाएँ होती रहती हैं।

एक बार और मैं आपको खबरदार कर दूँ कि कभी नक्शा लेकर इस कस्बे को खोजने मत बैठ जाइएगा। दुनिया के बड़े-से-बड़े भौगोलिक भी इसका पता-ठिकाना नहीं खोज पाए हैं।

गोवा में वे सात दिन

● रुक्मणी संगल

पुन: 'गोवा' जाने का अवसर मिल गया। समय बहुत कम था, फिर भी कार्यक्रम बन गया। आने-जाने का समय बचाने के लिए यह निश्चित हुआ कि इस बार की यात्रा विमान द्वारा संपन्न हो। संयोग से चंडीगढ़ से गोवा की सीधी उड़ान है, इसलिए उसी में सवार हुए। समय भी दिन का होने से हमारे लिए उपयुक्त था। उसी दिन सायंकाल 'गोवा' पहुँच गए। मार्ग में बादलों के विभिन्न रूपों को भी निहारा। परिचारिका ने घोषणा की कि 'हम गोवा पहुँच गए हैं, लेकिन मौसम खराब होने के कारण विमान अभी लैंड नहीं कर पाएगा। सभी यात्री सीट बेल्ट सावधानी से बाँधे रखें।' यह उद्घोषणा बार-बार की जा रही थी। विमान से बाहर झाँकने पर चारों ओर काला धुआँ जैसा दीख रहा था। खैर, थोड़े समय बाद विमान तल पर लगा, यात्री उतरे, अपना-अपना सामान लिया, गेट से बाहर निकले। पुत्तर प्रभात पहले से ही वहाँ प्रतीक्षा कर रहा था। वर्षा अभी भी हो रही थी। वर्षा में ही गाड़ी में बैठे और चल पड़े घर की ओर। विमानपत्तन से घर की दूरी ३५-४० कि.मी. है, जिसे पार करने में एक घंटे का समय लगा। कारण, वर्षा निरंतर होती रही, टेढ़ी-मेढ़ी घुमावदार सड़कें, तिस पर सड़क के दोनों ओर ऊँची-ऊँची वनराजि, दूर से मार्ग दिखाई ही नहीं देता। खैर, घर पहुँचे, गरमागरम चाय की चुस्कियाँ लीं। बच्चों को अपने दादी-दादा के साथ-साथ अपने-अपने उपहारों की भी प्रतीक्षा थी, वह भी पूर्ण हुई, रात्रि भोजन के पश्चात् विश्राम और शयन। आज का दिन संपन्न हुआ।

अगली प्रात: हो गई, पर वर्षा ने विराम नहीं लिया, यदि विराम लिया भी हो तो अल्प-विराम ही लिया होगा। अभी-अभी मौसम कुछ ठीक लगा, लेकिन चंद मिनटों बाद झमाझम पानी गिरने लगा। लगता है, बस घर में बैठकर इस अद्भुत दृश्य का आनंद लीजिए और अवसर मिलने पर सपना टाउन के झरबेरा एवेन्यू में स्थित अपने आवास के आसपास की लेन्स में ही चहलकदमी कर प्रात:भ्रमण की पूर्ति कर लीजिए। एक बड़ी अच्छी बात कि यहाँ लेन्स के नाम पुष्पों के नाम पर रखे गए हैं, जैसे—मोगरा लेन, जैसमीना व जूली लेन, सदाफुल्ली लेन। इसी लेन में प्रभात का आवास भी था। एक और अच्छी बात, जो मुझे अच्छी लगी कि

सुपरिचित लेखिका। धार्मिक, सामाजिक एवं साक्षरता गतिविधियों में सहभागिता। भारत के कोने-कोने में भ्रमण। पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख, यात्रा-वृत्त और कहानियाँ प्रकाशित।

घरों के नाम शक्ति रूपा देवियों के नाम से जाने जाते हैं, जैसे—महालक्ष्मी आवास, गौरा आवास, शारदा आवास, महागौरा आवास। आज का दिन भी ऐसे ही व्यतीत हो गया। वर्षा शिमला की भी देखी थी, पर यहाँ की वर्षा तो जैसे विश्राम करना ही भूल गई हो, बस सीमा पर तैनात प्रहरी की भाँति दिन-रात अपनी ड्यूटी पूरी करने में ही आनंदित होती रहती हो।

अगली प्रात: भी वर्षा का वही हाल, पर प्रात:भ्रमण के समय हम दोनों अपने-अपने छाते लेकर सपना टाउन से बाहर निकल आए। मुख्य मार्ग आ गया तो अपने बाएँ चल पड़े। थोड़ा सा चलने पर ही सड़क के दूसरी ओर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—'अयप्पा मंदिर'। उत्सुकता हुई, मार्ग पार कर दूसरी ओर चले गए। लगभग एक फर्लांग की चढ़ाई थी, मंदिर के मुख्य द्वार तक जाने के लिए बढ़ते गए। सामने आ गया मंदिर का द्वार, पर बंद था, उसके एक ओर लिफ्ट थी, वर्षा से बचने के लिए वहीं घुस गए। अब घर वापसी की सोच ही रहे थे, तभी मंदिर कमेटी के एक भक्त-सदस्य आए, उन्होंने लिफ्ट के द्वार खुलवाए और हमें ले गए मंदिर-परिसर में। मंदिर का परिसर काफी बड़ा व विस्तृत था। मध्य में मुख्य मंदिर, जिसमें 'कार्तिकेय' की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर की परिक्रमा की दीवारों पर बाहर एक सौ आठ दीपक लगे थे, जिन्हें विशेष अवसरों पर या किसी भक्त द्वारा कराए गए किसी विशिष्ट आयोजन पर ही प्रज्वलित किया जाता है। हर शनिवार को विशेष पूजा संपन्न होती है, जिसमें हवन-पूजन आदि होता है। नारियल की जटाओं से बनी सामग्री का भी प्रयोग होता है। हम थोड़ी देर ही वहाँ रुके और वापस लौट आए।

वर्षा की निरंतरता अद्भुत थी। वर्षा अभी भी हो रही थी, फिर

मध्याह्न में भोजनोपरांत लगा कि थोड़ा विश्राम करने लगी। बस जल्दी से गाड़ी में बैठ गए, वहाँ के मुख्य मंदिर मंगेशी के दर्शन हेतु पहुँच गए। 'मंगेशी' ग्राम में स्थित मंगेशी मंदिर, जो भगवान् शिव को समर्पित है। शिव का ही एक नाम 'मंगेश्वर' भी है। इस ग्राम से एक और नाम जुड़ा है, जो सबका चिरपरिचित है। जब अकबर के दरबार के नवरत्नों की बात होती है तो 'तानसेन' की भी, जो अपने सुरों से प्रकृति को भी वैसा करने के लिए विवश कर देते थे, जैसा वे चाहते थे। वे सुरसाधक ही नहीं अपितु उसके पोषक भी थे। अर्जुन अपने एक बाण से धरा की गहराई से जल की धारा लाकर अपने पितामह को जलपान करा सकते थे, वैसे ही सुर सम्राज्ञी लता मंगेशकर, जिन्होंने न केवल हमारे सिने-जगत् को लाभान्वित किया अपितु लाखों हृदयों पर अपने सुरों से राज किया है, उन्हीं 'लताजी' की जन्मस्थली, कार्यस्थली व पुण्यस्थली मंगेशी ग्राम में स्थित यह 'मंगेशी मंदिर' सबकी आस्था का पुंज बन गया है। विशाल परिसर को घेरे इस मंदिर में सात मंजिला गुंबद सबके मन को मोह लेता है। मुख्य मंदिर के पीछे की ओर परिक्रमा के साथ शिव-परिवार के अन्य सदस्यों की प्रतिमाएँ स्थापित की गई है। इस मंदिर में दर्शकों, भक्तों व पर्यटकों का जमावड़ा प्रतिदिन वहाँ लगता है। गरमी हो, सर्दी हो, बरसात हो, आस्था का सैलाब उमड़ा ही रहता है। हाँ, मंदिर-दर्शन के लिए पुरुष वर्ग को पैंट अथवा लुंगी पहनना आवश्यक है। लुंगी वहीं बाजार में किराए पर उपलब्ध हो जाती है।

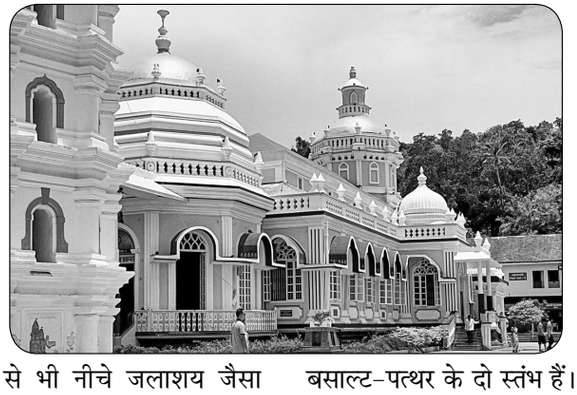

मंदिर से बाहर आए, मुख्य द्वार की सीढ़ियाँ उतरे तो बाईं ओर भूतल से भी नीचे जलाशय जैसा आयताकार आकार में चारों ओर की दीवारों में बड़े-बड़े आलय बनाए गए हैं, जिनमें अनेक देवी-देताओं की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। मुख्य द्वार के सामने के मार्ग पर विभिन्न वस्तुओं के विक्रेता दोनों ओर विराजित थे। वे भी दर्शकों व पर्यटकों को लुभाते ही हैं। वर्षा रानी ने पहले ही अच्छी तरह स्नान कराया हुआ था, फिर भी उन वस्तुओं पर भी एक विहंगम दृष्टि डालते हुए गाड़ी में आ बैठे। मंगेशी परिसर में कुछ तसवीरें भी लीं और उसके आकर्षण से मुँह मोड़कर चल दिए अपने आश्रय-स्थल की ओर।

अगले दिन पुन: उसी मौसम में गाड़ी में बैठे और पुत्तर ने गाड़ी को पुराने गोवा की ओर मोड़ दिया। पुराना 'गोवा' पहुँचे। गुरद्वारा आया, वहीं गाड़ी पार्क की, दूसरी ओर स्थापित 'वायसराय आर्क' देखने चले। यह १५९९ में पुर्तगालियों की जीत के प्रतीकस्वरूप बनाया गया था। १९५४ में इसका पुनर्निर्माण कराया गया। यहीं मांडवी नदी भी प्रवाहित हो रही है, जिसके चौड़े पाट को देखकर नर्मदा व ब्रह्मपुत्र की याद बरबस आ जाती है। सब ओर हरियाली का साम्राज्य है, विशेष रूप से नदी के किनारों पर तो पूर्णरूपेण ही। लंबे-ऊँचे नारियल के वृक्ष शान से खड़े-खड़े भी गगन से मिलने का प्रयास करते से प्रतीत होते हैं। मांडवी नदी के दूसरे तट पर जाने के लिए 'फैरी' का सरकारी प्रबंध है। 'फैरी' नदी पार कराने का एक ऐसा साधन, जिसमें आप अपने दुपहिया व चौपहिया वाहनों को भी सरलता से ला-ले जा सकते हैं, जिससे दूसरी ओर निर्मित स्थानों का भी भ्रमण किया जा सकता है। एक प्रकार का छोटा जलयान। हम गाड़ी तो गुरुद्वारे के समीप ही छोड़ आए थे, फलत: स्वयं ही उसमें सवार हो गए और निहारने लगे मांडवी के विस्तार को, उसमें उमड़ती-घुमड़ती लहरों को, आकाश से पड़ता पानी उस दृश्य को और भी आकर्षक बना रहा था। उस दृश्य की दिव्यता व भव्यता को शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए अत्यंत कठिन है। मैं तो नि:शब्द, निर्विचार; हाँ, 'प्रसाद' की कामायनी की यह पंक्ति अवश्य मानस-पटल पर अंकित हो रही थी या यों कहूँ कि मेरी अनुभूति कुछ वैसी ही हो रही थी—'एक पुरुष भीगे नयनों से, देख रहा था जल-प्रवाह।' उस 'फैरी' में बिना वाहन वाले हम जैसे पाँच-दस ही यात्री थे, शेष सब वाहनों के साथ थे। कब दूसरा तट आ गया, पता ही नहीं चला, जब वाहन उतारे जाने लगे तो मुझे ज्ञात हुआ कि हम दूसरे तट पर पहुँच गए हैं। इस बीच कुछ तसवीरें भी बच्चों ने खींच ली थीं। उसी 'फैरी' से हम अपने पूर्व तट पर ही आकर उतरे। 'वायसराय आर्क' से आगे बड़ा सा उद्यान था, उसी ओर बढ़ गए। यहाँ एक गिरजाघर व बादशाह आदिलशाह का दरबारी हॉल है तथा महल का मुख्य द्वार भी। महल के भव्य-भवन को पुर्तगालियों ने अपना आवास बना लिया था। उसके बाद समारोह स्थल के रूप में भी उसका उपयोग होता रहा। शेष बचे द्वार में बसाल्ट-पत्थर के दो स्तंभ हैं। इसके लिंटर के साथ पत्थर की जाली है, जो जटिल नक्काशी का अप्रतिम उदाहरण है। उद्यान-परिसर में कई मुँह बोलती, जीवंत सी पाषाण-प्रतिमाएँ स्थापित हैं, कुछ पक्षियों की प्रतिमाएँ भी हैं। इस आकर्षक परिवेश में भी कुछ तसवीरें लीं। एक ओर छोटा सा मंदिर भी स्थापित है। अब यहाँ खनन व नव-निर्माण पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इन सब दृश्यों को मीठी-मीठी अनुभूतियों को समेटे गाड़ी में बैठ गए और चल पड़े अपने आश्रय-स्थल की ओर। मार्ग लंबा था, तिस पर मार्ग के दोनों ओर झूमती, इठलाती वनराजि सबका अभिनंदन करती सी प्रतीत हो रही थी। पानी का वर्षण वनराजि के आनंद को द्विगुणित करता प्रतीत हो रहा था। उमंगित, उल्लसित, हर्षविभोर सी वनराजि से आतिथ्य ग्रहण करते हुए अपने आश्रय-स्थल पर पहुँच गए।

आज एक 'बीच' की ओर चल पड़े। बीच का आकर्षण भी इतना होता है कि चाहे आपने कितने भी 'बीच' देख लिये हों, फिर भी समुद्र की उछलती-दौड़ती लहरें निमंत्रण देती सी प्रतीत होती हैं। मौसम अनुकूल नहीं था, फिर भी हम जैसे सिरफिरे उत्साही लहरों के आमंत्रण को स्वीकार करते हुए उनकी ओर बढ़ रहे थे। पर मैं अवश्य उसमें सबसे पीछे थी। एकाएक तीव्र गति से वर्षण और वायु आई, लहरें भी दौड़ती हुई तट की ओर चलीं, तब सभी उत्साही आगंतुक उलटे पैर दौड़े, हम

भी उस दौड़ में भागीदार बने। एक-दो दुकानों पर विचरण करते अपनी गाड़ी में आ बैठे और चल दिए अपने आवास की ओर। सर्वप्रथम नित्य की तरह सबने अपने गीले वस्त्रों को उतारकर सूखे, वस्त्र धारण किए, फिर चाय की चुस्कियाँ लीं।

अगले दिन हमें 'पटियाला' वापस आना था, अत: प्रात: से ही वह प्रक्रिया प्रारंभ हो गई। फलत: मनोहर परिकर विमानपत्तन की ओर प्रस्थान किया। यह भी प्रभात के आवास से डेढ़-दो घंटे की यात्रा संपन्न करने पर आता है, उसी हिसाब से घर से चल पड़े। विलक्षण भी अपने दादी-दादा को सी-ऑफ करने आया था, दरअसल उसे भी अपने 'बिट्स पिलानी, गोवा' के हॉस्टल जाना ही था। उड़ान निर्धारित समय से आधा घंटा विलंब से आरंभ हुई, फलत: दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय विमान तल पर भी विलंब से ही उतरे। वहाँ से सामान लेकर जब बाहर आए तो ज्ञात हुआ कि हम भूतल पर हैं और टैक्सी वाले भैया सर्वोच्च तल पर। उनका भूतल पर आना कठिन था, अत: हमें ही उनके पास जाना पड़ा। रात्रि में लगभग ९ बजे अपने घर आ गए। बढ़ती जनसंख्या व वाहनों की बढ़ोतरी ने हर चौराहे पर १०-१५ मिनट प्रतीक्षा कराई। पर इस अल्प समय में ही 'गोवा' को जितना देख व समझ पाए, वह सब मैंने आपके लिए प्रस्तुत कर दिया।

यहाँ का व्यक्ति धार्मिक है, आस्थावान है, आस्तिक है। घर-घर पूजाघर हैं। 'तुलसी' का मंदिर तो विभिन्न आकार-प्रकार का सभी ने अपने घरों में सजाया है, जिसकी नियमित पूजा-अर्चना की जाती है। छोटे-मोटे देवालयों की गणना कठिन है। गिरजाघर भी बहुतायत में हैं। एक बड़ा सा गिरजाघर हमारे आवास से थोड़ी ही दूरी पर था, जहाँ हम प्रात:भ्रमण के समय कभी-कभी पहुँच जाते थे।

मुझे ऐसा अवश्य लगा कि जिन बाह्याडंबरों पर कबीरजी ने चोट की थी, वे आडंबर यहाँ आज भी विद्यमान हैं। वैसे लोग सीधे-सरल और आस्थावान हैं।

इन्हीं सब अनुभूतियों को समेटे हुए वहाँ के नारियल के वृक्षों को याद करते हुए पुन: 'गोवा' आने का आश्वासन देते हुए पहुँच गए अपने पटियाला।

सा अ

२८-बी, प्रेमनगर, भादसों रोड,
पटियाला-१४७००१ (पंजाब)
दूरभाष : ९४१७०८८४६६

कविता

छोड़ सब झंझट

• भविष्य सिन्हा

लेखक-अनुवादक। अब तक 'दईजारे' कहानी-संग्रह, 'क्षितिज की दहलीज पर' (संयुक्त काव्य-संग्रह)। कुल अस्सी पुस्तकों का हिंदी रूपांतर। संप्रति स्वतंत्र लेखन/अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद कार्य एवं हिंदी-कार्यशालाओं में लैक्चर, समन्वय, सहयोग, संचालन, बैंकिंग शब्दावली, संदर्भ सामग्री तैयार करना इत्यादि।

छोड़ सब झंझट, चल झटपट,
कभी इधर कट, कभी उधर कट,
कब तक ठीक करेगा सलवट,
जिंदगी कब रहती एक ही करवट;
नसें करने लगी हैं चट-चट,
सुन द्वारे पर होती खट-खट,
चल मत ऐसे लटपट, लटपट,
देख सवेरा आता सरपट।

यह जाएगा तब तो आएगा
कोई नया संदेश लाएगा
आशाओं की नई किरण
क्षितिज में दिखलाएगा,
नई ऊर्जा से खिलेगा उपवन
फूल खिलेंगे, आएगा सावन,
बच्चों की किलकारी से
चहक उठेगा हर एक आँगन,

आशीषों की बरसातें होंगी,
उम्मीदें नई खड़ाऊँ पहन
अब दरवाजे पर आती होंगी।
उनके स्वागत में सजाओ रंगोली
नाचो-गाओ सब मिल हमजोली।

सा अ

बी-७०, शेखर अपार्टमेंट्स,
मयूर विहार-I एक्सटेंशन, दिल्ली-११००९१
दूरभाष : ९९१०४७०३९६

रेत की मछलियाँ

● प्रशांत उपाध्याय

सुपरिचित कवि-लेखक। 'शब्द की आँख में जंगल' (नई कविता-संकलन), 'गीतों में झाँकते दोहे' (दोहा-संकलन) तथा विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में दो सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित एवं आकाशवाणी, दूरदर्शन से रचनाओं का प्रसारण। 'व्यंग्य सम्राट्', 'साहित्य सम्मान' सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित।

: एक :

सब नियोजित हो न हो
कुछ यथोचित हो न हो

मैं समर्पित हूँ उसे
वो समर्पित हो न हो

युद्ध लड़ते रोज ही
मन पराजित हो न हो

मौन की शब्दावली
परिभाषित हो न हो

दर्द किसने ये दिया
सर्वज्ञापित हो न हो

जिंदगी तो है कथा
सारगर्भित हो न हो

रोज कहते हम गजल
ख्याति अर्जित हो न हो

: दो :

फेंककर चिट्ठियाँ
बंद हैं खिड़कियाँ

जब बहाने गिने
कम पड़ीं गिनतियाँ

सिर्फ हैं आलपिन
चुलबुली लड़कियाँ

देखना तुम कभी
रेत की मछलियाँ

खून की हो कमी
क्या करें धमनियाँ

सुन सको तो सुनो
वक्त की धमकियाँ

मत पढ़ा जिंदगी
दर्द की पोथियाँ

सुन सको तो सुनो
वक्त की धमकियाँ

मत पढ़ा जिंदगी
दर्द की पोथियाँ

: तीन :

जब दिगंबर हो गए
दूर सब डर हो गए

फाइलें मन में दबा
लोग दफ्तर हो गए

जो धरा के बोझ थे
आज अंबर हो गए

ग्रंथ तुम इतिहास के
सिर्फ क्षण भर हो गए

स्वप्न के खँडहर सभी
गीत के घर हो गए

आँख सुख की भेदकर
सब स्वयंवर हो गए

और क्या करते भला
हम कलंदर हो गए

: चार :

न जीता न हारा
कभी मन हमारा

किनारा बने तो
किया क्यों किनारा

गए वक्त को क्या
कभी फिर निहारा

सँवरते कहाँ से
न तुमने सँवारा

समय मारता है
तमाचा करारा

चलो खोल भी दो
गमों का पिटारा

बहुत जिद हुई अब
मिलें हम दुबारा

: पाँच :

हम निहित हो रहे
तुम व्यथित हो रहे

दर्द तो गीत बन
संकलित हो रहे

आप हलकर मुझे
खुद गणित हो रहे

आपके काम क्या
सब उचित हो रहे

आप क्यों भीड़ में
सम्मिलित हो रहे

कर्म के बीज सब
अंकुरित हो रहे

अस्त होंगे सभी
जो उदित हो रहे

: छह :

आह है न वाह है
वक्त पर निगाह है

लग रहा है मौन का
सिंधु भी अथाह है

मन तुझे पुकारता
दर्द का विवाह है

सिर्फ हुक्म मान लूँ
तू न बादशाह है

याद जो रही नहीं
बात भी गुनाह है

व्यर्थ आज कुछ कहें
कौन अब गवाह है

साँस की नदी बहे
ये नियति प्रवाह है

: सात :

दर्द जब तक चुनिंदा रहे
गीत के ख्वाब जिंदा रहे

पेड़ से छाँव जब तक मिले
पास तब तक परिंदा रहे

षोडशी भावना के लिए
आप भी तो दरिंदा रहे

जानकर वक्त की चाल को
फिर किसी की न निंदा रहे

जिंदगी आस विश्वास बिन
उम्र का बस पुलिंदा रहे

३६४, शंभू नगर
शिकोहाबाद-२८३१३५
दूरभाष : ९८९७३३५३८५

पूर्वोत्तर भारत का सेतु रामकथा

● गोविंद यादव

रामलला का स्मरण (लोक-संस्कृति में एक गीत)

"राम के माथे चननवा बहुत नीक लागे हो।
राम-नयन रतनारे कजर भल सोहे।
दीन्हों रचि-रचि फुआ सुभद्रा त पतरी अँगुरियन।
राम के मथवा लुटूरिया बहुत नीक लागे हो।
जैसे फूलन विच कलियाँ बहुत नीक लागे हो।
राम के गोड़वाँ घुँघरुवा बहुत नीक लागे हो।
नान्हें गोड़वन चलत बकैया देखत राजा दसरथ।"

किसी भी राष्ट्र की एकता, अखंडता और उसके सार्वभौमिक विकास के लिए भाषा, संस्कृति और उस राष्ट्र के पारंपरिक ज्ञान-परंपरा का जीवित होना पहली शर्त है। यही समाज में समता, सद्भाव, विकास, व नैतिकता का निर्माण करती है। भारतवर्ष के पास यह सभी हजारों वर्षों से लिखित और मौखिक दोनों रूप में उपलब्ध है। संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान सिर्फ रीति-रिवाज, वेशभूषा आदि तक सीमित नहीं है, उसको समग्रता में समझना होगा। इसलिए सांस्कृतिक दृष्टिकोण से तथा भारतीय गौरवान्वित इतिहास को देखें तो रामकथा और रामकथा में समाहित शाश्वत जीवन-मूल्य भारत को सही रूप में एकता के सूत्र में बाँधकर रखे हुए हैं। जो भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता, राष्ट्रीय चेतना की भावना और आदर्श लोकतंत्र का बोध कराती है। भारत के सभी राज्यों, भाषा और बोलियों, समुदायों आदि में रामकथा के विविध स्वरूप मिलते हैं। रामकथा सत्य के लिए संघर्ष करने वाले एक परम पराक्रमी योद्धा की कहानी मात्र नहीं है, बल्कि यह मनुष्यता के लिए आदर्शों की व्यापक कथा है। आदर्श भाई कैसा हो? आदर्श पत्नी कैसी हो? आदर्श पुत्र कैसा हो? आदर्श राज्य और राजनीति कैसी हो? समाज में मर्यादा और नैतिकता का निर्माण कैसे व्याप्त हो?

भारतीय लोकसमाज में रामकथा हजारों वर्षों से व्याप्त है। रामकथा को गाने, समझने वाले भारतीय समाज अलग-अलग हैं। उसकी अभिव्यक्तिक भाषा अलग है। रामकथा और रामायण भारतीय उपमहाद्वीप का एक महत्त्वपूर्ण आख्यान है। यह संपूर्ण भारतीय समाज की भावनात्मक तथा सांस्कृतिक एकता का वह आधारभूत सूत्र है, जिसने भारतीय लोकमानस को सबसे अधिक प्रभावित और उद्वेलित किया है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। विविध विषयों पर अनेक पुस्तकों का संपादन। साहित्य और सिनेमा पर पुस्तकों में लेखन कार्य साथ ही लोकसंस्कृति पर आधारित 'लोकबिंब' और 'नाट्य भारती' पत्रिका का संपादन।

संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परिषद् द्वारा वर्ष २००१ में रामकथा को विश्व मानव समुदाय की अमूर्त बोधगम्य संपदा घोषित किया है। रामकथा का विस्तार भारत ही नहीं, बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया और पूर्व एशियाई देशों में हुआ है। हिंदीभाषी समाज के अतिरिक्त पूर्वोत्तर भारत के कला रूपों व मौखिक परंपरा में कार्बी, खामति, मिजो आदि जनजातियों और माधव कंदली, श्रीमंत शंकरदेव, श्रीमंत माधव देव आदि संतों के काव्य रूपों में रामकथा प्रचलित है। इस प्रकार रामकथा अर्थात् 'हरि अनंत हरि कथा अनंता' भारतीय संस्कृति, चिंतन, आत्मगौरव और राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को मजबूत आधार प्रदान करती है। पूर्वोत्तर भारत में प्रचलित रामकथा पूर्वोत्तर की राजनीति, आर्थिक रूप में कृषि, हस्तकलाओं एवं वाद्ययंत्रों, भौगोलिक एकीकरण, शेष भारत की संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान से सीधे जुड़ी हुई हैं।

भारत सबसे युवा जनसंख्या वाला देश है। तब वैश्विक मंच पर भारत का दायित्व अधिक बढ़ जाता है कि वह आने वाले वर्षों में एक बार फिर विश्व का प्रतिनिधित्व करें। जिससे भारतीय समाज और विश्व समुदाय का मार्ग प्रशस्त कर सके। इसलिए भारत को अपनी प्राचीन शिक्षा प्रणाली, संस्कृति को नवीन संदर्भों में मूल्यांकन करना होगा। भारतीय संस्कृति मूलत: धार्मिक व आध्यात्मिक संस्कृति रही है। भारतीय संस्कृति ने वर्षों से अनेक बाधाओं और संकटों के दौर से गुजरी हुई अपनी अस्मिता को बचाए रखा है। यह बचाव राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति ने विश्व संस्कृति का मार्गदर्शन किया है। भारतीय संस्कृति को साहित्य, गाँवों तथा ललित कलाओं में देखा जा सकता है। समाज की सबसे बड़ी शक्ति सामूहिक एकता है। किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए उस समाज के सभी वर्गों को सामूहिक एकता बनाए रखनी चाहिए। एकता के अभाव में समाज के अस्तित्व की कल्पना

भी नहीं की जा सकती है। रामकथा पूर्वोत्तर भारत को ही नहीं, संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बाँधती है। रामकथा की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह लोक और शास्त्र, राजा तथा प्रजा सभी जगहों में मान्य तथा व्याप्त रही है। प्रदर्शनकारी कला के संदर्भ में और भी अद्‌भुत तथ्य है कि रामकथा न केवल लोक-परंपराओं; यथा गीत, गाथा, लीला, नाट्य आदि माध्यमों में ही व्याप्त नहीं है अपितु यह भारतीय शास्त्रीय गायन तथा नृत्यरूपों को नियमित सृजनात्मक ऊर्जा प्रदान करती रही है। इसका सबसे बड़ा प्रत्यक्ष कारण है, रामकथा का मानवीय होना। रामकथा की प्रस्तुति अलौकिक से ज्यादा लौकिक है। रामकथा मानवीय मूल्य, आदर्श, नैतिकता, भावनात्मक संबंध, पारिवारिक जीवन, राजा के कर्तव्य आदि मानवीय पशुओं का चित्रण करने वाली अमर गाथा है।

पूर्वोत्तर भारत असम, अरुणाचल, नागालैंड, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम तथा सिक्किम राज्यों का एक सांस्कृतिक समूह है, जहाँ आदिवासी तथा आर्यवंशी आदि समूह के लोग एक साथ निवास करते हैं। इन सामाजिक समूह ने अपनी सांस्कृतिक विविधता को सहजते हुए एक अलग सामूहिक सांस्कृतिक समूह का निर्माण किया। जिसमें राम और कृष्ण के जीवन से संबंधित कथाओं का योगदान रहा है। असम में रामकथा का प्रभाव यहाँ की लोक-संस्कृति में, काव्य में, लोक नाट्य, चित्रकला लगभग हर जगह मौजूद है। असम के सांस्कृतिक जीवन में श्रीराम का आदर्श भौतिकवादी युग में तनाव से मुक्त होने का माध्यम है। राज्य भर में आपको श्रीराम से संबंधित अनेक मंदिर और तीर्थ सहज रूप में मिल जाएँगे। पूर्वोत्तर भारत के असम में वैष्णव नाट्य परंपरा के प्रवर्तक श्रीमंत शंकर देव के शिष्य माधव देव द्वारा राम जात्रा कराने का विवरण मिलता है। स्वयं शंकर देव ने अंकिया नाट्य शैली में 'रामविजय' नाटक की रचना और प्रस्तुति की। कालांतर में असम में रामकथा पर आधारित कई नाटक लिखे गए, जिसमें श्रीचंद भारती-महिरावण वध (१८वीं सदी), गंगाराम दास का 'सीता वनवास' (१८वीं सदी का अंतिम), धनंजय-गणक चरित्र (१८वीं सदी), कंदलि का शक्तिसेल (१८वीं सदी), भवदेव का नागाक्षयुद्ध (१८वीं सदी), अद्‌भुत आचार्य का महिरावण वध (१७-१८वीं सदी)- शतस्कंध रावणवध (उपरिवत्), गंगादास का लव कुशर युद्ध (१८वीं सदी), भवानीदास का रामाश्वमेध (१८वीं सदी), भोलानाथ दास का सीताहरण (१८८८), तीर्थनाथ गोस्वामी का राम बनवास, सीता हरण, बाली वध, लव-कुश युद्ध तथा लवण दैत्य वध महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

पूर्वोत्तर भारत में रामकथा की परंपरा के मुख्य पक्ष निम्न रहे हैं—

(क) मौखिक परंपरा—गाथा और गीत

(ख) काव्य परंपरा—रामकथा पर आधारित महत्त्वपूर्ण काव्य रचना

(ग) प्रदर्शनकारी परंपरा—नृत्य, नाटक

पूर्वोत्तर भारत के लोकजीवन, विशेषकर सिक्किम और असम में शादी-ब्याह तथा अन्य आनुष्ठानिक त्योहारों के अवसर पर रामकथा से जुड़े गीत गाए जाते हैं। असम के कार्बी तथा खामति जनजाति के बीच वर्षों से रामकथा की मौखिक परंपरा है। मिजो लोगों के बीच लोककथा के रूप में रामकथा प्रचलित है। वारीलिवा मणिपुर की कथा कथन की विशिष्ट लोकप्रिय शैली है। वारीलिवा, खोंजोम पर्व तथा लाइटिक थीवा आदि कलात्मक माध्यम में वर्षों से रामकथा प्रचलित है। पूर्वोत्तर भारत की मौखिक परंपरा में रामकथा के निम्न प्रकार महत्त्वपूर्ण हैं—

मिजो रामकथा—खेना लेह राम ते उन्नाऊ

कार्बी रामकथा—साबी आलुन

खामति रामकथा—रामामांग

मणिपुरी रामकथा—वारीलिवा

मिजो जनजातियों में रामकथा का अपना महत्त्व है। यहाँ पर रामायण लिखित रूप में उपलब्ध नहीं रहा है, बल्कि लोकगीतों एवं लोककथाओं में रामायण कथाएँ कही जाती रही हैं। मिजो जनजाति के बीच प्रचलित रामकथा का पहला संकलन मेजर शेक्सपियर ने १८९९ ई. में 'लेह वाइक थोन थू' विषयक नाम से किया था। जिसमें जनजातीय रामकथा के विभिन्न हिस्से समाहित हैं। इस प्रकाशन में १० लोककथा समाहित हैं, जिसमें 'खेना एंड रामा ते उनाऊ' के नाम से रामकथा संकलित है। यह रामकथा स्थानीय संस्कृति को समाहित किए हुए है, इसके कारण इसमें मुख्य रामकथा से व्यतिरेक भी है। मुख्य कथा खेना लेह राम ते उन्नाऊ (लक्ष्मण और राम की कहानी) यहाँ राम एवं खेना (लक्ष्मण) को देवता के रूप में मानते हैं। विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक अवसरों में खेना और राम देवताओं का आह्वान किया जाता है। मिजो समाज में माना जाता है कि खेना और राम ने चावल का निर्माण किया, इसीलिए स्थानीय पुजारी द्वारा धान की फसल लगाने से पहले खेना और रामा का आह्वान किया जाता है। पुजारी स्वच्छ चावल के दाने लेकर मंत्र बोलता है—

आप धान के माता-पिता हो
आपकी जड़ें विस्तृत भूमि में फैली हैं
जब केचुएँ ने पृथ्वी को संसार के निर्माण हेतु लिया
जब प्रकृति माता ने दुनिया तैयार की
तुम खेना और रामा द्वारा बनाए गए
सत्य के बारे में बताने के लिए
सत्य का गान करने के लिए।

मिजो रामायण बहुत छोटी है, जो मुख्य रामायण का सारांश भर है, परंतु इस कथा के अपने अलग तत्त्व हैं। कहानी के मिजो संस्करण में लुशारिहा (रावण) को १० के बजाय सात सिरों वाला बताया गया है। यहाँ राम और खेना (लक्ष्मण) जुड़वाँ भाई हैं, जो मिजो देवताओं में शामिल हैं, जिन्हें चावल के पौधे का निर्माता माना जाता है। प्रत्येक वृक्षारोपण और कृषि से पहले प्रार्थनाओं में याद किया जाता है। पूर्वोत्तर भारत का जीवन-यापन कृषि पर आधारित रहा है। रामकथा का यह प्रसंग पूर्वोत्तर

की कृषि-परंपरा से जुड़ता है। जो आर्थिक उपार्जन का मुख्य स्रोत रहा है। मिजोरम कथा में अन्य पात्र रामायण जैसे ही हैं। कुछ पात्रों के नाम किसी और प्रकार से परिवर्तित हैं। राम-रामही, लक्ष्मण-खेना, सीता-सीता, हनुमान-हवलमान, जामवंत-बबनूमान, अहिरावण-लुकोरावण, रावण-लुसारिहा आदि। मिजो रामकथा के राम जननायक अथवा लोकनायक के बाद लोकदेवता के रूप में प्रतिष्ठित हो जाते हैं।

कार्बी रामकथा साबी आलुन के रचनाकार रामायण की मूलकथा से अवगत थे। फिर भी उन लोगों ने कथा का सृजन कार्बी जनजाति की सामाजिक मान्यताओं, विश्वासों तथा संस्कृति के अनुरूप किया। साबी आलुन के जनक झूम कृषक हैं। सीता एक कार्बी आदिवासी लड़की है, जो जंगल से लकड़ी चुनती है। कपड़े बुनने में निपुण है। घर में आए मेहमान के लिए चावल का पारंपरिक पेय परोसती है। साबी आलुन में जनक एक किसान की भूमिका में है, जो अपने खेतों की निगरानी के लिए एक पेड़ के ऊपर एक अस्थायी झोंपड़ी में रहता है। किंवदंती के अनुसार, राम जनक के घर पर रहते हैं और झूम खेती में उनकी मदद करते हैं, जो पूर्वोत्तर जनजातियों की पारंपरिक कृषि पद्धति है। कार्बी जनजाति समुदाय का मानना है कि राम-रावण युद्ध में इनके पूर्वज बाण-तीर लेकर सेना के साथ चलते थे। कार्बी का मानना है कि वे 'किष्किंधा' के राजा सुग्रीव के वंशज हैं, जिन्होंने सीता को खोजने और 'वानर' सेना के साथ श्रीलंका के राजा रावण को खत्म करने में राम की मदद की थी। कार्बी रामकथा में कार्बी समुदाय राम और सीता को ईश्वरीय अवतार में न मानकर उनका मानवीयकरण किया गया है और अपने दैनिक क्रियाकलापों से रामकथा को जोड़ते हैं।

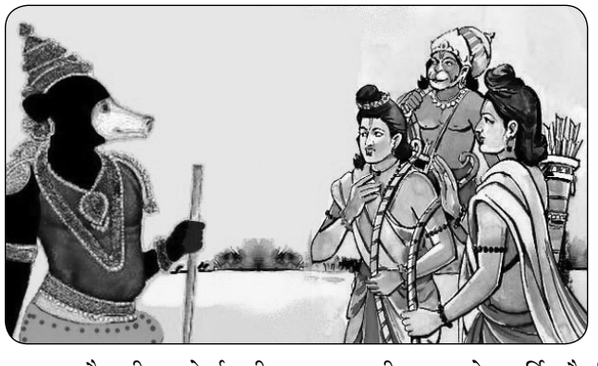

असम में तिवा समुदाय भी मौखिक परंपरा में रामकथा का गायन करते हैं और रामकथा को 'रामायण खारंग' के रूप में संरक्षित करते हैं। राभा लोगों का एक लोकगीत है, जिसमें कहा गया है, "आओ चलें और श्रीराम के घोड़े को देखें।" अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले के खामटिस के पास रहने वाला समूह भी रामायण का अपना संस्करण प्रस्तुत करता है, जिस पर जातक कथाओं और बौद्ध दर्शन का प्रभाव दिखता है। खाम्ती भी बौद्ध हैं। उनकी रामकथा को 'लिक चॉ लमांग' के नाम से जाना जाता है। लोहित जिले की एक अन्य जनजाति मिसमिस में भी एक लोककथा है, जो रामकथा के अनेक प्रसंगों को जोड़ती है। अरुणाचल के कामेंग जिले के अका लोग भी अपने को राम की सेना में सम्मलित जांबवन से जोड़ते हैं। ईसाई बहुल राज्य मेघालय में भी राम की कथा उतनी ही लोकप्रिय है। अनके पर्व और नृत्य गीतों में रामकथा के प्रसंग व्याप्त हैं। इस प्रकार पूर्वोत्तर में रामकथा सर्वत्र समुदायों में प्रसारित है। इसका कारण सिर्फ धार्मिकता नहीं अपितु यह पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न समुदायों के विचारों, भावनाओं, आस्था, आधार, विधान और चेतना से जुड़ी हुई है। इसलिए पूर्वोत्तर के लोगों अपने को शेष भारत से अलग मानते ही नहीं हैं। रामकथा का यही प्रभाव भारत को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोए हुए है।

पूर्वोत्तर भारत में रामकथा का अन्य रूप लिखित में मिलता है। जिसमें काव्य परंपरा में रामकथा पर आधारित महत्त्वपूर्ण काव्य रचना और प्रदर्शनकारी परंपरा में नृत्य एवं नाटक के रूप प्रचलित हैं। जिसमें अनेक संतों द्वारा नवीन प्रयोग भी देखने को मिलते हैं। श्रीमंत शंकर देव की रचना और उनका अंकिया नाट शैली प्रमुख हैं। श्रीमंत शंकर देव का जन्म असम में होता है। १२ वर्ष की अवस्था में श्रीमंत शंकर देव महेंद्र कंदली की पाठशाला में शिक्षण के लिए जाते हैं। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् गृह त्याग कर वह तीर्थ भ्रमण पर निकल जाते हैं। १२ वर्षों तक लगातार भ्रमण करने के बाद श्रीमंत शंकर देव उत्तराखंड रामायण की रचना करते हैं। श्रीमंत शंकर देव का रामकथा पर आधारित प्रसिद्ध अंकिया नाट 'रामविजय' है। श्रीमंत शंकर देव ने अनेक बरगीतों की भी रचना की। बरगीत—बर यानी श्रेष्ठ, असमिया भाषा में बरगीत का शाब्दिक अर्थ है—श्रेष्ठगीत। असमिया वैष्णव भक्ति परंपरा में श्रीमंत शंकर देव और माधव देव द्वारा विरचित भक्तिपरक गीतों को 'बरगीत' कहा जाता है। श्रीमंत शंकर देव और माधव देव ने राग रागिनीबद्ध बरगीतों की रचना की। बरगीत का मुख्य उद्देश्य मानव के हृदय में भक्ति-भाव का स्फुरण और संचरण तथा दिव्य आध्यात्मिक भाव का उद्बोधन है। पहला बरगीत 'मन मेरि राम चरणेहि लागु' की रचना बद्रिका आश्रम में की। यह बरगीत राम को समर्पित है, जिसमें श्रीमंत शंकर देव ने राम की शरण में ही मोक्ष की परिकल्पना की है—

मन मेरि राम चरणेहि लागु। तइ देख ना अंतक आगु॥
मन! आयु क्षणे-क्षणे टूटे। देखो प्राण कोन दिन छूटे॥
मन! काल अजगरे गिले। जान तिलेके मरण मिले॥
मन! निश्चय पतन काया। तजि राम भज तेजी माया॥
रे मन! इ सब बिसय धांधा। केने देखि नेदेखस आंधा॥
मन! सुखे पार कैछे निंदा तइ चेतिया चिंत गोबिंद॥
मन! जानिया शंकरे कहे। देखो राम बिने गति नहे॥

'रामविजय नाटक' में भी अनेक बरगीत श्रीमंत शंकर देव द्वारा रचित हैं। जब रामविजय नाटक को अंकिया शैली में प्रस्तुत किया जाता है तो भक्त और दर्शक भावविभोर हो जाते हैं—

सुन सुन रे, सुर-बैरि-प्रमाना, निसाचर नास निदाना।
राम नाम यम समरक सजिये, समदले कयलि पयाना।
ठाट प्रकट पटु कोटि-कोटि कपि गिरि गड़-गड़ पद घावे।
बारिधि तरि-तरि, करे गुरुतर गिरि, धारि-धारि समरक धावे॥
हाट घाट, बहु बाट बियापि, चौगड़ बेढ़लि लंका।
गुरु घन-घन घोष घरिषण गर्जन, श्रवने जनमय संका॥

धीर बीर सुर सेखर राघव, रावन, तुवा परि झाँपे।
सुरनर किन्नर फनघर थर-थर, महिधर तरसि प्रकांपे।

कुसान गान असम के धुबरी, कोकराझार तथा ग्वालपारा आदि जिले के राजवंशी समुदाय के बीच प्रचलित लोकनाट्य रूप है। कुसान गान का प्रचलन कब हुआ, इसका कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिलता है। लोकस्मृति के अनुसार कुसान गान का प्रचलन रामायण काल से ही है। कहा जाता है कि लव ने ताल, कुश ने बेना तथा अयोध्यावासी ने सुमधुर स्वरों में पहली बार पिता-पुत्र का परिचय गान के माध्यम से प्रस्तुत कर राम को मुग्ध कर दिया, इसके बाद से ही कुसान गान की परंपरा चल पड़ी।

रामकथा में जितने भी तत्त्व एवं प्रसंग हैं। वे हमें समाज को संगठित करते हुए दिखते हैं। संपूर्ण रामकथा में देखें, राम यहाँ राजा रामचंद्र नहीं हैं, वह अपने दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को स्वयं कार्य करके अर्जित करते हैं। वहीं राम ने वन में रहने वाले पशु, पक्षी व अन्य समुदाय हो उन सभी को संगठित किया और विजय प्राप्त कर समाज में मानवता एवं नैतिक मूल्यों को स्थापित किया। पूर्वोत्तर भारत में राम की कथा में आए अनेक प्रसंगों को जनजाति समाज अपने सांस्कृतिक मूल्यों और प्रकृति से जोड़ते हैं। इन प्रसंगों का अनुपालन भी यथावत् करते हैं। पूर्वोत्तर भारत राम की कथा को अपनी संस्कृति का अभिन्न अंग ही नहीं मानता अपितु उसके जीवन-मूल्यों, लोकतंत्र, उनकी कला, क्रीड़ा, साहित्य और कृषि में हजारों वर्षों से व्याप्त है। पूर्वोत्तर भारत सदियों से भारतवर्ष का ही अभिन्न अंग है। इस क्षेत्र के साथ भारतीय संस्कृति के सूत्र हजारों वर्षों से गूँथे हैं। पूर्वोत्तर का क्षेत्र भारत की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विविधता में एकत्व का एक अनुपम उदाहरण है। यह विविधता यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य एवं जन-जीवन में सहज रूप से दृष्टिगोचर होती है।

पूर्वोत्तर भारत का सांस्कृतिक, पौराणिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से शेष भारत से गहरा संबंध है। परंतु अधिकतर भारतवासियों का पूर्वोत्तर से कम संपर्क होने के कारण इस क्षेत्र की विशिष्टताओं से अनभिज्ञ हैं और अनेक भ्रांत धारणाओं से ग्रस्त हैं। प्रारंभ में अंग्रेजों की औपनिवेशिक, विभाजनकारी तथा जनजातीय नीतियों और ईसाई शिक्षा ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में अलगाववाद और उग्रता का बीजारोपण किया। जिससे अनेक समुदायों में धर्म-परिवर्तन देखने को मिला। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भी पूर्वोत्तर को निरंतर उपेक्षित किया गया। आज भी अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो नीति' को मजबूत करने वाली मैकॉले की शिक्षा पद्धति में अलगाववादी शिक्षा दी जाती है कि इस क्षेत्र की जनजातियाँ क्रूर, जंगली तथा हिंसक हैं। अंग्रेजों के प्रभाव में पूर्वोत्तर में चर्च की गतिविधियाँ काफी बढ़ी थीं। लेकिन धर्म बदलने के बाद भी संस्कृति पर जो गहरी छाप है, उसे बदल पाना संभव नहीं हुआ है। जनजातियों में आज भी राम और कृष्ण गहरे तक विराजमान हैं। भाषा अलग हो सकती है, त्योहार और परंपराएँ अलग हो सकती हैं, लेकिन उनके मूल में राम और कृष्ण हैं। लोकभाषा, लोक संस्कृति और लोक कलाओं में इसे आप देख सकते हैं। उनमें प्रचलित अनेक रीतियाँ, लोक मान्यताएँ, जीवन-मूल्य तथा परंपराएँ शेष भारत की परंपराओं से कुछ भी अलग नहीं हैं।

पूर्वोत्तर भारत के अनके क्षेत्रों पर समीपवर्ती देशों द्वारा भौगोलिक, भाषा, धर्म व अन्य कारणों से अपना अधिकार जमाने की नाकाम कोशिश निरंतर होती रहती है। पूर्वोत्तर के समुदायों को आर्थिक लालच देकर एवं सांस्कृतिक कारणों का हवाला देकर गुमराह किया जाता रहा है। परंतु रामकथा का पूर्वोत्तर भारत में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं दैनिक जीवन में जड़ें इतनी गहरी व्याप्त हैं कि शेष भारत और पूर्वोत्तर भारत के सेतु के रूप में रामकथा दिखाई देती है। अनेक समुदाय ईसाई धर्म में परिवर्तित अवश्य हुए हैं, परंतु उनके रीति-रिवाज, परंपराएँ आज भी राम के जीवन-मूल्यों से संचालित होती हैं। पूर्वोत्तर में रामकथा का परिणाम है कि अपनी मूल भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा को लोगों ने सीखा भी और प्रयोग में लेकर आए। रामकथा का लोकनाट्य के रूप में मंचन होना और उनमें प्रयोग की जाने वाली सामग्री अनेक वर्ग के आर्थिक उपार्जन का मुख्य स्रोत है। हजारों वर्षों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी मुखोटों और वाद्ययंत्रों को बनाना इन लोगों का पारंपरिक पेशा बन हुआ है। ये सभी पूर्वोत्तर भारत को भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से जोड़े हुए हैं।

भारतीय साहित्य, संस्कृति ने सदा समष्टि-हित का पक्ष लिया है, उसने अपने भगवान् का नाम जनता-जनादेन भी रखा है, यह उसकी लोकप्रियता का दिग्दर्शक है। २२ जनवरी, २०२४ भारत की सांस्कृतिक स्वतंत्रता का दिन है। वस्तुत: यह तारीख एक नए कालचक्र का उद्गम है। इस दिन संपूर्ण विश्व अयोध्या के भव्य और दिव्य मंदिर में बालस्वरूप श्रीराम के मनोहारी विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा का साक्षी बना। श्रीराम के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का वह बिंदु है, जहाँ से भारत को विश्व में एक नए आयाम पर लेकर जाएगा। भारत लोकतंत्र के रूप में विश्व का मार्गदर्शन कर रहा होगा एवं संपूर्ण विश्व को बंधुत्व, सद्भाव, समता, समानता का संदेश दे रहा होगा।

साअ

डी-१२४, गली नं. ६,
लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली-९२
दूरभाषा : ९९१०७७३४९३

सच्ची सीख

● कुलभूषण सोनी

पात्र-परिचय

लता : मालकिन
दीना : आया
रीता : लता की सहेली
मनीष, बंटी : लता के बच्चे
स्थान : लता का निवास-स्थान

सुपरिचित कवि एवं कथावाचक। कई काव्य-संग्रह एवं देश की पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित तथा आकाशवाणी के कई केंद्रों से प्रसारित। सामाजिक-धार्मिक कई संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। संप्रति विभिन्न कलाओं के नवांकुर तैयार करने में संलग्न।

लता : दीना, मनीष कहाँ है?

दीना : मालकिन, वह अभी बाहर गया है।

लता : क्या आज वह पढ़ने नहीं जाएगा?

दीना : माँजी, उसने कल मुझे बताया था कि आज उसकी छुट्टी है।

लता : क्यों?

दीना : आज ईद है।

लता : ठीक है, परंतु तू आज उदास क्यों है? क्या परेशानी है तुझे?

दीना : माँजी, आज जब मैं सुबह उठी तो पता नहीं, मुझे क्यों चक्कर आ गाए!

लता : *(चौंककर)* अरे पगली! तूने मुझे बताया क्यों नहीं? अब तबीयत कैसी है?

दीना : माँजी, अब तो ठीक हूँ।

लता : बंटी कहाँ है? वह तो दिख ही नहीं रहा है!

दीना : वह मनीष के साथ गया है।

लता : कहाँ गए हैं दोनों?

दीना : पता नहीं, बाहर कहीं खेल रहे होंगे।

लता : ठीक है, आने दे दोनों को। तू इस पिंकी को सँभाल। चैन नहीं है एक पल भी। सारे दिन रोती ही रहती है। मैं तो तंग आ गई हूँ। न जाने कब छुट्टी मिलेगी इन बच्चों से।

दीना : माँजी, आप बच्चों से नाराज क्यों होती हैं? इनका क्या कुसूर है? तंग तो मुझे होना चाहिए, जो हर समय मुझे इनका खयाल रखना पड़ता है।

लता : अब इस पिंकी को तो चुप कर।

दीना : माँजी, क्यों चिंता करती हो, बड़ी हो गई है, इसे चुप करना मेरा काम है। दूध पीकर सो जाएगी।

लता : दीना! तू बहुत समझदार है। ठीक कहती है।

दीना : माँजी, एक छोटे बच्चे का काम बड़े आदमी के काम से भी बढ़कर होता है। मेरा सारा दिन इन्हीं के कामों में बीतता है। सुबह चार बजे उठती हूँ, रात के ग्यारह बज जाते हैं। बच्चों को उठाकर नहलाना, खाना बनाना, कपड़े धोना, स्कूल के लिए तैयार करना आदि-आदि काम करना, कम काम नहीं हैं।

लता : अरे, ये काम तो घरों में करने ही पड़ते हैं, किस घर में नहीं करते? सबकुछ करना पड़ता है। बरतन भी माँजने होते हैं, खाना भी खाना-खिलाना होता है। अरे, छोटे बच्चों के काम के लिए ही तो तुम जैसे लोगों की जरूरत पड़ती है।

दीना : माँजी, आपकी बात तो ठीक है, किंतु…

लता : किंतु क्या? आदमी काम का प्यारा होता है, चाम का नहीं।

दीना : तो क्या मैं काम नहीं करती, माँजी?

लता : करती है, किंतु बहुत समय लगा देती है।

दीना : मेरे से जल्दी में नहीं होता है। मैंने तो यहाँ आपके रखने से पहले ही यह बात बता दी थी। फिर घर के आठ लोगों का खाना भी बनाना पड़ता है। *(इसी बीच कॉलबेल बजती है)*

लता : देखना, घंटी कौन बजा रहा है? कौन है दरवाजे पर?

दीना : *(दरवाजा खोलकर)* माँजी, आपकी सहेली रीता आंटी आई हैं।

रीता : *(पास आकर)* क्यों लता, आज क्या हुआ? और दिन तो बड़ी खुश नजर आती थी।

लता : हाँ बहिन, *(कुरसी सरकाते हुए)* बैठो, ठीक कहा आपने। तुम सुनाओ, कैसी हो?

दीना : *(चाय परोसते हुए)* आंटी, चाय लीजिए।

रीता : *(चाय का घूँट लेकर)* लता, लगता है, किसी ने कुछ कह दिया है आपसे?

लता : बहिन, कोई बात नहीं है, आप चाय पीओ।

रीता : लगता है, मेरे आने से तुम खुश नहीं हो? मैं चलती हूँ!

लता : *(हाथ पकड़कर बैठाते हुए)* अरे, मैं तुम्हारे आने से खुश कब नहीं हुई, चाय ठंडी हो जाएगी, पहले इसे पीओ।

(मनीष और बंटी का प्रवेश)

दोनों बच्चे : मौसीजी, नमस्ते! *(यह कहकर दोनों रीता की गोद में बैठ गए)* यह देख, पिंकी भी मचलने लगी है और उसे भी रीता ने अपनी गोद में बिठा लिया है।

दीना : आंटीजी, आपकी चाय ठंडी हो गई है, दूसरी गरम करके लाती हूँ, इसे रहने दीजिए।

रीता : नहीं बेटी, मैं चाय ठंडी ही पीती हूँ, ठंडी ही पसंद है। परंतु यह तो बताओ कि क्या तुमने लता को कुछ कह दिया है, जिसे ये छुपा रही हैं?

लता : अरे बहिन रीताजी! कुछ नहीं कहा। क्या फायदा बतलाने से? घर में अनेक परेशानियाँ होती हैं।

रीता : फायदा या समाधान तो तभी होगा, जब किसी को उसे बताओगी।

लता : क्या बताऊँ मैं? उसका समाधान भी तो नहीं दिखता है!

रीता : हो सकता है—दिखे। कोई पारिवारिक समस्या है क्या?

लता : दीना को मैंने कई बार कहा कि छोटे-छोटे कामों में समय न लगाकर उन्हें जल्दी निपटाया कर, लेकिन करते-करते इसे सुबह से शाम हो जाती है।

रीता : ठीक है। तुम्हारी समस्या पारिवारिक ही है। बड़े परिवार का परिणाम यही होता है। वैसे भी घर में ७-८ सदस्य हैं, काम भी अधिक रहेगा। बच्चे भी अभी नादान ही हैं। छह सालों में चार बच्चों की माँ भी तुम बन चुकी हो।

लता : लेकिन बहिन, जो हुआ सो हुआ, अब क्या करूँ? समस्या का उपाय तो बताओ!

रीता : लताजी, मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि सुख चाहो तो कम बच्चे पैदा करो। इससे तुम्हारा और बच्चे का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, साथ ही शांति भी मिल सकेगी। यही नहीं, बच्चों को अच्छा पढ़ा-लिखा भी सकोगे। अब दीना को तो तुम्हारी नौकरी करनी है। उसे तो काम निपटाने के लिए शाम होगी ही। अधिक संतान। आधिक काम। तभी तो कहते हैं—छोटा परिवार, सुख का आधार। अरे, मुझे देखो न! मेरी शादी को दस साल होने को हैं, बस दो ही बच्चे हैं। वे भी हृष्ट-पुष्ट। अच्छा खाती-पहनती हूँ और तुमसे भी हेल्दी हूँ। मुझे तो सबसे बड़ा सुख यह है कि मैं जब शाम को ऑफिस से घर लौटती हूँ तो खाना भी तैयार मिलता है।

लता : *(विस्मित होकर)* खाना! कौन तैयार करता है खाना?

रीता : तुम्हारी वही बड़ी बिटिया रेनू। आठवें साल में लगी है, सबकुछ तैयार कर लेती है। बच्चों में कम-से-कम तीन साल का अंतर होना चाहिए। इससे माँ और संतान का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। क्योंकि 'कम संतान, सुखी इनसान' होने से सुख-शांति मिल सकती है। और तो और यही बात हमारे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का कहना है कि 'दो बच्चे, बहुत अच्छे'। दो ही बच्चों से सुखी और समृद्ध परिवार बनता है। इन सब जानकारियों के लिए तुम्हें स्वास्थ्य पत्रिकाएँ पढ़नी और रेडियो, टी.वी. के ऐसे कार्यक्रम देखने चाहिए।

लता : परंतु अब तो कोई उपाय बताओ, जिससे मुझे राहत मिले!

रीता : उपाय यही है कि संतान पैदा करने के बजाय इनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर अधिक ध्यान दो। इनसे प्यार से बोलो और अच्छे स्कूल में दाखिला कराने के साथ-साथ घर में तुम स्वयं इन्हें पढ़ाने में समय दो, इनकी मदद करो। नहीं तो क्या लाभ तुम्हारे शिक्षित होने से!

लता : लेकिन यह मनीष तो मेरी सुनता ही नहीं, हर वक्त खेलता रहता है। हठीला इतना है कि कोई काम करता ही नहीं है। इसे देखकर ये बच्चे भी बिगड़ जाएँगे।

रीता : सब सुधर जाएगा, छोटा है, नादान है। इसे प्यार से समझाओ, दुत्कार से नहीं। इसे प्यार की जरूरत है। एक दिन ऐसा आएगा कि यह स्वयं दौड़-दौड़कर कार्य करेगा। अधिक परिवार न बढ़ाओ, इन्हें समृद्ध बनाओ। अच्छी शिक्षा दिलाओ। बोलो, ठीक है न? और मेरी बात मानोगी न?

लता : बहिनजी, बिल्कुल ठीक कहा है आपने। इससे तो हमारा ही नहीं, बच्चों का भविष्य भी बन सकेगा। जो आपकी बातों पर चलेगा, उनका भी जीवन सुखी बनेगा। आज तो बहिन, तुमने आकर मेरी आँखें ही खोल दी हैं। सच, तुम्हारी इस 'सच्ची सीख' को मैं पड़ोसियों को भी बताऊँगी।

रीता : *(खड़ी होकर)* ठीक है, लता बहिन! काफी समय हो गया है, अब मैं चलती हूँ।

साअ

श्याम ज्वैलर्स, निकट गोल मार्केट
प्रताप विहार, किराड़ी, दिल्ली-११००८६
दूरभाष : ९२११६२५५६१

वर्ग पहेली (२२६)

अगस्त २००५ अंक से हमने '**वर्ग पहेली**' प्रारंभ की, जिसे ज्ञान-विज्ञान की अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री विजय खंडूरी** तैयार कर रहे थे; उनके देहावसान के उपरांत अब **श्री ब्रह्मानंद खिच्ची** इसे तैयार कर रहे हैं। हमें विश्वास है, यह पाठकों को रुचिकर लगेगी; इससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ेगा और पूर्व की भाँति वे इसमें भाग लेकर अपना ज्ञान परखेंगे तथा पुरस्कार में रोचक पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे। भाग लेनेवालों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना होगा—

१. प्रविष्टियाँ छपे कूपन पर ही स्वीकार्य होंगी।
२. कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।
३. प्रविष्टियाँ २८ फरवरी, २०२५ तक हमें मिल जानी चाहिए।
४. पूर्णतया शुद्ध उत्तर वाले पत्रों में से ड्रॉ द्वारा दो विजेताओं का चयन करके उन्हें तीन सौ रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप भेजी जाएँगी।
५. पुरस्कार विजेताओं के नाम-पते मार्च २०२५ के अंक में छापे जाएँगे।
६. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम तथा सर्वमान्य होगा।
७. अपने उत्तर '**वर्ग पहेली', साहित्य अमृत, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२** के पते पर भेजें।

वर्ग पहेली (२२४) का शुद्ध हल

क्रि	स	म	स	■	प्र	■	क	च
■	वा	■	मा	त	ह	त	■	ल
म	ल	य	ज	■	स	ना	त	न
हा	■	की	■	■	न	त	■	■
नु	■	न	क्ष	त्र	■	नी	हा	र
भा	नु	■	मा	■	ड्रा	■	स	च
व	स	न	■	ह	मा	स	■	ना
■	र	थ	पा	द	■	मा	मा	■
ज्ञा	त	■	सा	स	■	स	ली	का

★ पुरस्कार विजेता ★

१. **श्री राजू मेहता**
द्वारा मोहनी देवी मेहता
१३५, गुलाब नगर पाल मार्ग
जोधपुर-३४२००८ (राज.)
दूरभाष : ९४१३२५४०३५

२. **श्री सागर दुबे**
विनायक चौक, विकास नगर
गुढ़ियारी, रायपुर (छ.ग.)
दूरभाष : ९१०९२३३९७५

पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई।

वर्ग-पहेली २२४ के अन्य शुद्ध उत्तरदाता हैं—सर्वश्री प्रह्लाद राय (चुरु), विनीता सहल (मुंबई), रुक्मणी संगल (पटियाला), वाई.के. श्रीवास्तव (जबलपुर), ओम प्रकाश गोयल (शिवपुरी), प्रह्लाद गोस्वामी (कोटा), शिवकांत, पवन कुमार अतरोदिया, अंकिता (महेंद्रगढ़), संतलाल रोहिल्ला (कनीना), रामकिशन पंवार (हनुमानगढ़), विनीता सहल (मुंबई), फकीरचंद ढुल (कैथल), हरदेव सिंह धीमान् (शिमला), बद्रीलाल व्यास (राजगढ़), दिनकर सहल, राजेंद्र कुमार, सुभाष शर्मा (दिल्ली)।

बाएँ से दाएँ—

१. फरवरी माह का एक हिंदू त्योहार (३,३)
५. बेचैनी, नीरसता, बोरियत (२)
७. नाक का एक गहना (२)
८. बड़ी नदी (२)
९. भारयुक्त होना (३)
११. कुरु वंशज (३)
१३. खलीज (२)
१४. गौतम बुद्ध का पुत्र (३)
१६. यश चोपड़ा निर्देशित पहली फिल्म (२,१,२)
१८. रक्षक, हिफाजत करने वाला (३)
१९. घी मिला आटा (२)
२१. बैलों को जुए में जोतने की रस्सी, हल (३)
२३. हलकी और पतली रोटी, चपाती (३)
२५. पंजाब की एक नदी (२)
२७. मुक्त, छूटा हुआ (२)
२८. पानी, जल (२)
२९. पंचकुला जिले का एक ऐतिहासिक नगर (४,२)

ऊपर से नीचे—

१. गोल, वृत्ताकार (३)
२. खिंचकर कड़ा होना, खिंचना; रुष्ट होना (३)
३. मार्ग, रास्ता, धर्म, संप्रदाय (२)
४. बिजली आदि मापने का यंत्र (३)
५. भेड़ आदि के बाल (२)
६. दुश्चरित्र, व्यभिचारी, कुमार्गी (५)
१०. जो हाथ से ले जाया जाए, हाथ का (२)
११. बहुत सस्ता (मुहा.) (२, १, २)
१२. लौंग, लवंग (३)
१३. त्वचा, चमड़ा (२)
१५. जहाज चलाने का कार्य या पेशा (५)
१६. हिलना, काँपना (३)
१७. फुहार, फूही (२)
२०. पाठशला, विद्यालय (२)
२२. फूलों की माला, हार (३)
२३. नन्ही-नन्ही बूँदों की झड़ी (३)
२४. सुंदर स्त्री, कामवती स्त्री (३)
२६. बहादुर, जवाँ मर्द (२)
२७. शत्रु, दुश्मन (२)

वर्ग पहेली (२२५) का हल अगले अंक में।

वर्ग पहेली (२२६)

१		२	३		४	■	५	६
	■	७		■		■	८	
९	१०		■	११		१२	■	
■		■	१३		■	१४		
१५	■	१६			१७		■	
१८			■	१९		■	२०	■
	■	२१	२२		■	२३		२४
२५	२६	■		■	२७		■	
२८		■	२९					

प्रेषक का नाम : .....

पता : .....

.....

.....

दूरभाष : .....

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

अपनी साहित्यिक उपादेयता लिये आकर्षक आवरण-संपन्न 'साहित्य अमृत' का दिसंबर २०२४ अंक प्राप्त हुआ। प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन धार्मिक, पौराणिक और आध्यात्मिक महत भावों के पावन संगम के रूप में है। आरंभिक पंद्रह लेखों में—दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा का 'सार्थक जीवन की दिशा प्रदान करता कुंभ मेला', सूर्यप्रसाद दीक्षित का 'महाकुभ का महाभाव', जसवीर सिंह का 'महाकुंभ का माहात्म्य', वीरेंद्र याज्ञिक का 'सनातन चेतना का विराट् दर्शन—महाकुंभ पर्व' और 'महाकुंभ : वैश्विक प्रेरणा का महोत्सव' विशेष अर्थवान हैं। गजल की अर्धशती यात्रा का समाहारपरक संपादकीय गहन विश्लेषण लिये शाश्वत महत्त्व का है। विवेच्य अंक में उषा कश्यप की कहानी 'सहारा' अपने कथ्य-शिल्प में कसी हुई मनोवैज्ञानिक बोध की उम्दा कहानी है। पारिवारिक परिवेश में रचित यह कहानी अपनी भाषिक सहजता और संप्रेषणीयता में अंत:स्पर्शी प्रकृति की है। ममता चंद्रशेखर की रचना 'मोर पर वार्त्ता' प्रकृति-बोध का जीवंत बिंबांकन करती है। विदुषी लेखिका शीला झुनझुनवाला का संस्मरण सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की मार्मिक स्मृतियों को ताजा करता है। उनके नाटकों में मानवीय मूल्यों संबंधों का ऐसा सघन भावबिंब है कि नाट्य-इतिहास का नया परिदृश्य दिखाई देता है। ममता किरण की गजलें कथ्य-कथन-क्राफ्ट की दृष्टि से ध्यानाकर्षक हैं तो विवेक भटनागर की गजलें कथ्य की रगड़ से शब्द ध्वन्यर्थ की परतें उघारती हैं। पी. विट्ठल की अनूदित मराठी कविताओं में रचनात्मक भाव की सघनता-सूक्ष्मता है। अन्य रचनाएँ भी महत्त्वपूर्ण और विशेष पठनीय हैं।

—डॉ. राहुल, नई दिल्ली

'साहित्य अमृत' का दिसंबर अंक मिला। हिंदी गजल पर केंद्रित यह अंक बहुत समृद्ध है। बहुत शोधपूर्ण आलेख इसमें हैं, जो हिंदी गजल परंपरा की विस्तृत जानकारी देने वाले हैं। कुछ बातें तो अद्‌भुत और चौंकाने वाली हैं, जैसे भारतेंदु हरिश्चंद्र और निरालाजी ने भी गजलें लिखी हैं। वे स्वयं प्रतिष्ठित हिंदी गजलकार हैं और उन्होंने हाइकु भी लिखे हैं। हिंदी कविताएँ बहुत प्रयोगधर्मी रही हैं, पर उनमें साहित्य का मर्म, राष्ट्रीयता, सामाजिक और सांस्कृतिक अवदान पर अवश्य ध्यान केंद्रित रहना चाहिए। तभी वे सब प्रयोग सार्थक होंगे और कविता को शाश्वत बनाए रखेंगे। इस अंक में महाकुंभ पर भी बहुत रोचक और जानकारीपरक सामग्री दी गई है, जो पाठकों के लिए उपयोगी और संग्रहणीय है। इससे वे भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत से सहज ही परिचित हो सकेंगे। आज के दौर में 'साहित्य अमृत' की इतनी सशक्त उपस्थिति सचमुच प्रेरणास्पद है।

—बलदेव भाई शर्मा, रायपुर (छ.ग.)

अक्षर-जगत् में साहित्य-अमृत से भरपूर 'साहित्य अमृत' पत्रिका साहित्य और संस्कृति की धरोहर व भारतीय ज्ञान-विज्ञान की दिग्दर्शिका स्वरूपा है। विगत नवंबर २०२४ का ग्रंथाकार अंक साहित्य-कलश और दिसंबर २०२४ का 'महाकुंभ विशेषांक' मानो अमृत-कलश के रूप में ही आध्यात्मिक चेतना से युक्त, ज्ञानवर्धक व संग्रहणीय है। जनवरी २०२५ अंक में प्रीति कच्छल ने जहाँ कविता के माध्यम से नारी-शक्ति को जाग्रत् किया, वहीं राकेश भ्रमर की चार गजलें मन को छू गईं। जिस तरह विगत अंक में सामाजिक सरोकार और राष्ट्रवाद के संवाहक राष्ट्र के मूर्धन्य कवि पं. प्रदीप और नीरज के अक्षर अवदान से श्री संजय द्विवेदी ने नई पीढ़ी को परिचित कराया, उसी तरह उक्त जनवरी अंक में श्री कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचंद के साहित्य के अनूठे पक्ष को पाठकों के समक्ष 'खेल पशु पक्षी एवं बाल जीवन की कहानियाँ' के माध्यम से रखा।

—लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर', छतरपुर (म.प्र.)

'साहित्य अमृत' का जनवरी का अंक हस्तगत हुआ। पढ़कर अतीव प्रसन्नता हुई कि इस अंक में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 'एकता का महायज्ञ' शीर्षक से 'महाकुंभ' का जीवंत चित्रण धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि दृष्टिकोण से पौराणिक मान्यताओं और परंपराओं को मूर्त रूप प्रदान किया है। भारतीय संस्कृति की समेकित अभिव्यक्ति अर्पण, तर्पण एवं समर्पण के संगम स्थल 'महाकुंभ' को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आध्यात्मिक प्रेरणा के साथ-साथ सामाजिक सुधार का एक भव्य और दिव्य आयोजन सिद्ध किया है। वस्तुत: महाकुंभ सनातन संस्कृति की एकात्मकता का अमृत रूपी त्रिवेणी का प्रवाह है, जिसमें विश्व के करीब चालीस करोड़ श्रद्धालु पावन जल में स्नान कर पुण्य प्राप्त करेंगे। यह दुर्लभ संयोग एक सौ चवालिस वर्षों बाद आया है। संपादकीय आर्यावर्त की गौरवशाली ७५ वर्षीय यात्रा का संस्मणात्मक दस्तावेज है। 'सा विद्या या विमुक्तये' के माध्यम से पं. विद्यानिवास मिश्र को स्मरण करते हुए ज्ञान की समावेशकता को रेखांकित किया गया है, जिसमें हमारी सभी विद्याएँ, ज्ञानधाराएँ एक-दूसरे की उपकारक सिद्ध हुई हैं। 'हिंदी भाषा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' आलेख, 'अनामंत्रित' कहानी, 'दरार' लघुकथा, यात्रा-वृत्तांत में 'तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर', साहित्य का विश्व परिपार्श्व में 'केवल आग, बस वही', काव्य विद्या में गजलें 'बढ़ जाती है उम्र एवं दिशा संकेत', व्यंग्य में 'श्राद्ध और कवि सम्मेलन' एवं 'संस्कृति के संवाहक लोकगीत' आदि ने पाठकीय स्पंदन में सहभागिता की है। वर्ग पहेली, पाठकों की प्रतिक्रियाएँ एवं साहित्यिक गतिविधियाँ आादि स्तंभ सूचनातंत्र के प्रतिदर्श हैं। साहित्य एवं संस्कृति का संवाहक मासिक 'साहित्य अमृत' अपने लक्ष्य की ओर निरंतर गतिमान है, जिसके लिए संपादक एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

—डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़ (उ.प्र.)

अखिल भारतीय महिला साहित्य सम्मेलन संपन्न

२६-२८ दिसंबर को वाराणसी के काशी हिंदू विश्वविद्यालय के स्वतंत्रता भवन में युगदर्शिनी एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट एवं युगदर्शिनी महिला फाउंडेशन, कर्नाटक तथा हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में डॉ. सरस्वती एस. चिम्मलगी एवं डॉ. अशोक कुमार ज्योति के संयोजन में 'महिला सशक्तीकरण एवं रचनात्मकता' विषयक त्रिदिवसीय अखिल भारतीय महिला साहित्य सम्मेलन एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कन्नड़ की प्रसिद्ध अभिनेत्री सुश्री प्रेमा एन.सी. द्वारा वरिष्ठ लेखिका डॉ. नीरजा माधव के मुख्य आतिथ्य में किया गया। समारोह में डॉ. सरस्वती एस. चिम्मलगी और डॉ. अशोक कुमार ज्योति द्वारा संपादित कन्या भ्रूणहत्या काव्य-संकलन 'माँ, मुझे जीने दो', डॉ. सरस्वती एस. चिम्मलगी और सुश्री गायत्री पत्तार की पुस्तक 'महिला मिसलाती प्रस्तुतता' (महिला आरक्षण चाहिए या नहीं), सुश्री विनोदिनी आनंद के काव्य-संग्रह 'आभरण कवन संकलन', सुश्री हनुमाक्षी गोगी द्वारा संपादित पुस्तक 'श्रेष्ठ भारत, श्रेष्ठ नायक मोदीजी', श्री हर्षित राय शर्मा के महाकाव्य 'भारत का नव्य-विक्रमादित्य', सा.ना. श्री लक्ष्मी के काव्य-संग्रह 'श्री संभ्रम' तथा अखिल भारतीय महिला साहित्य सम्मेलन की स्मारिका का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री नीरजा माधव, रेणु देवी, सुमन जैन, वशिष्ठ द्विवेदी, श्रद्धा सिंह को 'युगदर्शिनी राष्ट्ररत्न सम्मान', करुणा झा, रचना शर्मा, चेतना एस. पुजार, नीलम सिंह, नीलगंगा चेरीमठ, कल्पना पांडेय 'नवग्रह', किंगसन सिंह पटेल, नीलम कुमारी, शैलजा सिंह, विजय पुजार, अशोक कुमार ज्योति को 'युगदर्शिनी मार्वेलस गौरव सम्मान' एवं 'युगदर्शिनी रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। □

शरद व्याख्यानमाला तथा सम्मान समारोह संपन्न

२५ दिसंबर को भोपाल में मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति एवं हिंदी भवन न्यास द्वारा मध्य प्रदेश के उच्चशिक्षा मंत्री श्री इंद्रसिंह परमार के मुख्य आतिथ्य में आयोजित 'शरद व्याख्यानमाला तथा सम्मान समारोह' में पहला 'संतोष श्रीवास्तव कथा सम्मान' उत्तराखंड की कथाकार प्रो. प्रभा पंत के कथा-संग्रह 'फाँस' को प्रदान किया गया, जिसे उनकी पुत्री डॉ. यशस्वी नंदा ने प्राप्त किया। पुरस्कारस्वरूप इक्कीस हजार रुपए की सम्मान राशि, शॉल एवं प्रतीक-चिह्न भेंट किए गए। सर्वश्री शीला मिश्रा को 'शैलेश मटियानी कथा सम्मान', जयंत शंकर देशमुख को 'सुरेशचंद्र शुक्ल 'चंद्र' नाट्य सम्मान', के. वनजा को 'डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय स्मृति आलोचना सम्मान', मोहन तिवारी आनंद को 'शंकरशरण लाल बत्ता पौराणिक सम्मान' एवं इंदिरा दाँगी को 'संतोष बत्ता स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। □

'लघुकथा : सृजन एवं समीक्षा' कृति लोकार्पित

३० दिसंबर को पटना के जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान के सभागार में बिहार विधानसभा परिषद् के उप-सभापति डॉ. रामवचन की अध्यक्षता एवं 'नई धारा' के संपादक डॉ. शिवनारायण के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह में लघुकथाकार एवं समीक्षक डॉ. ध्रुव कुमार की आलोचनात्मक पुस्तक 'लघुकथा : सृजन एवं समीक्षा' का लोकार्पण बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर यादव, सर्वश्री भगवती प्रसाद द्विवेदी, कासिम खुर्शीद, अनीता राकेश एवं ममता महरोत्रा द्वारा किया गया। □

श्री सिद्धेश्वर को 'पं. विशुद्धानंद स्मृति सम्मान'

विगत दिनों पटना में पं. विशुद्धानंदजी द्वारा स्थापित सांस्कृतिक संस्था 'आनंदाश्रम' के तत्त्वावधान में डॉ. अनिल सुलभ की अध्यक्षता में आयोजित 'विशुद्धानंद स्मृति समारोह-२०२५' में चर्चित चित्रकार-कवि श्री सिद्धेश्वर को 'कवि विशुद्धानंद स्मृति सम्मान' के अंतर्गत पाँच हजार एक सौ रुपए की सम्मान-राशि, वदन-वस्त्र एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में सर्वश्री चंदा मिश्र, सिद्धेश्वर, मधुरेश नारायण, आराधना प्रसाद, ओम् प्रकाश पांडेय, जयप्रकाश पुजारी, मीना कुमारी परिहार, ऋचा वर्मा, सुनील कुमार उपाध्याय, शमा कौसर शमा, श्याम बिहारी प्रभाकर, प्रभात धवन, वीणा अंबष्ठ, लता प्रासर, सदानंद प्रसाद, नीता सहाय, वीणा गुप्ता, सुनीता रंजन, आर. प्रवेश, सूर्य प्रकाश उपाध्याय, राज प्रिया रानी, शमा नासमीन नाजां, विशाल कुमार वैभव ने काव्य-पाठ किया। संचालन श्री ब्रह्मानंद पांडेय ने तथा धन्यवाद श्री कृष्ण रंजन सिंह ने ज्ञापित किया। □

काव्य-गोष्ठी संपन्न

२३ दिसंबर को नई दिल्ली के गीतांजलि सभागार में दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड के अध्यक्ष श्री सुभाष चंद्र कानखेड़िया की अध्यक्षता में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस पर आयोजित काव्य-गोष्ठी में मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. सत्यनारायण जटिया तथा सर्वश्री नरेंद्र सिंह 'नीहार', रमेश कुमार गंगले, वर्षा सिंह, तरुणा पुंडीर 'तरुनिल' ने रचना-पाठ किया। संचालन श्रीमती सुनीता टुटेजा ने तथा धन्यवाद श्री अनिल कुमार ने ज्ञापित किया। □

सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों चित्तौड़गढ़ में 'संभावना' संस्थान द्वारा आयोजित 'स्वतंत्रता सेनानी रामचंद्र नंदवाना स्मृति सम्मान समारोह' में सुपरिचित लेखक एवं निबंधकार डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने वर्ष २०२२ के लिए श्री सोपान जोशी की कृति 'जल थल मल', २०२३ के लिए श्री अवधेश प्रधान की कृति 'सीता की खोज' तथा २०२४ के लिए श्री प्रताप गोपेंद्र की कृति 'चंद्रशेखर आजाद : मिथक बनाम यथार्थ' के लेखकों को शॉल, प्रशस्ति-पत्र और सम्मान-राशि भेंट कर सम्मानित किया। संचालन डॉ. कनक जैन ने तथा आभार डॉ. पल्लव ने व्यक्त किया। □

सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों प्रयागराज के मंडपम् सभागार में 'पं. हेरंब मिश्र स्मृति पत्रकारिता संस्थान' की ओर से प्रसिद्ध पत्रकार एवं विचारक पं. हेरंब मिश्र की स्मृति में प्रो. रमाचरण त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित 'पं. हेरंब मिश्र स्मृति शिखर सम्मान-२०२४' समारोह में वरिष्ठ पत्रकार श्री अमरनाथ श्रीवास्तव को 'पत्रकारिता शिखर सम्मान', प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं प्रशासनिक अधिकारी डॉ. सुरेंद्र कुमार पांडेय को 'साहित्यशिखर सम्मान' तथा नवोदित मीडियाकर्मी सुश्री तनु कुमारी को 'युवा मीडियाशिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। साथ ही ९७ वर्षीय शिक्षाविद् श्री प्रेमशंकर खरे को शारीरिक अस्वस्थता के कारण उनके निवासस्थान पर जाकर 'सारस्वत शिखर सम्मान' से सम्मानित किया गया। दूरदर्शन, प्रयागराग के पूर्व कार्यक्रम प्रमुख डॉ. लोकेश शुक्ल मुख्य अतिथि रहे। संचालन पं. पृथ्वीनाथ पांडेय ने किया। □

आ. भगवतीप्रसाद देवपुरा स्मृति समारोह संपन्न

५-६ जनवरी को श्रीनाथद्वारा (राज.) में साहित्य मंडल द्वारा दो दिवसीय आचार्य भगवतीप्रसाद देवपुरा की जयंती एवं बाल साहित्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। प्रथम दिवस की अध्यक्षता कोटा सनातन पीठ के महंत श्रीश्री १००८ विनय गोस्वामी ने की। संस्था के उपाध्यक्ष पं. मदन मोहन मुख्य अतिथि एवं श्री रामेश्वर शर्मा व डॉ. राहुल विशिष्ट अतिथि रहे। डॉ. ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा के स्मृति-शेष स्वरूप डॉ. राहुल द्वारा रचित 'कुसुमांजलि', सर्वश्री अंजीव अंजुम की 'स्वर्ग रश्मियाँ सूरज की', फारससचंद जैन की 'पहेलियाँ ही पहेलियाँ', नगेंद्र कुमार मेहता 'भव्य' की 'हम बालक लड्डू गोपाल', विष्णुशर्मा हरिहर की 'देशप्रेम के रंग', जय बजाज की 'कीमती रिश्तों के रोते-मुसकराते फुटेज' और वैभव शर्मा की 'खिली मुसकान' कृतियों का लोकार्पण किया गया। सुश्री सुफलता त्रिपाठी को पाँच हजार रुपए की राशि के 'श्रीमती कमलादेवी अग्निहोत्री सम्मान-२०२५' से सम्मानित किया गया। डॉ.सत्यनारायण 'सत्य' और डॉ. कृष्णबिहारी पाठक सहित कुल नौ विश्रुत विद्वानों ने अपने आलेखों का वाचन किया। डॉ.वाई.एन. वर्मा, डॉ. एस.एस. पुरोहित, डॉ. एम.के. सिरोहिया और डॉ. विशाल लाहौटी को 'चिकित्सा सेवारत्न मानद उपाधि' से समलंकृत किया गया। सर्वश्री ज्ञानप्रकाश पीयूष, श्यामसुंदर श्रीवास्तव और राजस्थान के २० प्रतिष्ठित साहित्यकारों को 'बाल साहित्य भूषण सम्मान' प्रदान किया गया। सर्वश्री कर्नल प्रवीण कुमार त्रिपाठी, मीनू त्रिपाठी, महेश कुमार मधुकर और अनेक विशिष्ट साहित्यकारों को मेवाड़ी पगड़ी, शॉल, प्रशस्ति-पत्र, नारियल प्रसाद व श्रीनाथजी की छवि प्रदान कर अभिनंदित किया गया।

द्वितीय दिवस के सत्रों में डॉ. शारदाप्रसाद दुबे व डॉ. क्षमा चतुर्वेदी को 'साहित्य कुसुमाकर' मानद उपाधि तथा साहित्य सौरभ, काव्य कौस्तुभ, काव्य कुसुम, पत्रकारश्री मानद उपाधियों से कई विद्वान् लेखक/लेखिकाओं को सम्मानित किया गया। साहित्य सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए कुछ सर्जकों को तीन हजार एक सौ और कुछ को दो हजार एक सौ रुपए की राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया। डॉ. प्रफुल्लचंद्र ठाकुर को 'श्री भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति सम्मान', श्री आनंद प्रजापति को 'डॉ. आर.के. रमन स्मृति सम्मान', सुश्री एंजिल गाधी और कुमारी सृष्टिराज को 'श्रीमती गीतादेवी काबरा स्मृति बालश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया। संचालन श्री श्यामप्रकाश देवपुरा ने तथा आभार डॉ. अंजीव अंजुम ने व्यक्त किया। □

मानस संगम का ५६वाँ वार्षिक समारोह संपन्न

२२ दिसंबर को कानपुर के महाराज प्रयाग नारायण मंदिर में डॉ. बद्रीनारायण तिवारी द्वारा स्थापित साहित्यिक संस्था 'मानस संगम' के ५६वें वार्षिक समारोह का आयोजन पं. उमाशंकर व्यास की अध्यक्षता तथा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री गौतम चौधरी एवं श्री अनीश कुमार गुप्ता के मुख्य आतिथ्य में किया गया। कार्यक्रम में पद्मश्री डॉ. विद्या विंदु सिंह को 'मानस संगम साहित्य सम्मान', प्रो. इंद्र मोहन रोहतगी को 'मानस संगम कला सम्मान', श्री अमित टंडन को 'मानस संगम विशिष्ट सम्मान', कविवर रामायणधर द्विवेदी को 'मानस संगम तुलसी सम्मान', सर्वश्री बी.एन. त्रिपाठी, आरती मोहन, लता कादंबरी, आयुष द्विवेदी को 'कानपुर गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 'मानस संगम' अंतरराष्ट्रीय वार्षिक पत्रिका का लोकार्पण किया गया। समारोह में हिंदीनिष्ठ विदेशी अतिथियों में सर्वश्री नोडिस सैडना जरोवा (उजबेकिस्तान), सचिनी संजीवनी दिलरूक्शीपुरांबे गिरदारा एवं मोरा गोले इंडासोनामा थेरे (श्रीलंका), अन्ना बरबरा नौकिया (पोलैंड), अंटोनियों किकोनी (इटली), आस्मा मोहम्मद मंसूर हसन इज्वाकिल (इजिप्ट), बिबीगुल करातचेवा एवं क्लीमोविच नादेजुमा (कजाकिस्तान), इब्राहिम यकूब उमर (नाइजीरिया), लाच्यन पलटायेवा (तुरकिमिस्तान), योसुफ इब्राहिम महामद (चाड), ननामी योशिदा (जापान) तथा ली-उवांग (चीन) ने अपने विचार व्यक्त किए। □

डॉ. वंदना मुकेश सम्मानित

१० जनवरी को लंदन के भारतीय उच्चायोग में आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह में हिंदी लेखन के क्षेत्र में सक्रिय, एकनिष्ठ रचनात्मक सेवाओं द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु डॉ. वंदना मुकेश को भारतीय उच्चायुक्त श्री विक्रम दोराईस्वामी द्वारा 'डॉ. हरिवंशराय बच्चन लेखन सम्मान' से २५१ डॉलर की राशि, शील्ड तथा मानपत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री नरेश कौशिक को 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिंदी मीडिया सम्मान', डॉ. हरीश पोपटानी को 'जॉन गिलक्रिस्ट हिंदी शिक्षण सम्मान' तथा 'हिंदी मेड ईजी' नामक एक एप को 'फेड्रिक पिंकट हिंदी प्रचार-प्रसार सम्मान' से सम्मानित किया गया। स्वागत उद्बोधन श्री दीपक चौधरी ने तथा संचालन डॉ. नंदिता साहू ने किया। □

डॉ. नीरजा माधव सम्मानित

विगत दिनों वाराणसी में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नीरजा माधव को मध्य प्रदेश शासन, संस्कृति विभाग की ओर से वर्ष २०२३ के पाँच लाख

रुपए की राशि के 'राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' से सम्मानित करने की घोषणा की गई। यह सम्मान उन्हें २६ जनवरी को भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित एक सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। □

'राम विराजे रंगों में' कृति विमोचित

५ जनवरी को जबलपुर के सत्य अशोका होटल में आध्यात्मिक विभूति सुश्री ज्ञानेश्वरी दीदी की अध्यक्षता एवं मध्य प्रदेश के केबिनेट मंत्री श्री राकेश सिंह तथा जबलपुर के महापौर श्री जगत बहादुर सिंह के मुख्य आतिथ्य में प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. रूपलेखा चौहान द्वारा श्रीरामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों पर आधारित एवं मधुबनी शैली में चित्रित प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित रचना 'राम विराजे रंगों में' का विमोचन किया गया। प्रसिद्ध चिकित्सक रामायण-मर्मज्ञ डॉ. अखिलेश गुमाश्ता ने विशेष उद्‌बोधन दिया। जबलपुर के स्वनामधन्य चिकित्सकों व शिक्षाविदों की गरिमामयी उपस्थिति रही। □

अखिल भारतीय एवं प्रादेशिक कृति कैलेंडर वर्ष २०२२ एवं २०२३ के पुरस्कार घोषित

विगत दिनों भोपाल की साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्य प्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा अखिल भारतीय एवं प्रादेशिक कृति पुरस्कार कैलेंडर वर्ष २०२२ एवं २०२३ के पुरस्कारों की घोषणा की गई। अखिल भारतीय पुरस्कारस्वरूप एक लाख रुपए एवं प्रादेशिक प्रति पुरस्कारस्वरूप इक्यावन हजार रुपए की राशि के साथ शॉल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न और प्रशस्ति-पत्र प्रत्येक रचनाकारों को भेंट किए जाएँगे। सम्मानित रचनाकारों की सूची निम्नलिखित है—

'अखिल भारतीय' पुरस्कार के अंतर्गत			
क्र.	**सम्मान का नाम**	**रचनाकार का नाम एवं कृति (वर्ष २०२२)**	**रचनाकार का नाम एवं कृति (वर्ष २०२३)**
१.	पं. माखनलाल चतुर्वेदी	प्रो. खेमसिंह डहेरिया की 'अमृतमयी माँ नर्मदा' एवं पं. रामजी तिवारी 'भाईजी' की 'रामायण की नारियाँ'	डॉ. विवेक चौरसिया की 'राम रसायन मोरे पासा'
२.	गजानन माधव मुक्तिबोध	डॉ. फकीरचंद शुक्ला की 'धूप-छाँव'	श्री पंकज शर्मा की 'खिड़कियाँ' एवं सुश्री रोचिका अरुण शर्मा की 'मन केसरिया रँग दो जी'
३.	राजा वीरसिंह देव	श्री राजेंद्र मोहन शर्मा की 'महात्मा विदुर'	श्री दयानंद पांडेय की 'विपश्यना में प्रेम'
४.	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	प्रो. अरुण कुमार भगत की 'पत्रकारिता सर्जनात्मक लेखन और रचना-प्रक्रिया' एवं डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय की 'जयशंकर प्रसाद महानता के आयाम'	डॉ. राजेश कुमार व्यास की 'कलाओं की अंतर्दृष्टि' एवं प्रो. नंद किशोर पांडेय की 'भारत बोध और भक्ति कविता'
५.	पं. भवानी प्रसाद मिश्र	सुश्री नमिता राकेश की 'तेरे खयालों में'	सुश्री सोनी सुगंधा की 'आसमान का आँगन'
६.	अटल बिहारी वाजपेयी	श्री प्रवीण गुगनानी की 'स्वप्न ही तो है कविता' एवं डॉ. रामनिवास 'मानव' की 'शहर के बीचोबीच'	डॉ. विजयानंद की 'कोरोना तथा अन्य सामयिक कविताएँ' एवं सुश्री योगिता चौरसिया 'प्रेमा' की 'छंद कलश'
७.	कुबेरनाथ राय	डॉ. श्यामसुंदर दुबे की 'मन की हथेली पर'	डॉ. राजरानी शर्मा की 'आखर-आखर मोरपंख'
८.	विष्णु प्रभाकर	श्री सुशील दोशी की 'आँखों देखा हाल'	डॉ. अमिता खरे की 'श्री चैतन्य महाप्रभु : सनातन कल्पवृक्ष'
९.	निर्मल वर्मा	श्री सुरेश बाबू मिश्रा की 'जिनका यश फैला अंबर तक'	डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुंतल' की 'पुनरपि' एवं डॉ. हेमंत कुमार पारीक की 'धूप-छाँव के घेरे'
१०.	महादेवी वर्मा	श्री अशोक जमनानी की 'मेरे स्पिक मैके दिन'	श्री अंजीव अंजुम की 'मन चौखट के बंदनवार'
११.	प्रो. विष्णुकांत शास्त्री	डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव की 'सौंदर्य लोक में'	श्री अनिल शर्मा की 'कुछ याद रहा कुछ भूल गया'

१२.	भारतेंदु हरिश्चंद्र	सुश्री मीना नवीन की 'जर्जर दीवारें' एवं पं. कमल किशोर दुबे की 'चाणक्य नीति दोहावली'	पं. पूरन चंद्र शर्मा की 'अध्यात्म गीता'
१३.	नारद मुनि	सुश्री शोभा जैन एवं श्री पवन मकवाना	श्री अमन व्यास एवं श्री संदीप सृजन
'प्रादेशिक' पुरस्कार के अंतर्गत			
१.	वृंदावनलाल वर्मा	सुश्री वंदना सोनी 'विनम्र' की 'विडंबना' एवं श्री बलराम धाकड़ की 'रानी कमलापति'	श्री अमिताभ बुधौलिया की 'कड़कनाथ'
२.	सुभद्रा कुमारी चौहान	डॉ. गीता शर्मा की 'मुड़ के देखो मुझे'	डॉ. विवेक द्विवेदी की 'अलविदा कावेरी'
३.	श्रीकृष्ण सरल	सुश्री दामिनी सिंह ठाकुर की 'तिश्नगी'	डॉ. वसुधा गाडगिल की 'सूरजमुखी' एवं रुचि बाजपेई शर्मा की 'सेमल'
४.	आचार्य नंददुलारे वाजपेयी	डॉ. आशीष भारती की 'पर्यावरण और भारतीय संस्कृति'	डॉ. कीर्ति काले की 'किस्से कवि सम्मेलनों के'
५.	हरिकृष्ण प्रेमी	श्री संजय मेहता की 'मरघटा खुला है'	सुश्री जया सरकार की 'संभावनाओं को संभव करने के प्रयास में'
६.	राजेंद्र अनुरागी	सुश्री इंदु पाराशर की 'मेरी डायरी : रिश्ते मोती हो गए'	श्री सुरेंद्रपाल सिंह कुशवाह की 'कोरोना डायरी'
७.	पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	श्री विनय उपाध्याय की 'सफह पर आवाज' एवं श्री स्नेह पीयूष की 'इतना तुम मय होकर'	डॉ. वर्षा महेश 'गरिमा' की 'क्षितिज की ओर'
८.	ईसुरी	डॉ. सुमन चौरे की 'निमाड़ का सांस्कृतिक लोक'	श्री विनोद मिश्र सुरमणि की 'दतिया धाम वृंदावन'
९.	हरिकृष्ण देवसरे	श्री पुरुषोत्तम तिवारी 'साहित्यार्थी' की 'हम धरती के फूल' एवं श्री पाणि पंकज पांडेय की 'बाल रामायण'	सुश्री माधुरी व्यास 'नवपमा' की 'एक पाती नाम तुम्हारे'
१०.	नरेश मेहता	श्री विनोद नागर की 'सिने सरोकार'	सुश्री शशि पुरवार की 'नमक जिंदगी का'
११.	जैनेंद्र कुमार 'जैन'	डॉ. योगेंद्रनाथ शुक्ल की 'लघुकथाओं का खजाना' एवं श्री अशोक कुमार धमेंनियाँ 'अशोक' की 'ऋषि रेणु'	सुश्री रश्मि चौधरी की 'संवेदनाओं का स्पर्श' एवं डॉ. प्रमोद जैन की 'सेल्फी'
१२.	सेठ गोविंद दास	सुश्री परी जोशी की 'राम'	श्री प्रमोद त्रिवेदी 'पुष्प' की 'ईश्वर की जागीर'
१३.	शरद जोशी	श्री प्रकाश शर्मा की 'वामपंथ के पाँव पीछे'	श्री सुरेश मिश्र 'विचित्र' की 'हम तो बोलेंगे' एवं श्री शैलेंद्र व्यास की 'हास्यॉक्सीजन'
१४.	वीरेंद्र मिश्र	डॉ. प्रार्थना पंडित की 'एक गीत जिंदगी' एवं श्री प्रभु त्रिवेदी की 'एक अकेला दीप'	डॉ. ओम प्रकाश मिश्र व्यथित की 'मेरा परिचय मेरी कविता'
१५.	दुष्यंत कुमार	श्री दुर्गेश नंदन शर्मा की 'देखना एक दिन…'	श्री प्रहलाद भक्त की 'समय की तसवीर'

□

हिंदी अकादमी के पुरस्कार घोषित

विगत दिनों दिल्ली की हिंदी अकादमी में श्री सौरभ भारद्वाज द्वारा साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु पुरस्कारों की घोषणा की गई, जो इस प्रकार है—

क्र.	सम्मान का नाम	सम्मान राशि	वर्ष २०२२-२३	वर्ष २०२३-२४	वर्ष २०२४-२५
१.	शलाका सम्मान	रु. ५,००,०००/-	प्रो. निर्मला जैन	श्री अशोक वाजपेयी	श्रीमती चित्रा मुद्गल
२.	शिखर सम्मान (विशिष्ट सृजनात्मक योगदान के लिए)	रु. २,००,०००/-	डॉ. बालस्वरूप राही	प्रो. कुमुद शर्मा	डॉ. श्याम सिंह 'शशि'
३.	संतोष कोली स्मृति सम्मान (केवल महिला हिंदी सेवियों के लिए)	रु. २,००,०००/-	श्रीमती ममता कालिया	श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा	प्रो. अनामिका
४.	विशिष्ट योगदान सम्मान	रु. १,००,०००/-	श्री भगवानदास मोरवाल	श्री विजय किशोर मानव	श्री बलराम
५.	काव्य सम्मान	रु. १,००,०००/-	श्री संतोष आनंद	श्री मंगल नसीम	प्रो. सीता सागर
६.	गद्य विधा सम्मान	रु. १,००,०००/-	प्रो. पूरनचंद टंडन	डॉ. हरिसुमन बिष्ट	श्री प्रयाग शुक्ल
७.	ज्ञान-प्रौद्योगिकी सम्मान	रु. १,००,०००/-	प्रो. अशोक चक्रधर	श्री महेश गर्ग 'बेधड़क'	श्री बालेंदु शर्मा 'दाधीच'
८.	बाल साहित्य सम्मान	रु. १,००,०००/-	श्री इंद्र सेंगर	श्री पंकज चतुर्वेदी	श्रीमती सुमन वाजपेयी
९.	नाटक सम्मान	रु. १,००,०००/-	श्री प्रताप सहगल	श्री जयवर्धन सिंह	सुश्री रिंकल शर्मा
१०.	हास्य व्यंग्य सम्मान	रु. १,००,०००/-	डॉ. हरीश नवल	श्री सुभाष चंदर	डॉ. गोविंद व्यास
११.	अनुवाद सम्मान (इतर भाषाओं से हिंदी में अनुवाद के लिए)	रु. १,००,०००/-	डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा	श्रीमती जयश्री पूरवार	श्री सुभाष नीरव
१२.	पत्रकारिता सम्मान (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)	रु. १,००,०००/-	श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी	श्री रामवतार बैरवा	श्री सईद अंसारी
१३.	पत्रकारिता सम्मान (प्रिंट मीडिया)	रु. १,००,०००/-	श्री राहुल देव	श्री चैतन्य कीर्ति	श्री संजय सहाय
१४.	हिंदी सेवा सम्मान	रु. १,००,०००/-	श्री नानकचंद	श्री सुरेश नीरव	डॉ. के. श्रीनिवासराव
१५.	हिंदी सहभाषा सम्मान (बुंदेलखंडी, ब्रजभाषा, हिमाचली, राजस्थानी)	रु. १,००,०००/-	डॉ. विमलेश कांती वर्मा	श्री रामकुमार कृषक	सुश्री अर्चना चतुर्वेदी

□

साहित्यिक क्षति

श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' नहीं रहे

२७ दिसंबर को ८० वर्षीय लोक साहित्य, लोक संस्कृति के मर्मज्ञ और बुंदेलखंड के वरिष्ठ पत्रकार श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' का निधन हो गया। उनका जन्म १५ जुलाई, १९४४ को हुआ था। वे जीवन भर पत्रकारिता, लोककला, साहित्य और रंग-कर्म को समर्पित रहे। उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था 'लोकमंगल' की स्थापना की। उन्होंने अनेक पुस्तकों का लेखन किया। वे 'संस्कार भारती' की केंद्रीय टोली के सदस्य रहे। उन्हें अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया। □

श्री राजेंद्र प्रसाद नहीं रहे

१० जनवरी को हरियाणा के छाजपुर खुर्द ग्राम में जनमे श्री राजेंद्र प्रसाद का निधन हो गया। उन्हें भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी सहित कई प्रतिष्ठित केंद्रीय मंत्रियों/उच्चाधिकारियों के साथ-साथ केंद्र सरकार के कई महत्त्वपूर्ण मंत्रालय/विभागों में कार्य करने का व्यापक अनुभव था। उनकी हिंदी में कार्य करने की विशेष रुचि थी।। विभिन्न समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में समय-समय पर सामाजिक विषयों पर उनके आलेख एवं कविताएँ प्रकाशित होते रहे। □

'साहित्य अमृत' परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि!